॥ ॐ अर्हम् ॥

जीवविचारादि प्रकरणो अने अनेक मौलिक आगमोना दोहनरूप

॥ सिद्धान्त-रहस्य (थोकडासंग्रह) ॥

भाग पहेलो



संपादक अने संशोधकः—

उपाध्याय विद्वद्वर्य श्रीदेवचंद्रजी महाराज.

प्रकाशकः—कच्छपत्री निवासी शाह गांगजी वीरजी.

प्रथमावृत्ति-प्रतिक २०००

सने १९३७ मूल्यम् १-८-० संवत १९९४

मुद्रकः—
मेनेजर—बालचंद हीरालाल
श्री जैन भास्करोदय प्रि. प्रेस—जामनगर.

अर्पणपत्रिका.



परमोपकारी प्रातःस्मरणीय सद्‌गुरुवर्य उपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी महाराज !

आपश्री पारमेश्वरी प्रव्रज्यानी निर्मळ भावनाना प्रतापे आ जगत्‌ना अज्ञान मनुष्यने ज्ञानरूपी प्रवाहने पुस्तकोद्वारा जुदाजुदा रुपमां अवारनवार प्रगट करी अनेक जीवो पर उपकार करी रह्या छो एटलुंज नहिं परंतु प्रकरण ग्रंथो, जेवाके जीवविचार. नवतत्त्व, दंडक आदि ग्रंथोमां आपश्रीनी सविशेष अभिरुचीना कारणे मने आ ग्रंथ प्रकाशन करवामां आपे जे सहानुभूति आपी मारा आ मार्गने सरळ करी आप्यो छे ते माटे आ ग्रंथ आपना हस्त कमळमां समर्पण करी कृतार्थता अनुभवुं छुं.

लि. सेवकः—

गांगजी वीरजी.

अ ग्र व च न.

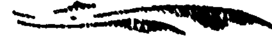
परमोपकारक श्री जिनेश्वरोए ज्ञान अने क्रिया वडे मोक्षनी प्राप्ति थाय छे एम प्रतिपादन करेलुं छे, तेमां पण प्रथम ज्ञान अने पछी क्रिया माटे मुक्तिना इच्छकोए अवश्य ज्ञान मेळववुं जोइए. ते ज्ञान–१ द्रव्यानुयोग, २ चरणकरणानुयोग, ३ गणितानुयोग अने ४ धर्मकथानुयोग ए चार विभागथी सिद्धांतमां कथन करायेलुं छे. ते मूल सिद्धांत मागधी (प्राकृत) भाषामां छे अने पूर्वाचार्योए वृत्ति वगेरे अनेक ग्रंथो पण संस्कृत अने प्राकृत भाषामां रचेलां छे. तेनुं ज्ञान सामान्य जीवोने समजवुं मुश्केल थाय माटे तेनुं रहस्य (सार) आ पुस्तकमां संग्रह करवामां आवेलुं छे. तेथी आनुं नाम "सिद्धांतरहस्य" राखवामां आवेलुं छे. आ पुस्तकमां जीव विचार, नवतत्त्व वगेरे बत्रीश विषयो छे. एनुं अपर नाम "थोकडा संग्रह" पण राखेलुं छे. आ ग्रंथमां मुख्यत्वे द्रव्यानुयोग अने गौणताए चरणकरणादि अनुयोगोने पण स्थान आपवामां आवेलुं छे. यद्यपि थोकडा (प्रकरण संग्रहादि)ना पुस्तको प्रथम छपाइ गया छे तथापि तेमां प्रायः गतानुगतिकता साथे रुढिनुं प्राबल्य पण विशेषज्ञोने जणाशे. आ ग्रंथमां घणोज सुधारो–वधारो करवामां आव्यो छे. आगति–गति अने गुणस्थान जेवा विषयोमां तो घणीज नवीनता जणाशे. परंतु सूक्ष्मदृष्टिथी अवलोकन करनारने सत्य वस्तु ख्यालमां आवी जशे, तेमज कर्मप्रकृतिमां पण खास उत्तर प्रकृतिनी स्थिति वगेरे अने लेश्या तथा समुद्‌घात अने ज्ञानस्वरूपनुं वर्णन पण शास्त्रनुं मंथन करी लखवामां आव्युं छे. अने स्थाने स्थाने आवश्यक टिप्पणो पण लखेल छे जेथी वस्तुनुं स्वरूप समजवुं सुगम पडे. आ पुस्तक लखती वखते–१ श्रीठाणांगसूत्र २ श्रीभगवतिसूत्र

३ जीवाभीगम ४ पन्नवणा ५ अनुयोगद्वार ६ नंदी ७ उत्तराध्ययन ८ जंबूद्वीप पन्नती तथा ते सूत्रोनी टीकाओ, आवश्यकनिर्युक्ति, विशेषावश्यक, कर्मग्रंथ, कर्मप्रकृति. पंचसंग्रह, प्रवचनसारोद्धार, विचारसार. लोकप्रकाश, संग्रहणी, क्षेत्रसमास, पंचनिर्ग्रंथी, तथा हस्तलिखित पानाओ, वगेरेनी सहाय लेवामां आवी छे, जेथी जे कांइ सुधारो वधारो करेल छे ते उपरोक्त सूत्र अने ग्रंथोना आधारे करवामां आवेल छे. आमां जे कोइने न समजाय अगर विरुद्धता भासे तो लेखकने पूछवुं, तो तेनो लेखक खुलाशो करी आपशे. आ ग्रंथ लखवानुं परमोपकारी विद्वद्वर्य उपाध्यायजी महाराज श्रीदेवचंद्रजी स्वामीनी प्रेरणा अने अनुग्रहथीज बनेल छे कारण, प्रेसमेटर सुधारवानुं तथा प्रुफो सुधारवानुं काम तेओएज करेल छे अने टीपणीओ पण तेओनी कृपाद्रष्टिथी बनेल छे माटे तेओश्रीनो अनन्य उपकार छे. तथा स्वर्गस्थ परमोपकारी स्याद्‌वाद तत्वनाज्ञाता परमपूज्य गुरुवर्यश्री विजयपालजीस्वामी तथा पूज्यश्री कानजीस्वामीनो पण अनहद उपकार छे कारण. केटलाएक सूक्ष्म तत्वनी गवेषणा तो परमोपकारीना अनुग्रहथीज थाय छे. आ पुस्तकने आदिथी अंत सुधी वांची जवा दरेकने भलामण छे. आ ग्रंथ लखवामां घणी कालजी राखवामां आवेल छे छतां द्रष्टि दोषथी के प्रेस दोषथी जे कांइ भूलो रही होय तो तेनी सज्जनो पासेथी क्षमा मागुं छुं अने खास विषयोनी भूल जणाय तो लखवा कृपा करवी. विशेष आ ग्रंथना अगाउथी ग्राहक तरीके पोताना नामो नोंधावी अमोने अमारा प्रकाशनमां मदद करी छे ते माटे तेमनो पण आभार मानुं छुं. एज.

लि. श्री संघनो सेवक,

शाह गांगजी वीरजी (कच्छ पत्री.)

विषयानुक्रमणिका.



शुद्धि	अशुद्धि	पृष्ट	पंक्ति	शुद्धि	अशुद्धि	पृष्ट	पंक्ति	शुद्धि	अशुद्धि	पृष्ट	पंक्ति
२८	८	६	१२	पल्यनो	पापल्यनो	४३	२	चोथु	त्रीजुं	७८	२
उदधिकु०	उदधिकु०	१२	५	आवे	आपे	४५	६	लेशे	लीधेल छे	८९	१४
पिशाच	पिशाचि	१२	८	भेद	भे	४७	६	मारा नथी	माराथी	११०	४
आयुष्यनी	गतिनी	१७	१३	५२७	५२९	४९	३	१०	१०८	११७	११
आराधवो	आरधवो	२०	२	४२३	३२३	५१	१४	१०८	१०	११७	१२
बंध	गंध	२०	१४	प्रत्याख्या०	अप्रत्याख्या०	५४	१०	उत्तर	मूल उत्तर	१३६	१३
रसनी	कषायनी	२१	१३	कोडाकोडी	कोडी	५८	१४	मादि	अनादि	१५५	११
अस्थिनिचय	शरीरनी रचना	२४	६	छठा	सातमा	६०	१०	नक्षत्रें	नक्षत्रें	२०८	१३
वानमतर	वानमंत	२८	१४	सातमे आठमे	आठमे	६०	११				
साढात्रण	त्रण	३२	१३	६२	७२	६१	१४				
पृथक्त्व	प्रत्येक	३६	१२	पहेले त्रीजे	पहेले	६४	१२				
पदर	त्रीस	४१	४	विशेषाधिक	विपाधिक	७५	१०				
लेश्या-१तेजु	लेश्या	४२	७	भव थवानो	भव	७७	१३				

——:o:——

 प्रथमथी ग्राहक थयेल सद्गृहस्थना मुबारक नामो. 

मुंद्रा.

100] एक सद्गृहस्थ

भुज.

100] एक सद्गृहस्थ

१0] एक सद्गृहस्थ

१0] शा. माधवजी जीवराज नगरीया

अंजार.

२५] शा. देवसी कानजी

५] मेता मगनलाल मोणसी

मांडवी.

१५] शा. ओसा पानाचंद

हुबली.

५0] शा. दामजी जादवजीनी कुं.

पत्री.

५0] शा. उमरसी केसवजी

२0] शा. घेला जेसग

२५] शा. तेजु आशारीया

२0] वोरा मावजी रतनसी

१५] शा लालजी भीमसी

१0] शा. रवजी भोजराज

१0] शा. भूला मालसी

१0] शा. खीमजी मोणसी

१0] शा. लखमसी भीगसी

५] शा. ताला शिवजी

५] शा. जेठा धारसी

लाखापर.

२५] शा. भाणजी पांचाना सुत कानजी भाणजी

२५] शा रतनसी शिवराज

२५] शा. वेरसी हीरजी

१५] शा. पचाण मोणसी

१५] शा. लालजी पालण

१0] शा. धारसी माणक

५] शा. चांपसी जेतसी

५] शा. खीमजी गुणपत

नवीनार.

४0] शा. देवराज जेठा

[धर्मपत्नीना स्मरणार्थे]

२५] शा जेठा चांपसी

२0] शा. राजपार शामर पटेल

१0] शा. मोनजी धारसी

भाडिया.

२५] शा. पासु आणंद

५] शा. रतनसी खीमजी

५] शा. धनजी आणंद

५] शा. रवजी वेलजी

५] शा. देवसी डाह्या

५] शा. पुंजा देवसी

देशलपुर.

२५] शा. आणंदजी भूला

२५] ब्हेन शाणबाइ

रताडिया

१0] शा. मुरजी देवसी

१0] शा. रवजी जादवजी

५] शा. वेरसी खींसी

लुणी.

५0] शा. चापसी देवसी

[मातुश्री पशाबाइना स्मरणार्थे]

२0] शा. करमसी हरधोर

कपाया.

१५] शा. देवजी डाह्या

५] शा. लालजी मुरजी

बेराजा.

१0] ब्हेन मोंघीबाइ मेघजी

५] शा. भीमसी जादव

——o——

ॐ वीरः

सिद्धान्त-रहस्य भाग १

(थोकडा संग्रह भाग १)

ॐकारबिंदुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः । कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमोनमः १
मङ्गलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः । मंगलं स्थूलिभद्राद्याः, जैनोधर्मोऽस्तु मंगलम् २
अज्ञानतिमिरान्धानाम्, ज्ञानाञ्जनशलाकया । नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरुवे नमः ३

अथ श्रीजीवविचार लिख्यते—प्रथम छ जीव-निकायना नाम कहे छे १ इंद्रस्थावरकाय,× २ ब्रह्मस्थावरकाय, ३ शिल्पस्थावरकाय, ४ सम्मतिस्थावरकाय, ५ प्राजापत्यस्थावरकाय अने ६ जंगमकाय. हवे छ जीवनिकायना गोत्र कहे छे १ पृथिवीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय अने ६ त्रसकाय. हवे पृथिवीकायिक जीवना बे भेद, सूक्ष्म अने बादर. सूक्ष्म ते आपणी नजरे न आवे ज्ञानी जाणे देखे. बादर ते नजरे आवे वली सू० ने बा० पृथिवीकायना बे भेद, पर्याप्त अने अपर्याप्त. बादर पृथिवीना नाम कहे छेः-१ माटी ने

× प्राकृत भाषामा छ कायना नाम आ प्रमाणे छे—इंद थावरकाय, बंभथा०, सिप्पथा०, सम्मइथा०, पायावच्चथा० ने जंगमकाय.

मीठानी जाति, २ खडी ने खारानी जाति, ३ कालमींढ ने मरडिया पाहाणानी जाति, ४ हींगलो ने हरतालनी जाति, ५ गेरु ने गोपीचंदनी जाति, ६ रत्न-परवालानी जाति, ७ सोल जातिना रत्नो, सुवर्णादि धातु, अभ्रक सुरमो वगेरे तेंतालीस जातिनी पृथिवी छे. तेना एक ककडामां असंख्याता जीव श्रीभगवंते कह्या छे. जुवार के पीलु जेटली पृ० काय लइएं तेमांथी एकेको जीव जो पारेवा जेवडी काया करे तो आ जंबूद्वीपमां समाय नहिं. तेनां कुल बार लाख क्रोड छे. तेनी अवगाहना अंगुलना असंख्यातमा भागनी छे. तेनुं आयुष्य-सू० पृथवीकायिकनुं जघन्य अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनुं अने बा० पृ० कायिकनुं ज० अंत० अने उ० बावीस हजारवर्षनुं छे. तेनी जो दया पालीएं तो अनंत मोक्षनां सुख पामीएं. हवे अप्‌कायिकना बे भेद-सू० ने बा०[२] वली तेना बे भेद पर्या० ने अप० सूक्ष्म पूर्ववत्. हवे बादर पाणीना भेद कहे छे-१ वर्षादने कराना पाणी, २ झाकरने धुमरना पाणी, ३ कूवा ने तलावना पाणी, ४ समुद्रने झरणाना पाणी, ५ खारां-खाटां पाणी, ६ मीठां-मोळां पाणी अने घनोदधि आदि अनेक जातिना पाणी छे. तेना एक बिंदुमां असंख्यात जीव कह्या छे. तेमांथी एकेको जीव जो सरसवना दाणा जेवडी काया करे तो आ जंबूद्वीपमां समाय नहिं. तेना कुल सात लाख क्रोड छे. तेनी अवगाहना, अंगुलना असंख्यातमा भागनी छे. तेनुं आयुष्य-सू० अप्‌कायनुं ज० ने उ० अंत०नुं अने बा० अप्‌कायनुं ज० अंत० ने उ० सात हजार वर्षनुं छे. तेनी दया पालीएं तो अनंत मोक्षना सुख पामीएं. हवे तेजस्कायिक (अग्निना जीव)ना

---

२ दरेक स्थावर सू० ने बा० ना अपर्याप्त ने पर्याप्त ए बने भेद जाणवा.

बे भेद सू० ने बा०, वली तेना बे भेद पर्याप्त ने अप०, सूक्ष्म पूर्ववत् हवे बादर अग्निना भेद कहे छे. १ चूला ने भट्ठीनी अग्नि, २ धूमाडी ने तापणीनी अग्नि, ३ चकमक ने वीजलीनी अग्नि, ४ दीवा ने उमाडानी अग्नि, ५ धगधगता लोढा ने अरणीनी अग्नि अने उल्कापातादि अनेक जातिनी अग्नि छे. तेना एक तणखामां असंख्यात जीव कह्या छे. तेमांथी एकेको जीव, जो खसखसना दाणा जेवडी काया करे तो आ जंबूद्वीपमां समाय नहिं. तेना कुल त्रण लाख क्रोड छे. सूक्ष्म तेउकायिकनुं ज० ने उ० आयुष्य अंत०नुं अने बा० तेउका०नुं ज० अंत० ने उ० त्रण अहोरात्रिनुं छे. तेनी दया पालीएं तो अनंत मोक्षना सुख पामीएं. हवे वायुकायिक (वायुना जीव)ना बे भेद सू० ने बा०, सूक्ष्म ते पूर्ववत्. तेना वली बे भेद पर्याप्त ने अपर्याप्त. बा० वायुका० ना भेद कहे छे—

१ पूर्वने पश्चिमनो वायु, २ उत्तरने दक्षिणनो वायु, ३ उंचो नीचो ने तिरछो वायु, ४ वंटोलियो ने मंडलियो वायु, ५ गुंज वायु ने शुद्ध वायु अने घन वायु आदि अनेक जातिना वायु छे. हवे वायुना जीव जे निमित्तथी हणाय छे ते कहे छे—१ उघाडे मोढे बोलवाथी, अति झापट नाखवाथी, सूपडे सोजवाथी, झाटकवाथी, कांतवाथी, वींझणे वींझवाथी, तालोटा वगाडवाथी, हींचोले हींचकवाथी, ए आदि अनेक शस्त्रथी हणाय छे. वायुनो एकेको जीव वडना बीज जेवडी काया करे तो आ जंबूद्वीपमां ममाय नहिं, तेना कुल सात लाख क्रोड छे अने अवगाहना अंगुलना असंख्यातमा भागनी छे. तेनुं आयुष्य सू० वायुकायिकनुं ज० ने उ० अंतर्मुहूर्तनुं अने बा० वायुका० नुं ज० अंत० अने उ० त्रण हजार वर्षनुं छे. तेनी दया पालीएं तो अनंत मोक्षना सुख पामीएं हवे वन-

स्पतिकायिकना बे भेद सू० नैं बा०, सूक्ष्म पूर्ववत्. तेना बे भेद प० अने अप०. बा० वनस्पतिकायिकना बे भेद प्रत्येक ने साधारण. एक शरीरनें विषे एक जीव होय तेने प्रत्येक कहीएं अने एक शरीरने विषे अनंत जीव होय तेने साधारण कहीएं. साधारण ने प्रत्येकनुं विशेष लक्षण कहे छे–जेनी नसो, सांधा (संधि) अने पर्व गुप्त होय, तथा समान भंग थाय–भांगतां तांतणा न देखाय अने छेद्या थका फरीथी उगे ते साधारण कहेवाय; तेथी विपरीत लक्षण होय ते प्रत्येक कहेवाय छे. प्रत्येकना भेद कहे छे—१ वृक्षने वेलानी जाति, २ रींगणी तुलसी अने गुल्मनी जाति, ३ एरंडा आकडा ने धतुरानी जाति, ४ दाडम शेलडी ने केलानी जाति, ५ ध्रो केवडो दाभडो ने तरणानी जाति, ६ फूल–कमल ने नागरवेलनी जाति, ७ बोरडी केरडो ने कसेलानी जाति, ८ जुवार बाजरो मठ ने मकाइनी जाति, ९ तांजलजो सुवा मोघरी वालोर फलीनी जाति, ए आदि अनेक जातिनी प्रत्येक वनस्पति छे. तेमां संख्याता असंख्याता जीव कह्या छे. तेनी अवगाहना ज० अंगुलना असं० भागनी अने उ० एक हजार योजननी झाझेरी छे. तेनुं आयुष्य ज० अंत० अने उ० १० हजार वर्षनुं. हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहे छे—

१ लीलफूल ने सेवालनी जाति, २ गाजर–मूलानी जाति, ३ डुंगळी–लशणनी जाति, ४ आदु–गरमरनी जाति, ५ रतालु–पिंडालुनी जाति, ६ कंटालो थोर खुरसाणी कुंवार ने शेलरानी जाति, ७ मोथ ने लुणीनी जाति, ८ उगताअंकुरा ने कोमलफलनी जाति, तथा वज्रकंद सूरणकंद अने गलो आदि अनेक जातिनी साधा-

२ मूल, कंद, स्कंध, त्वचा, शाखा, प्रवाल, पत्र, पुष्प, फल अने बीज ने भांगवाथी समभग वगेरे लक्षण होय तो ए बधा अनंत जीवात्मक छे.

रण वनस्पति छे. कंदमूलना एक ककडामां (सोयना अग्रभागे रहे तेमां) अनंत जीव कह्या छे. तेनी अवगाहना अंगुलना असंख्यातमाभागनी छे. तेनुं आयुष्य ज० ने उ० अंतर्मुहूर्त्तनुं छे. ते बन्नेना मलीने कुल अठावीश लाख क्रोड छे तेनी दया पालीएतो अनंत मोक्षना सुख पामीए. हवे त्रसकायना चार भेद कहे छेः–१ बेइन्द्रिय, २ तेइंद्रिय, ३ चउरिंद्रिय अने ४ पंचेंद्रिय. बेइंद्रियना बे भेद–अपर्याप्ता ने पर्याप्ता. बेइंद्रिय कोने कहीएं? जेने काया (स्पर्शनेंद्रिय) ने जीभ (रसनेंद्रिय) होय तेने बेइंद्रिय कहीएं. तेना नाम–जळो, कीडा, पोरा, करमिया, सरमिया, अलसिया, लाट, शंख, छीप, कोडा अने चंदनक[१]आदि अनेक जातिना बेइंद्रिय जीवो छे. तेना कुल सात लाख क्रोड छे. अवगाहना ज० अंगुलना असंख्यातमा भागनी ने उ० बार योजननी छे. तेनुं आयुष्य ज० अंत० अने उ० बार वर्षनुं छे. तेनी दया पालीएं तो अनंतमोक्षना सुख पामीए तेइंद्रियना बे भेद अपर्या० ने पर्या० तेइंद्रिय कोने कहीए? जेने काया, जीभ अने नासिका (घ्राणेंद्रिय) होय तेने तेइंद्रिय कहीएं. तेना नाम—लीख, चांचड, मांकड, कीडी, कुंथुआ, माटला, धनेडा, इतडी, जवा, [illegible]ींगोडा, धीमेल, गधैया, कानखजुरा, मकोडाः इत्यादि घणी जातिना तेइंद्रियजीवो छे. तेना कुल आठ लाख क्रोड छे. अवगाहना ज० अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उ० त्रण गाउनी छे. तेनुं आयुष्य ज० अंत० अने उ० उगणपचास दिवसनुं छे. तेनी दया० ॥ चउरिंद्रियना बे भेद अप० ने पर्या०, चउरिंद्रिय कोने कहीए? जेने

१ ए शंखनी जाति छे अचित्त 'चंदनक' ने स्थापनाचार्य तरीके उपयोग अमूक गच्छवाला करे छे.

काया, जीभ, नासिका अने आंख (चक्षुःइन्द्रिय) होय तेने चउरिन्द्रिय कहीए तेना नाम मांखी, मसला, डांस, मच्छर, भमरा, तीड, पतंग, करोलिया, कंसारी, वीच्छु, खडमांकडी, बगाइ, धुलिया, फूदा, इत्यादि घणी जातिना चउरिंद्रिय जीवो छे. तेना कुल नवलाख क्रोड छे. अवगाहना ज० अंगुलना असंख्यातमा भागनी उ० एक योजननी छे. तेनुं आयुष्य ज० अंत० अने उ० छ मासनुं छे. तेनी दया० ॥ पंचेंद्रियना बे भेद अप० ने पर्या० पंचेंद्रिय ते कोने कहीए? जेने काया, जीभ, नासिका, आंख अने कान (श्रोत्रेन्द्रिय) होय तेने पंचेन्द्रिय कहीए. तेना चार भेद १ नारक, २ तिर्यच, ३ मनुष्य अने देव. तेमां चौद भेद नारकना, अडतालीस[1] भेद तिर्यचना, त्रणसे त्रण भेद मनुष्यना अने एकशो अठाणु भेद देवना. मनुष्यना चार भेद–१ पन्नर कर्मभूमिना मनुष्य, त्रीश अकर्म भूमिना मनुष्य, छप्पन अंतरद्वीपना मनुष्य अने चौद स्थानकना समूर्छिम मनुष्य. देवना चार भेद–१ भवनपति, २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिक. नारकना कुल पचीशलाख क्रोड छे. तिर्यचना[2] कुल साडत्रेपनलाख क्रोड छे. मनुष्यना कुल बार लाख क्रोड छे अने देवना कुल छवीश लाख क्रोड छे- अवगाहना नारकीनी ज० अंगु० असंख्या० छे अने उ० पांचसें धनुष्यनी छे. मनुष्यनी

---

१ तिर्यंच पंचेंद्रियना २० भेदमां एकेंद्रियादिना ८ भेद मेळवता ४८ थाय छे.

२ साडाबार लाख क्रोड जलचरना, १० लाख क्रोड थलचरना. १० लाख क्रोड उरपरिसर्पना, ९ लाख क्रोड भुजपरिसर्पना, १२ लाख क्रोड खेचरना, सर्व मली ५३॥ लाख क्रोड.

ज० अंगु० असंख्या० अने उ० त्रण गाउनी छे. तिर्यंचनी ज० अंगु० असंख्या० अने उ० एक हजार योजननी छे. देवनी ज० अंगु० असंख्या० अने उ० सात हाथनी छे. नारक अने देवनुं आयुष्य ज० दश हजार वर्षनुं अने उ० तेत्रीश सागरोपमनुं छे. तिर्यंच अने मनुष्यनुं आयुष्य ज० अंत० अने उ० त्रण पल्योपमनुं छे. तेनी दया पालीए तो अनंत मोक्षना सुख पामीए ॥ इति जीव विचार समास. ॥



अथ श्रीनवतत्त्व लिख्यतेः—हवे विवेकी सम्यक्दृष्टि जीवने, नवपदार्थ जेवा छे तेंवा–तथा रूप बुद्धि प्रमाणे गुरु–आम्नायथी धारवा. नव पदार्थ–(तत्त्व)ना नाम कहे छेः–१ जीवतत्त्व, २ अजीवतत्त्व, ३ पुण्यतत्त्व, ४ पापतत्त्व, ५ आश्रवतत्त्व, ६ संवरतत्त्व, ७ निर्जरातत्त्व, ८ बंधतत्त्व अने ९ मोक्षतत्त्व. जीवतत्त्व ते कोने कहीए? चैतन्यलक्षण, सदासउपयोगी, असंख्यात प्रदेशी सुखदुःखनो जाण–सुख दुःखनो जे वेदक तेने जीव कहीए. अजीवतत्त्व कोने कहीए? जे जड लक्षण–चैतन्यरहित तेने अजीव कहीए पुण्यतत्त्व कोने कहीए? आत्मानो[१] जे शुभ अध्यवसाय (परिणाम) ते पुण्य कहीए. पापतत्त्व ते कोने कहीए? जे आत्मानो अशुभ अध्यवसाय ते पाप कहीए. आश्रवतत्त्व ते कोने कहीए? अव्रत–अपच्चक्खाणवडे विषय–कषायने सेववाथी जीवरूप तलावने

१ प्रथम छपाएल थोकडामां पुण्य–पापनीजे व्याख्या करी छे ते कारण–कार्यरूप छे लाक्षणिक व्याख्या नथी.

विषे इन्द्रियरूप घडनाळाथी कर्म (पाप) रुप जे जलनो प्रवाह आवे तेने आश्रव कहीए. संवरतत्त्व कोने कहीए? जीवरूप तलावने विषे कर्म (पाप) रुप जलना प्रवाहने व्रत-पच्चक्खाणरुपद्वारथी रोकीए तेने संवर कहीए, निर्जरातत्त्व कोने कहीए? बार भेदे तपस्याए करी आत्माना प्रदेशथी देश थकी कर्मनुं निर्झरवुं-आत्मप्रदेशथी दूर थवुं तेने निर्जरा कहीए. बंधतत्त्व कोने कहीए? आत्माना प्रदेशो अने कर्मपुद्गलना दल, खीर-नीरनी परे, लोहपिंड-अग्निनी परे, एकरूप थइने बंधाय तेने बंध कहीए. मोक्षतत्त्व कोने कहीए? आत्माना सकल प्रदेशथी सर्व कर्मनुं छूटवुं, सर्वथा बंधथी मुक्त थवुं अने संपूर्ण कार्यनुं सिद्ध थवुं; तेने मोक्ष कहीए. ए जीवादिकनुं जीवपणुं वगेरे तेने तत्त्व कहीए. संग्रहनयनी अपेक्षाए सर्व जीवोनुं चैतन्यलक्षण एकज छे, माटे एक भेदे जीव कहीए. व्यवहार नयनी अपेक्षाए जीवना बे भेद छे १ त्रसने २ स्थावर, अथवा सिद्धने संसारी, तथा त्रण भेदे जीव कहीए १ स्त्रीवेद, २ पुरुषवेद ३ नपुंसक वेद. अथवा भवसिद्धिया, अभवसिद्धया,नो भवनो अभवसिद्धिया. तथा चार प्रकारना जीव कहीए-१ नारक, २ तिर्यच, ३ मनुष्य ४ देव. अथवा चक्षुदर्शनी, २ अचक्षुदर्शनी, ३ अवधिदर्शनी, केवलदर्शनी. तथा पांच प्रकारना जीव कहीए १ एकेंद्रिय,२ बेइंद्रिय,३ तेइंद्रिय, ४ चउरिंद्रिय,५ पंचेंद्रिय. अथवा १ सयोगी, २ मनयोगी,३ वचनयोगी,४ काययोगी,५ अयोगी. तथा छ प्रकारना जीव छे-१ पृथिवीकायिक,२ अप्कायिक,३ तेउकायिक, ४ वायुकायिक, ५ वनस्पतिकायिक, ६ त्रसकायिक. अथवा १ सकषायी, २ क्रोधकषायी, ३ मानकषायी, ४

---

१ आश्रवनुं लक्षण व्युत्पत्यर्थ रूपे छे, तेमज संवर वगेरेनुं समजवुं. २ 'एगे आया' ठाणांगसूत्र.

६ अकषायी. तथा सात प्रकारना जीव छे-१ नारक २ तिर्यंच, ३ तिर्यंचणी, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यणी, ६ देव, ७ देवी.आठ प्रकारना जीव छे-१ सलेशी, २ कृष्णलेशी, ३ नीललेशी, ४ कापुतलेशी, ५ तेजुलेशी, ६ पद्मलेशी ७ शुक्ललेशी, ८ अलेशी. तथा नव प्रकारना जीव छे-१ पृथवीका०, २ अप्का०, ३ तेउका०, ४ वायुका०, ५ वनस्पतिका०, ६ बेइंद्रिय, ७ तेइंद्रिय, ८ चउरिन्द्रिय, ९ पंचेंद्रिय. तथा दश प्रकारना जीव छे-एकेंद्रियथी यावत् पंचेन्द्रिय ए पांचना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता. तथा इग्यार प्रकारना जीव छे-१ एकेंद्रिय, २ वेइंद्रिय, ३ तेइंद्रिय, ४ चउरिंद्रिय, ५ नारक, ६ तिर्यंच, ७ मनुष्य, ८ भवनपति, ९ व्यंतर, १० ज्योतिष्क ११ वैमानिक. तथा वार प्रकारना जीव छेः—पृथिवीकायिक आदि छकायना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता. तथा तेर प्रकारना जीव छे-कृष्णलेशीथी यावत् शुक्ललेशी, ए छना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता एवं वार. अने १३ अलेशी. तथा चौद प्रकारना जीव छे-१ सूक्ष्म एकेंद्रिय, २ बादर एकेंद्रिय, ३ वेइंद्रिय, ४ तेइंद्रिय, ५ चउरिंद्रिय, ६ असंज्ञीपंचेंद्रिय, ७ संज्ञीपंचेंद्रिय ए सातना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता. हवे विस्तारथी जीवना पांचसें त्रेसठ भेद कहे छे-त्रणसोने त्रण भेद मनुष्यना, एकसो अठाणु भेद देवना, अडतालीश भेद तिर्यंचना अने चौद भेद नारकना एवं पांचसो त्रेसठ भेद थया. हवे त्रणसो त्रण भेद मनुष्यना, कहे छेः—पन्नर कर्मभूमि, त्रीश अकर्मभूमि अने छप्पन अंतरद्वीप. एवं एकसोने एक क्षेत्रना. गर्भज मनुष्यना अपर्याप्ता अने पर्याप्ता. एवं बसोने वे अने एकसोने एक क्षेत्रना सम्मूर्छिम मनुष्यना अपर्याप्ता सर्व मलीने त्रणसो त्रण भेद मनुष्यना छे. कर्मभूमि ते कोने कहीए? असि,

मषी अने कृषि ए त्रण प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेने कर्मभूमि कहीए. ते कर्मभूमिना पन्नरक्षेत्र छे, पांच भरत पांच ऐरावत अने पांच महाविदेह. ए कर्मभूमिना क्षेत्रो क्यां छे? एक लाख योजननो जंबूद्वीप छे, तेमां भरत, १ एरावत अने १ महाविदेह छे. तेने फरतो बे लाख योजननो लवणसमुद्र छे, तेने फरतो चार लाख योजननो धातकीखंड द्वीप छे, तेमां २ भरत २ एरावत अने २ महाविदेह छे. तेने फरतो आठ लाख योजननो कालोदधि समुद्र छे, तेने फरतो आठ लाख योजननो अर्द्धपुष्करद्वीप छे, तेमां २ भरत, २ एरावत अने बे महाविदेह छे. ए क्षेत्रोमां रहेनार पन्नर कर्मभूमिना मनुष्य कह्या. हवे अकर्मभूमि ते कोने कहीए? त्रण प्रकारना कर्म रहित अने दश प्रकारना कल्पवृक्षवडे जीवे तेने अकर्मभूमि कहीए. ते केटला छे? ५ हैमवत, ५ हैरण्यवत, ५ हरिवर्ष, ५ रम्यकवर्ष, ५ देवकुरु, अने ५ उत्तरकुरु एवं त्रीश छे. जंबूद्वीपमां १ हैमवत, १ हैरण्यवत, १ हरिवर्ष १ रम्यकवर्ष, १ देवकुरु ने १ उत्तरकुरु, ए छ क्षेत्र छे. धातकीखंडमां बबे जाणवा. तेमज अर्धपुष्करद्वीपमां पण बबे जाणवा. एवं त्रीश अकर्मभूमिना मनुष्यो कह्या. हवे छप्पन अंतरद्वीपना मनुष्यो कहे छेः-जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनी मर्यादानो करनार चूलहिमवंत पर्वत छे, ते पीळा सोनामय छे. ते एकसो योजननो उंचो, एकसो गाउनो उंडो, एक हजार बावन योजन ने बार कलानो पहोळो छे अने चोवीस हजार नवसे बत्रीश योजननो लांबो छे. तेनी पूर्व-पश्चिमने छेडे बबे दाढा नीकळी छे. एकेकी

१ एक योजननो उगुणीशमो भाग ते 'कला'

दाढा, चोरासीसें चोरासीसें योजननी झाझेरी लांबी छे; ते एकेकी दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपा छे. ते अंतरद्वीपा क्यां छे? जगतीना कोटथी त्रणसें योजन लवणसमुद्रमां जइए त्यारे पहेलो अंतरद्वीप आवे ते त्रण-सें योजननो लांबो-पहोळो छे. त्यांथी चारसे योजन ल० स० मां जइए त्यारे बीजो अंतरद्वीप आवे ते चारसो योजननो लांबो पहोळो छे. ए प्रमाणे पांचसो, छसो,सातसो,आठसो अने नवसो योजन लवण स० मां जइए त्यारे अनुक्रमे त्रीजाथी मांडी यावत् नवमो अंतरद्वीप आवे ते त्रणसो योजनथी यावत् नवसो योजनना लांबा-पहोळा छे, एवं सात चोकु अठावीस अंतरद्वीप जाणवा. एरावतक्षेत्रनी मर्यादानो करनार शिखरी पर्वत छे, ते चुल हिमवंत सरखो जाणवो, त्यां पण अठावीस अंतरद्वीपा छे. बन्ने मलीने छपन अंतरद्वीपा कह्या. अंतरद्वीप ते शुं? हेठे समुद्र छे उपर अधर दाढा छे तेमां जे द्वीप छे तेने अंतरद्वीप कहीए. तेमां मनुष्यो रहे छे, माटे अंतरद्वीपना मनुष्य कहीए. हवे एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य, चौद स्थानकमां उपजे छे ते कहे छेः-१ उच्चारे सुवा-ते विष्टामां उपजे, २ पासवणेसुवा-ते मुत्रमां उ०, ३ खेलेसुवा-ते कफ,बळखा वगेरेमां उ०, ४ सिंघाणेसुवा-ते लींट-सेडामां उ०, ५ वंतेसुवा-ते वमनमां उ०, ६ पित्तेसुवा-ते नीला-पीला पित्तमां उ०, ७ पुइएसुवा-ते परुमां उ०,८ सोणिएसुवा-ते रुधिरमां उ०,९ सुक्केसुवा-ते वीर्यमां उ०, १० सुक्कपुग्गल परिसाडिएसुवा-ते वीर्यादिकना पुद्गलो फरीथी जे भीनां थाय तेमां उ०, ११ विगय जीवकलेवरेसुवा-ते

२ वीर्यादिकना पुद्गलो सडे तेमांपण समुर्च्छिम उपजे.

जीव रहित मनुष्यादिना कलेवरमां उ०, १२ इत्थी—पुरिससंजोगे सुवा-ते स्त्री-पुरुषना संयोगमां उ०, १३ नगर-निधमणेसुवा-ते नगरनी खाळोमां उ०, १४ सव्वेसुचेव असुइ ठाणे सुवा-ते सर्व (मनुष्यादि संबंधी) अशुचि स्थानकोमां उपजे. एवं एकसोने एक क्षेत्रना संमुर्च्छिम मनुष्यना अपर्याप्ता, सर्व मलीने त्रणसें त्रण भेद मनुष्यना कह्या. हवे एकसो अठाणु भेद देवना कहे छे— तेमां दश भवनपतिना नाम १ असुरकुमार, २ नागकु०, ३ सुवर्णकु०, ४ विद्युतकु०, ५ अग्निकु०, ६ द्वीपकु०, ७ उदधिकु०, ८ दिशाकु०, ९ पवनकु०, १० थणिंतकु०, पन्नर परमाधामीना नाम—१ अंब, २ अंबरीष, ३ श्याम, ४ शबल, ५ रौद्र, ६ महारौद्र, ७ काल, ८ महाकाल, ९ असिपत्र, १० धनुष्य, ११ कुंभ १२ वालुक, १३ वैतरणी, १४ खरस्वर, १५ महाघोष, सोल व्यंतरना नाम—१ पिशाचि, २ भूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग, ८ गांधर्व, ९ अण-पन्नी, १० पणपन्नि, ११ इसिवाइ, १२ भूयवाइ, १३ कंदिय, १४ महाकंदिय, १५ कोहंडिय, १६ पयंग. दश जृंभकाना नाम—१ अन्नजृंभका, २ पानजृं०, ३ वत्थजृं०, ४ लयणजृं०, ५ सयणजृं०, ६ पुप्फजृं०, ७ फलजृं०, ८ पुप्फफलजृं०, ९ विज्जुजृं०, १० अवियत्तजृंभका. दश ज्योतिष्कना नाम—चंद्रमा, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र,

---

२ सुवर्णकु० पण नाम छे. ३ स्तनित कु० ४ लयण=गृह, ५ विद्याजृं०, जंभृकदेवोना जे जे नामो छे ते ते वस्तुओनी हानी वृद्धि सरस के नीरस करनारा .होय छे अने श्राप के अनुग्रहने पण करनारा छे. ९९ जातिना नामो केटलाक प्राकृत भाषामा अने गुजराती भाषामां लखेला छे. ६ नव ग्रैवेयकना नाम पन्नवणामां हिठिम हिठिम इत्यादि नामो छे.

५ तारा, ए अढी द्वीपमां छे ते चल छे अने अढी द्वीपथी बहार छे ते स्थिर छे. त्रण किल्विषिकनानामः—त्रण पलिया, २ त्रणसागरिया, ३ तेरसागरिया. नव लोकांतिकना नाम–१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ अरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ आग्नेय, ९ अरिष्टाभ. बार देवलोकनानामः–१ सुधर्मदेवलोक, २ इशान दे०, ३ सनत्कुमार दे०, ४ माहेंद्र, दे० ५ ब्रह्म दे०, ६ लांतक दे०, ७ महाशुक्र दे०, ८ सहसार दे०, ९ आनत दे०, १० प्राणत दे०, ११ आरण दे०, १२ अच्युत देवलोक. नव ग्रैवेयेकना नामः–१ भद्र, २ सुभद्र, ३ सुजात, ४ सुमानस, ५ प्रियदर्शन, ६ सुदर्शन, ७ आमोह, ८ सुप्रतिबद्ध, ९ यशोधर. पांच अनुत्तर विमाननामः–१ विजय, २ वैजयंत, ३ जयंत, ४ अपराजित, ५ सर्वार्थसिद्ध. ए नेवाणु जातिना देवना अप० अने पर्याप्ता. एवं एकसोने अठाणु. अडतालीश भेद तीर्यंचना कहे छेः–१ पृथिवीकायिक, २ अप्का०, ३ तेउका०, ४ वायुका०, ए चार सूक्ष्म ने बादर ए आठना अपर्या० ने पर्या० एवं सोळ, वनस्पतिका० ना त्रण भेद सूक्ष्म, प्रत्येक अने साधारण, ए त्रणना अपर्या० ने पर्या० एवं छ मलीने बावीश भेद एकेंद्रियना बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चउरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रियना अपर्या० ने पर्या० ए छ मलीने अठावीश. जलचर, थलचर, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचर ए पांच समुर्च्छिम अने गर्भज, ए दशना अपर्या० ने पर्याप्ता. सर्वमली अडतालीश भेद तिर्यंचना. चौदभेद नारकना कहे छेः–सात नरकना नाम कहे छेः–१ घमा, २ वंशा, ३ शिला, ४ अंजना, ५

१ तथा २ नोट १२मां पेजमां छे त्यांथी जोइ लेवी. ३ नरकमां उत्पन्न थाय ते नारक' कहेवाय आधाराधेय संबंधथी नारकना भेद कहेवाथी नरकना भेद समजवा, 'नरक' आधार छे अने नारक [जीव] आधेय छे. 'नारकी' शब्द अशुद्ध छे.

रिष्टा, ६ मघा, ७ माघवती. तेना सात गोत्र कहे छेः-१ रत्नप्रभा, २ शर्करा प्र०, ३ वालु प्र० , ४ पंक प्र०, ५ धूम प्र०, ६ तमःप्र०, ७ महातम प्रभा. ए सातना अपर्या० ने पर्याप्ता एवं चौद. सर्व मलीने पांचसोने त्रेसठ भेद जीवतत्त्वना कह्या. इति जीव तत्त्व समाप्त.

हवे अजीव तत्त्वना भेद कहे छेः-धर्मास्तिकायनो स्कंध, देश अने प्रदेश. अधर्मास्तिकायनो स्कंध, देश अने प्रदेश. आकाशास्तिकायना स्कंध, देश अने प्रदेश अने अद्धासमय; ए दश भेद अरूपी अजीवना कह्या. रुपी अजीवना चार भेद कहे छेः-पुद्गलास्तिकायनो स्कंध, देश, प्रदेश अने परमाणु; ए चार मलीने चौद भेद अजीवना छे. हवे विस्तारथी पांचसो साठ भेद कहे छेः-प्रथम त्रीश भेद अरुपी अजीवना कहे छेः-१ धर्मास्तिकाय १ द्रव्यथी एक, २ क्षेत्रथी आखा लोक प्रमाणे, ३ कालथी अनादि अनंत, ४ भावथी वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श रहित-अमूर्त्त, ५ गुणथी चलण सहाय. अधर्मा० १ द्रव्यथी एक, २ क्षेत्रथी आखा लोक प्रमाणे, ३ कालथी अनादि अनंत, ४ भावथी वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श रहित-अमूर्त्त, ५ गुणथी स्थिर सहाय. आकाशा० १ द्रव्यथी एक, २ क्षेत्रथी लोकालोक प्रमाणे ३ कालथी अनादि अनंत, ४ भावथी वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श रहित-अमूर्त्त, ५ गुणथी अवगाहनादान. काल १ द्रव्यथी अनंत, २ क्षेत्रथी अढी द्वीप प्रमाणे, ३ कालथी अनादि अनंत, ४ भावथी वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श रहित-अमूर्त्त, ५ गुणथी वर्तना लक्षण. ए वीश अने दश पूर्वे कह्या. हवे पांचसो त्रीश भेद रुपी अजीवना कहे छेः- पांच वर्ण-१ काळो, २ नीलो, ३ रातो ४ पीळो ने धोळो. एकेक वर्णमां वीश भेद होय ते कहे छेः—

२ गंध, ५ रस, ५ संठाण अने ८ स्पर्श. एवं वीशनै पांच वर्णथी गुणतां एकशो थाय. हवे बे गंध–सुरभिगंध ने दुरभिगंध. एकेका गंधमां त्रेवीश भेद होय, ते कहे छे:–५ वर्ण, ५ रस, ५ संठाण अने आठ स्पर्श. एवं त्रेवीश ने बे गंधथी गुणतां ४६ थाय. हवे पांच रस–१ तीखो, २ कडवो, ३ कसायेलो, ४ खाटो, ने ५ मीठो. एकेका रसमां वीश भेद होय ते ५ वर्ण, २ गंध, ५ संठाण अने ८ स्पर्श. एवं वीशने पांच रसथी गुणतां एकसो थाय. हवे पांच संठाण–१ परिमंडल सं० २ वृत्त सं०, ३ त्र्यंश सं०,४ चउरंश सं० ५ आयत संठाण.एकेका संठाणमां वीश भेद होय ते ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, अने ८ स्पर्श. एवं वीश ने पांच संठाणथी गुणतां एकसो थाय. हवे आठ स्पर्श–१ कर्कश, २ सुंहालो, ३ भारी, ४ हलको, ५ टाढो, ६ उनो, ७ लुखो, ८ चीकणो. एकेका स्पर्शमां त्रेवीश भेद होय–पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, पांच संठाण,छ स्पर्श. ए त्रेवीश होय, कारण? कर्कशमां कर्कश ने सुंहालो ए बे वर्जवा; एम बे बे स्पर्श दरेकमां वर्जवा. ए त्रेवीशने आठ स्पर्शथी गुणतां १८४ थाय. ते सर्व मलीने पांचसो साठ भेद अजीव तत्त्वना जाणवा. इति अजीव तत्त्व समाप्त.

हवे पुण्य तत्त्व कहे छे:—नव प्रकारे पुण्य उपजे (थाय) ते कहे छे—१ अन्ने पुन्ने २ पाण पु०, ३ लयण पु०,

---

१ मृदु २, गुरू ३, लघु ४, शीत ५, उष्ण ६, लुक्ष ७, स्निग्ध, ए नाम शुध्ध छे, २ पुन्यना नवकरणोमां कार्यनो उपचार करवाथी पुन्यना पण नव प्रकारे कहेल छे. अन्नादिनु दान करवाथी–आपवाथी पुन्य थाय छे. दुःखी दीन अने अनाथ वगेरेने अनुकंपा बुद्धिए आपवाथी पुन्य थाय छे. ३ लयण=गृह.

४ सयण पु०,५ वत्थ पु०,६ मत्त पु०,७, वयण पु०, ८ कायपु०,९ नमुक्कार पुन्ने, तेना शुभ फल ४२ प्रकारे भोगवाय ते कहे छेः-१ सातावेदनीय,२ उच्च गोत्र, ३ मनुष्य-गति, ४ मनुष्यानुपूर्वी,५ देवगति,६ देवानुपूर्वी, ७ पंचेन्द्रियजाति, ८ औदारिक शरीर,९ वैक्रिय श०,१० आहारक श०११ तैजस श०, १२ कार्मण श०,१३ औदा०ना अंगोपांग, १४ वैक्रे०ना अंगो० १५ आहारकना अंगो० १६ वज्रऋषभनाराचसंघयण, १७ समचउरंस संठाण, १८ शुभवर्ण, १९ शुभ गंध, २० शुभरस, २१ शुभस्पर्श, २२ अगुरू लघु नाम, २३ पराघात नाम, २४ उच्छ्वास नाम,२५ आतापनाम,२६ उद्योत नाम, २७ शुभविहायोगति,२८ निर्माणनाम,२९ त्रसनाम, ३० बादरनाम, ३१ पर्याप्तनाम, ३२ प्रत्येकनाम ३३ स्थिरनाम, ३४ शुभनाम, ३५ सौभाग्य नाम, ३६ सुस्वरनाम, ३७ आदेयनाम, ३८ यशोकीर्त्ति नाम, ३९ देवनुं आयुष्य, ४० मनुष्यनुं आयुष्य, ४१ तिर्यंचनुं आयुष्य, ४२ तीर्थकर नाम. ए बेतालीश भेद पुन्यना जाणवा. इति पुन्य तत्त्व समाप्त.

हवे पाप तत्त्व कहे छेः-अढार प्रकारे पाप उत्पन्न थाय ते कहे छे-१ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ, १० राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अभ्याख्यान, १४ पैशुन्य, १५ परपरिवाद, १६ रति-अरति, १७ मायामृषावाद, १८ मिथ्या दर्शनशल्य. तेना अशुभ फल ८२ प्रकारे भोगवाय तेना नाम कहे छेः—१ मति ज्ञानावरणीय, २ श्रुत ज्ञानावरणीय, ३ अवधि ज्ञानावरणीय,

---

२ शुभ चालवानी गतिः=हसके हाथीनी चाले चालवुं ते.

४ मनःपर्यायज्ञाना०, ५ केवलज्ञाना०, ६ दानांतराय, ७ लाभांतराय, ८ भोगांतराय, ९ उपभोगांतराय, १० वीर्यांतर, ११ चक्षुदर्शना०, १२ अचक्षुदर्शना०, १३ अवधिदर्शना०, १४ केवलदर्शना०, १५ निद्रा, निद्रानिद्रा, १७ प्रचला, १८ प्रचलाप्रचला, १९ थिणद्धिनिद्रा, २० नीचगोत्र, २१ असातावेदनी, २२ मिथ्यात्वमोहनीय, २३ स्थावरनाम, २४ सूक्ष्मनाम, २५ अपर्याप्त नाम, २६ साधारण नाम, २७ अस्थिर नाम, २८ अशुभ नाम, २९ दौर्भाग्य नाम, ३० दुस्वर नाम, ३१ अनादेय नाम, ३२ अयशोकीर्त्ति नाम, ३३ नरक गति नाम, ३४ नरकानुपूर्वी, ३५ नरकायुष्य, ३६ अनंतानुबंधी क्रोध, ३७ अ० मान, ३८ अ० माया, ३९ अ० लोभ, ४० अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध ४१ अप्र० मान, ४२ अप्र० माया, ४३ अप्र० लोभ, ४४ प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, ४५ प्र० मान, ४६ प्र० माया, ४७ प्र० लोभ, ४८ संज्वलननो क्रोध, ४९ सं० मान, ५० सं० माया, ५१ सं० लोभ, ५२ हास्य, ५३ रति, ५४ अरति, ५५ भय, ५६ शोक, ५७ दुगंच्छा, ५८ स्त्री वेद, ५९ पुरुष वेद, ६० नपुंसक वेद, ६१ तिर्यंच गति, ६२ तिर्यंचानुपूर्वी, ६३ एकेंद्रिय जाति, ६४ बेइंद्रिय जाति, ६५ तेइंद्रिय जाति, ६६ चउरिंद्रिय जाति, ६७ अशुभ चालवानी जाति, ६८ उपघात नाम, ६९ अशुभ वर्ण, ७० अशुभ गंध, ७१ अशुभ रस, ७२ अशुभ स्पर्श, ७३

---

१ तिर्यंचनी गति अने अनुपूर्वी ए बन्नेनी उ० स्थितिनो बध अशुभ अध्यवसायथी थाय छे अने तिर्यंचनु उ० आयुष्यबंध, शुभ अध्यवसायथी थाय छे माटे तेने पुण्य प्रकृतिमां गणेल छे. नरकायुष्य सिवाय त्रण गतिनी उ० स्थिति, विशुद्ध अध्यवसायथी बंधाय छे. गति अने अनुपूर्वी ए बे नाम कर्मनी प्रकृति छे अने आयुष्य आयुष्क कर्मनी प्रकृति छे.

रुषभनाराच सं० ७४ नाराच सं०, ७५ अर्धनाराच सं, ७६ किलिका सं०, ७७ छेवट्ठु सं०, ७८ निग्गोह परिमंडल संठाण, ७९ सादिसं०, ८० वामन सं०, ८१ कुब्ज सं०, ८२ हुंड संठाण, ए ८२ भेद पापतत्त्वना जाणवा. इति पाप तत्त्व समाप्त.

हवे आश्रव तत्त्वना सामान्य प्रकारे वीश भेद कहे छेः–१ मिथ्यात्व ते आश्रव, २ अव्रत ते आ०, ३ प्रमाद ते आ०, ४ कषाय ते आ० ५ अशुभयोग ते आ०, ६ प्राणातिपात ते आ० ७ मृषावाद ते आ० ८ अदत्तादान ते आ० ९ मैथुन ते आ० १० परिग्रह ते आ० ११ श्रोत्रेंद्रिय–असंवरे ते आ०, १२ चक्षु इंद्रिय असं० ते आ० १३ घ्राणेंद्रिय–असं० ते आ०, १४ रसनेंद्रिय–असं० ते आ०, १५ स्पर्शनेंद्रिय–असं० ते आ०, १६ मन–असं० ते आ०, १७ वचन–असं० ते आ०, १८ काय–असं० ते आ०, १९ भंडोपकरण– उपधि, जेम तेम लीए मूके ते आ० २० सुचिं कुसग्ग असं० ते आ०, हवे विस्तारथी ४२ भेद आश्रवना कहे छेः–प्राणातिपातादि पांच आश्रव, पांच इंद्रियनो असंवर ए दश, चार कषाय अने त्रण अशुभयोग ए सत्तर अने पंचीश क्रिया–१ कायिकी क्रिया, २ अधिकरणकी, ३ पाउसिया, ४ परितावणिया, ५ पाणाइवाइया, ६ आरंभिया, ७ परिग्गहिया, ८ मायावत्तिया, ९ अपच्चाक्खाणावत्तिया, १० मिच्छादंसणवत्तिया, ११ दिट्ठिया, १२ पुट्ठिया, १३

---

१ सोय वगेरे शस्त्र साचवी न राखवाथी आश्रव थाय छे. २ क्रियानो करनार जीव होवाथी आश्रवने नय शैलीथी जीव कहीए अने क्रिया जन्य कर्म, पुद्गल होवाथी अजीव पण कहीए. आश्रवना कारण भेदथी आश्रवना भेदो थाय छे.

पाडुचिया, १४ सामंतोवणिया, १५ नेसत्थिया, १६ सहत्थिया, १७ आणवणिया, १८ विदारणिया, १९ अणाभोगिया, २० अण वकंखवत्तिया, २१ अणापउगी, २२ सामुदाणी, २३ पेज्जवत्तिया, २४ दोसवत्तिया, २५, इरियावहिया किरिया. ए पचीश अने प्रथमना सत्तर मेळवतां ४२ भेद आश्रव तत्त्वना जाणवा. इति आश्रव तत्त्व समाप्त.

हवे सामान्य प्रकारे संवरना वीश भेद कहे छेः-१ समकित ते संवर, २ व्रत-पच्चक्खाण ते सं०, ३ अप्रमाद ते सं०. ४ अकषाय ते सं०, ५ शुभ[1] योग ते सं०, ६ जीव-दया ते सं०, ७ सत्य वचन ते सं०, ८ अदत्त-त्यागते सं०, ९ शीयल ते सं०, १० अपरिग्रह ते सं०, पांच इंद्रिय अने त्रण अशुभ योगनुं संवरवुं ते सं० एवं १८, १९ भंडोपगरण अने उपधि. यतनाए लीए मूके ते सं० २० सुचि[2] कुसग्ग न करे ते सं० हवे विशेष भेद ५७ कहे छेः—पांच समिति अने त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माताने पालवी अने बावीश परिषहने जीतवा, तेना नामः—१ क्षुधानो परिषह, २ तृषानो प०, ३ टाढनो प०, ४ तापनो प०, दंसमशकनो प०, ६ अचेलनो प०, ७ अरतिनो प०, ८ स्त्रीनो प०, ९ चर्यानो[3] प०, १० बेसवानो प०, ११ शय्यानो, १२ आक्रोशनो प०, १३ वधनो प०, १४ याचनानो प०, १५ अलाभनो प०, १६ रोगनो प०, १७ तृणस्पर्शनो प०, १८ मलनो प०, १९

---

१ व्यवहार नयथी शुभ योग संवर कहेवाय छे, निश्चय नयथी ते आश्रव छे. २ सोय वगेरे शस्त्रने संभारी राखवा-हिंसाना निमित्त न थाय तो संवर नीपजे. ३ चालवानो.

सत्कार–पुरस्कारनो प०, २० प्रज्ञानो प०, २१ अज्ञाननो प०, २२ दर्शन परिषह एवं ३० अने दश यति धर्मने आरधवो, तेना नामः—१ खंति, २ मुत्ति, ३ अज्जवे, ४ मद्दवे, ५ लाघवे, ६ सच्चे, ७ संजमे, ८ तवे, ९ चियाए, १० बंभचरे, एवं चालीश. अने बार भावना भाववी. तेना नामः—अनित्य भावना, २ अशरण भा० ३ संसार भा०, ४ एकत्व भा०, ५ अन्यत्व भा०, ६ अशुचि भा०, ७ आश्रव भा०, ८ संवर भा०, ९ निर्ज्जरा भा०, १० लोक भा०, १० बोधि दुर्लभ भा०, १२ धर्म दुर्लभ भावना, एवं बावन. अने पांच चारित्र आदरवा तेना नामः—सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चा०, ३ परिहार विशुद्ध चा०, ४ सूक्ष्म संपराय चा०, ५ यथाख्यात चारित्र, एवं ५७ भेद संवरतत्त्वना जाणवा. इति संवर तत्त्व समाप्त.

हवे निर्ज्जरा तत्त्वना बार प्रकार कहे छेः—१ अनशन, २ उणोदरिका, ३ वृत्तिसंक्षेप, ४ रसपरित्याग, ५ काय क्लेश, ६ संलीनता, ए छ बाह्य तप कह्या. छ अभ्यंतर तप कहें छेः—१ प्रायश्चित्त, २ विनय ३ वैयावच्च, ४ सज्झाय, ५ ध्यान, ६ कायोत्सर्ग. ए बार प्रकारना तपथी निर्ज्जरा थाय छे. इति निर्ज्जरा तत्त्व समाप्त.

हवे बंध तत्त्वना चार भेद कहे छेः—१ प्रकृतिबंध, २ स्थितिबंध. ३ अनुभाव, ४ प्रदेशबंध, प्रकृतिबंध ते

---

१ क्षमा. २ निर्लोभता. ३ सरलता. ४ निरभिमानता–कोमलता. ५ लघुता. ६ सत्य. ७ त्याग–अकिंचनता. ८ अध्यवसाय भेदथी संवरना असंख्य भेद थाय. कारण भेदने लइने सत्तावन भेद संवरना थाय छे, ए व्यवहार नयथी. निश्चय नयथी परभावनो त्याग ते संवर. ९ प्रकृतिबंध, अने प्रदेशबध योगथी थाय छे अने स्थितिबंध ने अनुभावबंध कषायथी थाय छे. अनुभावने अनुभागगंध अथवा रसबध पण कहेवाय छे.

कर्मनो स्वभाव अथवा परिणाम, जे कर्मनी जेटली स्थिति होय छे ते स्थितिबंध, कर्मनो जे तीव्रमंदादि रस ते अनुभावबंध अने कर्मपुद्गलना दल ते प्रदेशबंध. आ चार प्रकारना बंधनुं स्वरूप मोदकना दृष्टांतथी कहे छे. जेम कोइ मोदक, घणा प्रकारना द्रव्यना संयोगवडे बनावेल ते (लाडु)मां वायुने पित्तने के कफने हरवानो स्वभाव होय छे, तेम कर्मप्रकृतिमां कोइनो ज्ञानने आवरण करवानो, कोइनो दर्शनने आवरण करवानो स्वभाव होय छे, वली तेज मोदक, एक पक्ष, मास के बे मास सुधी रहे, तेम कोइ कर्मप्रकृति बीश त्रीश के सित्तेर कोडाकोडी सुधी रहे ते स्थितिबंध, ते मोदक अल्प के तीव्र, कडवो के मीठो होय तेम कर्मप्रकृति पण मंद के तीव्र, शुभ के अशुभ रसवाली होय ते अनुभावबंध, तेज मोदक कोइ अल्पदलवालुं के बहुदलवालुं होय, तेम कोइ पण कर्मप्रकृति अल्पदल के बहुदलवाली होय ते प्रदेशबंध कहेवाय छे. ए चार प्रकारनो कर्मबंध जाणवो. इति बंधतत्त्व समाप्त.

हवे मोक्षतत्त्व कहे छेः—सर्व कर्मथी मुक्त थइने सिद्ध पदने प्राप्त करवुं, ते सिद्धना पन्नर भेद छेः—१ तीर्थ सिद्ध, २ अतीर्थ सि०, ३ तीर्थंकर सि०, ४ अतीर्थंकर सि०, ५ गृहस्थलिंग सि०, ६ अन्यलिंग सि०, ७ स्वलिंग सि०, ८ स्त्रीलिंग सि०, ९ पुरुष लिंग सि०, १० नपुंसक लिंग सि०, ११ स्वयंबुद्ध सि०, १२ प्रत्येकबुद्ध सि०, १३ बुद्धबोधित सि०, १४ एक सिद्ध, १५ अनेक सिद्ध. जीव चार कारणे मोक्ष जाय—ज्ञान, दर्शन, चारित्र

१ कषायनी तरतमता कषायना अध्यवसायथी होय छे, एकेक कषाय-स्थानके अध्यवसाय-स्थानक असंख्य होय छे.

अने तपवडे. हवे मोक्षतत्त्व उपर नव द्वार उतारे छे:-१ सतपद-प्ररूपणा ते मोक्षगति पूर्व काले हती, हमणा छे अने आगामिकाले पण हशे; ते छती 'अस्ति' छे पण आकाशना फूलनीपरे 'नास्ति' नथी.२ द्रव्य प्रमाण-ते सिद्ध अनंत छे, ते पांचमे अनंते छे. अभव्यजीवथी अनंतगुण अधिक छे, वनस्पतिनाजीव वर्जीने त्रेवीश दंडकथी सिद्धना जीव अनंत गुण अधिक छे. ३ क्षेत्रद्वार—ते सिद्धशिला प्रमाण, सिद्धशिला ४५ लाखयोजननी लांबी-पहोळी छे अने त्रिगुणी झाझेरी परिधि छे.तेना एक गाउना छट्ठे भागे-त्रणसेंतेत्रीश धनुष्य अने बत्रीश अंगुल उंचपणे लोकांते रह्या छे.४ स्पर्शनाद्वार-ते सिद्धक्षेत्रथी कांइक सिद्धनी स्पर्शना अधिक छे.५ कालद्वार-ते एक सिद्ध आश्रयी सादिअनंत अने सर्व सिद्ध आश्रयी अनादिअनंत छे,६ अंतरद्वार-ते फरीने सिद्धने संसारमां अवतरवुं नथी अथवा ज्यां एक सिद्ध छे त्यां अनेक सिद्ध छे अने अनेक सिद्ध छे त्यां एक सिद्ध छे. एटले सिद्ध सिद्धमां अंतर नथी; ज्योतिमां ज्योति समाइ गयेल छे. ७ भागद्वार—ते सघला जीवना अनंतमे भागे सिद्धना जीव छे, लोकना असंख्यातमे भागे छे. ८ भावद्वार-ते सिद्धमां क्षायकभावे केवलज्ञान, केवलदर्शन अने क्षायकसमकित छे अने परिणामिक भावे जीवपणुं जाणवुं. ९ अल्प बहुत्वद्वार-ते सर्वथी थोडा नपुंसक

---

१ जे एक पद होय ते शुद्ध पद कहेवाय, मोक्ष एक पद छे माटे 'सत्' छे. शश-शृंगादि बे पदनु निर्धार न होय-असत्-पण होय. २ ज्यारे (कोइ पग समये) केवली प्रभुने पूछवामां आवे त्यारे एकज जवाब मळे के 'सर्व सिद्धना जीव' एक निगोदना जीवोथी अनंतमे भागे छे. ३ सिद्ध पण जीव छे, कारण? अनंत ज्ञान, अनत दर्शन, अनंत अव्याबाध सुख अने अनंत वीर्य, ए चार भाववडे सदा जीवे छे: माटे सिद्धमां जीवपणु कह्युं छे.

सिद्ध, तेथी स्त्री सिद्ध संख्यातगुणा, तेथी पुरुष सिद्ध संख्यात गुणा छे. एक समयमां नपुंसक उत्कृष्ट १० सिद्ध थाय, स्त्री २० सिद्ध थाय अने पुरुष १०८ सिद्ध थाय: हवे मार्गणा कहे छे:—१ त्रस पणे, २ बादर पणे, ३ संज्ञि पंचेंद्रियपणे, ४ वज्ररुषभनाराच सं० पणे, ५ शुक्लध्यान पणे, ६ मनुष्य गति पणे, ७ क्षायक समकितवालो, ८ यथाख्यात चारित्रवालो, ९ पंडितवीर्यवान्, १० केवलज्ञानी ११ केवलदर्शनी, १२ भव्य सिद्धिक, १३ परम शुक्लेशी, १४ चरम शरीरी, ए चौद बोलनो धणी होय ते मोक्षे जाय. जघन्य बे हाथनी अवगाहनावाळो अने उ० पांचसें धनुष्यनी अव० वाळो, जघन्य नव वर्षनो अने उ० पूर्व क्रोडना आयुष्यवाळो; ते पण कर्म भूमिनो होय अने त्रीजा चोथा आरानो जन्मेलो होय ते मोक्षे जाय. इति नवतत्त्व समाप्त.

अथ दंडक लिख्यते—शरीरोगाहण संघ,-यण संठाणं कसाय तह सन्नाओ, लेसिंदिय समुग्घाओ, सन्नी-वेदेय पज्जत्ती,१ दिठ्ठी दंसण नाणे, जोगुवओगे तहा किमाहारे; उववायठिइ समुहाए, चवण गई आगई चेव.२

१ मार्गणानो जे विचार करेल छे. ते मूल मार्गणा १४ छे:—१ गति मार्गणा, २ इन्द्रियमा० ३ कायमा० ४ योग मा० ५ वेद मार्गणा० ६ कषायमा० ७ ज्ञान मा० ८ संयममा० ९ दर्शनमा० १० लेश्यामा० ११ भव्यमा० १२ समकितमा० १३ संज्ञीमा० १४ आहार मार्गणा. तेनी उत्तर मार्गणा ६२ थाय छे. हवे १४ मूल मार्गणामां दशमार्गणामांथी जीव मोक्ष जाय छे. ते आ प्रमाणे:—१ नर गति, २ पंचेन्द्रिय, ३ त्रस, ४ भव्य, ५ संज्ञी, ६ यथाख्यात चारित्र, ७ क्षायकस मकित, ८ अणाहार, ९ केवलज्ञान, १० केवल दर्शन, ए दश मार्गणा सिवाय बाकीनी चार मूल मार्गणा वेदादि अने बावन उत्तरमार्गणामांथी जीव मोक्षे न जाय. एम नवतत्त्वप्रकरणमां कहेलुं छे.

सूत्रनी आ बे गाथा कही तेनो अर्थ कहे छे:—शरीर केतां शरीर पांच तें औदारिक, वैक्रेय, आहारक, तैजस अने कार्मण. उगाहणा केतां अवगाहना ते औदारिक श० नी जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्टि एक हजार योजननी झाझेरी, कमलना डोडानी अपेक्षाए. वैक्रेय श० नी ज० अंगु० असं० अने ऊ० पांचसो धनुष्यनी. उत्तर वैक्रेय श० नी ज० अंगु० संख्यातमा भागनी अने उ० लाख योजननी झाझेरी. आहारक श० नी ज० मुंडा हाथनी अने उ० एक हाथनी. तैजस ने कार्मण श० नी० ज० अंगु० असंख्या० अने उ० पोताना शरीर प्रमाणे अथवा चौद राजलोक प्रमाणे जाणवी. संघयण केतां संघयण (शरीरनी रचना) छ. वज्ररुषभनाराच सं०, रुषभनाराच सं० नाराच सं० अर्द्धनाराच सं० किलिका सं० अने छेवट्ठु संघयण. संठाण, केतां संस्थान (शरीरना आकार) छ. समचउरंस संठाण, निग्गोह परिमंडल सं०, सादि सं०, वामन सं०, कुब्ज सं०, अने हुंड संठाण. कसाय के० कषाय चार. क्रोध, मान, माया, अने लोभ. तह के० तेमज सन्नाओ के० संज्ञा चार. आहार संज्ञा, भय सं०, मैथुन सं०, अने परिग्रह संज्ञा. लेसा के० लेश्या छ. कृष्ण लेश्या,

---

१ आ गाथा जीवाभिगमसूत्रनीं टीकामा छे, अमूलरुपिजीवाली प्रतमा मूलमा छे. २ अवगहना शरीरनी अपेक्षाए छे. ३ श्रीदेवीना कमलनी होय. ४ केवल समुद्घातनीं अपेक्षा ए. ५ मोहनीय अने वेदनीय कर्मना उदयथी 'संज्ञा' होय छे. ६ योग जन्य लेश्या छे. 'जोग परिणाम लेसा' अन्वय-व्यतिरेक वडे योग अने लेश्यानो संबंध छे. योग होय तो लेश्या होय अने योगनो अभाव होय तो लेश्यानो अभाव होय लेश्यानो विशेप स्वरूप 'लेश्याना थोकडा'थी जोवुं.

नीलले०, कापोतले०, तेजोले० पद्मले०, शुक्ल लेश्या. इंदिय के० इंद्रिय पांच. श्रोत्रेंद्रिय, चक्षु इंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, रसनेंद्रिय अने स्पर्शनेंद्रिय. समुग्घाए के० समुद्घात सात. वेदनी समुद्घात, कषायस०, मारणांतिकस०, वैक्रेयस०, तैजसस०, आहारकस०, अने केवल समुद्घात. सन्नी के० संज्ञी–असंज्ञी, मन होय ते संज्ञी अने मन नहोय ते असंज्ञी. वेदेय के० वली वेद त्रण, स्त्रीवेद, पुरुष वेद अने नपुंसक वेद. पज्जत्ती के० पर्याप्ति छ आहारपर्याप्ति, शरीरप०, इंद्रियप०, श्वासोच्छ्वासप०, भाषाप०, अने मनपर्याप्ति. दिट्ठी के०दृष्टि त्रण. समकितदृष्टि, मिथ्यात्वदृष्टि,अने मिश्रदृष्टि, दंसण के० दर्शन चार.चक्षुदर्शन अचक्षुद०,अवधिद०,अने केवलदर्शन. नाणेके०, ज्ञानपांच अने त्रण अज्ञान.मतिज्ञान, श्रुतज्ञा०.अवधिज्ञा०, मनःपर्यायज्ञा०,अने केवलज्ञान,मतिअज्ञान,श्रुतअ०, विभंगअज्ञान. जोग के० योगपन्नर, चार मनना, चार वचनना अने सात कायाना. सत्यमनोयोग. असत्यमनोयोग, मिश्रमनोयोग अने व्यवहारमनोयोग.सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, मिश्रवचनयोग अने व्यवहारवचनयोग. औदारिक, औदा०–मिश्र, वैक्रेय, वैक्रेयमिश्र, आहारक, आहा०—मिश्र अने कार्मणयोग. उवओगे के० उपयोग बार. पांच ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चार दर्शन. तहा किमाहारे के० तेमज आहार. द्रव्यथी अनंत प्रदेशी पुद्गलो, क्षेत्रथी असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलो, कालथी जघन्य मध्यम अने उत्कृष्ट स्थितिवाला पुद्-

१ मन अने वचन योगना जे चार चार भेद कहेल छे, ते व्यवहारनयथी अने निश्चयनयथी प्रथमना जे बे बे भेद छे ते जाणवा; एम पन्नवणा सूत्रथी जणाय छे. व्यवहार वचनयोगने असत्या मृषा नामथी जणावेल छे.

गलो अने भावथी वर्ण, गंध, रस ने स्पर्शवाला पुद्गलोनो आहार करे. ते पण फरसेला पुद्गलो–अनंतरावगाढ पुद्गलोनो आहार करे. अने वली स्वविषयानुपूर्वीए–उर्ध्व आदि त्रण अने पूर्वादि छ दिशामांथी आहार करे. ते आहार त्रण प्रकारनो छे ओज, रोम अने कवल. अथवा सचित्त, अचितने मिश्र. उववायके० आवीने उपजे ते आगल कहेवासे. ठिइ के० स्थिति. ज० अंतर्मुहूर्त्त अने उ० ३३ सागरोपमनी. समुहाए के० मारणांतिक समुद्घात सहित मरण, ते बे प्रकारनुं छे; समोहया अने असमोहया. इलिकानी गति प्रमाणे जे (समुद्घात सहित) मरण ते समोहया मरण अने समुद्घात रहित, बंदुकना भडाकानी परे जीवना प्रदेश सामटा नीकळे ते असमोहया मरण. चवण के० चवीने जेटला दंडकमां जीव जाय ते आगल कहेवासे. गई. आगई के० गति ने आगति. जेमां जावुं ते गति, ते पांच छे; नरकगति, तिर्यचगति, मनुष्यगति, देवगति अने मोक्षगति. जेमांथी आववुं ते आगति चार–नरकनी आगति, तिर्यचनी आ०, मनुष्यनी आ०, देवनी आगति. चेव के० निश्चय, ए बे गाथानो अर्थ कह्यो. हवे चोवीश दंडकना नाम कहे छे पहेलो नारकनो दंडक, सात नरक नामः—घमा, वंशा, शिला, अंजना, रिष्ठा, मघा, माघवती. हवे गोत्र कहे छेः—रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्र०, पंकप्र०, धूमप्र०, तमःप्र०, तमः तमः प्रभा० ए सात नरकनो एक दंडक. हवे दश भवनपतिना दश दंडकः--असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार. एवं ११ दंडक. हवे पांच स्थावरना पांच दंडकना नामः–

---

१ 'समोहया ने असमोहया' शब्द शुद्ध जणाय छे जुवो पन्नवणासूत्रनी टीका.

१ इन्द्रस्थावरकाय, २ ब्रह्मस्था०, ३ शिल्पस्था०, ४ सम्मतिस्था०, ५ प्राज्यापत्यस्था०, ६ जंगमस्थावरकाय. हवे तेना गोत्र कहे छे. पृथवीकायिक यावत् त्रसकायिक. एवं १६ दंडक. हवे त्रण विकलेंद्रियना त्रण दंडकना नाम कहे छेः-बे इंद्रिय, तेइंद्रियने चउरिंद्रिय. एवं १९ दंडक. हवे वीशमो तिर्यंच पंचेंद्रियनो दंडक तेना पांच भेद कहे छेः—जलचर, स्थलचर, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचर. जे जलमां चाले तेने जलचर कहीएं, तेना पांच भेद-मच्छ, कच्छप, गाहा, मगर अने सुसुमार प्रमुख. जे पृथवीपर चाले तेने स्थलचर कहीए, तेना चार भेद-एगखुरा, दुखुरा, गंडीपया अने सणपया. एगखुरा ते एकखुरीवाला-घोडा प्रमुख. दुखुरा ते बे खरीवाला-गाय भैंस प्रमुख. गंडीपया ते सुंहालापग-सोनीनी एरण जेवा पग जेना होय ते-हाथी, गेंडा प्रमुख. सणपया ते नखवाला पग जेना होय ते-वाघ, सिंह, चित्रा कुतरा अने बिलाडा प्रमुख. उरपरिसर्प ते हैयाभर चाले ते सर्पनी जाति तेना बे भेद, एक फण मांडे अने एक फण न मांडे. भुजपरिसर्प ते भुजावडे चाले, तेना अनेक भेद नोलिया, कार्किडा, गोह, उंदर अने खीसकोली प्रमुख. खेचर ते आकाशमां चाले, ते पक्षीनी जाति तेना चार भेद-चर्मपक्षी, रोमपक्षी, विततपक्षी अने समुद्गपक्षी. चर्मपक्षी ते चामडानी पांखवाळा छापा, वागुल प्रमुख. रोमपक्षी ते रोमरायनी पांखवाळा सुडा, चकला, पारेवा प्रमुख. ए बे जातिना पक्षिओ, अढीद्वीपनी अंदर अने बाहेर छे. वितत पक्षी ते जेनी पांख सदा पहोळी रहे छे अने समुद्ग पक्षी ते जेनी पांख सदा डाव-

१ 'गंडी' शब्दनो अर्थ पन्नवणा सूत्रनी वृत्तिमां 'सोनीनी एरण' करेल छे अने उत्तराध्ययननी वृत्तिमां 'कर्णिका' अर्थ करेल छे; अर्थात् तेना जेवा पग छे.

डानी परे बीडेली रहे छे. ए बे जातिना पक्षीओ, अढी द्वीपनी बाहेर छे. ए पांचे तिर्यंच पंचेंद्रिय समूर्च्छिम अने गर्भज जाणवा. एवं वीश दंडक हवे एकवीशमो मनुष्य पंचेंद्रियनो दंडक कहे छेः–पन्नर कर्मभूमि, त्रीश अकर्मभूमि अने छपन्न अंतरद्वीप, एवं १०१ क्षेत्रना गर्भज मनुष्यना अपर्याप्ताने पर्याप्ता; एवं २०२ अने एकशोने एक क्षेत्रना संमूर्च्छिम मनुष्यना अपर्याप्ता. ए सर्व मलीने ३०३ भेद. ए एकवीशमो दंडक. हवे बावीशमो व्यंतरनो दंडक कहे छेः–ते सोळ जातिना छे तेना नाम १ पिशाच, यावत् १६ कोहंडिक. ए बावीशमो दंडक. हवे त्रेवीसमो ज्योतिष्कनो दंडक कहे छे–चंद्रमा आदि पांच अढी द्वीपमां चर छे अने अने अढीद्वीपनी बाहेर स्थिर छे. बे चंद्र अने बे सूर्य, जंबूद्वीपमां छे. चार चंद्रने चार सूर्य, लवणसमुद्रमां छे. बार चंद्रने बार सूर्य, धातकीखंडद्वीपमां छे. बेंतालीश चंद्रने बेंतालीश सूर्य, कालोदधि समुद्रमां छे. बउंतेर चंद्रने बउंतेर सूर्य, पुष्करार्द्धद्वीपमां छे. सर्व मली १३२ चंद्रने १३२ सूर्य, परिवार सहित चर छे. हवे परिवार कहे छेः–ज्यां एक चंद्रने एक सूर्य होय त्यां ८८ ग्रह, २८ नक्षत्र अने छासठहजार नवसें पंचोतेरक्रोडाक्रोड तारा छे. एम सर्व चंद्र–सूर्यनो परिवार जाणवो. असंख्यात चंद्र अने सूर्य, परिवार सहित मनुष्य क्षेत्रथी बाहेर असंख्यात द्वीप–समुद्रमां स्थिर छे. ए २३मो दंडक. हवे २४मो वैमानिकनो दंडक कहे छे. तेना २६ भेदः—१२ देवलोक, ९ ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तरविमान. सुधर्मादि बार देवलोक, भद्रादि नव ग्रैवेयक अने विजयादि पांच अनुत्तरविमान. ए २४ दंडक. अत्र

१ 'व्यंतर' शब्दने बदले 'वानमंत' शब्द शास्त्रमां वपरायेल छे परंतु 'वाणव्यंतर' शब्द बरोबर जणातो नथी. २ बार देव लोक वगेरे देवोना नाम नवतत्त्वमां लखेला छे माटे अहिं लखेल नथी.

आदि पन्नर परमाधामी, असुरकुमारमां भळे छे, दश जृंभकदेवो, व्यंतरमां भळे छे. त्रण किल्विषिको, देवलोक अंतर निवासी छे, माटे वैमानिकमां भळे छे. नवलोकांतिक, ब्रह्मलोकवासी छे; माटे उत्तम वैमानिकमां भळे छे. ए चोवीश दंडकना नाम कह्या. हवे सातक्रोड बहुंतेर लाख, भवनपतिना भवन छे. चोरासी लाख नरकावासा छे. असंख्याता व्यंतरना नगरो छे. असंख्याता ज्योतिष्कना विमानो छे अने असंख्याता द्वीपो छे. चोरासीलाख सताणुहजार ने त्रेवीश, वैमानिकना विमानो छे. संख्यातावासो मनुष्यना छे. शेष नव दंडकना असंख्याता असंख्याता वासो छे. तेनुं वर्णन अन्यशास्त्रथी जाणवुं. हवे सिद्ध शिलाना बार नामो कहे छेः—१ इसीतिवा, २ इसिप्पभारातिवा, ३ तणुतिवा, ४ तणु तणुतिवा, ५ सिद्धीतिवा, ६ सिद्धालयेतिवा, ७ मुत्तीतिवा, ८ मुत्तालयेतिवा, ९ लोयग्गेतिवा, १० लोगथुभियेतिवा, ११ लोयपडिबोहेतिवा, १२ सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहेतिवा, ए मोक्षना बार नाम कह्या. ए नाम द्वार किंचित्मात्र समाप्त.

हवे २४ दंडक उपर २४ द्वार उतारे छेः–पहेलो नारकनो दंडक, तेमां शरीर त्रण वैक्रेय, तैजस ने कार्मण. १ अवगाहना, भवधारणीय शरीरनी ज० अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उ० पांचसो धनुष्यनी; जो उत्तरवैक्रेय, करे तो ज० अंगु० संख्यातमा भागनी अने उ० एकहजार योजननी. पहेली नरके भवधा० अव० ज०

१ ए देवो व्यंतर जातिना छे अने वैश्रमण लोकपालना तावामां होय छे. २ लोकांतिक देवो, सम्यक्दृष्टि अने अल्प संसारी होय छे; वळी ते एकावतारी अथवा सात–आठ भव करनारा छे.

अंगु० संख्या० ने उ० पोणाआठ धनुष्यनी ने छ अंगुलनी अने उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संख्या० ने उ० साडापन्नर धनुष्य ने बार अंगुलनी. बीजी नरके भव० अव० ज० अंगु० असंख्या, ने उ० साडापन्नर धनुष्य ने बार अंगुलनी, उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संख्या० ने उ० सवाएकत्रीश धनुष्यनी. त्रीजी नरके भव० अव० ज० अंगु० असं० ने उ० सवाएकत्रीश धनुष्यनी अने उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संखा० ने उ० साडाबासठ धनुष्यनी. चोथी नरके भव० ज० अंगु० असं० ने उ० साडाबासठ धनुष्यनी अने उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संखा० ने उ० सवासो धनुष्यनी. पांचमी नरके भव० ज० अंगु० असं० ने उ० सवासो धनुष्यनी अने उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संखा० ने उ० अढीसो धनुष्यनी. छठ्ठी नरके भव० ज० अंगु० असं० ने उ० अढीसो धनुष्यनी. अने उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संख्या ने उ० पांचसो धनुष्यनी. सातमी नरके भव० ज० अंगु० असं० ने उ० पांचसो धनुष्यनी अने उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संखा० ने उ० एक हजार धनुष्यनी. २ नारक ने संघयण नथी. ३ संठाण एक हुंड. ४ कषाय चार, पण नारक ने क्रोध घणो. ५ संज्ञा चार, पण नारकने भय संज्ञा घणी. ६ नारकमां समुच्चयथी पहेली त्रण लेश्या. पहेली ने बीजी नरकमां एक कापोत लेश्या, त्रीजी नरके बे लेश्या, कापोत घणी ने नील थोडी. चोथी नरके एक नील लेश्या, पांचमी नरके बे लेश्या, नीलले० घणी ने कृष्णले० थोडी. छठ्ठी नरके एक कृष्णलेसा. सातमी नरके महाकृष्णलेश्या. ७ इंद्रिय पांच. ८ समुद्घात चार. वेदनीय, कषाय, मारणांतिक अने वैक्रिय समुद्घात. ९ पहेली नरके संज्ञी–असंज्ञी बे होय,

बीजीथी सातमी सुधी एकला संज्ञी छे. १० वेद एक नपुंसक. ११ पर्याप्ति पांच आहार पर्याप्ति, शरीरप०, इंद्रिय प०, श्वासोच्छवास प०, अने भाषा-मनपर्याप्ति भेळी बांधे छे.१२ दृष्टि त्रण, समकित दृ०, मिथ्या दृ०,ने मिश्र-दृष्टि, १३ दर्शन त्रण, चक्षुदर्शन, अचक्षुद०, अवधिदर्शन १४ ज्ञान त्रण, मतिज्ञान, श्रुतज्ञा०, अवधि ज्ञान, अज्ञान त्रण, मति अज्ञान, श्रुत अ०, विभंग ज्ञान. १५ योग इग्यार, चार मनना, चार वचनना अने त्रण कायाना, ते वैक्रेय, वै०नो मिश्र अने कार्मणकाय योग.१६ उपयोग नव-त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान ने त्रण दर्शन. १७ तेमज आहार—नारकने छ दिशानो होय, ते बे प्रकारनो ओज आहार ने रोम आ० ते पण अशुभ ने अचित्त होय. १८ उववाय ते आवीने उपजे ते कहे छेः-पहेली नरकमां गर्भज मनुष्य अने गर्भज तिर्यंच के सम्मूर्च्छिम ए बे दंडकमांथी उपजे. बीजीथी सातमी सुधीमां गर्भज तिर्यंच ने गर्भज मनुष्य उपजे. १९ स्थिति-पहेली नरके ज० दश हजार वर्षनी अने उ० एक सागरोपमनी. बीजी नरके ज० एक सा० ने उ० त्रण सा०नी. त्रीजी नरके ज० त्रण सा० ने उ० सात सा०नी. चोथी नरके ज० सात सा० ने उ० दश सा०, पांचमी नरके ज० दश सा०, ने उ० सत्तर सा०, छठ्ठी नरके ज० सत्तर सा० ने उ० बावीश सा०, सातमी नरके ज० बावीश सा० ने उ० तेंत्रीश सागरोपमनी २० समोहया ने असमोहया मरण बे छे. २१ चवण ते चवीने पहेली नरकथी

---

१ व्याघात न होवाथी छ दिशामांथी नरकना जीवो, आहार ग्रहण करे छे. ज्यांसुधी शरीरपर्याप्ति पूरण न करी होय त्यांसुधी ओज आहार अने शरीर पर्याप्ति पूरण कर्या बाद रोम आहार होय. २ संख्याता वर्षवाला अने पर्याप्ता मनुष्य वगेरे समजवा.

छट्ठी नरक सुधीना जीवो पर्याप्त गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचमां जाय. २२ गति ने आगति–पहेलीथी छट्ठी नरक सुधीना जीवो, मनुष्य ने तिर्यचनी गतिमां जाय अने एमां आवे पण ए बे गतिमांथी सातमीनरकना जीवो, एक तिर्यचनी गतिमां जाय अने आवे मनुष्य ने तिर्यचगतिमांथी, २३–२४. प्राण दश होय ते पांच इंद्रिय–प्राण, त्रण[1] बल, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य. इति प्रथम दंडक समाप्त.

हवे दश भवनपतिना दश दंडक–तेमां शरीर त्रण वैक्रेय, तैजस ने कार्मण. तेनी अवगाहना ज० अंगु० असं० भागनी ने उ०सात हाथनी अने उत्तर वै०नी ज०अंगु० संख्या०ने उ०एक लाख योजननी. संघयण नथी. संठाण एक समचउरंस. कषाय चार पण लोभ घणो, संज्ञाचार पण परिग्रहसंज्ञा घणी. लेश्या चार कृष्णादि पहेली. इंद्रिय पांच. समुद्घात पांच. वेदनी आदि. संज्ञी–असंज्ञी बे छे. वेद बे स्त्रीवेद ने पुरुषवेद. पर्याप्ति पांच, भाषा–मनप० भेळी बांधे. दृष्टि त्रण. दर्शन त्रण प्रथमना. ज्ञान त्रण प्रथमना. अज्ञान त्रण. योग इग्यार–चार मनना, चार वचनना अने त्रण कायाना ते वैक्रेय, वै०नो मिश्र ने कार्मणकाय योग. उपयोग नव–त्रणज्ञान, त्रण अज्ञान नें त्रण दर्शन. तेमज आहार छए दिशानो ले, ते बे प्रकारनो ओज ने रोम; ते पण शुभ ने अचित्त. उववाय ते आवीनें भवनपतिमां मनुष्यने तिर्यंच ए बे दंडकना उपजे. स्थिति दक्षिण दिशाना असुरकुमारनी ज० दशहजार वर्षनी ने उ० एक सागरनी, तेनी देवीनी ज० दशह० वर्षनी ने उ० त्रण पल्योपमनी, तेना नव

---

१ मन, वचनने काय बल.

निकायदेवनी ज० दशह० वर्षनी ने उ० दोढ पल्यनी, तेनी देवीनी ज० दशह० वर्षनी ने उ० पोणा पल्यनी, हवे उत्तरादिशाना असुरकु०नी ज० दशह०नी ने उ० एक सागर झाझेरी. तेनी देवीनी ज० दशह० ने उ० साडा चार पल्यनी. तेना नवनिकायना देवनी ज० दशह० ने उ० देशेउणा बे पल्यनी. तेनी देवीनी ज० दशह० ने उ० देशेउणा एक पल्यनी. समोहया—असमोहया बे मरण छे. चवण ते चवीने भवनपति, पृथवी, पाणी, वनस्पति, मनुष्य अने तिर्यंच ए पांच दंडकमां जाय. गति-आगति ते मनुष्य ने तिर्यंच ए बे गतिमां जाय अने भवनपतिमां एज बे गतिमांथी आवे. प्राण दश होय. इति भवनपतिना दश दंडक समाप्त.

हवे पांच स्थावरना पांच दंडक, तेमां पृथ्वी, पाणी, तेउ अनें वनस्पतिकायिकमां शरीर त्रण औदारिक, तैजस ने कार्मण. वायुकायिक ने शरीर चार ते वैक्रेय वध्युं. अवगाहना प्रथमना चार थावरकायनी ज०ने उ० अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने वनस्पतिकायिकनी ज० अंगु० असं० ने उ० एक हजार[2] योजननी झाझेरी, कमल प्रमुखनी. संघयण एक छेवट्ठु. संठाण एक हुंड. पांचे स्थावरकायना संठाण जुदा जुदा कहे छेः—पृथवीनुं संठाण, मसुरनी दाळ अने चंद्रमाने आकारे होय. अप्कायनुं सं० पाणीना परपोटाने आकारे. तेउकायनुं

१ असंख्यात वर्षवाला मनुष्य ने तिर्यंच पण भवनपतिमां उपजे, तेमज समुर्च्छिम तिर्यंच उपजे, परंतु समुर्च्छिम मनुष्य न उपजे. वली सूक्ष्म पृथ्वी आदि अने साधारण वनस्पतिमां भवनपति न उपजे. २ प्रत्येक वनस्पति आश्रयी जाणवी सूक्ष्म वनस्पतिकायिकनी ज० ने उ० अंगुलना असख्यातमा भागनी अवगाहना होय.

सं० सोयना भाराने आकारे. वायुकायनुं सं० भजा-पताकाने आकारे. वनस्पतिकायनुं सं० नानाप्रकारनुं. कषाय चार. संज्ञा चार. लेश्या पृथवीका०अप्का०अने वनस्पतिका०मां अपर्याप्ता वेलाए चार पहेली अने पर्याप्ता वेलाए पांचे स्थावरकायमां लेश्या त्रण पहेली. इंद्रिय एक स्पर्शन (काया)नी. समुद्घात-पृथवीका० अप्का० तेउका० अने वनस्पतिका० ने त्रण वेदनी, कषाय ने मरणांतिक. वायुका० ने चार एक वैक्रेय समुद्घातवधी. पांच स्थावर, असंज्ञी छे. वेद एक नपुंसक. पर्याप्ति चार आहार पर्याप्ति, शरीर प० इंद्रिय प० ने श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति. दृष्टि एक मिथ्यात्वनी. दर्शन एक अचक्षुदर्शन. ज्ञान नथी. अज्ञान बे मति अ० श्रुत अ० योग— पृथवी का०, अप्का० तेउका० अने वनस्पतिका०ने त्रण औदारिक, औदा०नो मिश्र ने कार्मणकाय योग अने वायुका० ने पांच वैक्रेय अने वै०नो मिश्र, ए बे वध्या. उपयोग त्रण बे अज्ञान ने एक दर्शन. तेमज आहार— व्याघात आश्रयी जघन्य त्रण दिशानो, मध्यम चार पांच दिशानो अने निर्व्याघात आश्रयी छए दिशानो आहार छे, ते ओज ने रोम ए बे प्रकारनो ते पण सचित्त, अचित्त ने मिश्र आहार ले. उववाय तें आवीने उपजे पृथवीका, अप्का० अने वनस्पतिका०मां एक नारकनो दंडक छोडीने त्रेवीश दंडकना उपजे. तेउका० ने वायुका०मां पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य; ए दशदंडकना उपजे. स्थिति पृथवीकायिकनी ज० अंतर्मुहूर्तनी अने उ० बावीशहजार वर्षनी. अप्का० नी ज० अंत० ने उ० सातहजार वर्षनी. तेउका०नी ज० अंत० ने उ० त्रण अहोरात्रनी. वायुका०नी ज० अंत० ने उ० त्रणहजार वर्षनी. वनस्पतिका०

नी ज० अंत० ने उ० दशहजार वर्षनी. समोहया ने असमोहया बे मरण होय. चवण ते चवीने पृथवीका०, अप्का० ने वनस्पतिकायिक, ते पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य ए दश दंडकमां जाय. तेउका० ने वायुका० ते मनुष्य वर्जिने नव दंडकमां जाय. गति-आगति ते पृथवीका०, अप्का० ने वनस्पतिकायिक, मनुष्य ने तिर्यच ए बे गतिमां जाय अने तेमां आवे त्रण गतिना-मनुष्य, तिर्यच अने देवगतिना. तेउका० ने वायुका०, ते एक तिर्यचनी गतिमां जाय अने तेमां आवे बे गतिना-मनुष्य ने तिर्यच गतिना. प्राण चार-इंद्रियं प्राण, कायबल, श्वासोच्छ्वास ने आयुष्य. इति पांच स्थावरनो दंडक समास.

हवे त्रण विकलेंद्रियना त्रण दंडक कहे छेः-बे इंद्रिय, तेइंद्रिय ने चउरिंद्रियमां शरीर त्रण-औदा०, तै० ने कार्मण. अवगाहना, बे इंद्रिय, तेइंद्रिय अने चउरिंद्रियनी ज०अंगु० असं०ने उ०बार योजननी त्रण गाउनी अने चार गाउनी. संघयण एक छेवट्ठु. संठाण एक हुंड. कषाय चार. संज्ञा चार. लेश्या त्रण पहेली-इंद्रिय, बे इंद्रिय ने बे स्पर्शनेंद्रिय अने रसनेंद्रिय. तेइंद्रिय ने त्रण, एक नासिकाइंद्रिय वधी. चउरिंद्रियने चार. एक चक्षु इंद्रिय वधी. समुद्घात, त्रण-वेदनी, कषाय ने मरणांतिक. त्रणे असंज्ञी छे. वेद नपुंसक. पर्याप्ति पांच. एक मनःपर्याप्ति नहि. दृष्टि बे समकित ने मिथ्यात्वदृष्टि. दर्शन बे चक्षुद० ने अचक्षुदर्शन. ज्ञान बे-मतिज्ञान ने श्रुतज्ञान. अज्ञान बे-मति अ० ने श्रुत अ०, योग चार. व्यवहारवचन, औदा०, औदा०नो मिश्र ने कार्मणकाययोग.

१ स्पर्शनेंद्रिय.

उपयोग बेइंद्रिय तेइंद्रिय ने पांच–बे ज्ञान, बे अज्ञान ने एक अचक्षुदर्शन. चउरिंद्रिय ने छ उपयोग एक चक्षुदर्शन वध्युं. तेमज आहार–छ दिशानो ले, ते ओज, रोम ने कवल आहार ले, ते पण सचित्त अचित्त ने मिश्र आहार ले, उववाय ते आवीने उपजे विकलेंद्रियमां पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य ए दश दंडकना उपजे. स्थिति, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय ने चउरिंद्रियनी ज० अंत०ने उ० बार वर्षनी, उगणपचास दिवसनी अने छ मासनी. समोहया–असमोहया बे मरण होय. चवण ते चवीनें विकलेंद्रिय, पांच स्था० त्रण विक०, तिर्यंच पं० अने मनुष्य ए दश दंडकमां जाय. गति–आगति ते विकलेंद्रिय, तिर्यंच ने मनुष्य ए बे गतिमां जाय. एमां आवे पण ए बे गतिना. प्राण बे इंद्रियने छ बे इंद्रियना[1] बे प्राण, वचनबल, कायबल, श्वासोच्छ्वास ने आयुष्य, प्राण तेइंद्रिय ने सात प्राण–नासिका वधी. चउरिंद्रिय ने आठ प्राण–चक्षु वधी. इति त्रण विकलेंद्रियनो दंडक समाप्त.

हवे वीशमो तिर्यंचपंचेंद्रियनो दंडक कहे छेः–पांच तिर्यंच समुर्च्छिम ने शरीर त्रण औदा०, तै० ने कार्मण शरीर. तिर्य० पंचें० गर्भज ने शरीर चार वैक्रेय वध्युं जलचर समुर्च्छिम अने गर्भजनी अवगाहना ज० अंगु० असं० ने उ० एक हजार[2] योजननी. स्थलचर[3] समुर्च्छिमनी ज० अंगु० असं० नें उ० प्रत्येक गाउनी, गर्भजनी

---

१ स्पर्शन–रसनेंद्रिय. २ उपर कहेली जलचरनी अवगाहना स्वयंभूरमण समुद्रना मच्छोनी होय. लवणमा पाचसोनी, कालोदधिमां सातसो योजननी होय. बाकीना समुद्रमां ओछी अवगाहना होय छे ३ चतुष्पद=चार पगवाला.

ज० अंगु० असं० ने उ० छ गाउनी. उरपरिसर्प समु० नी ज० अंगु० असं० ने उ० प्रत्येक योजननी; गर्भजनी ज० अंगु० असं० ने उ० एक हजार योजननी. भुजपरपरिसर्प समु० नी ज० अंगु० असं० ने उ० प्रत्येक धनुष्यनी, गर्भजनी ज० अंगु० असं० ने उ० प्रत्येक गाउनी. खेचरनी समु० ने गर्भजनी ज० अंगु० असं० ने उ० प्रत्येक धनुष्यनी, उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ने उ० नवसो योजननी. संघयण, समु० पांचेने छेवट्ठु अने गर्भज पांचेने छ होय. संठाण पांच समुर्च्छिमने हुंड अने पांच गर्भजने छ होय. कषाय चार. पण माया घणी. संज्ञा चार पण आहार संज्ञा घणी. लेश्या समु० नें त्रण पहेली अने गर्भजने छ लेश्या. इंद्रिय पांच. समुद्घात, समु० ने त्रण वेदनी, कषाय ने मरणांतिक; गर्भजनें पांच वैक्रेय ने तैजस समु० वधी. समु०, असंज्ञी अने गर्भजसंज्ञी होय. वेद, समु० ने एक नपुंसक अने गर्भजनें त्रण वेद. पर्याप्ति, समु० ने पांच. गर्भजनें छ. दृष्टि, समु० नें बे समकित दृ० ने मिथ्या दृष्टि अने गर्भज ने त्रण दृष्टि. दर्शन, समु० ने बे चक्षुद०, अचक्षुद० अने गर्भजने त्रण दर्शन प्रथम. ज्ञान, समु० ने बे तथा अज्ञान बे; गर्भजनें त्रण ज्ञान ने त्रण अज्ञान. योग समु० ने चार व्यवहार वचन, औदा०, औ० नो मिश्र ने कार्मणकाययोग. गर्भजने तेर, आहारकना बे नहिं. उपयोग, समु० नें छ बे ज्ञान, बे अज्ञान नें बे दर्शन; गर्भजने नव. त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान ने त्रण दर्शन. तेमज आहार ज० ने उ० छ दिशानो ले, ते त्रण प्रकारनो ओज, रोम ने कवल; ते पण सचित्त, अचित्त ने मिश्र आहार ले. उववाय ते आवीने समु०मां पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यच पंचेंद्रिय ने मनुष्य ए दश दंडकना. अने

गर्भजमां चोवीस दंडकना उपजे. स्थिति, जलचर समु० ने गर्भजनी ज० अंतर० ने उ० पूर्व क्रोड वर्षनी. स्थल-चर समु०नी ज० अंतर० ने उ० चोरासी हजार वर्षनी अने गर्भजनी ज० अंतर० ने उ० त्रण पल्यनी. उरपरि-सर्प समु०नी ज० अंतर० ने उ० त्रेपन ह० वर्षनी अने गर्भजनी ज० अंतर० ने उ० पूर्व क्रोड वर्षनी. भुजपरि-सर्प समु०नी ज० अंतर० ने उ० बेंतालीश ह० वर्षनी अने गर्भजनी ज० अंतर०ने उ० पूर्व क्रोड वर्षनी. खेचर समु०नी ज० अंतर० नें उ० बहुंतेर हजार वर्षनी अने गर्भजनी ज० अंतर० ने उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी. समोहया ने असमोहया बे मरण होय. चवण ते चवीने समुर्च्छिम बावीश दंडकमां जाय; ज्योतिष्क अने वैमानिकमां न जाय अने गर्भज चोवीश दंडकमां जाय. गति-आगति ते समु० चार गतिमां जाय. समु० मां मनुष्य ने तिर्यच ए बे गतिना आवे. गर्भज, चार गतिमां जाय अने तेमां चार गतिमांथी आवे. प्राण, समु० ने नव मन प्राण नहि अने गर्भजने दश प्राण. इति वीशमो तिर्यंच पंचेंद्रियनो दंडक समाप्त.

हवे एकवीशमो मनुष्यनो दंडक कहे छेः—समुर्च्छिम मनुष्य ने शरीर त्रण, औदा० तैजस ने कार्मण. युगलियाने पण तेज त्रण शरीर अने कर्मभूमिना मनुष्यने शरीर पांच. अवगाहना, समु०नी ज०उ०अंगुलना असंख्यातमा भागनी. गर्भज मनुष्यनी भरत-ऐरावत क्षेत्रमां आराना प्रमाणे जाणवी. पहेलो आरो बेसतां त्रण गाउनी अने उतरतां बे गाउनी. बीजो आरो बेसतां बे गाउनी अने उतरतां एक गाउनी. त्रीजो आरो बेसतां

१ एकी साथे (युगवत्) चार शरीर होय, परंतु शक्ति रूपे पांच होय.

एक गाउनी अने उतरतां पांचसो धनुष्यनी. चोथो आरो बेसतां पांचसो धनुष्यनी ने उतरतां सात हाथनी. पांचमो आरो बेसतां सात हाथनी ने उतरतां एक हाथनी. छट्ठो आरो बेसतां एक हाथनी ने उतरतां मुंडा हाथनी ए अवसर्पिणी काल आश्रयी अने उत्सर्पिणी काल आश्रयी एथी विपरीत जाणवी. पांच महाविदेहमां ज० अंगु० असं० अने उ० पांचसो धनुष्यनी, उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ने उ० एक लाख योजननी झाझेरी. हैमवत–हैरण्यवतमां ज० अंगु० असं० ने उ० एक गाउनी. हरिवर्ष–रम्यकवर्षमां ज० पूर्ववत् अने उ० बे गाउनी. देवकुरु—उत्तरकुरुमां ज० पूर्ववत् ने उ० त्रण गाउनी. छपन्न अंतर द्वीपमां ज० पूर्ववत् ने उ० आठसो धनुष्यनी. संघयण, समुर्च्छिमने छेवट्ठु. युगलियाने वज्ररुषभनाराच सं० अने कर्मभूमिना गर्भज मनुष्यने छ संघयण. संठाण, समु० ने हुंड, युगलियाने समचउरंस सं० अने कर्मभूमिना ग० मनुष्यने छ संठाण. कषाय चार पण मनुष्यने मान घणो. संज्ञा चार पण मैथुन संज्ञा घणी. लेश्या, समु० ने त्रण पहेली, युगलियाने चार अने कर्मभू० ग० मनुष्य ने छ लेश्या. इंद्रिय पांच, समुद्घात, समु० ने त्रण वे० क० ने मारणांतिक, युगलियाने पण त्रण, कर्मभू० ग० मनुष्य ने सात समुद्घात. समु० असंज्ञी अने गर्भज संज्ञी. वेद, समु० ने नपुंसक, युगलियाने बे स्त्री ने पुरुष अने कर्म भू० ग० मनुष्य ने त्रण स्त्री, पुरुष ने नपुंसक. पर्याप्ति, समु० ने चार, भाषा ने मन नहिं. गर्भज ने छ पर्याप्ति. दृष्टि, समु० ने एक मिथ्या दृ० अने गर्भज ने त्रण दृष्टि. दर्शन, समु० ने अने युगलियाने बे चक्षुद० अचक्षुद० अने कर्मभू० ग० मनुष्यने चार दर्शन. ज्ञान,

समु०ने नथी. अज्ञान बे मतिअ–श्रुत अ०, युगलियाने बे ज्ञान, ने बे अज्ञान अने कर्मभू० मनुष्यने पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञान. योग समु० ने त्रण औदा०, औदा०नो मिश्र ने कार्मणका०, युगलियाने इग्यार–चार मनना, चार वचनना ने त्रण कायाना औदा० औदा०नो मिश्र ने कार्मणका० अने कर्मभूमिना मनुष्योने पन्नर योग. उपयोग, समु०ने चार बे अज्ञान ने बे दर्शन. युगलियाने छ बे ज्ञान बे अज्ञान ने बे दर्शन. कर्मभू० मनुष्यने बार उपयोग. तेमज आहार—ज० ने उ० छ दिशानो ले, ते पण त्रण प्रकारनो ओज, रोम ने कवल. ते सचित्त, अचित्त ने मिश्र आहार ले. उववाय ते समु० मां पृथवी, पाणी, वनस्पति, त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय ने मनुष्य ए आठ दंडकना आवीने उपजे. युगलियामां तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य ए बे दंडकना उपजे अने कर्मभू० मनुष्यमां बावीश दंडकना उपजे, तेउवायु वर्जिने. स्थिति, समु०नी ज० ने उ० अंतर० ने गर्भज मनुष्यनी आराना प्रमाणे जाणवी. पहेलो आरो बेसतां त्रण पल्योपमनी, उत्तरतां बे पल्यनी. बीजो आरो बेसतां बे पल्यनी ने उतरतां एक पल्यनी. त्रीजो आरो बेसतां एक पल्यनी, उतरतां क्रोडपूर्वनी. चोथो आरो बेसतां क्रोड पूर्वनी, उतरतां सो वर्ष झाझेरानी. पांचमो आरो बेसतां सो वर्ष झाझेरानी, उतरतां वीश वर्षनी. छठ्ठो आरो बेसतां वीश वर्षनी, उतरतां सोळ वर्षनी. ए अवसर्पिणी कालआश्रयी अने उत्सर्पिणी कालआश्रयी विपरीत जाणवी. हैमवत ने हैरण्यवतमां एक पल्यनी, हरिवर्ष ने रम्यक वर्षमां बे पल्यनी, देवकुरु–उत्तर कुरुमां त्रण पल्यनी.

१ ए प्रायिक वचन छे सो वर्षथी विशेष आयुष्यनो संभव छे.

छपन्न अंतरद्वीपमां पल्योपमना असंख्यातमा भागनी अने पांच महाविदेहमां क्रोडपूर्वनी. समोहया ने असमोहया बे मरण होय. चवण ते समु० चवीने पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय ने मनुष्य ए दश दंडकमां जाय. छपन्न अंतरद्वीपना दशभवनपति नें व्यंतर ए इग्यार दंडकमां जाय. त्रीश अकर्मभूमिना दश भव०, व्यंतर, ज्योतिष्क ने वैमानिक ए तेर दंडकमां जाय. त्रीश कर्म भू० मनुष्य चोवीशदंडकमां जाय. गति आगति ते समुच्छिम मनुष्य ने तिर्यच, मनुष्य ने तिर्यंचनी गतिमां जाय अने तेमां आवे पण बे गतिना. युगलिया, एक देवगतिमां जाय अने तेमां आवे मनुष्यने तिर्यंचना, कर्मभू० मनुष्य, पांच गतिमां जाय अने तेमां आवे चार गतिना. प्राण, समु०ने आठ, भाषा ने मन नहिं. गर्भजने दशप्राण. ए मनुष्यनो एकवीशमो दंडक समाप्त.

हवे बावीशमो व्यंतरनो दंडक कहे छेः—तेमां शरीर त्रण वैक्रेय, तै० ने कार्मण. अवगाहना ज० अंगु० असं० ने उ० सात हाथनी. उत्तरवै० करे तो ज० अंगु० संख्या० ने उ० लाख योजननी. संघयण नथी. संठाण, समचउरंस. कषाय चार पण लोभ घणो. संज्ञा चार. पण परिग्रह संज्ञा घणी. लेश्या चार पहेली. इंद्रिय पांच. समुद्घात पांच, आहारक ने केवल समु० नहिं. संज्ञी-असंज्ञी बे छे, वेद बे स्त्रीने पुरुष वेद. पर्याप्ति पांच, भाषा-मन पर्या० भेळी बांधे. दृष्टि त्रण. दर्शन त्रण. ज्ञान त्रण. अज्ञान त्रण. योग इग्यार, चार म०ना, चार व०ना त्रण कायाना-वैक्रेय, वै०नो मिश्र ने कार्मणकाय योग. उपयोग नव त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान ने त्रण दर्शन.

---

१ साथे पूरण करे.

तेमज आहार-ज० ने उ० छ दिशानो आहार ले, ते बे प्रकारनो-रोम ने ओज, ते पण शुभ ने अचित्त ले. उववाय ते व्यंतरमां तिर्यंच अने मनुष्य ए बे दंडकना उपजे. स्थिति व्यंतरनी ज० दश ह० वर्षनी अने उ० एक पल्यनी. तेहनी देवीनी ज० दश ह० वर्षनी ने उ० अर्द्ध पल्यनी. समोहया-असमोहया बे मरण होय. चवण ते व्यंतर, चवीने पृथवी, पाणी, वनस्पति, तिर्यच अने मनुष्य ए पांच दंडकमां जाय. गति-आगति ते व्यंतर, मनुष्य ने तिर्यचनी गतिमां जाय.अने तेमां आवे पण बे गतिना. प्राण दश. इति बावीशमो व्यंतरनो दंडक समाप्त.

हवे त्रेवीशमो ज्योतिष्कनो दंडक कहे छेः—तेमां शरीर, अवगाहना, संघयण, संठाण, कषाय, संज्ञा, लेश्या, इंद्रिय, समुद्घात, एटला द्वारो व्यंतर प्रमाणे जाणवा. संज्ञी (द्वारमां) एकला संज्ञी छे. वेद, पर्याप्ति, दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान, योग, उपयोग, तेमज आहार, उववाय, ए द्वारो पण व्यंतरवत् जाणवा. स्थिति चंद्रमाना देवनी ज० पा पल्यनी ने उ० एक पल्यने एक लाख वर्षनी, तेनी देवीनी ज० पा पल्यनी ने उ० अर्द्ध पल्यने पचाश हजार वर्षनी, सूर्यना देवनी ज० पा पल्यनी ने उ० एक पल्य ने एक ह०वर्षनी, तेनी देवीनी ज० पा पल्यनी ने उ० अर्द्ध पल्य ने पांचसो वर्षनी. ग्रहना देवनी ज० पा पल्यनी ने उ० एक पल्यनी, तेनी देवीनी ज० पा पल्य ने उ० अर्द्ध पल्यनी. नक्षत्रना देवनी ज० पा पल्यनी ने उ० अर्द्ध पल्यनी, तेनी देवीनी ज० पा

---

१ असंज्ञी तिर्यंच, मरीने भवनपति अने व्यंतरमां उपजे छे, तेथी मेमां अपर्याप्ता अवस्था ए 'असंज्ञी' होय; परंतु ज्योतिष्कमां असंज्ञी उपजता नथी. माटे ज्योतिष्क संज्ञी होय.

पल्य ने उ० पा पल्य झाझेरी. ताराना देवनी ज० पल्यनो आठमो भाग अने उ० पा पल्यनी, तेनी देवीनी ज० पल्यनो आठमो भाग अने उ० पा पल्यनो आठमो भाग झाझेरी. समोहया-असमोहया बे मरण होय. चवण ते ज्योतिष्क चवीने पृथवी, पाणी, वनस्पति, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य ए पांच दंडकमां जाय. गति-आगति ते ज्योतिष्क बे गतिमां जाय अने तेमां आवे पण बे गतिना. प्राण दश. इति त्रेवीशनो ज्योतिष्कनो दंडक समाप्त.

हवे चोवीसमो वैमानिकनो दंडक कहे छेः--तेमां शरीर त्रण वै०तै०ने कार्मण शरीर०,अवगाहना ज०पहेला देवलोकथी यावत् पांचमा अनुत्तर विमान सुधी अंगुलना असंख्यातमा भागनी अनें उ० १-२ देवलोके सात हाथनी. ३-४ दे० छ हाथनी. ५-६ दे० पांच हाथनी ७-८ दे० चार हाथनी. ९-१०-११-१२ दे० त्रण हाथनी. नव ग्रैवेयकमां बे हाथनी. चार अनुत्तर विमानमां एक हाथनी अनें सर्वार्थ सिद्धमां मुंडा हाथनी. उत्तर वै० करे तो ज० अंगु० संख्या० ने उ० एक लाख योजननी. संघयण नथी. संठाण, समचउरंस०, कषाय-चार पण लोभ घणो. संज्ञा चार पण परिग्रह संज्ञा घणी. लेश्या-१-२ देवलोके एक तेजोलेश्या. ३-४-५ दे० पद्म लेश्या. ६ठ्ठा दे०थी यावत् नव ग्रैवेयक सुधी शुक्ल लेश्या अने पांच अनुत्तरविमानमां परम शुक्ल लेश्या. इंद्रिय पांच. समुद्घात-बार देवलोकमां पांच, आहारक ने केवल समु० नहिं. नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमानमां समु०

१ सर्वार्थ सिद्ध वि० मां मुडा हाथनी अवगाहना छे. एवो विशेष पाठ जोवामां आवेल नथी.

त्रण पहेली. वैमानिक संज्ञी छे. वेद १–२ देव०मां बे स्त्री ने पुरुष वेद. त्रीजा देव०थी यावत् सर्वार्थ सिद्ध विमान सुधी एक पुरुषवेद. पर्याप्ति पांच, व्यंतरवत्. दृष्टि पहेला देवथी यावत् नवग्रैवेयक सुधी त्रण अने पांच अनुत्तर विमानमां एक सम्यक् दृष्टि. दर्शन त्रण. ज्ञान पहेला देव०थी यावत् नव ग्रै०सुधी त्रण ज्ञान ने त्रण अज्ञान अने पांच अनुत्तर वि०मां त्रण ज्ञान, अज्ञान नथी. योग इग्यार व्यंतरवत्. उपयोग, नव ग्रै० सुधी नव अने पांच अनुत्तर वि०मां छ त्रण ज्ञान, त्रण दर्शन. तेमज आहार–छ दिशानो ले, ते बे प्रकारनो ओज ने रोम; ते पण शुभ ने अचित ले. उववाय ते पहेला देव०थी यावत् आठमा दे०मां तिर्यच पंचेंद्रिय ने मनुष्य ए बे दंडकना उपजे. नवमा दे०थी यावत् सर्वार्थ सिद्धमां एक मनुष्य दंडकनो उपजे. स्थिति–पहेला दे०ना देवनी ज० एक पल्यनी ने उ० बे सागरनी. तेनी परिग्रहित देवीनी ज० एक पल्यनी ने उ० सात पल्यनी. अपरिग्रहित देवीनी ज० एक पल्यनी ने उ० पचास पल्यनी. बीजा दे०ना देवनी ज० एक पल्यनी झाझेरी ने उ० बे सागरनी झाझेरी. तेनी परिग्रहित देवीनी एक पल्य झा० ने उ० नव पल्यनी. अपरि० देवीनी ज० एक पल्य झा० ने उ० पंचावन पल्यनी. त्रीजे दे० ज० बे सागरनी ने उ० सात सागरनी. (बीजा देव०थी उपर देवी नथी तेडावी-जाय) चोथे दे०ज० बे सागरनी झा० ने उ० सात सागर झाझेरी. पांचमे दे० ज० सात सा० नें उ० दश सा०, छठ्ठे दे० ज० दश सा० ने उ० चौद सा०, सातमे दे० ज० चौद सा० ने उ० सत्तर सा०, आठमे दे०ज० सत्तर

१ सूत्र वगेरेमां बीजा देव०मां बे सागरनी स्थिति कहेल छे, 'झाझेरी' कही नथी.

सा० ने उ० अढार सा०, एम अनुक्रमे एकेकं सागर वधारतां नवमाग्रैवेयकमां ज० त्रीश सा० ने उ० एकत्रीश सागरनी. चार अनुत्तर वि०मां ज० एकत्रीस सा० ने उ० तेंत्रीस सा० अने सर्वार्थसिद्धमां ज० ने उ० तेंत्रीस-सागरोपमनी. समोहया असमोहया बे मरण होय. चवण ते १-२ दे०ना देव, चवीने पृथवी, पाणी, वनस्पति, तिर्यंच पंचें० अने मनुष्य ए पांच दंडकमां उपजे. त्रीजाथी आठमा दे०ना देव, तिर्यंच पंचें० ने मनुष्य ए बे दंडकमां उपजे. नवमांथी सर्वार्थ सिद्ध वि०ना देव, एक मनुष्यना दंडकमां उपजे. गति-आगति-पहेलाथी आठमा दे०ना देव, मनुष्य अने तिर्यंच ए बे गतिमां जाय अने एमां आवे पण बे गतिना. नवमांथी सर्वार्थसिद्ध वि०ना देव, एक मनुष्यनी गतिमां जाय अने एमां आवे पण मनुष्यगतिमांथी. प्राण दश होय. इति चोवीशमो वैमानिकनो दंडक समाप्त.

हवे सिद्धनो द्वार कहे छेः—सिद्धने शरीर नथी. अवगाहना सिद्धनी ज० एक हाथ ने आठ अंगुलनी म०, चार हाथने सोळ अंगुलनी अने उ० त्रणसो तेंत्रीस धनुष्य ने बत्रीस अंगुलनी. संघयण नथी, संठाण नथी. कषाय नथी. संज्ञा नथी. लेश्या नथी. इंद्रिय नथी. समुद्घात नथी. संज्ञी-असंज्ञीपणु नथी. वेद नथी. पर्याप्ति

१ बार देवलोकथी उपर उत्तरवैक्रेय करवानुं नथी. ९मां दे०थी ९मां ग्रै०मां ज० उ० १८-१९-१९-२०-२०-२१-२१-२२-२२-२३ २३-२४-२४-२५-२५-२६-२६-२७-२७-२८-२८-२९-२९-३०-३०-३१. २ अमूर्त्त जीवना प्रदेशना घननी अवगाहना पूर्वे (चरिम) शरीरना त्रिभाग $\frac{1}{3}$ न्यून होय.

नथी. दृष्टि एक समकितदृष्टि. दर्शन एक केवल दर्शन. ज्ञान एक केवल ज्ञान. अज्ञान नथी. उपयोग बे के० ज्ञा० ने के० दर्शन. आहार नथी. उववाय ते एक मनुष्यना दंडकमांथी उपजे. स्थिति ते सादि-अपर्यवसित छे. समोहया-असमोहया मरण नथी. चवण ते सिद्धने चववुं नथी. गति पण नथी. आगति एक मनुष्यनी छे. इंद्रियादि द्रव्य प्राण सिद्धने नथी. भाव प्राण चार-अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र (अव्याबाध सुख) अने अनंत वीर्य छे. इति सिद्धनो द्वार समाप्त. इति लघुदंडक समाप्त.

आगति-गति विचार कहे छे:—पहेली नरके आगति, पचीश भेदनी ते पन्नर कर्मभूमिना मनुष्य, पांच संज्ञी तिर्यंच अने पांच असंज्ञी तिर्यंच. ए पचीशना पर्याप्तानी. गति चालीश भेदनी ते पन्नर कर्मभू० मनुष्य अने पांच संज्ञी तिर्यंच, ए वीशना अपर्याप्ता ने पर्याप्तानी. बीजी नरके आगति, वीश भेदनी ते पचीशमांथी पांच असंज्ञी तिर्यंचना पर्याप्ता वर्जवा. गति, चालीश भेदनी पूर्ववत्. त्रीजी नरके आगति, उगणीश भेदनी,ते पूर्वोक्त वीशमांथी एक भुजपरिसर्पनी वर्जवी; गति, चालीश भेदनी पूर्ववत्. चोथी नरके आगति, अढार भेदनी ते पूर्वोक्त उगणीशमांथी खेचरनी वर्जवी; गति चालीश भेदनी पूर्ववत्. पांचमी नरके आगति, सत्तर भेदनी ते पूर्वोक्त अढारमांथी थलचरनी वर्जवी; गति चालीश भेदनी पूर्ववत्. छठ्ठी नरके आगति, सोळ भेदनी, ते पूर्वोक्त सत्तरमांथी उरपरिसर्पनी वर्जवी; गति चालीश भेदनी पूर्ववत्. सातमी नरके आगति, सोळ भेदनी

१ बने उपयोग समयांतर छे.

ते पन्नर कर्मभू० मनुष्य अने जलचर (मच्छ) ए सोळना पर्याप्तानी अने गति, दश भेदनी ते पांच संज्ञी तिर्यंचना अपर्याप्ता ने पर्याप्तानी. दश भवनपति, सोळ वानमंतर ए छवीश जातिना देवमां आगति, एकशो इग्यार भेदनी ते एकशोने एक क्षेत्रना संज्ञी मनुष्य, पांच संज्ञी तिर्यंच अने पांच असंज्ञी तिर्यंच; ए एकशो इग्यार भेदना पर्याप्तानी. गति छेंतालीश भेदनी ते पूर्वोक्त चालीश भेद अने पृथवी, पाणी ने वनस्पति ए त्रणना अपर्याप्ता ने पर्याप्ता ए छ मलीने ४६ भेदनी. पन्नर परमाधामीमां आगति, वीश भेदनी ते पन्नर कर्म०ना मनुष्य अने पांच संज्ञी तिर्यंचना पर्याप्तानी. गति, छेंतालीश भेदनी पूर्ववत्. दश जृंभकामां आगति पचाश भे नी त्रीश अकर्मभूमि. पन्नर कर्मभू० मनुष्य अनें पांच संज्ञी तिर्यंचना पर्याप्तानी. गती ४६ भेदनी पूर्ववत्. ज्योतिष्क अने पहेला देवलोकमां आगति ५० भेदनी ने गति ४६ भेदनी ते जृंभकावत्. बीजा देव०मां आगति, चालीश भेदनी ते पूर्वोक्त पचाशमांथी पांच हैमवत ने पांच हैरण्यवतनी वर्जवी. गति, ४६ भेदनी पूर्ववत्. पहेला किल्बिषिकमां आगति, वीश भेदनी ते पन्नर कर्मभू० मनुष्य अने पांच संज्ञी तिर्यंच ए वीशना पर्याप्तानी. गति ४६

१ सातमी नरके १६ भेदनी स्त्री वर्जवी. २ अहिं पृथ्वी आदि त्रणे, करण अपर्याप्ता समजवा, कारण? लब्धि अपर्याप्तानां देवो उत्पन्न थता नथी. ३ परमाधामीमां युगलियानुं उत्पन्न थवुं संभवतुं नथी, कारण? ते सरल स्वभावी अने अल्प कषायी होवाथी परमाधामीनां उत्पन्न न थाय. तेमज असंज्ञी पण तथाविध क्रूर अध्यवसायवाळा होता नथी माटे ते पण त्यां उत्पन्न न थइ शके. ४ जृंभकानुं आयुष्य एक पल्योपमनु होवाथी, तेमां अंतरद्वीपवाला अने असंज्ञी, उत्पन्न थता नथी; जृंभक देवो त्रिछा लोकमां वसनारा होय छे.

छपन्न अंतरद्वीपमां आगति २५ भेदनी ते १५ कर्मभू० मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यंच अने ५ असंज्ञी तिर्यंचना पर्याप्तानी. गति ५२ भेदनी ते दश भवनपति, सोळ व्यंतर ए २६ना अप० ने पर्याप्तानी. ए चोवीश दंडक आश्रयी आगति गति जाणवी.

हवे तीर्थंकर देवमां आगति ३८ भेदनी ते बार देव० नव लोकांतिक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर वि० अने त्रण नरक पहेली ए ३८ भेदना पर्याप्तानी. गति एक मोक्षनी. चक्रवर्तीमां आगति ८२ भेदनी ते पर्याप्त ९९ जातिना देवमां १५ परमाधामीने त्रण किल्विषिक ए १८ जातिना देव छोडीने शेष ८१ अने पहेली नरक ए ८२ना पर्याप्तानी. गति ८४ भेदनी ते १२ देव०, ९ लोकांतिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर वि० ए ३५ जातिना देव अने सात नरक ए ४२ना अप० ने पर्याप्ता. बलदेवमां आगति ८३ भेदनी ते पूर्वोक्त ८२ भेद अने बीजी नरक ए ८३ भेदना पर्याप्तानी. गति ७० भेदनी ते १२ देव०, ९ लोकां०, ९ ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तर वि० ए ३५ना अपर्या० ने पर्याप्तानी. वासुदेवमां आगति २३ भेदनी ते १२ देव०, ९ ग्रैवे० ए २१ जातिना देव अने पहेली बे नरक ए २३ना पर्याप्तानी. गति १४ भेदनी ७ नरकना अप० ने पर्याप्तानी. केवलीमां आगति १०८ भेदनी ते पर्याप्त ९९ जातिना देवमांथी १५ परमाधामीने ३ किल्विषिक ए १८ छोडीने शेष ८१ जातिना देव, १५ कर्मभू० मनुष्य, ५ संज्ञी तिर्यंच, पहेली चार नरक, पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति. ए १०८ना पर्याप्तानी. गति एक मोक्षनी. साधुमां आगति २७५ भेदनी ते पूर्वोक्त १७९ भेदमांथी तेउ-वायुका०ना ८ भेद छोडी ने शेष १७१, ने ९९

जातिना देव अने पांच नरक ए २७५ भेदनी. गति ७० भेदनी ते १२ देव०, ९ लोकां०, ९ ग्रैवे० अने ५ अनुत्तर वि० ए ३५ जातिना देवना अपर्या० ने पर्याप्तानी. श्रावकमां आगति २७६ भेदनी ते पूर्वोक्त २७५ अने छठ्ठी नरक, ए २७६ भेदनी. गति ४२ भेदनी ते १२ देव० ने ९ लोकांतिक, ए २१ जातिना देवना अप० ने पर्याप्तानी. समदृष्टिमां आगति ३६३ भेदनी ते ९९ जातिना देवना पर्याप्ता, १०१ संज्ञी मनुष्यना पर्याप्ता, १०१ समुर्च्छिम मनुष्यना अपर्याप्ता १५ कर्मभू० मनुष्यना अपर्याप्ता, तिर्यंचना ४८ भेदमांथी तेउ–वायुका०ना ८ छोडीने शेष ४० अने सात नरकना पर्याप्ता, ए सर्व मलीने ३६३ भेदनी. गति ४३० भेदनी ते ९९ जातिना देव, १०१ संज्ञी मनुष्य. ५ संज्ञी तिर्यंच अने ६ नरक ए २११ना अप० ने पर्याप्ता एवं ४२२ अने ३ विकलेंद्रिय, ५ असंज्ञी तिर्यंच ए आठना अपर्याप्ता ए सर्व मलीने ४३० भेदनी. मिथ्यात्वीमां आगति ३६६ भेदनी ते पूर्वोक्त ३६३ भेदमांथी ५ अनुत्तर वि० छोडीने शेष ३५८ तेमां तेउ–वायुका०ना ८ उमेरतां, एवं ३६६ भेदनी. गति ५३५ भेदनी ते ५६३मांथी ९ लोकांतिक ने ५ अनुत्तर वि० ए १४ना अपर्या० ने पर्याप्ता, ए २८ भेद छोडीने शेष ५३५नी. स्त्री वेद ने पुरुष वेदमां आगति ३७१ भेदनी ते पूर्वोक्त ३६६ भेदमां ५ अनुत्तर वि० उमेरवा. गति पुरुष वेदनी ५६३ भेदनी अने स्त्री वेदनी ५६१ भेदनी ते सातमी नरकना अप० ने पर्याप्तानी वर्जवी. नपुंसक वेदमां आगति २८५ भेदनी ते ९९ जातिना देवना पर्याप्ता, पूर्वोक्त–लट १७९ भेद अने ७ नरकना पर्याप्ता, ए सर्व मली २८५ भेदनी.

---

१ श्रीमान् देवचन्द्रजी महाराज (खरतरगगच्छीय) कृत " विचारसार " ग्रन्थमां चोथे गुणठाणे जीवना भेद ३२३ कहेल छे.

२ नारक, देव अने युगलिया, अपर्याप्त अवस्थामां मृत्यु पामे नहि माटे आगतिमां नारक, देवने युगलिकना अपर्याप्ताना भेदो गणवा नहि.

गति ५६२ भेदनी. इति आगति-गति विचार समाप्त.

गुणस्थानद्वार लिख्यते— नाम लक्खण गुण ठिई, किरिआ सत्ताबंध वेदय; उदय उदीरणा चेव, निज्जरा भाव कारणं च. १ परिसह मग्गण आया,-य जीव भेयाय जोग उवओगा; लेस्सा चरण सम्मत्तं, अप्पाबहुत्तं गुणठाणे. २ बे गाथानो अर्थ कहे छेः-१ नामद्वार, २ लक्षणद्वार, ३ स्थितिद्वार, ४ क्रियाद्वार, ५ सत्ताद्वार, ६ बंधद्वार, ७ वेदद्वार, ८ उदयद्वार, ९ उदीरणाद्वार, १० निर्ज्जराद्वार, ११ भावद्वार, १२ कारणद्वार, १३ परीषह-द्वार, १४ मार्गणाद्वार, १५ आत्मद्वार, १६ जीवभेदद्वार, १७ योगद्वार, १८ उपयोगद्वार, १९ लेश्याद्वार, २० चारित्रद्वार, २१ समकितद्वार, २२ अल्पबहुत्वद्वार, ए प्रमाणे बावीश द्वार कह्या.

हवे १ नाम द्वार छेः—१ मिथ्यात्व गुणस्थान, २ सास्वादन गु०, ३ मिश्रगु०, ४ अविरतिसम्यक्‌दृष्टि गु० ५ देशविरति गु०, ६ प्रमत्त संयत गु०, ७ अप्रमत्त संयत गु०, ८ नियट्टिवादर गु०, ९ अनियट्टिवादर गु०, १० सूक्ष्म संपराय गु०, ११ उपशांतमोहगु०, १२ क्षीणमोहगु०, १३ सयोगिकेवली गु०, १४ अयोगिकेवली गुण-स्थान. २ लक्षणद्वार—पहेला मिथ्यात्व गुणस्थानना लक्षण कहे छेः-श्रीवीतरागना प्रवचनथी ओछुं अधीकुं के विपरीत सद्दहवुं-प्ररुपवुं ते मिथ्यात्व कहीए. जेम कोइ कहे के 'जीव' अंगुठा मात्र छे. ते ओछी प्रप्ररूणा, कोइ

१ आ बे गाथा कया शास्त्रमां छे ते जणायु नथी, छतां यथामति शुद्ध लखेल छे. गुणस्थाननो विचार, विचारसार प्रकरण प्रवचनसारोद्धार लोकप्रकाश अने कर्मग्रन्थ वगेरे शास्त्रने अनुसारे लखेल छे.

कहे के-'जीव' सर्व लोक (ब्रह्मांडमात्र)मां व्यापी रहेलो छे ते अधिक प्ररूपणा. वळी कोइ कहे के- 'जीव' पंचभूतथी जूदो नथी, पंचभूतना संयोगथी उत्पन्न थाय छे अने तेना वियोगथी जीव नाश पामे छे; ते विपरीत प्ररूपणा. आ रीते जीवादिक नव पदार्थोनुं विपरीत श्रद्धान ते मिथ्यात्व. अथवा जिन प्रवचनमां श्रद्धा होवा छतां 'जमालीनी' जेम एकज पदने न सद्दहे तेने पण मिथ्यात्वी कहीए. जैन दर्शनमां 'आत्मा' द्रव्यार्थिक नये नित्य, अकृत्रिम, अखंड, अविनाशी छे अने पर्यायास्तिकनये जीवना पर्यायो बदलाय छे माटे अनित्य पण कहीए संसारीजीव शरीरमात्र व्यापक छे, परिणामी छे. एवी रीते नय प्रमाणादि पूर्वक स्याद्वाद श्रद्धा रहितज होय ते पण मिथ्यात्वीज जाणवो. ते जीव गेडी-दडाना न्याये संसारमां परिभ्रमण करे पण भवनो पार पामे नहिं. हवे बीजा गुणस्थानना लक्षण कहे छे-जेम कोइ पुरुष खीरखांडनुं भोजन करीने वमन करे तो पण तेने कांइक 'रस'नो स्वाद रहे छे तेम समकीतनुं वमन करतां कांइक समकीतनो अंश रह्यो, तेने सास्वादन गुणस्थान कहीए. अथवा समकीतरूपी महेलथी पडतां ज्यांसुधी मिथ्यात्वरूपभूमि उपर आववुं थयुं नथी, त्यांसुधी सास्वादनगु० कहीए. जीवने सास्वादन समकीत एक भवमां एकज वखत आवे अने संसारमां परिभ्रमण करतां पांचवार आवे. हवे त्रीजा गुणस्थानना लक्षण कहे छेः-जेम गोळ अने दहींना संयोगथी बे रसनो मिश्र थाय छे ते मिश्रमो-

---

१ पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने आकाश. २ देशथी मिथ्यात्व छे. ३ सास्वादन गुणठाणावाळाने अनंतानुबंधी कषायनो अवश्य उदय थाय छे, तेथी तेनुं पडवुं थाय छे.

हनीय कर्मना उदयथी जीवने कंइक मिथ्यात्व-अंश अने कंइक सम्यक्त्व-अंशरूप मिश्रण परिणाम थाय छे. अथवा नालियेर द्वीपमां रहेनार मनुष्यने जेम 'अन्न' उपर राग के द्वेष न होय तेमज जीवने जैन धर्म उपर राग के द्वेष न होय; तेने एक अंतरमुहूर्त्त कालमात्र स्थितिवालुं मिश्र गुणस्थान होय छे. ए गुणठाणे जीव परभवनुं आयुष्य बांधे नहिं अने मरण पण करे नहिं. हवे चोथा अविरति समकीतदृष्टि गुणस्थानना लक्षण कहे छेः-जे जीव, जिनेश्वरे प्ररूपेला नवतत्त्वने यथाशक्ति सद्दहे, पण अविरतिना उदयथी एक नवकारशी पच्चक्खाण करी शके नहिं तेने अविरति समकितदृष्टिगु० कहीए. अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, अने समकीतमोहनीय ए सात प्रकृतिओना उपशमथी उपशम समकीत होय. मिथ्यात्वना दल जे उदयमां आवेल तेने क्षय करे अने सत्तामां जे दल छे तेने उपशमावे तेने क्षेयोपशमसमकित कहीए. अने सात प्रकृतिओनो सर्वथा क्षय करे तेने क्षायिक समकीत कहेवाय. हवे पांचमा देशविरति गुणठाणाना लक्षण कहे छेः-जे जीव स्थूलहिंसादिथी विरमीने अल्प पण 'विरतिपणुं, अंगीकार करे ते देशविरति कहेवाय. ए गुणठाणे अप्रत्याख्यानावरणीय कषायनो उदय होवाथी सर्व विरतीपणुं अंगीकार न करी शके. देशविरतिपणुं एक भवमां पृथक्त्व हजार वखत आवे अने सर्व संसार कालमां असंख्यातवार आवे. हवे छट्ठा प्रमत्त संयत गुणस्थानना लक्षण

---

१ उपशम समकितीने मिथ्यात्वना दल, प्रदेशोदये के विपाकोदये पण न होय, क्षयोपशम समकितीने मिथ्यात्वना दल प्रदेशोदये होय अने विपाकोदये सम्यक्त्वमोहनीयना वक्ष होय; तेथी क्षयोपसमकीतथी उपशम समकीत शुद्ध छे, अपौद्गलिक छे.

कहे छेः–प्रत्याख्यानावरणीय कषायना अभावथी सर्व सावद्य योगथी सर्वदा विरतिभाव होय छे परंतु योगनी चपलता अने कषायादि प्रमादथी अशुभयोग तथा कृष्णादि लेश्या परिणमे छे; तेथी 'प्रमत्त संयत' कहेवाय छे. हवे सातमा अप्रमत्त संयत गुणस्थानना लक्षण कहे छेः—जे संयत, पांच प्रकारना प्रमाद–मद, विषय, कषाय, निद्राने विकथा–रहित अनें विशुद्ध चारित्रवालो होय ते 'अप्रमत्त संयत कहेवाय' ए गुणठाणे विशुद्ध लेश्या अने अध्यवसायनी निर्मळता होय छे. हवे आठमा अपूर्वकरणगुणठाणाना लक्षण कहे छेः–करण ते जीवनो परिणाम विशेष, ते पूर्वे कदी पण आवेल न होय तेवा उत्तम परिणामनी धाराने 'अपूर्वकरणगु०' कहीए वली ए गुणठाणानुं 'नियट्टि बादर' नाम होवाथी ए गुणठाणाने प्राप्त थयेला जीवोना अध्यवसायस्थानो त्रण कालनी अपेक्षाए असंख्य लोकाकाश प्रमाण होय छे, तेने 'निवृत्ति' कहे छे. उपरना गुणठाणानी अपेक्षाए आठमे गुणठाणे कषाय पण बादर (स्थूल) होय छे, तेथी निवृत्त बादर पण कहेवाय छे. वली ए गुणठाणे परिणामनी विशेष विशुद्धिने लइने १ स्थितिघात, २ रसघात, ३ गुणश्रेणि, ४ गुणसंक्रम अने अपुनःस्थिति ए पांच कार्य थाय छे. आ गुणठाणाथी श्रेणिनो प्रारंभ थाय छे. श्रेणिना बे भेद छेः–१ उपशम श्रेणि, अने २ क्षपक श्रेणि. उपशम श्रेणिथी क्षपक श्रेणिनी विशुद्धि विशेष होय छे. नवमा अनिवृत्ति बादर गुणठाणाना लक्षण कहे छे—

---

१ कृष्णादि लेश्यामां वर्तता जीवोने प्रमत्त संयतादि गुणठाणानी प्राप्ति न थाय पण 'पूर्वप्रतिपन्न' ने मंद अध्यवसायवाली अशुभ लेश्या होय छे. लेश्याना अध्यवसाय स्थाननी विचित्रता छे.

आ गुणठाणे चडेला जीवोना अध्यवसाय-स्थानोनी निवृत्ति थती नथी. अर्थात् त्रणे कालआश्रयी बधा जीवोना अध्यवसायो समान होय छे; तेथी अनिवृत्तिबादर कहेवाय छे. दशमा सूक्ष्मसंपरायगुणठाणाना लक्षण कहे छेः—ए गुणठाणे संज्वलननो लोभ तेना अनेक खंड करी खपावे छे, शेष सूक्ष्म ' किट्टी ' रूप लोभनो उदय होवाथी ते सूक्ष्मसंपराय कहीए. हवे अगीयारमां उपशांतमोहनीय गुणठाणाना लक्षण कहे छेः—मोहनी २८ प्रकृतिओने उपशमाववाथी कषाय रहित छे, अर्थात् सत्तामां होवा छतां उदयमां न होवाथी उपशांत वीतराग कहेवाय छे ए गुणठाणाथी जीव अवश्य पडे, जो कालस्थिति पूरण थये पडे तो पश्चानुपूर्वीए पडतां-उतरता छेक प्रमत्त गुणठाणे अटके अने कोइक पांचमे के चोथे आवे; कोइक सास्वादनपणुं पामीने मिथ्यात्वे पण जाय. उपशमश्रेणिए[1] चडेल जीव तेज भवे मोक्ष न जाय, उत्कृष्टथी अर्द्धपुद्गल कांइक न्युन संसारमां परिभ्रमण करे अने आयुष्य पूरण थये छते उपशमश्रेणिमां वर्त्ततो जीव कोइ पण गुणठाणे काळ करे तो अवश्य अनुत्तरविमानमां जाय. हवे बारमा क्षीणमोहनीय गुणस्थानना लक्षण कहे छेः—सर्वथा मोहनीय कर्मनो सत्तामांथी क्षय करेल छे छतां सत्तामां ज्ञानावरणीयादि कर्म होवाथी ते छद्मस्थ क्षीण मोह वीतराग कहेवाय छे. हवे तेरमा सयोगिकेवलीगुणठाणाना लक्षण कहे छेः—चार घाती कर्मने सर्वथा क्षय करी, अनंत

---

१ उपशमश्रेणि अने क्षपक श्रेणिनुं विशेष स्वरूप 'श्रेणिस्वरूप' विचारथी जाणवुं. आठमा गुणठाणाथी बारमा गुणठाणानुं स्वरूप अतिशय गहन छे. तो पण विशेष जाणवानी इच्छावाळाए पंचसंग्रहादिक ग्रंथमां जोवुं.

ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र अने अनंत वीर्य ए अनंत चतुष्टय सहित होवा छतां पण भवोपग्राही अघाती चार कर्म, बळेल बीज समान रहेल छे, ए गुणठाणे ८५ प्रकृति सत्तामां होय छे. तेमज सशरीरी, सलेशी होवाथी अने योग निमितथी बे समयनी स्थितिवाळो शातावेदनीयनो बंध होय छे. वली ए गुणठाणे ज० अंतर्मुहूर्त अने उ० देशे उणा क्रोड पूर्व सुधी ध्यानांतरिकाए एटले शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचे होय छे. सयोगीकेवलीने योगनो व्यापार होवाथी सयोगी केवली कहेवाय छे. समयांतर ज्ञान दर्शननो उपयोग होय छे. चौदमा अयोगी केवली गुणठाणाना लक्षण कहे छेः—सयोगी केवली, अंतर्मुहूर्त्त आयुष्य बाकी रहे त्यारे लेश्यातीत ध्यानमां एकाग्र थवा माटे योगोने रुंधे छे तेनो क्रम आ प्रमाणे छेः—प्रथम स्थूल मन वचनना योगने रुंधे, पछी स्थूलकायाना योगने रुंधे, त्यारबाद शुकलध्यानना त्रीजा पाया (सूक्ष्मक्रिय अनिवृत्ति' ध्यान)नें प्राप्त करी सूक्ष्म मन, वचनने रुंधे छे, पछी सूक्ष्म कायाना योगने रुंधे छे. त्यारपछी 'समुच्छिन्नक्रिय' रूप शुक्लध्यानना चोथा पायामां तल्लीन रही पंच लघु अक्षर (अ, इ, उ, ऋ, ऌ,)ना उच्चार मात्र काल जेटली स्थितिवाळुं ' शैलेशीकरणरूप ' चोदमुं गुणठाणुं प्राप्त थाय छे, अने ए गुणठाणाना छेल्लाथी पहेलाना समयमां ७२ प्रकृतिने खपावीने चरम (छेल्ले) समये १३ प्रकृतिने खपावे. एम सर्व कर्मनी प्रकृतिओनो सर्वथा क्षय करी, सर्व संगथी मुक्त थइ एक समयमां अन्य आकाश प्रदेशने स्पर्श्या विना मुक्तिने पामे. पूर्व प्रयोगथी, धनुष्यमुक्त बाणवत् तथा गति (उर्ध्वगति) परिणामथी, अग्निशिखावत् निर्लेप—असंगपणाथी तुंबीवत् अने बंधनमुक्त थवाथी एरंड

बीजवत् 'अक्रिय' छतां पण गति करी लोकांते पहोचे. अलोकने अडकीने सादी अनंत भांगे सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, पारंगत, निष्ठतार्थ थाय. अशरीरी सिद्धना जीवो, पूर्व (चरम) शरीरथी त्रीजा भागे न्यून जीवप्रदेशना घन-वाळा होय. साकारोपयोगे सिद्ध थाय अने ज्ञानदर्शनोपयोग सहित होय. बीजो लक्षणद्वार समाप्त. हवे त्रीजो स्थितिद्वार कहे छेः–पहेला गुणठाणनी स्थिति त्रण भांगे छेः–१ अनादि अपर्यवसित (अनंत) जे मिथ्यात्वनो आदि नथी अने अंत पण नथी, ते अभव्यजीवना मिथ्यात्वआश्रयी. २ अनादि सपर्यवसित (सांत), जे मिथ्यात्वनो आदि नथी पण अंत छे,ते जेणे ग्रंथिनो भेद करेल नथी एवा भव्य जीवना मिथ्यात्वआश्रयी.३ सादिसपर्यवसित, जे मिथ्यात्वनी आदि छे अने अंत पण छे, ते समकितने पामीने पतित थइ पुनः मिथ्यात्वने प्राप्त थयेल जीव आश्रयी. तेनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्तनी अने उ० देशे उणा अर्द्धपुद्गल परावर्त्तननी छे. त्यारबाद समकित पामीने अवश्य मोक्ष जाय. बीजा गुणठाणानी स्थिति ज० एक समयनी उ० छ आवलिकानी. त्रीजा गुण०नी स्थिति ज० ने उ० अंतर्मुहूर्त्तनी. चोथा गुण०नी स्थिति ज० अंत० ने उ० ३३ सागरोपम झाझेरी. ते अनुत्तर विमानथी चवी मनुष्यभवमां आवीने ज्यांसुधी विरतिपणुं न पामे त्यांसुधी अधिक स्थिति जाणवी, पछी उपरले गुण-ठाणे अवश्य चडे. पांचमा अने तेरमा गुण०नी स्थिति–ज० अंत०ने उ० देशे उणा (नव वर्ष न्यून) पूर्वक्रोडनी.

---

१ अंत करशे. २ सादी अनत भागो मिथ्यात्वमां होय नहिं. ३ एकवार समकीत पामी पुनः मिथ्यात्वे जाय तो पण मोहनीय कर्मनो बंध एक कोडीथी अधिक करे नहिं. ४ पांचमां गुणठाणानी ज० देशे उणा आठ वर्षनी.

छठ्ठाथी अगीयारमा गुण०नी स्थिति-ज० एक समयनी, उ० अंत०नी. बारमा गुण०नी स्थिति-ज० ने उ० अंत०नी. चौदमा गुणठाणानी स्थिति-अ इ उ ऋ ऌ ए पांच लघु अक्षरना उच्चार काल प्रमाणनी. चोथो क्रियाद्वार कहे छेः-१, २, ३ ए त्रण गुणठाणे इर्यावही वर्जीने क्रिया २४ होय, चोथे गुणठाणे २३ क्रिया होय, इर्यावहीनी अने मिथ्यात्वनी ए बे वर्जीने. पांचमे गुणठाणे क्रिया २२ होय, इरियावहीनी, मिथ्यात्वनी अने अप्रत्याख्याननी ए त्रण वर्जीने छठ्ठे गुण० १३ क्रिया होय १ काइया २ अहिगणिया, ३ पाउसिया ४ पारितावणिया ५ आरंभिया, ६ मायावत्तिया. ७ दिठिया, ८ पुठिया, ९ वियारणिया १० अणाभोगिया, ११ अणवकंखवत्तिया, १२ पेज्जवत्तिया अने १३ दोसवत्तिया. सातमे गुणठाणे आरंभिया सिवाय, १२ क्रिया होय. आठमे नवमे गुणठाणे मायावत्तिया सिवाय ११ क्रिया होय. दशमे गुणठाणे दोसवत्तिया सिवाय १० क्रिया

---

१ भगवती सूत्रमां प्रमत्त अप्रमत्त गुणठाणानी स्थिति देशे उणा क्रोड पूर्वनी कहेल छे, तेनो भावार्थ ए छे के ए बन्ने गुणठाणा अंतर्मुहूर्त्तें अंतर्मुहूर्त्तें बदले छे. प्रमत्त गु०नुं अंतर्मुहूर्त मोटु अने अप्रमत्त गु०नुं अंतर्मुहूर्त नानु होय छे. माटे सर्व अंतर्मुहूर्त भेळा करतां देशे उणा पूर्व क्रोड प्रमत्त गु०नो काल मान थाय अने अप्रमत्त गुणठाणा माटे जे स्थिति कहेल छे ते केवलीनी अपेक्षाए जाणवी. प्रमत्त सिवायना सर्व संयतो अप्रमत्तज होय छे संयमना स्थानो असंख्य लोकाकाश प्रमाणे छे, तेमां संक्लेश स्थानो अने विशुद्ध स्थानो छे सक्लेश स्थानमा वर्तंतां प्रमत्त गुणस्थान होय अने विशुद्ध स्थानमां वर्तंतां अप्रमत्त गु० होय कोइ पण एक स्थानमां अंतर्मुहूर्त उपरात स्थिति नथी, माटे बन्ने गु०नो पलटो थाय छे.
२ आठमे गुणठाणे जो के माया कषाय छे, परंतु माया क्रिया नथी; कारण ? सूक्ष्म माया होवाथी तेनो संग्रह रागवतिया क्रियामां होवाथी मायावत्तिया क्रिया वर्जी छे.

होय. ११, १२, १३मे गुणठाणे एक इरियावही क्रिया होय चौदमे गुणठाणे एके क्रिया नथी अर्थात् अक्रिय छे. पांचमो सत्ताद्वार कहे छेः—पहेला गुणठाणाथी इग्यारमा गुणठाणा सुधी आठ कर्मनी सत्ता. बारमे गुणठाणे मोहनीय वर्जीने सात कर्मनी सत्ता. तेरमे चौदमे गुण० वेदनीय, आयुष्य, नाम अने गोत्र ए चार कर्मनी सत्ता. छट्ठो वंध द्वार कहे छेः—१, २, ४, ५, ६ अने ७मा गुणठाणा सुधी, आठ अथवा सात कर्म बांधे. त्रीजे, आठमे ने नवमे गुण० आयुष्य वर्जीने सात कर्म बांधे. दशमे गुण० आयुष्य ने मोहनीय ए बे कर्म सिवाय छ कर्म बांधे. ११, १२ ने १३मे गुण० एक सातावेदनीय बांधे. चौदमो गुणस्थान अबंधक छे. सातमो वेदद्वार कहे छेः-पहेलाथी नवमा गुणठाणा सुधी त्रण वेद होय. उपरला पांच गुणठाणा अवेदी छे. आठमो उदयद्वार कहे छेः— पहेला गु०थी दशमा गु०, सुधी आठ कर्मनो उदय छे. इग्यारमे बारमे गु० मोहनीय सिवाय सात कर्मनो उदय छे. तेरमे चौदमे गु०, वेद० आ०ना, ने गो० ए चार कर्मनो उदय छे. नवमो उदीरणा द्वार कहे छेः—त्रीजुं गु० वर्जीने पहेलाथी सातमा गु०, सुधी सात अथवा आठ कर्मनी उदीरणा करे, ज्यारे आयुष्य कर्मनी उदी० न करे त्यारे सातनी उदी० करे. त्रीजे गुण० अवश्य आठ कर्मनी उदी० करे. आठमे ने नवमे गु० वेदनीय ने आयुष्य, ए बे सिवाय छ कर्मोनी उदी० करे. दशमे गु०६ अथवा ५ कर्मोनी उदी० करे, छनी करे तो वेद० ने आ० सिवाय अने पांचनी करे तो मोहनीय सिवाय करे. इग्यारमे गु० वेद०, आ० ने मोह०

१ सातमे गुणठाणे आयुष्य बंधनो प्रारंभ न करे, छट्ठे गुणठाणे देवायुनो बंध करतो सातमे पूरो करे; एम समजवु

वर्जीने पांचनी करे, बारमे गु० पांचनी अथवा बेनी उदी० करे, पांचनी करे तो पूर्ववत् अने बेनी करे तो नाम ने गोत्र कर्मनी करे. तेरमे गु०, ना० ने गो० ए बे कर्मनी उदी० करे. चौदमे गु० उदी० करे नहिं. दशमो निर्ज्जरा द्वार कहे छेः— पहेलाथी त्रीजा गु० सुधी अकाम निर्जरा छे. चोथाथी सकाम निर्जरा छे पांचमाथी बारमा गु० सुधी बार प्रकारनी निर्जरा छे. तेरमे चौदमे गु० एक शुक्लध्यान रूपनिर्जरा छे. ११मो भावद्वार कहे छेः— १ उदय भाव, २ उपशम भाव, ३ क्षायकभाव, ४ क्षयोपशमभाव अने ५ पारिणामिकभाव (ए मूल पांच भावना उत्तर भेद ५३ थाय छे.) पहेले, बीजे ने त्रीजे गु०, ३ भाव उदय, क्षयोपशम ने पारिणामिक. चोथाथी सातमा गु० सुधी, ३ अथवा ४ भाव ते क्षयोपशम समकितीने ३ भाव पूर्ववत् अने उपशम के क्षायक समकितवालाने चार भाव ते उप० समकितीने उप० भाव वध्यो अने क्षायक सम०वालाने क्षा० भाववध्यो. आठमे गु० चार भाव होय ते पूर्वना त्रण भाव अने उप० वालाने उप० भाव अने क्षायकवालाने क्षायक भाव होय. नवमांथी इग्यारमां गुण० सुधी, क्षपकश्रेणिवालाने उपशमभाव सिवाय चार भाव होय अने उपशम श्रेणिवालाने उपशसमकित होय तो चार भाव होय अने जो क्षायकसमकित होय तो पांच भाव होय. बारमे गु० उपशम सिवाय चार भाव होय. तेरमे चौदमे गु० त्रण भाव होय उदय, क्षायक ने पारिणामिक. सिद्धमां बे भाव होय—क्षायक ने पारिणामिक. बारमो कारणद्वार कहे छे—कारण ते कर्मबंधना हेतु ते पांच १ मिथ्यात्व

१ पांच कारणना उत्तर भेद क्रमशः—५, १२, ५, २५, १५=७२ भेद छे.

२ अविरति, ३ प्रमाद, ४ कषाय अने ५ योग. पहेले गुणठाणे पांच कारण होय. बीजे, त्रीजे, चोथे. गु० मिथ्यात्व सिवाय चार कारण. पांचमे गु०, पण कारण चार (एक त्रसकायनी अविरति टळी छे ११ अविरति रही छे.) छट्ठे गु० त्रण कारण प्रमाद, कषाय ने योग. सातमा गु०थी दशमा गु० सुधी बे कारण—कषाय ने योग. इग्यारमांथी तेरमां सुधी एक योग होय. चौदमे गु० कारण कोइ नथी. तेरमो परिषहद्वार कहे छेः—पहेला गु०थी नवमा गु० सुधी २२ परिषह होय. (पण संवररूप तो छट्ठाथीज गणाय) एक जीव आश्रयी एकी साथे (युगवत्) २० परिषह होय. टाढनो परि० होय त्यां तापनो परि० न होय, अने चालवानो परि० होय. त्यां बेसवानो परि० न होय; तेमज बेसवानो त्यां चालवानो अने तापनो त्यां टाढनो न होय. दशमे इग्यारमे ने बारमे गु० १४ परिषह होय. मोहनीय कर्मना आठ परिषहनो १ अचेलनो २ अरतिनो, ३ स्त्रीनो, ४ बेसवानो ५ आक्रोशनो, ६ याचनानो अने ७ सत्कार पुरस्कारनो ए सात चारित्र मोहना अने दर्शन मोहनीनो १ दर्शन परिषह, ए आठ न होय. एक समये बार होय, पूर्ववत् विरोधि बे परि० न होय. तेरमे चौदमे गु०, ११ परि० वेदनीय कर्मना होय. ज्ञानवरणीयना बे परी०,प्रज्ञा ने अज्ञान अने अंतराय कर्मनो १ अलाभ ए त्रण परि० न होय. एक समये नव होय पूर्ववत. चौदमो मार्गणाद्वारकहे छेः—पहेले गुणठाणे मार्गणा ४ त्रीजे, चोथे, पांचमे ने सातमे जाय. बीजे गु० मार्गणा १ पडीने पहेले आवे, चडवुं नथी, त्रीजे गु० मार्गणा ४ पडे तो पहेले, आवे ने चडेतो चोथे,

१ तत्वार्थमां एकी साथे १९ परीषहो कहेल छे. २ तत्वार्थमां अदर्शन प० कहेल छे.

पांचमे ने सातमे जाय. चोथे गु० मार्गणा ५ पडे तो पहेले, बीजे, ने त्रीजे, आवे. चडे तो पांचमे ने सातमे जाय. पांचमे गु० मार्गणा ५ पडे तो पहेले, बीजे, त्रीजे ने चोथे आवे. अने चडे तो सातमे जाय. छट्ठे गु० मार्गणा ६ पडे तो पहेले, बीजे, त्रीजे, चोथे, पांचमे आवे अने चडे तो सातमे जाय. सातमे गु० मार्गणा ३ पडे तो छट्ठे चोथे आवे अनें चडे तो आठमे जाय. आठमे गु० मार्गणा ३ पडे तो सातमे चोथे आवे अने चडेतो नवमे जाय. नवमे गु० मार्गणा ३ पडे तो आठमें चोथे आवे अनें चडे तो दशमे जाय. दशमे गु० मार्गणा ४ पडे तो नवमे चोथे आवे अने चडे तो इग्यारमे बारमे जाय. इग्यारमे गु० मार्गणा २ काल करे तो अनुत्तर विमाने जाय. अने पडे तो दशमाथी अनुक्रमे सातमे अटके, अथवा चोथे बीजे अनें पहेले पण आवे; चडवुं नथी, बारमे गु० मार्गणा १ तेरमे जाय, पडवुं नथी. तेरमे गु० मार्गणा १ चौदमे जाय, पडवुं नथी. चौदमे मार्गणा एके नथी मोक्षे जाय. पंदरमो आत्मद्वार कहे छेः—आत्मा आठ-१ द्रव्य आत्मा, २ कषाय आ०, ३ योग आ०, ४ उप-योग आ०, ५ ज्ञान आ०, ६ दर्शन आ०, ७ चारित्र आ० नें ८ वीर्य आत्मा. पहेले, त्रीजे गु०, ज्ञान आ० ने चारित्र आ० सिवाय छ आत्मा. बीजे ने चोथे गु० चारित्र आ० सिवाय सात आत्मा. पांचमे गु० [2]सात आत्मा

---

१ शुद्ध द्रव्यार्थिक नये एकज आत्मा छे. यदुक्तं स्थानांगे-"एगे आया" इति वचनात्. अशुद्ध द्रव्यार्थिक नये ज्ञानादि शुद्ध पर्याय अने कषायादि अशुद्ध पर्यायने 'आत्मा' कहीने वर्णवेल छे. कारण? गुण-गुणिनो कथंचित् अभेद छे माटे ज्ञान वगेरेने अने योगादिकने आत्मा कहेल छे.

२ देशथी चारित्र छे, सर्व विरति न होवाथी ७ आत्मा कह्या.

पूर्ववत्. छठ्ठाथी दशमा गु० सुधी आठ आत्मा. इग्यारमे बारमे ने तेरमे गु० कषाय आ० सिवाय सात आत्मा. चौदमे गु० कषाय आ० ने योग आ० सिवाय छ आत्मा. सिद्धमां ज्ञान आ०, दर्शन आ०, द्रव्य आ० ने उपयोग आ० ए चार आत्मा होय. सोलमो जीवभेदद्वार कहे छेः—पहेले गु० जीवना १४ भेद. बीजे गु० ६ भेद बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय अने असंज्ञि तिर्यंच पंचेंद्रिय, ए चारना अपर्याप्ता अने संज्ञि पंचेंद्रियना अपर्याप्ता ने पर्याप्ता. त्रीजे गु० एक संज्ञि पंचेंद्रियनो पर्याप्त. चोथे गु० संज्ञिपंचेंद्रियना अप० ने पर्याप्त बे भेद. पांचमांथी चौदमा गु० सुधी एक संज्ञिपंचेंद्रियनो पर्याप्त. सत्तरमो योगद्वार कहे छेः-पहेले, बीजे ने चोथे गु० आहारक ने आहारकनो मिश्र ए बे सिवाय १३ योग होय. त्रीजे गु० ४ मनना ४ वचनना, १ उदारिक ने १ वैक्रेय, ए दश योग होय. पांचमे गु० आहारकना बे अने कार्मणकाय योग ए ३ सिवाय १२ योग होय. छट्ठे गु० कार्मण योग सिवाय १४ योग. सातमे गु० ४ मनना ४ वचनना १ उदा०, १ वै० ने १ आहारक, ए ११ योग होय. आठमाथी बारमा गु० सुधी ४ मनना ४ वचनना, ने १उदारिकनो ए ९ योग होय. तेरमे गु०, सत्य मनोयोग, व्यवहारमनो०, सत्यवचनयोग, व्यवहारवच० उदारिक, उदा०नो मिश्र ने कार्मण०, ए सात योग होय. चौदमे गु० योग नथी. अढारमो उपयोग द्वार कहे छेः-पहेले गु०, ६ उपयोग ३ अज्ञान ने ३ दर्शन. बीजे चोथे ने पांचमे गु०, ६ उप०, ३ ज्ञान ने ३ दर्शन. छट्ठाथी बारमा गु० सुधी ७ उप०, ४ ज्ञान ने ३ दर्शन. तेरमे, चौदमे तथा सिद्धमां २ उप०, केवलज्ञान केवल दर्शन. उगणीशमो लेश्याद्वार कहे छेः-पहेलाथी छट्ठा गु ०सुधी

६ लेश्या. सातमे गु०, ३ ले० उपरली. आठमाथी बारमा गु० सुधी एक शुक्लेश्या. तेरमे गु०, परमशुक्ल लेश्या. चौदमे लेश्या नथी. वीशमो चारित्रद्वार कहे छेः—पहेलाथी चोथा गु० सुधी एके चारित्र नथी. पांचमे गु०, देशथी सामायिक चा० छे. छट्ठे, सातमे गु० ३ चारित्र सामायिक चा०, छेदोपस्थापनीय चा० अने परिहार विशुद्ध चारित्र० आठमे, नवमे गु०. बे चा० सामा० ने छेदो० चारित्र. दशमे १ सूक्ष्म संपराय चारित्र. इग्यारमांथी चौदमा गु० सुधी १ यथाख्यात चारित्र. एकवीशमो समकितद्वार कहे छेः—पहेले-त्रीजे गु० समकित नथी. बीजे गु०, सास्वादन समकित छे. चोथाथी सातमा गु० सुधी सम० ४ उपशम स०, क्षयोपशमस०, वेदकस०, क्षायकसमकित. आठमे, नवमे, दशमे, इग्यारमे गु०, सम०२ उपशम ने क्षायकसमकित. बारमे, तेरमे, ने चौदमे गु०, क्षायकसमकित. बावीशमो अल्पबहुत्वद्वार कहे छेः—सर्वथी थोडा इग्यारमा गु० वाला, उत्कृष्टथी एक समये ५४ होय, तेथी बारमा गुण०वाला, संख्यातगुणा-एकसमये उत्कृष्टथी १०८ होय. तेथी आठमा, नवमा ने दशमा गु०वाला, विशेषाधिक अने परस्पर तुल्य छे; उत्कृष्टथी १६२ होय. तेथी तेरमा गु०वाला, संख्यातगुणा-पृथक्त्व क्रोड होय. तेथी सातमा गु०वाला, संख्यातगुणा-शतपृथक्त्व क्रोड होय. तेथी छट्ठा गु०वाला, संख्यातगुणा-सहस्र पृथक्त्व क्रोड होय. तेथी पांचमा गु०वाला, असंख्यातगुा होय तिर्यंच श्रावक

---

१ कोइक समये उपसमवाला घणा होय अने क्षपकवाला थोडा पण होय; परंतु उप०वाला वधारे जो होय तो ५४ होय, ए अपेक्षाए अल्पबहुत्व जाणवुं.

भळवाथी. तेथी बीजा गु०वाला, असंख्यातगुणा. तेथी त्रीजा गु०वाला, असंख्यातगुणा. चार गतिमां विशेष होय. तेथी चोथा गु०वाला, असंख्यातगुणा घणी स्थिति होवाथी. तेथी चौदमा गु०वाला अनंतगुणा, सिद्ध भळवाथी. तेथी पहेला गु०वाला, अनंतगुणा, वनस्पतिना जीवो भळवाथी, इति बावीश द्वार समाप्त.

हवे क्षेपक द्वार कहे छेः— १ हेतुद्वार–मिथ्यात्व ५, अविरति[1] १२, कषाय २५ ने योग १५. ए ५७ उत्तर हेतु. पहेले गुणठाणे हेतु ५५ बे आहारकना वर्जवा. बीजे गु० हेतु ५० ते ५५मांथी ५ मिथ्यात्व वर्जवा. त्रीजे गु०, हेतु ४३ ते ५०मांथी अनंतानुबंधी–चोकडी, १ उदारिक–मिश्र, १ वैक्रेय–मिश्र अने कार्मणकाययोग. ए सात वर्जवा. चोथे गु० हेतु ४६ ते ४३ पूर्वना अने १ उदा० मिश्र, १ वै० मिश्र ने कार्मण० योग ए त्रण वध्या. पांचमे गु० ४० हेतु ते ४६मांथी अप्रत्याख्याननी चोकडी, त्रसकायनी अविरति ने कार्मण० ए छ वर्जवा. छठ्ठे गु० हेतु २७ ते ४०मांथी प्रत्याख्याननी चोकडी, ११ अविरति (५ स्थावरनी ५ इंद्रियनी अने १ मननी) ए १५ वर्जवाथी शेष २५ अने आहारकना बे वधारवाथी २७ हेतु. सातमे गु० हेतु २४ ते २७मांथी १ उदा० मिश्र, १ वै० मिश्रने १ आहा०मि० ए ३ वर्जवा. आठमे गु० हेतु २२ ते २४मांथी वैक्रेय तथा आहारक ए बे वर्जवा. नवमे गु० हेतु १६ ते २२मांथी हास्यादि छ नोकषाय वर्जवा. दशमेगु० हेतु १० ते १६मांथी त्रण वेद अने संज्वलनना क्रोध, मानने माया, ए छ वर्जवा. इग्यारमे बारमे गु० हेतु ९ ते १०मांथी संज्वलननो लोभ वर्जवो. शेष

---

१ छ काय, पांच इंद्रिय ने मन ए १२ अविरति छे.

चार मनना, चार वचनना ने १ कार्मण० ए ९ होय. तेरमे गु० हेतु ७ ते १ सत्यमन०, २ व्यवहारम०, ३ सत्यवचन०, ४ व्यवहारव० ५ उदा० ६ उदा० मिश्र ने ७ कार्मण० ए सात होय. चौदमे गु० हेतु नथी. २ दंडकद्वार कहे छेः—पहेलेगु० २४ दंडक. बीजे गु० ५ स्थावर सिवाय १९ दंडक. त्रीजे, चोथे गु०, ३ विकलेंद्रिय सिवाय १६ दंडक. पांचमे गु० संज्ञि तिर्यच ने संज्ञि मनुष्य ए बे दंडक. छट्ठाथी चौदमा सुधी संज्ञिमनुष्यनो १ दंडक होय. ३ जीव-योनिद्वार कहे छेः—पहेले गु० ८४ लाख जीव योनि. बीजे गु० ३२ लाख ते एकेंद्रियनी ५२ लाख योनि वर्जवी. त्रीजे चोथे गु० छ लाख विकलेंद्रियना वर्जीने २६ लाख, पांचमे गु० १८ लाख ते ४ लाख तिर्यच पंचेंद्रिय ने १४ लाख मनुष्यनी. छट्ठाथी चौदमा गु० सुधी १४ लाख मनुष्यनी. ४ अंतरद्वार कहे छेः—पहेले गु० अंतर, ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं अने उ० १३२ सागरोपम झाझेरुं, ते ६६ सागरोपम क्षयोपशम सम्यक्त्वमां रही अंतर्मुहूर्त त्रीजे गु० आवीने पाछो ६६ सागर क्षयोपशम सम्यक्त्वे रहीने मिथ्यात्व गुणठाणे आवे. बीजे गु० अंतर, ज० पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं, उ० देशे उणा अर्द्धपुद्गल पराव-

— १ एटलो काल क्षयोपशम सम्यक्त्वमां–देवभवमां चोथु गुणठाणु अने मनुष्यभवमां पांचमु ने छठुं गुणठाणुं पण होय. १३२ सागरोपम-बाद अवश्य मोक्ष जाय, अथवा मिथ्यात्वे आवे. अर्थात् एथी वधारे मिथ्यात्वनुं अंतर नथी. २ सास्वादननु पल्योपमना असंख्यातमा भागथी न्यून (ओछु) अंतरुं न थाय. कारण? सम्यक्त्वमोहनी ने मिश्र मोहनी, ए बे प्रकृतिने उवेली सत्तामांथी काढी ने २६ प्रकृतिनी सत्तावालो थाय; त्यारे तेनी 'उद्वलना' पल्योपमना असंख्यातमा भागथी न्यून होती नथी. विशेष जिज्ञासुए पचसंग्रह टीकानुं अवलोकन करवुं.

वर्त्तेनुं. त्रीजाथी इग्यारमा गु०सुधी अंतर, ज० अंत०ने उ० देशे उणा अर्द्धपु०नुं. बारमे, तेरमे नें चौदमे गु० अंतर नथी; ते एक जीव आश्रयी जाणवुं. ५ ध्यानद्वार कहे छेः—पहेले, बीजे ने त्रीजे गु० ध्यान बे-आर्त्त नें रौद्र. चोथे नें पांचमे गु० त्रण ध्यान-आ०, रौ०ने धर्मध्यान. छट्ठे गु०बे ध्यान-आर्त्त ने धर्मध्यान. सातमे गु०१ धर्मध्यान. आठमाथी चौदमा गु० सुधी १ शुक्लध्यान. ६ स्पर्शनाद्वार कहे छेः—पहेलुं गुणस्थान, चौद राजलोक स्पर्शे. बीजुं गु० नीचे पंडकवनथी ते छट्ठी नरक सुधी अने उपर अधोगाम विजयथी ते नव ग्रैवेयक लगे स्पर्शे. त्रीजुं गु० लोकनो असंख्यातमो भाग स्पर्शे. चोथुं गु० उपर अधोगाम विजयथी बारमा देवलोक लगे स्पर्शे. नीचे पंडकवनथी छट्ठी नरक लगे स्पर्शे. पांचमुं गु० उपर अधोगाम विजयथी बारमा देवलोक लगे स्पर्शे. छट्ठा गु०थी इग्यारमा गु० सुधी उपर अधोगाम विजयथी पांच अनुत्तर विमान लगे स्पर्शे. बारमुं गु०, लोकनो असंख्यातमो भाग स्पर्शे. तेरमुं गु०, सर्व लोक स्पर्शे. चौदमुं गु०, लोकनो असंख्यातमो भाग स्पर्शे. ७ तीर्थकर गोत्रद्वार कहे छेः—चोथो, पांचमो, छट्ठो, सातमो ने आठमो ए पांच गुणठाणे तीर्थकरगोत्र बंधाय, शेष गुण० न बंधाय. ८ तीर्थंकर स्पर्शनाद्वार कहे छेः—तीर्थंकर देव पहेलो, बीजो, त्रीजो, पांचमो अने इग्यारमो. ए पांच गु० छोडीने शेष ९ गु० स्पर्शे. ९ शाश्वतद्वार कहे छेः—पहेलो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, सातमो अने तेरमो ए छ गु०, शाश्वता छे शेष ८ गु०, अशाश्वता छे १० कालद्वार कहे छेः—त्रीजे, बारमे ने तेरमे ए ३ गु०मां

१ ए छगुणठाणे वर्तता जीवो, हमेशां होय छे; माटे शाश्वता कहेल छे. छ सिवाय आठ गुणठाणे जीवो क्यारे नपण होय माटे अशाश्वता कह्या.

मरण न करे, शेष ११ गु०मां मरण करे. ११ परभविकद्वार कहे छे—१-२ ने ४थुं ए त्रण गुणठाणा, परभवमां साथे जाय. शेष ११ गु० परभवे साथे आवे नहिं. १२ संघयण द्वार कहे छेः—पहेलाथी सातमा गु० सुधी ६ संघयण होय. आठमाथी इग्यारमा गु० सुधी पहेला ३ संघयण होय. बारमाथी चौदमा गु० सुधी १ वज्रऋषभनाराच संघयण होय. १२ संहरण द्वार कहे छेः—१ आर्याजी, २ अवेदी, ३ परिहार विशुद्ध चारित्रवान्, ४ पुलाकलब्धिवाळा, ५ अप्रमत्त साधु. ६ चौद पूर्वधरमुनि अने ७ आहारक शरीरी, ए सातनो अपहरण कोइ देव पण करी शके नहिं. इति क्षेपक द्वार समाप्त. श्रीगुणस्थान विचार समाप्त.

अथ बासठ बोल—विचार—

गाथा जीव गइ इंदिय काए, जोगे वेए कसाय लेसाय; सम्मत्त नाण दंसण, संजय उवओग आहारे. १ भासग परित्त पज्ज,-ते सूहुम सन्नी भव चरिमेय; जीव गुणठाण जोगुव,-ओग लेसाय अप्प बहुत्तं २. हवे १ जीवद्वारः—समुच्चय जीवमां जीवना भेद १४, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६.॥२ गतिद्वारः—नरकनी गतिमां जीवना भेद ३ ते संज्ञिनो अपर्याप्त ने पर्याप्त अने असंज्ञिनो अप०,गु०४ पहेला, योग ११ ते ४ मनना

१ गुणस्थाननो विचार, अनेक ग्रथोनी सहायताथी लखेल छे. जोके " विचारसारादी " ग्रथोमां गुणठाणाने विषे योग उपयोगादि, कर्मग्रंथ प्रमाणे लखेल छे. तथापि अत्रे तो सिद्धांताम्नाए लखेल छे, सिद्धांत अने कर्मग्रथमां विविध-भिन्नता जोवामां आवे छे, ते पण नयनीव्याख्याए विचारता वास्तविक भेद जणातो नथी. कर्मग्रंथादि शास्त्रो पण घणा प्राचीन छे पूर्वथी उध्धृत थयेल छे. परमार्थथी विचारनारने सत्य समजाय छे.

२ उपरनी गाथामां २१ द्वार छे तेमां ६२ बोल विचारवाना होइ ने ते बासठियो कहेवाय छे.

४ वचनना, २ वैक्रेयना ने १ कार्मण०. उप०, ९ ते ३ ज्ञान ३ अज्ञान ने ३ दर्शन. लेश्या ३ पहेली ॥ तिर्यचनी गतिमां जीव० १४, गु० ५ पहेला, योग आहारकना २ वर्जी ने १३, उप० ९ पूर्ववत्, लेश्या ६. ॥ तिर्यचणीमां जीव० २ ते संज्ञीना अप०ने पर्याप्त, गुणठाणादि तिर्यचनी गति प्रमाणे. ॥ मनुष्यनी गतिमां जीव०३ ते संज्ञीना अप० ने पर्याप्त अने असंज्ञीनो अप०, गु० १४, योग १५, उप० १२, लेश्या ६. ॥ मनुष्यणीमां जीव० २ संज्ञीना अप०ने प०, गु० १४, योग १३ आहारकना २ वर्जीने, उप० १२, ले० ६. देवनी गतिमां जीव० ३ संज्ञी पंचें०ना १ अ० ने प० २ अने असंज्ञी पंचें० अप०, गु०४ पहेला. योग ११ नरक गतिवत्, उप०९ नरकगतिवत्, ले०६. देवीमां जीव० २ संज्ञीना अ० ने प०, गु०४, योग ११, उप० ९, ले० ४ पहेली ॥ सिद्ध गतिमां जीव० नथी, गु० नथी, योग नथी, उप० २ केवलज्ञान के०दर्शन, लेश्या नथी. एओनुं अल्पबहुत्व–१ सर्वेथी थोडी मनुष्यणी, २ तेथी मनुष्य असंख्यातगुणा समुर्च्छिम भळ्या माटे. ३ तेथी नारकी असंख्यातगुणा, ४ तेथी तिर्यचणी असंख्या०, ५ तेथी देव असंख्या० ६ तेथी देवी संख्यात गुणी, ७ तेथी सिद्ध अनंतगुणा, ८ तेथी तिर्यच अनंतगुणा. ३ इंद्रियद्वारः—सइंदियामां जीवना भेद १४, गुणठाणा १२ उपरना बे नहिं. योग १५, उपयोग १० केवलज्ञानं केवलदर्शन ए बे नहिं. लेश्या छ ॥ एकेंद्रियमां जीव०४ ते सूक्ष्म ने बादर एकें०ना अप०ने पर्याप्ता, गु०१ पहेलुं योग ५ ते उदारिकना २ वैक्रेयना २ ने कार्मण०, उप० ३ बे अज्ञान ने १ अचक्षु दर्शन, लेश्या ४ पहेली. ॥

१ केवलीने द्रव्येंद्रिय होवा छतां पण भावेंद्रियना अभावथी अनिंद्रिय कहेल छे. भावेंद्रिय, क्षयोपशम भावे होय; केवलीने क्षायकभाव छे.

बेइंद्रिय, तेइंद्रिय ने चउरिंद्रियमां जीव० २ पोतपोताना अप० ने पर्याप्ता, गु० २ पहेला, योग ४ ते उदा० २ कार्मणका० नें व्यवहार वचन, उप० बेइंद्रिय अने तेइंद्रियने ५ बे ज्ञान, बे अज्ञान ने एक अचक्षुद०, चउरिंद्रियने ६ एक चक्षुदर्शन वध्युं, ले० ३ पहेली ॥ पंचेंद्रियमां जीव० ४ ते असंज्ञी पं० ने संज्ञी पं० ना अप० ने पर्याप्ता, गु० १२ प्रथमना, योग १५, उप० १० के० ज्ञान ने के० दर्शन नहिं, ले० ६ ॥ अणिंदियामां जीव० १ संज्ञीपंचें०नो पर्याप्त, गु० २ छेला, योग ७ ते सत्यमनो०, व्यवहारमनो०, सत्यवचन०, व्यवहारवचन०, उदारिकना २ ने कार्मणकाययोग. उप० २ ते के०ज्ञान ने के०दर्शन, ले० १ शुक्ल. हवे अल्पबहुत्वः—१ सर्वथी थोडा पंचेंद्रिय, २ तेथी चउरिंद्रिय विशेषाधिक, ३ तेथी तेइंद्रिय विशेषाधिक, ४ तेथी बेइंद्रिय विशेषा० ५ तेथी अनिंद्रिय अनंतगुणा, ६ तेथी एकेंद्रिय अनंतगु०. ७ तेथी सइंद्रिय विशेषाधिक ॥ ४ कायिक द्वारः—सकायिकमां जीव० १४, गु० १४ योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥ पृथवीकायिक, अप्का० ने वन०, ए ३मां जीव० ४, गु० १ पहेलु, योग ३ ते उदा० २ ने कार्मण०, उप० ३ ते २ अज्ञान ने १ अचक्षुद०, ले० ४ पहेली॥ तेउ० ने वाउ०मां जीव० ४, गु० १, योग तेउ०मां ३ ने वाउ०मां ५ ते वैक्रेयना २ वध्या, उप० ३ ते २ अज्ञानने १ अचक्षुद०, ले० ३ पहेली. त्रसका०मां जीव० १० चार एकेंद्रियना वर्ज्या. गु० १४. योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥ अकायिकमां जीवना भेद, गु० योग, अने लेश्या नथी, उप०बे, केवलज्ञान ने के०दर्शन. एओनुं अल्पबहुत्वः-१ सर्वथी थोडा त्रसकायिक २ तेथी तेउ० असंख्यातगुणा, ३ तेथी पृथवी० विशेषाधिक तेथी अप्का० विशेषा०,

तेथी वाउ० विशेषा०, तेथी अकायिक अनंतगुणा, तेथी सकायिक विशेषाधिक ॥ ५ योगद्वार–सजोगीमां जीव० १४, गु० १३ एक छेलो नहिं. योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥ मनयोगीमां जीवनो० १ संज्ञी पंचें०नो पर्याप्त, गु० १३ पूर्ववत्, योग १४ कार्मण० नहि. उप० १२, ले० ६ ॥ वचनयोगीमां जीव० ५ बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, असंज्ञीपंचेंद्रिय, संज्ञीपंचेंद्रिय, ए पांचना पर्याप्ता. गु० १३, योग १४ पूर्ववत् उप० १२, ले० ६ ॥ काययोगीमां जीव० १४ गुण० १३ पूर्ववत् योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥ अयोगीमां जीव० १ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु० १ चौदमुं, योग नथी, उप० २ के० ज्ञान ने के० दर्शन, ले० नथी. एओनुं अल्पबहुत्व–१ सर्वथी थोडा मनयोगी, २ तेथी वचनयोगी असंख्या०, ३ तेथी अयोगी अनंतगुणा, ४ तेथी काययोगी अनंतगुणा, ५ तेथी सयोगी विशेषाधिक. ॥ ६ वेदद्वार—सवेदीमां जीव० १४, गु० ९ पहेला, योग १५, उप० १० के० ज्ञान ने के० दर्शन नहिं, ले०६ ॥ स्त्रीवेदी ने पुरुषवेदीमां जीव० २ संज्ञीपं०ना अप० ने पर्याप्त. गु० ९ प्रथमना योग स्त्रीवेदमां १३ आहारकना बे नहिं अने पुरुषवेदमां १५, उप० १०, ले० ६ ॥ नपुंसकवेदमां जीव० १४, गु० ९, योग १५, उप० १० ले० ६ ॥ अवेदीमां जीव० १ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु० ६ नवमांथी चौदमा सुधी, योग ११ ते मनना,४ वचनना,४ उदा०ना २ ने १ कार्मण०,उप० ९ पांच ज्ञान ने चार दर्शन, ले० १ शुक्ल.एओनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा पुरुषवेदी,२ तेथी स्त्रीवेदी संख्यातगुणा,३ तेथी अवेदी अनंतगुणा,४ तेथी नपुंसकवेदी अनंत०,

१ नवमा गुणठाणानो संख्यातमो भाग बाकी रहे त्यारे अवेदी थाय छे.

५ तेथी सवेदी विशेषाधिक. कषायद्वारः—सकषायीमां जीव० १४, गु०१० प्रथम, योग १५, उप० १० के० ज्ञा०ने कें० द० नहिं, ले० ६. ॥ क्रोध, मान ने माया कषायीमां जीव० १४, गु० नव अने लोभकषायमां गु० १० शेष योग वगेरे सकषायीवत् ॥ अकषायीमां जीव० १ सं० पं०नो पर्याप्त, गु० ४ इग्यारमांथी १४मा सुधी, योग ११ तें ४ मनना, ४ वचनना, २ उदा०ना ने १ कार्मण०, उप०९ पांच ज्ञान ने ४ दर्शन, ले०१ शुक्ल. एओनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा अकषायी, २ तेथी मान कषायी अनंतगुणा, ३ तेथी क्रोध० विशेषाधिक, ४ तेथी माया० विशे०, ५ तेथी लोभ० विशे०, ६ तेथी सकषायी विशेषाधिक. ८ लेश्याद्वार—सलेशीमां जीव०१४, गु० १३, योग १५, उप० १२, ले०६ ॥ कृष्ण, नील ने कापोतलेशीमां जीवना०१४, गु०६ प्रथम, योग १५, उप०१० के० ज्ञा० ने के० द० नहिं, ले० पोतपोतानी, तेजोलेशीमां जीव० ३ ते बादर एकें०नो अपर्याप्त अने संज्ञीना बे, गु०७ पहेला, योग १५, उप०१० के०ज्ञा० ने के०द० नहिं, ले०१ तेजोले०, पद्मलेशीमां जीव०२ सांज्ञीना अप० ने प०, गु०७ पहेला, योग १५, उप०१० ले०१ पद्म ॥ शुक्ल लेशीमां जीव०२ संज्ञीना, गु०१३, योग १५, उप०१२. ले०१ शुक्ल. अलेशीमां जीवनो०१ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु०१ चौदमुं, योग नथी, उप० २ के०ज्ञा० ने के०द०, ले० नथी.एओनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा शुक्ललेशी.२ तेथी पद्मलेशी संख्यातगुणा, ३ तेथी तेजोलेशी संख्या०, ४ तेथी अलेशी अनंतगुणा, ५ तेथी कापोतलेशी अनंत०. ६ तेथी नीललेशी विशेषाधिक, ७ तेथी कृष्णलेशी विशेषा०, ८ तेथी सलेशी विशेषाधिक ॥ ९ सम्यक्त्वद्वारः—समुचय सम्यक्दृष्टिमां जीव० ६ बेइंद्रिय, तेइं०,

चउ०, असं० पंचें० ए ४ ना अपर्याप्त अने सं० पं० ना अप० ने पर्याप्त, गु० १२ पहेलुं ने त्रीजुं नहिं, योग १५, उप० ९ ते ५ ज्ञान ने ४ दर्शन, लें० ६ ॥ सास्वादन सम्यक्दृष्टिमां जीव० ६ पूर्ववत्, गु० १ बीजुं, योग १३ आहारकना २ नहिं, उप० ६ ज्ञान ३ दर्शन ३, ले० ६ ॥ उपशमस०मां जीव० २ संज्ञीना, गु० ८ ते चोथाथी इग्यारमा सुधी, योग १३ आहारकना २ नहिं, उप० ७ ज्ञान ४ नें ३ दर्शन, लेश्या ६ ॥ क्षयोपशम तथा वेदक[1] स०मां जीव० २ संज्ञीना, गु० ४ ते चोथाथी सातमा सुधी, योग १५, उप० ७ ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन, ले० ६ ॥ क्षायक स०मां जीव० २ संज्ञीना, गु० ११ ते चोथाथी चौदमा सुधी, योग १५, उप० ९ त्रण अज्ञान नहिं, ले० ६ ॥ मिथ्यादृष्टिमां जीव० १४, गु० १ पहेलुं, योग १३ आहारकना २ नहिं, उप० ६ ते ३ अज्ञान ने ३ दर्शन, ले० ६ ॥ मिश्र दृष्टिमां जीवनो० १ संज्ञी पं०नो पर्याप्त, गु० १ त्रीजुं, योग १० ते ४ मनना, ४ वचनना, १ उदारिक ने १ वैक्रेय. उप० ६ अज्ञान ३ ने ३ दर्शन, ले०६ ॥ एओनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा सास्वादनसमकिती, २ तेथी उपशमसम० संख्यातगुणा, ३ तेथी मिश्र दृ० संख्या०, ४ तेथी क्षयोपशमसम० असंख्या०, ५ तेथी क्षायक सम० अनंतगुणा, ६ तेथी समुच्चयसम० विशेषाधिक, ७ तेथी मिथ्यादृष्टि अनंतगुणा ॥ १० ज्ञानद्वार—समुच्चयज्ञानीमां जीव० ६ ते त्रण विकलेंद्रिय, असंज्ञी पं० ए चारना अप० ने संज्ञी पं० अप०

१ वेदक समकितनो काल एक समय छे, वेदकसमकिती जीव सख्याता होय अने क्यारे न पण होय तेथी वेदकने क्षयोपशमां गणीने जूदो अल्पबहुत्व कहेल नथी.

ने पर्याप्ता, गु० १२ पहेलुं ने त्रीजुं नहिं, योग १५, उप० ९ अज्ञान ३ नहिं, ले० ६ ॥ मति श्रुतज्ञानीमां जीव० ६ पूर्ववत्, गु० १०, ते पहेलुं-त्रीजुं-तेरमुं ने चौदमुं नहिं, योग १५, उप० ७ ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन, ले० ६ ॥ अवधिज्ञानीमां जीव० २ संज्ञीना, गु० १० योग १५, उप० ७, ले० ६ ॥ मनःपर्यायज्ञानीमां जीव० १ संज्ञी-पं०नो पर्याप्त, गु० ७ छट्ठाथी बारमा सुधी, योग १४ कार्मण० नहिं. उप० ७, ले० ६ ॥ केवलज्ञानीमां जीव० १ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु० २ उपरला, योग ७, उप० २, ले० १ परमशुक्ल ॥ अज्ञानीमां जीव० १४, गु० २ पहेलुं ने त्रीजुं, योग १३ आहारकना बे नहिं, उप० छ ३ अज्ञा०ने ३ दर्शन, ले० ६ ॥ मति-श्रुतअज्ञानीमां जीव० १४ गु० २ पूर्ववत्, योग १३, उप० ६, ले० ६ ॥ विभंगज्ञानीमां जीव० २ संज्ञीना, गु० २, योग १३, उप० ६, ले० ६. एओनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा मनःपर्यायज्ञानी, २ तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा, ३ तेथी मति-श्रुतज्ञानी विशेषाधिकने मांहोमांहे तुल्य० ४ तेथी विभं० असंख्या०, ५ तेथी केवल० अनंतगुणा, ६ तेथी समुच्चयज्ञानी विशेषा०, ७ तेथी मति-श्रुतअज्ञानी० अनंतगु० नें मांहोमांहे तुल्य, ८ तेथी अज्ञानी विषाधिक ॥ ११ दर्शनद्वार—चक्षुदर्शनीमां जीव० ६ ते चउरिंद्रिय, असंज्ञीपं० ने संज्ञीपं०ना अप०ने पर्याप्त, गु० १२ उपरना बे नहिं, योग १४ कार्मण० नहिं, उप० १० के० ज्ञा० नें के० द० नहिं, ले० ६ ॥ अचक्षुदर्शनीमां जीव० १४, गु० १२, योग १५, उप० १०, ले० ६ ॥ अवधि द०मां जीव० २ संज्ञीना बे, गु० १२ योग १५, उप० १०, ले०

---

१ चउरिंद्रियादि त्रणना अपर्याप्तानी गवेषणा न करवाथी त्रण भेद पण कहेल छे.

६ ॥ केवलद०मां जीव०१ संज्ञी पं०नो पर्याप्त, गु० २ उपरला, योग ७, उप० २, ले०१ परमशुक्ल. एओनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा अवधिद०, २ तेथी चक्षुद० असंख्या० ३ तेथी केवलद० अनंतगुणा, ४ तेथी अचक्षुद० अनंत० ॥ १२ संयतद्वार—संयतमां जीव० १ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु० ९. छट्ठाथी चौदमा सुधी, योग १५, उप० ९. अज्ञान ३ नहिं, ले० ६. सामायिक—छेदोपस्थापनीय संयतमां जीव० १ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु० ४ छट्ठाथी नवमा सुधी, योग १४ कार्मण० नहिं, उप०७ चारज्ञानने त्रण दर्शन, ले० ६ ॥ परिहार विशुद्ध सं०मां जीव० १ गु० २ छट्ठुं ने सातमुं, योग ९ ते ४ मनना, ४ वचनना ने १ उदा०नो, उप० ७ ले० ३ उपरली सूक्ष्मसंपराय सं०मां जीव० १, गु० १ दशमुं, योग ९, उप० ७, ले० १ शुक्ल ॥ यथाख्यातसं०मां जीव० १, गु० ४ उपरला, योग ११ ते ४ मनना ४ वचनना २ उदारिकना ने १ कार्मण०, उप० ९ अज्ञान ३ नहिं, ले० १ शुक्ल ॥ संयतासंयतमां जीव० १ संज्ञी पं०नो पर्याप्त, गु० १ पांचमुं, योग १२ आहारकना बे ने १ कार्मण० नहिं, उप० छ ३ ज्ञान ३ दर्शन, ले० ६ ॥ असंयतमांजी० १४, गु० ४ पहेला, योग १३ आहारकना बे नहिं, उप० ९ ते ३ ज्ञान ३ अज्ञान ने ३ दर्शन, ले० ६नो संयत नो असं० नो संयतासंयतमां उप० २ के० ज्ञा०ने के०द० शेष भेद नथी. एओनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा सूक्ष्मसंपरायसं०. २ तेथी परिहार वि० सं० संख्यात०, ३ तेथी यथाख्यातसं० संख्या०, ४ तेथी छेदोप० सं० संख्या०, ५ तेथी सामायिक सं० संख्या०, ६ तेथी संयत विशेषा०, ७ तेथी संयतासंयत असंख्या०, ८ तेथी नो संय० नो असंय० नो संयतासंयत अनंतगुणा. ९ तेथी असंयत

अनंतगुणा. १३ उपयोगद्वार—साकारोपयोगीमां जीव० १४, गु० १४, योग १५ उप० १२, ले० ६ ॥ अनाकारोपयोगीमां जीव० १४, गु० १३ दशमुं नहिं, योग १५, उप० १२, ले० ६. एनो अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा अनाकारोपयोगी, २ तेथी साकारोपयोगी संख्यातगुणा. १४ आहारकद्वार—आहारकमां जीव० १४, गु० १३ छेल्लो नहिं, योग १५, उप० १२, ले० ६. अणाहारकमां जीव० ८ ते सूक्ष्म एकेंद्रियादि सातना अपर्या० ने एक संज्ञी-पं०नो पर्याप्त, गु० ५ पहेलुं, बीजुं, चोथुं, तेरमुं नें चौदमुं, योग १ कार्मण०, उप० १० मनःपर्यायज्ञान ने चक्षु दर्शन ए बे नहिं, ले० ६. एनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा अनाहारिक, २ तेथी आहारिक असंख्यातगुणा. १५ भाषकद्वार—भाषकमां जीव० ५ बेइंद्रिय, तेइं० चउ० ने असंज्ञी पं०, ने संज्ञीपं०ना पर्याप्ता, गु० १३ छेल्लो नहिं, योग १४ कार्मण नहिं, उप० १२, ले० ६. अभाषकमां जीव० १० त्रण विकलेंद्रिय अनें असंज्ञीपं० ए चारना पर्याप्ता वर्जवा. गु० ५ पहेलुं, बीजुं, चोथुं, तेरमुं ने चौदमुं, योग ५ उदा०ना २ वैक्रे०ना २ अने १ कार्मण०, उपयोग १० मनःपर्यायज्ञान ने चक्षुदर्शन ए बे नहिं, ले० ६ एनुं अल्पबहुत्व—१ सर्व थोडा भाषक, २ तेथी अभाषक अनंतगुणा. १६ परित्तद्वार—परित्तसंसारीमां जीव० १४, गु० १४, योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥

---

१ साकारोपयोग ने अनाकारोपयोग बन्ने साथे न होय " जुगवं दो नत्थि उवओगा " इति वचनात् खरीरीते तो साकारोपयोगीमां ८ उप० ने अनाकारोपयोगीमां ४ उप० होइ शके. साका० ने अना०मां १२ उप० कहेल छे ते विचारणीय छे. २ अभाषकमा चक्षु द० गणता ११ उप० होइ शके, कोइक आचार्यो इंद्रिय पर्याप्तिए पर्याप्त ने चक्षुद० मानेल छे

अपरित्त सं० मां जीव १४, गु० १ पहेलुं, योग १३ आहारकना बे नहिं, उप० ६ अज्ञान ३ ने दर्शन, ले० ६.नो परित्त नो अपरित्तमां उप० २ के० ज्ञा० ने के० द०, शेष भेद नथी. एनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा परि-त्तसं०, २ तेथी नो प० नो णप० अनंतगुणा, ३ तेथी अपरित्तसं० अनंतगुणा ॥ १७ पर्याप्तद्वार-पर्याप्तामां जीव० ७, गु० १४, योग १५, उप० १२, ले० ६, अपर्याप्तामां जीव० ७, गु० ३ पहेलुं, बीजुं ने चोथुं, योग ५ उदा०ना २ वैक्र०ना बे ने कार्मण० उप० ९ ते ३ ज्ञान, ३ अज्ञान ने ३ दर्शन. ले० ६ ॥ नो पर्याप्त नो अपर्याप्तमां उप० २ के० ज्ञा० ने के० द०, शेष भेद नथी. एनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा नो पर्या० नो अपर्या०, २ तेथी अप-र्याप्त अनंतगुणा, ३ तेथी पर्याप्त सख्यातगुणा. ॥ १८ सूक्ष्मद्वार—सूक्ष्ममां जीव० २ भेद सूक्ष्म एकें०ना अप० ने पर्याप्त, गु० १ पहेलुं, योग ३ उदा० ना बे १ कार्मण०, उप० ३ बे अज्ञान ने एक अचक्षुदर्शन, ले० ३ पहेली. बादरमां जीव० १२ सूक्ष्मना २ वर्जवा, गु० १४, योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥ नो सूक्ष्म नो बादरमां उप० २ के० ज्ञा० ने के० द०, शेष भेद नथी. एनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा नो सू० नो बा०, २ तेथी बादर अनं-तगुणा, ३ तेथी सूक्ष्म असंख्यातगुणा ॥ १९ संज्ञीद्वार-संज्ञीमां जीव० २ संज्ञीना अप०नें पर्याप्त, गु० १२

---

१ परित्तसं० जीवो पांचमे अनते छे अने नो प० ने नो ने अप० [सिद्ध]ना जीवो पण पांचमे अनंते छे; परंतु 'अनंत'ना अनेक भेद होवाथी परित्तस० जीव अनंत होवा छतां पण नो प० नो अप० अनंतगुणा घटी शके छे. परित्तअर्द्धपुद्गल संसार बाकी जेनो रह्यो होय ते, अथवा प्रत्येक शरीरी. २ तेरमे चौदमे गु० यद्यपि संज्ञी पर्याप्त छे तथापि 'संज्ञी' विशेषण, भाव मन आश्रयी छे,केवलीने द्रव्य मन होय छे; ते-

पहेला, योग १५, उप० १० के० ज्ञा० ने के० द० नहिं, ले० ६. असंज्ञीमां जीव० १२ संज्ञीना बे नहिं, गु० २ पहेला, योग ६ उदा०ना २ वैक्रे०ना २ कार्मणका०ने व्यवहारवचन, उप० ६ बे ज्ञान बे अज्ञान ने बे दर्शन, ले० ४ पहेली ॥ नो संज्ञी नो असंज्ञीमां जीव० १ संज्ञीपं०नो पर्याप्त, गु० २ तेरमुं ने चोदमुं, योग ७ उप० २ के० ज्ञा० ने के० द०, ले० १ शुक्ल. एनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा संज्ञी, २ तेथी नो सं० नो असं० अनंतगुणा, ३ तेथी असंज्ञी अनंतगुणा ॥ २० भव्यद्वार-भव्यमां जीव० १४, गु० १४, योग १५, उप०१२, ले०६ ॥ अभव्यमां जीव० १४, गु० १ पहेलुं. योग १३ आहारकना बे नहिं, उप० ६ त्रण अज्ञान ३ दर्शन, ले० ६ ॥ नो भव्य नो अभव्यमां उप० २ के० ज्ञा० ने के० द०, शेष भेद नथी. एनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा अभव्य, २ तेथी नो भ० नो अभ० अनंतगुणा. ३ तेथी भव्य अनंतगुणा ॥ २१ चरिमद्वार-चरिममां जीव० १४, गु० १४, योग १५, उप० १२, ले० ६. अचरिममां जीव० १४, गु० १ पहेलुं. योग १३ आहारकना बे नहिं, उप० ८ ते १-केवलज्ञान, ३ अज्ञान ने ४ दर्शन. ले० ६. एनुं अल्पबहुत्व-१ सर्वथी थोडा अचरिम, २ तेथी चरिम अनंतगुणा ॥ २१ द्वार समाप्त.

योग जन्य छे. भाव मन, क्षायोपशमिक छे, तेथी केवलीने भाव मन न होय. १ चोथे अनंते छे, २ पांचमे अनते छे. ३ आठमे अनते छे. ४ जेनो छेल्लो भव होय ते. ५ अभव्य, तथा सिद्ध, अचरममां सिद्धने गणवानुं कारण सिद्धनो हवे छेलो भव थवानो नथी, केमके सिद्ध ने भव छेज नहिं. ए न्याये सिद्ध पण अचरिम कहेवाय, अभव्यने-अचरिम एटले जेनो छेल्लो भव थवानो नथी.

हवे क्षेपकद्वार कहे छेः—वाटे वहेता जीवमां जीव० ७ ते सूक्ष्म एकेंद्रियादिक सातना अपर्याप्ता. गु० २ पहेलुं, बीजुं ने त्रीजुं, योग १ कार्मण०नो, उप० ८ ते ३ ज्ञान ३ अज्ञान, अचक्षुद० ने अवधिद० ए बे दर्शन, ले० ६ ॥ युगलियामां जीव० २ संज्ञीना, गु० ४ पहेलुं, बीजुं, त्रीजुं ने चोथुं, योग ११ ते चार मनना ४ वचनना, २ उदा०ना, १ कार्मण०, उप० ६ बे ज्ञान, बे अज्ञान ने बे दर्शन, ले० ४ पहेली ॥ असंज्ञी तिर्यच पंचें०मां जीव० २, गु० २, योग ४ ते वैक्रेयना २ कार्मण० ने व्यवहार वचन, उप०, ६ बे ज्ञा० बे अज्ञा० ने बे द०, ले० ३ पहेली ॥ सम्मुर्छिम मनुष्यमां जीवनो० १ असंज्ञीपं०नो अपर्याप्त, गु० १ पहेलुं, योग ३ उदा०ना २ ने १ कार्मण०, उप० ३ बे अज्ञान ने एक अचक्षुद०, ले० ३ एनुं अल्पबहुत्व—१ सर्वथी थोडा युगलिया, २ तेथी सम्मू० मनुष्य असंख्यात० ३ तेथी असंज्ञी पंचे० तिर्यच असंख्यातगुणा. उदारिकशरीरमां जीव० १४, गु० १४, योग १५, उप० १२, ले० ६ ॥ वैक्रेय श०मां० जीव० ४ ते २ संज्ञीना, १ असंज्ञीतिर्यच पंचे०नो अपर्याप्त ने १ वायुका०नो पर्याप्त, गु० ७ पहेला, योग १२ ते २ आहारकना १ कार्मण० नहिं, उप० १० के० ज्ञा० ने के० द० नहिं, ले०६ ॥ आहारक श०मां जीव० १ सं० पं० नो पर्याप्त, गु० २ छठ्ठुं ने सातमुं, योग १२, २ वैक्रेयना ने १ कार्मण० नहिं. तैजस ने कार्मण श०मां जीव० १४, गु०१४, योग १५, उप०१२, ले०६. अल्पबहुत्व-

---

१ प्रथमनी छपायेली प्रतमां 'शरीरी' शब्द छे परंतु ते प्रमाणे अल्पबहुत्व घटीशकतुं नथी. कारण ? शरीर असंख्यात छे अने शरीरी [शरीरवाला जीवो] अनंत छे. निगोदमां अनंत जीवोनुं शरीर [उदारिक] एकज होय छे अने तैजस ने कार्मण शरीर, दरेक जीवना भिन्न होय छे.

१ सर्वथी थोडा आहारकशरीर, २ तेथी वैक्रेय श० असंख्यात०, ३ तेथी उदारिक श० असंख्या०, ४ तेथी तैजस—कार्मण श० अनंतगुणा ने परस्पर तुल्य. इति बासठियो समाप्त.

छ आरानो विचार—दश कोडाकोडी सागरोपमना छ आरा जाणवा. तेमां पहेलो आरो चार कोडाकोडी सागरनो सुषम सुषम नामे अत्यंत सुखमय जाणवो. ए आराने विषे ३ गाउनुं देहमान अनें ३ पल्यनुं आयुष्य. २५६ पांसली होय, धरतीनी सरसाइ शाकर सरखी जाणवी. अठ्ठम भक्ते आहारनी इच्छा उपजे—तुवर प्रमाणे आहार करे. उतरते आरे २ गाउनुं देहमान ने २ पल्यनुं आयुष्य १२८ पांसली होय. धरतीनी सरसाइ खांड सरखी जाणवी. वज्रऋषभनाराच संघयण, समचउरंस संठाण अने स्त्रीपुरुषमां रूप—सौभाग्य घणुं होय. दश प्रकारना कल्पवृक्ष, मनोवंच्छित सुख आपे छे. ते कहे छेः—तेसिं मतंग भिंगा, तुडियंगा जोइ दीव चित्तंगा; चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अणियंगा[3] य ॥ १ ॥ पाणं भायण पिच्छण, रविपह दीवपह कुसुम माहारो; भूषण गिह वत्थासण, कप्पदुम्मा दशविहादिंति ॥ २ ॥ आ बे गाथामां १० कल्पवृक्षना नाम अने तेथी मळती सुख आपनारी वस्तुना नाम कहे छेः—तेसिं कहेतां ते युगलियाओने मतंग के० मत्तांग नामे

पन्नवणामां पण शरीरनुं अल्पबहुत्व कहेल छे शरीरीनु कहेल नथी. १ आहारक शरीरनो विरह ज० १ समयनो ने उ० छ मासनो पन्नवणा-वृत्तिमां कहेल छे. आहारक शरीर ज० १-२-३ अने उ० पृथक्त्व सहस्र होय छे. २ ए बे आर्या छंद छे, ते 'क्षेत्र समास' ग्रन्थमां छे. ३ 'अणिय यरका' पण पाठ जोवामां आवेल छे पण ते पाठ योग्य संभवतो नथी.

कल्पवृक्ष, पाणं कहेतां द्राक्ष, खारक वगेरेना मधुरस जेवा मीठा रस आपे. २ भिंगा क० भृतांग नामे कल्प०. भायण क० कंचन के रत्नमय थाळी वाटका वगेरे आपे. ३ तुडियंगा क० त्रटितांग कल्प०, पिच्छाण क० ४९ जातिना वाजिंत्र आपे–बत्रीस बद्ध नाटक देखाडे. ४ जोइ क० ज्योतिरंग कल्प०, रविपह क० रात्रिने विषे पण सूर्यनी जेम प्रकाश आपे. ५ दीव क० दीपांग कल्प०, दीवपह क० घरने विषे तेजस्वी दीपको करे. ६ चित्तंगा क० चित्रांग कल्प०, कुसुमं के० पंचवर्णना विविध जातिना सुगंधि फूलो आपे. ७ चित्तरसा क० चित्ररस कल्प०, आहारो क० विविध प्रकारना मनोहर भोजन आपे० ८ मणियंगा क० मणितांग कल्प०, भूसण क० भूषण–मुगट, कुंडल वगेरे अलंकारो आपे. ९ गेहागारा क० गृहकार कल्प०, गिह क० सूवा–बेसवाना आसनो सहित त्रण भूमिया, पांच भूमिया, सात भूमिया वगेरे आवासो आपे.१० अणियंगा क० अनितांग कल्प०, वत्था क० रत्नजडाव देवदुष्य वगेरे सुंदर वस्त्रो आपे. ए दश प्रकारना कल्प वृक्षो क्षेत्रस्वभावथी मनोवंछित दश प्रकारना सुख आपे. छेवट ज्यारे छ मासनुं आयुष्य बाकी रहे त्यारे परभवनुं आयुष्य बांधे पछी युगलिणी, एक जोडलुं प्रसवे अने तेनी प्रतिपालना ४९ दिवस करे. युगल ने युगलिणीनो वियोग क्षणमात्रनो न होय. छेवटे छींक के बगासुं आवे, सुखे मृत्यु पामे; मरीने देवगतिमां जाय. ए आराने विषे वैर

१ तुर्यांग पण नाम छे परतु जंबूद्वीप पन्नतीनी टीकमां 'त्रुटितांग' नाम कहेल छे. २ युगलियाना शरीरनुं 'निहरण' देव करे एवु जंबूद्वीप पन्नतीमां कहेल नथी टीकामां कयुं छे पक्षिओ समुद्रमां फेंके.

विरोध के इर्ष्या वगेरे न होय सरल स्वभाव ने अल्पकषायवाळा जीवो होय. हवे पहेलो आरो उतरीने बीजो आरो बेठो त्यारे वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शना पर्यव अनंत हीन थया. ए आरो त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो सुषम नामे एकलुं सुख जाणवुं. ए आराने विषे बे गाउनुं देहमान अने बे पल्यनुं आयुष्य होय. १२८ पांसली होय, छठ्ठ भक्ते आहारनी इच्छा उपजे; बोर प्रमाणे आहार करे. धरतीनी सरसाइ खांड सरखी होय अने उतरते आरे एक गाउनुं देहमान अने एक पल्यनुं आयुष्य होय. ६४ पांसली होय. संघयण वज्रऋषभना०, संठाण समचउरंस होय. दश प्रकारना कल्पवृक्ष मनोवंछित सुख आपे. छ मास आयुष्य बाकी रहे त्यारे परभवनुं आयुष्य बांधे. पछी युगलिणी एक जोडलुं प्रसवे. ६४ दिवस प्रतिपालना करे. छेवटे मरीने देव थाय. शेष पूर्ववत्. हवे बीजो आरो उतरीने त्रीजो बेठो. त्यारे वर्णादिकना पर्यव अनंत हीन थया. ए आरो बे कोडाकोडी सागरोपमनो जाणवो.ए आरो सुषम दुषम नामे जाणवो, एमां सुख घणुं ने दुःख थोडुं.ए आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने एक पल्यनुं आयुष्य होय. ६४ पांसली होय, धरतीनी सरसाइ, गोळ सरखी जाणवी. चोथ भक्ते आहारनी इच्छा उपजे, आमला प्रमाणे आहार करे, वज्रऋ० सं० ने समच० संठा० होय. दशप्रकारना कल्पवृक्ष मनोवंछित सुख आपे. छ मास आयुष्य बाकी रहे त्यारे परभवनुं आयुष्य बांधे. पछी युगलिणी एक जोडलुं प्रसवे, तेथी ७९ दिवसनी प्रतिपालना करे. मरीने देव थाय. उतरते आरे पांचसो धनुष्यनुं देह-मान ने क्रोड पूर्वनुं आयुष्य होय. ३२ पांसली, छ संघयण ने छ संठाण होय. पांचे गतिमां जाय. ए आरानो

पल्योपमनो आठमो भाग बाकी रहे त्यारे कल्पवृक्षनी मंदता थाय. कुलगरोनी उत्पत्ति थाय अने दंडनीति शरु थाय. छेवटे ८४ लाख पूर्व, त्रण वर्ष ने साडाआठ मास बाकी रह्या त्यारे सर्वार्थ सिद्ध महा विमानथी चवी ३३ सागरनुं आयुष्य भोगवीने विनिता[1] नगरीमां नाभिकुलकर पिता, मरुदेवी मातानी कुक्षीने विषे ऋषभदेव भगवान् उपना. सवानव मासे जन्म्या, प्रथम स्वप्ने ऋषभ (वृषभ) जोयो तेथी ऋषभनाम दीधुं, ऋषभदेव भगवाने युगल–धर्म निवारीने असि, मषी ने कृषि वगेरे ७२ कला अनुकंपा निमित्ते (मानव–हित माटे) लोकोने सीखवी. २० लाख पूर्व सुधी कुमारपदे रह्या. ६३ लाख पूर्व लगें राज्य भोगव्युं. पछी भरतने विनितानुं राज्य अने बीजा पुत्रोने अन्यदेशोनुं राज्य आपी चारहजार पुरुष साथे संयम लीधो. एकलाख पूर्व-लगे संयम पाल्यो एकहजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या. बाकीनो काल केवलपणे विचरी, अंतिम समये अष्टापद पर्वत उपरे पद्मासने बेसी; दश[2] हजार साधु साथे प्रभुनिर्वाण पाम्या. हवे प्रभुना पांच कल्याणक[3] कहे छे :—
उत्तराषाढा नक्षत्रमां सर्वार्थसिद्ध महाविमानथी. चव्या, ए प्रथम कल्याणक. उत्त० नक्षत्रमां जन्म्या, ए बीजुं

१ खरी रीते 'इक्ष्वाकु भूमि' नाम जोइए, कारण ? 'विनिता'नी स्थापना तो इन्द्रे ऋषभदेवप्रभु माटे करेल छे. जन्मवखते विनिता नगरीनी स्थापनाज थयेल नहिं. शास्त्रोमां 'इक्ष्वाकु भूमि' नाम जोवाय छे, २ दशहजार साधु साथे एक नक्षत्रमां सिद्ध थया, बाकी एक समये १०८ सिद्ध थयेल छे. ३ कल्याणक पांचज कहेवाय, 'राज्याभिषेक' कल्याणक कहेवा नहिं 'जंबूद्वीप पन्नती'मां नक्षत्रनी समानता ए राज्याभिषेकनु वर्णन कर्युं छे; त्यां 'कल्याणिक' शब्द कहेल नथी. कल्याणक–प्रसंगे जीवोने शांति, देवोनुं आगमन अने महोत्सव थाय ते कल्याणिक कहेवाय.

जन्मक० (उत्तराषाढामां राज्य वेठा) उत्त० नक्षत्रमां संयम लीधो, ए त्रीजुं क०, उत्त० नक्षत्रमां केवलज्ञान पाम्या, ए चोथुं क०, अभिजीत न०मां मोक्षे गया, ए पांचमुं कल्याणक०, हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो वेठो, त्यारे वर्णादिकना अनंत पर्यवहीन थया. ए आरानो काल एक कोडाकोडी सागरो० मां ४२ हजार वर्ष ओछो जाणवो. ए आरो दुषम सुषम नामे छे, दुःख घणुं ने सुख थोडुं होय. ए आराने विषे पांचसो धनुष्यनुं देहमान ने क्रोड पूर्वनुं आयुष्य. उतरते आरे सात हाथनुं देहमान ने सो वर्ष झाझेरुं आयुष्य जाणवुं. ए आरे ३२ पांसली होय, उतरतां १६ पांसली. ए आरे आहारनी इच्छा दररोज उपजे, त्यारे पुरुषो माटे ३२ कवल अने स्त्री माटे २८ कवल धरतीनी सरसाइ, घणी सारी जाणवी. उतरते आरे थोडी सारी. ए आराने विषे संघयण छ संठाण छ होय. ए आराना छेवटे ७५ वर्षने ८॥ मास बाकी रह्या. त्यारे दशमा प्राणत देवलोकथी चवी वीश सागरोपमनुं आयुष्य भोगवीने माहणकुंड ग्रामने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणने घरे देवानंदाजीनी कुंखे महावीरस्वामी उपना. त्यां प्रभु ८२ रात्रि रह्या, ८३मी रात्रिना अंतराले शक्रेंद्रनुं आसन कंप्युं; त्यारे उपयोग मूकीने जोयुं तो प्रभुने भिक्खागकुलेउपना दीठा. ए अच्छेरूं थयुं, अनंतकाले एवा अच्छेरा थाय एम जाण्युं, पछी हरण गमेषी देवनें आज्ञा करी; तमे श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदाजीनागर्भमांथी संहरण करीने क्षत्रियकुंड ग्रामने विषे सिद्धार्थ राजाने घेर, त्रिशला देवीनी कुंखे संक्रमावो अने त्रिशलादेवीनी कुंखमां पुत्री

१ नपुंसक माटे ,२४ कवल. आ त्रणे माटे जे संख्या कवळनी कहेल छे ते प्रायिक छे सामान्य नियम छे परंतु सिद्धांत नथी.

पणे जे गर्भ छे तेने देवानंदाजीनी कुंखे संक्रमावो. त्यारे हरणगमेषी देव 'तहत्त' प्रमाण करी आनंदथी शिघ्र त्यां आवी प्रभुने वंदन नमस्कार करीने कह्युं केः—"हे स्वामिन्! रूडुं जाणजो हुं आपनो संहरणकरूं छुं;" एम कही देवानंदाजीमाताने अवस्वापिनी निद्रा आपी गर्भनुं संहरण करीने त्रिशलाजीनी कुंखमां संक्रमण कर्युं. त्यां प्रभु एकंदर सवानव मासे जन्म्या. त्रीश वर्ष घरमां रह्या, पछी एकाकीपणे संयम लीधो. साडाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सुधी छद्मस्थ रही उग्र तप करी अने देव, मनुष्य ने तिर्यंच कृत घोर परीषह–उपसर्ग ने सहन करीने प्रभु केवलज्ञान ने केवलदर्शन पाम्या. कांइक न्यून त्रीश वर्ष केवल पर्याय अने १२॥ वर्ष ने एक पक्ष छद्मस्थ संयम पर्याय एम ४२ वर्ष संयम पाली, ७२ वर्षनुं आयुष्य पूरण करीने चोथा आराना ३ वर्ष ८॥ मास बाकी रह्या त्यारे कार्तिक वदि अमावास्या (दीवाळी)नी रात्रिए स्वामी मोक्षे गया. ते प्रभुना छ कल्याणक थया ते १ च्यवन क०, २ गर्भसंहरण क०, ३ जन्म क०, ४ दीक्षा क०, ५ केवलज्ञान क० ए पांच कल्या० 'उत्तराफाल्गुनी' नक्षत्रमां थया अने 'स्वाति' नक्षत्रमां निर्वाण पाम्या. ए आराने विषे गति पांच होय. महावीरस्वामी मोक्ष गया ते रात्रिए गौतमस्वामीने केवलज्ञान उपन्नुं. ते १२ वर्ष केवलपर्याय पालीने निर्वाण पधार्या, त्यारे सुधर्मास्वामीने केवलज्ञान उपन्नुं. ते ८ वर्ष केवल पर्याय पालीने निर्वाण पाम्या. त्यारे

---

१ महावीरप्रभुना छ कल्याणक विचारणीय छे. कल्याणक पांच योग्य छे. गर्भसंहरणमां मतभेद छे, प्राचीन ग्रंथोमां ए वस्तुने स्थान नथी मळ्युं. श्री जिनवल्लभसूरीश्वरथी छ कल्याकनो प्रवाद (कथन) छे.

जंबूस्वामीने केवलज्ञान उपनुं. ते ४४ वर्ष सुधी केवल पर्याय पालीनें निर्वाण पाम्या. वीरप्रभु मोक्षे गया पछी ६४ वर्ष सुधी भरतक्षेमां केवल ज्ञान अने मोक्षगमन रह्युं. चोथा आरानो जन्मेलो पांचमां आरामां मोक्षे जाय, पण पांचमां आरानो जन्मेलो मोक्षे न जाय. जंबूस्वामी मोक्ष गया पछी १० वस्तुओ (बोल) विच्छेद गइ. १ परम अवधिज्ञान, २ मनःपर्याय ज्ञान, ३ केवलज्ञान, ४ त्रण चारित्र (परिहारवि०, सूक्ष्म सं० ने यथाख्यातचा०), ५ पुलाक लब्धि, ६ आहारक शरीर, ७ जिनकल्पी साधु, ८ उपशम श्रेणि, ९ क्षपक श्रेणि अने १० मोक्षगमन. ए चोथो आरो उतरीने पांचमो आरो बेठो, त्यारे वर्णादिकना अनंत पर्याय हीन थया. ए आरो दुषम नामे—एकलुं दुःख जाणवुं. ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो. ए आराने विषे ७ हाथनुं देहमान अने एकसो वर्ष झाझेरुं आयुष्य जाणवुं. अने उतरते आरे एक हाथनुं देहमान ने वीश वर्षनुं आयुष्य ए आराने विषे छ संघयण ने छ संठाण, उतरते आरे छेवठुंसं० ने हुंडसं० जाणवुं. ए आराने विषे १६ पांसली, उतरते आरे ८ पांसली होय. दररोज आहारनी इच्छा उपजे; त्यारे शरीर प्रमाणे आहार करे. धरतीनी सरसाइ

---

१ जंबूद्वीपपन्नतीनी टीकामां १३० वर्षनु आयुष्य कहेलुं छे. कोइक देश के मनुष्य आश्रयी विशेष आयुष्य होय ते पण संभवित छे, आकाले वधारेमां वधारे (२५०) वर्षनु आयुष्य संभवी शके छे. कारण? श्रीआर्यरक्षितसूरीश्वरे इंद्रनुं हाथ जोइ अढीसो वर्ष उपरांत आयुष्य जोयुं त्यारे तेमणे जाण्यु के आ भरतक्षेत्रनो नथी. आ उपरथी उपरनी हकीकत संभवी शके छे. ' तत्त्वकेवलिगम्यं. ' २ स्थूलीभद्र पछी वज्रऋषभनाराचसं० विच्छेद गयुं अने आर्यरक्षित सूरिथी चोथुंसं० विच्छेद गयुं एम ग्रन्थान्तरमां लेख छे. त्यारे वर्तमानमां बे संघयण जणाय छे.

कांइक सारी ते उतरते आरे कुंभारना नींभाडानी छार जेवी जाणवी. हवे पांचमा आराना लक्षण (भाव) कहे छेः—१ मोटा नगरो ते गामडा सरखा थाशे, २ गामडा ते मसाण सरखा थाशे, ३ भलाकुलना संतानो दासदासी पणुं करसे. ४ प्रधान वगेरे लालचु थाशे, ५ राजा यमदंड सरखा थाशे, ६ भलाकुलनी स्त्रीओ लाज मर्यादारहित थाशे, ७ उत्तम कुलनी स्त्रीओ वेश्या समान थाशे, ८ पुत्रो पोताने छांदे चालशे, ९ शिष्यो गुरुना अपवाद बोलशे, १० दुर्जन लोक सुखी थाशे, ११ सज्जनलोक दुःखी थासे, १२ दुर्भिक्ष–दुष्काल घणा पडशे, १३ उंदर, सर्प वगेरेनी दाढ घणी वधसे, १४ ब्राह्मणो अर्थना लोभी थासे, १५ हिंसा धर्मना प्ररूपक घणा थासे, १६ एक धर्मना घणा भेदो थाशे, १७ मिथ्यात्वी देवो घणा पूजासे, १८ मिथ्यात्वी लोक घणा थासे, १९ मनुष्योने देवदर्शन दुर्लभ थाशे, २० विद्याधरोनी विद्यानो प्रभाव ओछा थासे, २१ गोरस–दुध, दहीं वगेरेमां सरसाइ घटशे, २२ बळद प्रमुखना बल ने आयुष्य अल्प थशे, २३ श्रावकनी ११ पडिमा अने साधुनी १२ पडिमा विच्छेद जासे, २४ साधु–साध्वीओने मास कल्प तथा चातुर्मास करवा योग्य क्षेत्रो थोडां रहेशे, २५ गुरु शिष्योने भणावशे नहिं, २६ शिष्य अविनीत–कलहकारी थाशे, २७ अधर्मि, झघडाकारी कुमाणसो घणा थाशे, २८ आचार्यो आप आपणा गच्छनी परंपरा–समाचारी जूदी जूदी प्रवर्तावसे, २९ मूढ जनने मोहित करी मिथ्यात्वपाशमां पाडशे, उत्सूत्र–भाषण करशे, स्वप्रशंसा अने परनिंदामां राचसे, ३० सरल–भद्रक ने प्रमाणिक माणसो थोडा थाशे, ३१ अन्याय, अधर्म अने कुव्यसनमां घणा राचशे, ३२ आर्यराजाओ अल्पऋद्धि-

वाला थोडा थासे अने अनार्यराजाओ बहु ऋद्धिवाळा घणा थासे, ए ३२ लक्षणो[1] जाणवा. ए आराने विषे छेवटे सर्व धातुओ लगभग विच्छेद जासे, लोढानी धातु रहेशे, चामडानी महोरो चालशे, सवाशेर कांसु जेना घरमां रहेशे ते धनवंत केहेवाशे, एक उपवास पण मासखमण सरखो थाशे, ज्ञान तथा सूत्रो विच्छेद जासे, दशवैकालिक सूत्रना[2] ४ अध्ययन रहेशे. तेने आधारे ४ जीव एकावतारी थाशे, तेना नाम–१ दुप्पसह[3] साधु, २ फल्गु श्री साध्वी, ३ नागिल श्रावक ने ४ सत्य श्रीश्राविका. आषाढ सुदि १५ ने दिवसे शक्रेन्द्रनुं आसन कंपशे त्यारे उपयोग मूकीने जोशे; तेथी जाणशे के आवती काले पांचमो आरो उतरीने छट्ठो आरो बेसशे. त्यारे शक्रेंद्र त्यां आवीने ते चारेने कहेशे के काले छट्ठो आरो बेसशे, माटे आलवी–पडिक्कमीने निःशल्य थाओ. ते सांभळीने चार जणा सर्व जीवोने खमावीने–आलोचना करीने अनशन करशे, त्यारे संवर्त्तक वायु वासे, तेथी पर्वत, गढ, कुवा,–वाव ने सरोवर वगेरे सर्व विसराल थाशे. १ वैताढ्यपर्वत, २ गंगा नदी, ३ सिंधु नदी, ४ ऋषभकूट अने ५ लवणस०नी खाडी, ए पांच सिवाय बाकीना सर्व स्थानो त्रूटी पडशे. त्यारे ते ४ जीव समाधिभावे काल करीने स्वर्गमां जासे, एकावतारी थाशे. त्यारे ४ बोलविच्छेद जाशे. पहेले पोरे जैनधर्म विच्छेद थाशे. बीजे पोरे ३६३ पाखंडी–मिथ्यात्विओनो धर्म विच्छेद जासे, त्रीजे पोरें राजनीति विच्छेद जासे

---

१ केटलाक लक्षण वर्तमानमां देखाय छे, केटलाक भविष्यमां थशे. २ कोइक स्थले दशवैकालिक रहेशे एम कहेल छे. कल्पद्रुमकलिकामां ४ अध्ययन पण कहेल छे. ३ दुप्पसहसूरिनुं २० वर्षनुं आयुष्य अने बार वर्षे दीक्षा लीधेल छे.

अने चोथे पोरे बादर अग्निविच्छेद जाशे. ए आरे बेसतां गति पांच अने उतरतां गति चार जाणवी. हवे पांचमो आरो उत्तरीने छठ्ठो आरो बेससे त्यारे वर्णादिकना अनंत पर्याय हीन थशे. ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो. ए आरो दुःषमदुःषम नामे ते अत्यंत दुःखमां दुःख जाणवुं. ए आरे १ हाथनुं देहमान ने २० वर्षनुं आयुष्य; उतरते आरे मूंडा हाथनुं देहमान अने १६ वर्षनुं आयुष्य थशे. ए आराने विषे १ छेवट्ठु संघ० ने १ हुंड संठाण जाणवुं, ए आरे ८ पांसली अने उतरते आरे ४ पांसली जाणवी. ए आराने विषे छ वर्षनी स्त्रीओ गर्भ धारण करसें ते काळा, कुदर्शनीय, रोगी, रीसाल अने घणा केश नें नखवाला घणा बालको प्रसवशे; कूतरीनी परे परीवार भेळो फेरवशे. ए आराने विषे वैताढ्यना बे पडखे गंगा ने सिंधु नदीना तट (कांठा) चार चार छे. ते एकेक तटमां नव नव बिल छे, एकंदर गणतां ७२ बिल थाय. तेमां बीजमात्र मनुष्यो अने तिर्यंचो रहेशे. गंगा-सिंधुनो ६२॥ योजननो पोहोट छे, तेमां गाडानी धुरीबूडे एटलुं उंडुं पाणी रहेशे; तेमां मच्छ वगेरे घणा थशे. ७२ बिलना मनुष्यो सांझे ने प्रभाते मच्छादिकने काढीने वेळुमां भारसे, सूर्य घणो तपशे अने टाढ घणी पडशे तेथी ते सीझवाइ जशे; तेनो आहार करशे. ते मच्छादिकना हाडका वगेरेने तिर्यंचो चाटीने रहेशे. माणसनी तुंबडीमां पाणी लावीने पीशे, वली ते निर्लज्ज, वस्त्र रहित, कठोरभाषी, पिता पुत्री स्त्री माता अने बहेन वगेरेना विवेक रहित मनुष्यो, तिर्यंचोना जेवा थाशे. तथा नवकार रहित, समकित रहित अने व्रत-पच्चक्खाण रहित जे जीव, हशे ते आ आरामां अवतरशे. आवी रीते दुःखमय एकवीश

हजार वर्ष प्रमाण ए आरो जाणवो. एवा छठ्ठा आराना भाव जाणीने जे जीवजीन धर्मनी आराधना करशे, ते जीव परमसुख पामशे. इति छ आरा समास.

अठाणु बोलनो अल्पबहुत्व—

१ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी संख्यातगुणी
३ बादर तेउका० पर्याप्त असं०
४ अनुत्तर विमानना देव असं०
५ उपरना ३ ग्रैवेयकना देवो सं०
६ मध्यमत्रिकना देवो सं०
७ नीचलीत्रिकना देवो सं०
८ बारमा देवलोकना देवो सं०
९ इग्यारमां देव०ना देवो सं०
१० दशमा देव०ना देव सं०
११ नवमा देव० देवो सं०
१२ सातमी नरकना नारको असं०
१३ छठ्ठी नरकना नारको असं०
१४ आठमा देव०ना देवो असं०
१५ सातमा देव०ना देवो असं०
१६ पांचमी नरकना नारको असं०
१७ छठ्ठा देव०ना देवो असं०
१८ चोथी नरकना नारको असं०
१९ पांचमा देव०ना देवो असं०
२० त्रीजी नरकना नारको असं०
२१ चोथा देव०ना देवो असं०
२२ त्रीजा देव०ना देवो असं०
२३ बीजी नरकना नारको असं०
२४ समूर्च्छिम मनुष्यो असं०
२५ बीजा देव०ना देवो असं०
२६ बीजा देव०नी देवीओ सं०
२७ पहेला देव०ना देवो सं०

१ महादडकनो एक द्वार छे.

२८ पहेला देव०नी देवीओ सं०
२९ भवनपतिना देवो असं०
३० भवन०नी देवीओ सं०
३१ पहेली नरकना नारको असं०
३२ खेचर-पुरुषो असं०
३३ खेचरनी स्त्रीओ सं०
३४ स्थलचर-पुरुषो सं०
३५ स्थलचरनी स्त्रीओ सं०
३६ जलचर-पुरुषो सं०
३७ जलचरनी स्त्रीओ सं०
३८ व्यंतर देवो सं०
३९ व्यंतरनी देवीओ सं०
४० ज्योतिषी देवो सं०
४१ ज्योतिषीनी देवीओ सं०

४२ खेचर नपुंसको सं०
४३ स्थलचर नपुंसको सं०
४४ जलचर नपुंसको सं०
४५ पर्याप्त चउरिंद्रियो सं०
४६ पर्याप्त पंचेंद्रियो विशेषाधिक
४७ पर्याप्त बे इंद्रियो विशेषा०
४८ पर्याप्त तेइंद्रियो विशेषा०
४९ अपर्याप्त पंचेंद्रियो असं०
५० अपर्याप्त चउरिंद्रियो विशेषा०
५१ अपर्याप्त तेइंद्रियो विशेषा०
५२ अपर्याप्त बेइंद्रियो विशेषा०
५३ पर्याप्त प्रत्येकवनस्पतिका०अ०
५४ पर्याप्तबादर निगोदो अ०
५५ पर्याप्तबा०पृथ्वीकायिको असं०

५६ पर्याप्तबा०अप्कायिको असं०
५७ पर्याप्तबा० वायुकायिकोअसं०
५८ अपर्याप्तबा०तेउकायिको असं०
५९ अप० प्रत्येक वनस्पतिका०अ०
६० अप०बा०निगोदो अ०
६१ अप० बा० पृथ्वीकायिको अ०
६२ अप० बादर अप्का० असं०
६३ अप० बादर वायुका० असं०
६४ सूक्ष्म अप० तेउका० असं०
६५ सूक्ष्म अप०पृथ्वीका०विशेषा०
६६ सूक्ष्म अप० अप्का० विशेषा०
६७ सूक्ष्म अप० वायुका० वि०
६८ सूक्ष्म पर्याप्त तेउका० संख्या०
६९ सूक्ष्म पर्याप्त पृथ्वीका० वि०

७० सूक्ष्मपर्या० अप्कायिको वि०
७१ सूक्ष्मपर्या० वायुकायिको वि०
७२ सूक्ष्मअप०निगोदनाशरीरोअ०
७३ पर्या०सूक्ष्मनिगोदनाशरीरोसं०
७४ अभव्यो अनंतगुणा०
७५ पडिवाइ सम्यग्दृष्टिजीवो अ०
७६ सिद्धना जीवो अनंत०
७७ बादर पर्या० वनस्पतिका० अ०
७८ बादर पर्याप्ता विशेषा०
७९ बा० अपर्या० वनस्पतिका०अ०
८० बादर अपर्याप्ता विशेषा०
८१ समुच्चय बादर जीवो विशेषा०
८२ सूक्ष्म अप० वनस्पतिका० अ०
८३ सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषा०
८४ सूक्ष्मपर्या० वनस्पतिका० सं०
८५ सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषा०
८६ समुच्चय सूक्ष्मजीवो विशेषा०
८७ भव्यसिद्धिको विशेषा०
८८ निगोदिया जीवो विशेषा०
८९ वनस्पतिका०ना जीवो वि०
९० एकेंद्रिय जीवो विशेषा०
९१ तिर्यंचो विशेषा०
९२ मिथ्यादृष्टिओ विशेषा०
९३ अविरतिओ विशेषा०
९४ सकषायी जीवो विशेपा०
९५ छद्मस्थ जीवो विशेषा०
९६ सयोगि जीवो विशेषा०
९७ संसारि जीवो विशेपा०
९८ सर्व जीवो विशेषाधिक

इति ९८ बोलनुं अल्पबहुत्व समाप्त.

---

१ नंबर ७७थी ९८ सुधी वावीश बोल छे, ते आठमे अनंते छे.

अथ कर्मप्रकृति विचार——१ ज्ञानावरणीय कर्म, ते आंखना पाटा समान. २ दर्शनावरणीय कर्म, ते राजाना पोलीया समान. ३ वेदनीयकर्म, ते मधुथी खरडेल खड्ग समान, ४ मोहनीय कर्म, ते मदीरा समान. ५ आयुष्य कर्म, ते हेड समान, ६ नाम कर्म, ते चितारा समान. ७ गोत्र कर्म, ते कुंभारना चाकडा समान. ८ अंतराय कर्म, ते राजाना भंडारी समान. आठ कर्मे शुं कर्युं छे ते कहे छेः–ज्ञानावरणीय कर्मे, अनंतज्ञान गुण ढांक्यो छे. दर्शनावरणीय कर्मे, अनंत दर्शन गुण ढांक्यो छे, वेदनीय कर्मे, अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख ढांक्युं छे. मोहनीय कर्मे, क्षायिक समकितगुण ढांक्यो छे. आयुष्य कर्मे, अक्षयस्थिति गुण ढांक्यो छे. नाम कर्मे, अमूर्त्तगुण ढांक्यो छे. गोत्र कर्मे, अगुरुलघुगुण ढांक्यो छे. अंतराय कर्मे अनंत आत्मिक शक्ति ढांकी छे. ज्ञानावरणीयादिकर्म कया कया कारणे बंधाय छे ते कहे छेः–ज्ञानावरणीय कर्म छ कारणे बंधाय छे. १ ज्ञान तथा ज्ञानिना अवर्णवाद बोलवाथी. २ ज्ञानिनो उपकार ओलववाथी. ३ ज्ञान, ज्ञानना उपकरणो अने ज्ञानिनी आशातना करवाथी. ४ ज्ञानमी अंतराय पाडवाथी. ५ ज्ञान तथा ज्ञानि उपर द्वेष करवाथी, अने ६ ज्ञानि साथे खोटा झगडा विसंवाद करवाथी. तेना फल (विपाक) पांच तथा दश प्रकारे भोगवे. १ मति ज्ञानावरणीय, २ श्रुतज्ञानाव०, ३ अवधिज्ञानाव०, ४ मनः पर्यायज्ञानाव०, ५ केवलज्ञानाव०, ए पांच ते मतिज्ञानादि पांच गुण प्रगट थवा न आपे. दश प्रकारे भोगवे ते १ श्रोत्रावरण, २ श्रोत्रविज्ञानावरण. ३ नेत्रावरण, ४ नेत्रविज्ञाना-

१ श्रोत्रेंद्रियना क्षयोपशमनुं जे आवरण ते श्रोत्रावरण अने श्रोत्रेंद्रियना उपयोगनुं आवरण, ते श्रोत्र विज्ञानावरण. निर्वृत्ति ने उपकरणरूप

वरण, ५ घ्राणावरण, ६ घ्राणविज्ञानावरण, ७ रसावरण, ८ रसविज्ञानावरण, ९ स्पर्शावरण, १० स्पर्शविज्ञानावरण, ए दश प्रकारे भोगवे. कर्मनी स्थिति कहे छेः–ज्ञानावरणीय कर्मनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्त्त अने उ० त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी. अबाधाकाल ज० अंतर्मु० ने उ० ३ हजार वर्षनो. हवे दर्शनावरणीय कर्म छ प्रकारे बंधाय–१ दर्शनना प्रत्यनीकपणाथी, २ दर्शननानिन्हवपणाथी, ३ दर्शननी आशातनाथी, ४ दर्शनना

द्रव्येंद्रिय, ते नाम कर्म जन्य छे. नेत्र वगेरेमां पण एमज समजवुं, १ ज्ञानावरणीयनी ज० स्थिति अंतर्मु०नी छे ते दशमे गुणठाणे होय, बीजे स्थले न होय. आठमा गुणठाणा सुधी संज्ञी पंचेंद्रियने अंतःकोडाकोडी सागरोपमथी ओछो स्थितिबंध न होय. एकेंद्रियने ३/७ एक सागरना सातिया त्रण भागनो स्थितिबंध होय. बेइंद्रियने तेथी पच्चीश गुणोबंध होय, तेइंद्रियने पचास गुणो, चौरिंद्रियने सो गुणो अने असंज्ञी पंचेंद्रियने हजार गुणो बंध होय. २ जे कर्मनी जेटला सागरनी स्थिति होय तेटला सो वर्ष अबाधाकाल कहेवाय. तेटला काल सुधी कर्म उदय न आवे त्यांसुधी कर्मपुद्गलोनी रचना–उदयकाल योग्य गोठवण करे अबाधाकाल बाद अवश्य विपाकोदयके प्रदेशोदये कर्म आवे. आयुष्य कर्म माटे आ प्रमाणे छेः— ज्यारे जीव परभवनुं आयुष्य बांधे, त्यारे वर्तमान भवनो जेटलो काल बाकी होयः तेटलो काल अबाधा काल जाणवो चवीने जीव जे गतिमां जाय त्यां प्रथम समये अवश्य विपाकोदयेज आवे, प्रदेशोदये न आवे. छेवटमां अपवर्तनाकरण वडे अपवर्तन करनार अने सोपक्रमी आयुष्यवाला, प्रदेशोदयथी आयुष्य भोगवे छेः तेने आयुष्य त्रूटुं एम कहेवाय छे. आ विषय माटे 'तत्त्वार्थ सूत्र'ना बीजा अध्यायना छेल्ला सूत्रनुं विवरण, तेमज पंचम कर्मग्रंथ अने पन्नवणानुं अवलोकन करवुं.

प्रद्वेषथी,५ दर्शनना अंतरायथी,६ दर्शनना विसंवादना योगथी. नव प्रकारे भोगवाय-१ चक्षुदर्शनावरणीय, २ अचक्षुदर्शनाव०, ३ अवधिदर्शनाव०, ४ केवलदर्शनाव०, ५ निद्रा,६ निद्रानिद्रा, ७ प्रचला, ८ प्रचला, प्रचला ९ थीणद्धिनिद्रा. दर्शनावरणीय कर्मनी स्थिति ज० अंतर्मु० ने उ० त्रीश कोडाकोडी सागरनी. अव्याबाधाकाल ज० अं० ने उ० ३ हजार वर्ष. वेदनीयकर्मना बे भेद-१ साता वेदनीय, २ असाता वेदनीय. साता वेदनीय कर्म दश प्रकारे बंधाय-१ प्राणीओनी अनुकंपाथी, २ भूतोनी अनुकंपाथी, ३ सत्त्वोनी अनुकंपाथी, ४ जीवोनी अनुकंपाथी,५ घणा प्राणीओ यावत् जीवोने दुःख न देवाथी, ६ शोक न उपजाववाथी, ७ खेद न उपजाववाथी, ८ वेदना (पीडा) न करवाथी, ९ परिताप नहिं उपजाववाथी, १० प्राण रहित न करवाथी. ए १० प्रकारे बंधाय अने ८ प्रकारे भोगवाय-१ मनोज्ञ शब्दो, २ मनोज्ञ रूपो, ३ मनोज्ञ गंधो, ४ मनोज्ञ रसो, ५ मनोज्ञ स्पर्शो, ६ मननुं सुखपणुं, ७ वचननुं सुखपणु, ८ काय (शरीर)नुं सुखपणुं. सातावेदनीय कर्मनी स्थिति अकषायिक ने ज० बे समयनी, सकषायिकने बादर मुहुर्तनी अने उ० १५ कोडाकोडी सागरनी. अबाधाकाल, दोढ हजार वर्षनो, असातावेदनीय कर्म बादर प्रकारे बंधाय-१ बीजा (जीव)नें दुःख देवाथी, २ बीजाने शोक उपजाववाथी, ३ बीजाने खेद उपजाववाथी, ४ बीजाने पीडा करवाथी, ५ बीजाने परितापना उपजाववाथी, ६ बीजाने प्राणरहित करवाथी, ७ घणा प्राणि, भूत, जीव अने सत्त्वोने दुःख उपजा०, ८ शोक उपजा० ९ खेद-

१ बार मुहुर्तनी ज० स्थिति दशमे गुणठाणे होय

उपजा०, १० पीडा उपजा०, ११ परितापना उपजा०, १२ प्राण रहित करवाथी. ए १२ प्रकारे बांधे तेना फल ८ प्रकारे भोगवाय—१ अमनोज्ञ शब्दो, २ अम० रुपो, ३ अम० गंधो, ४ अम० रसो, ५ अम० स्पर्शो, ६ मननुं दुःखपणु, ७ वचननुं दुःखपणु, ८ कायनुं दुःखपणु. असातावेदनीय कर्मनी स्थिति जं० एक पल्योपमना सात भाग करीए तेवा त्रण भाग $\frac{3}{7}$ तेमां एक पल्यना असंख्यातमा भागे हीन अने उ० त्रीश कोडाकोडी सागरनी अबाधाकाल त्रणह० वर्दनो. मोहनीयकर्म छ प्रकारे बंधाय—१ तीव्र क्रोध वडे, २ तीव्र मानवडे, ३ तीव्र मायावडे, ४ तीव्र लोभवडे, ५ तीव्र दर्शनमोहनीयवडे, ६ तीव्र चारित्रमोहनीयवडे. अने २८ प्रकारे भोगवाय—३ दर्शनमोहनीयनी १ समकित मोह०, २ मिथ्यात्वमोह०, ३ मिश्रमोहनीय. २५ चारित्रमोहनीयनी तेमां १६ कषाय मोह०नी अने ९ नोकषाय मोह०नी ते कहे छेः–१ अनंतानुबंधी क्रोध ते पर्वतनी राड़ (फाट) समान, २ अनंतानुबंधी मान ते पत्थरना स्तंभ समान, ३ अनंतानुबंधी माया ते वांशनी गांठ समान, ४ अनंतानुबंधी लोभ ते कृमिज (किरमिज)ना रंग समान. ए चारनी स्थिति जावजीवनी, घात समकितनी करे अने नरकग-

---

१ असातावे०नो बंध, छट्ठा गु० सुधी होय; पचेंद्रियने त्यां अंतः कोडाकोडीथी ओछो बंध न होय. ज० बंध $\frac{3}{7}$ (पल्यो०ना सातिया त्रण भाग) होय अने उ०एकेंद्रियने $\frac{3}{7}$ होय तेथी न्यून पल्योपमना असंख्यातमा भागे तेथी न्यून होय, अने क्यांय पण न होय. २ अहिं जे कषायोनी स्थिति जावजीव वगेरेनी कही छे, ते प्रायिक समजवी. कारण? प्रसन्नचंद्रराजार्षिने क्रोध अंतर्मुहूर्तनो हतो, छतां ते अनंतानुबंधी हतो. अन्यथा सातमी नरकना दलिया भेळा न थाय. तेमज बाहुबलीने मान एक वर्ष रहेल छतां ते संज्वलननुं हतु. वस्तुतः कषायनो आधार, अध्यवसाय उपर छे.

तिनो बंध थाय. १ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते तलावना खोट (फाट) समान, २ अप्रत्या० मान ते हाडकाना स्तंभ समान, ३ अप्रत्या० माया ते घेटाना शींगडा समान, ४ अप्रत्या० लोभ ते नगरनी खाळ समान. ए चारनी स्थिति एक वर्षनी. घात देशविरतिनी करे अने तिर्यंचनी गतिनो बंध थाय. १ प्रत्याख्यानी क्रोध ते वेलुनी लींटी समान, २ प्रत्या० मान ते लाकडाना स्तंभ समान, ३ प्रत्या० माया ते गौमुत्रिका समान, ४ प्रत्या० लोभ ते गाडाना खंजन समान. ए चारनी स्थिति चारमासनी, घात सर्व विरतिनी करे अने मनुष्यगतिनो बंध थाय. १ संज्वलननो क्रोध ते जल-रेखा समान, संज्व० मान ते नेतरनी लता समान, संज्व०नी माया ते वांसनी छाल समान, संज्व०नो लोभ ते हलदरना रंग समान. ए चारनी स्थिति एक पक्षनी. घात यथाख्यात-चारित्रनी करे अने देवगतिनो बंध थाय. ए १६ कषाय. नव नो कषाय कहे छे:-१ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ दुगंछा, ७ स्त्रीवेद, ८ पुरुषवेद ने ९ नपुंसकवेद. एवं २८ प्रकृति. मोहनीयकर्मनी स्थिति ज० अंतर्मु० ने उ० ७० कोडाकोडी सागरनी. अबाधाकाल ७ हजारवर्षनो. आयुष्य कर्म १६ प्रकारे बंधाय तेमां नारकनुं आयुष्य चार प्रकारे बंधाय-१ महारंभ करवाथी, २ महापरिग्रहथी, ३ मांसाहार करवाथी, ४ पंचें-

---

१ मोहकर्मनी ज० अंतर्मु०नी नवमे गुणठाणे सज्वलनना लोभनी होय. संज्व० मायानी १ पक्षनी, संज्व० माननी १ मासनी, संज्व० क्रोधनी २ मासनी, पुरुषवेदनी ८ वर्षनी होय. शेष प्रकृतिनी अंतःकोडाकोडीथी न्यून न होय. २ मोहनी उ० स्थिति ७० कोडाकोडीनी केवल 'मिथ्यात्व'नी होय, बाकीनी प्रकृतिनी न होय. कषायनी ४० कोडाकोडी सागरनी वगैरे भिन्न भिन्न कहेल छे. जुवो पन्नवणा अने पंचम कर्मग्रंथ.

द्रिय जीवोनो वध करवाथी. तिर्यंचनुं आयुष्य चार प्रकारे बंधाय-१ माया करवाथी, अतिगूढ कपट करवाथी, ३ असत्य बोलवाथी,४ खोटा तोला-मापराखवाथी. मनुष्यनुं आयुष्य चार प्रकारे बंधाय-१ स्वाभाविक भद्रकपणाथी, स्वाभाविक विनीतपणाथी, ३ अनुकंपापणाथी, ४ अमत्सरपणाथी. देवनुं आयुष्य चार प्रकारे बंधाय-१ सराग संयमथी, २ देशविरतिपणाथी, ३ बालतपथी, ४ अकामनिर्जराथी. ए १६ प्रकारे बांधे अने चार प्रकारे भोगवे ते कहे छेः-नारक-देवनुं आयुष्य ज० अंतर्मुहूर्त अधिक दशहजार वर्षनुं अने उ० पूर्व कोडीनो त्रीजो भाग अधिक ३३ सागरनुं. मनुष्य-तिर्यंचनुं आयुष्य ज० अंतर्मु० ने उ० पूर्व कोडीनो त्रीजो भाग अधिक ३ पल्यनुं. नाम कर्मना बे भेद-१ शुभनाम २ अशुभनाम कर्म. तेमां शुभनामकर्म चार प्रकारे बंधाय-१ कायानी सरलताथी, २ भाषानी सरलताथी, ३ भाव(अध्यवसाय)नी सरलताथी, ४ अविसंवादन योगथी (प्रशस्त त्रण योगनी ऐक्यताथी), ए चार प्रकारे बांधे अने चौद प्रकारे भोगवे-१ इष्ट शब्द, २ इष्ट रूप, ३ इष्ट गंध, ४ इष्ट रस, ५ इष्ट स्पर्श, ६ इष्ट गति, ७ इष्ट स्थिति, ८ इष्ट लावण्य, ९ इष्ट यशः कीर्त्ति, १० इष्ट उत्थान, कर्म-बल, वीर्य, पुरुषकार ने पराक्रम, ११ इष्ट स्वरपणुं, १२ कान्त स्वरपणुं, १३ प्रिय स्वरपणुं, १४ मनोज्ञ स्वरपणुं.

---

१ नारक-देवनु ज० आयुः बांधनार तिर्यंच के मनुष्य, अंतर्मुहूर्त शेष आयुः रहे त्यारे परभवनुं आयुः बांधे. तेटलो काल अधिक जाणवो. तेमज कोइ क्रोडपूर्वना आयुष्यवालो मनुष्य के तीर्यंच, देव नारकनुं उ० आयुष्य; पोताना भवना आयुष्यना त्रीजे भागे बांधे तो तेटलोकाल, आयुष्य कर्मनो अबाधाकाल जाणवो.

अशुभ नाम कर्म चारप्रकारे बंधाय-१ कायानी वक्रताथी, २ भाषानी वक्रताथी, ३ भावनी वक्रताथी, ४ विसंवादनपणाथी. चौद प्रकारे भोगवे-१ अनिष्ट शब्द, २ अनिष्टरूप, ३ अ० गंध, ४ अ० रस, ५ अ० स्पर्श, ६ अ० गति, ७ अ० स्थिति, ८ अ० लावण्य, ९ अ० यशः कीर्त्ति, १० अ० उत्थान कर्मबल वीर्यपुरुषकार पराक्रम, ११ हीनस्वरपणुं, १२ दीनस्वरपणुं, १३ अनिष्टस्वरपणुं, १४ अकांत स्वरपणुं. नामकर्मनी ९३ प्रकृति कहे छेः-प्रथम चौद पिंड प्रकृति-१ गति, २ जाति, ३ शरीर, ४ अंगोपांग, ५ बंधन, ६ संघातन, ७ संघयण, ८ संठाण ९ वर्ण, १० गंध, ११ रस, १२ स्पर्श, १३ अनुपूर्वी, १४ विहायोगति. ए १४ पिंड प्रकृति थइ तेनी उत्तर प्रकृति ६५ कहे छेः-१ नरक-गति, २ तिर्यंच-गति, ३ मनुष्य-गति, ४ देवगति, ५ एकेंद्रिय जाति, ६ बेइंद्रिय जाति, ७ तेइंद्रिय जाति, ८ चउरिंद्रिय जाति, ९ पंचेंद्रिय जाति, १० औदारिक शरीर, ११ वैक्रैयश०, १२ आहारकश०, १३ तैजसश०, १४ कार्मणश०, १५ औदारिक-अंगोपांग, १६ वैक्रैय-अंगो०, १७ आहारक-अंगो०, १८ औदारिक बंधन, १९ वैक्रै० बं०, २० आहा० बं०, २१ तैज०, बं०, २२ कार्म०, बं०, २३ उदा० संघातन, २४ वैक्रै० सं०, २५ आहा० सं०, २६ तैज० सं०, २७ कार्म० सं०, २८ वज्रऋषभनाराच संघयण, २९ ऋषभना० सं०, ३० नाराच सं० ३१ अर्धना० सं० ३२ किलिका सं०, ३३ छेवट्ठु सं०, ३४ समचउरंस संठाण, ३५ निगोहपरिमंडल सं०, ३६ सादि सं०, ३७ वामन सं०, ३८ कुब्ज सं०, ३९ हुंड सं०, ४० कालोवर्ण, ४१ नीलोव०, ४२ रातोव०, ४३ पीळोव०, ४४ धोळोव०, ४५ सुरभिगंध, ४६ दुरभिगंध, ४७ तीखो रस, ४८ कडवो रस, ४९

कषायलो र०, ५० खाटो र०, ५१ मीठो र०, ५२ खरखरो स्पर्श, ५३ सुंहालो स्प०, ५४ भारी (गुरु) स्प०, ५५ हळवो स्प०, ५६ टाढो स्प०, ५७ उन्हो स्प०, ५८ स्निग्ध (चोपडेल) स्प०, ५९ लुखो स्प०, ६० नरकानुपूर्वी, ६१ तिर्यचानुपूर्वी ६२ मनुष्यानुपूर्वी ६३ देवानुपूर्वी, ६४ शुभ विहायोगति, ६५ अशुभवि० गति, ६६ पराघातनामकर्म, ६७ उच्छ्वासनाम,६८ अगुरुलघुनाम, ६९ आतपनाम, ७० उद्योतनाम, ७१ उपघातनाम, ७२ तीर्थकरनाम, ७३ निर्माणनाम, (६६थी ७३ सुधी ८ प्रत्येक प्रकृति छे) ७४ त्रसनाम, ७५ बादरनाम, ७६ पर्याप्तनाम. ७७ प्रत्येकनाम, ७८ स्थिरनाम, ७९ शुभनाम, ८० सौभाग्यनाम, ८१ सुस्वरनाम, ८२ आदेयनाम, ८३ यशोकीर्तिनाम, ८४ स्थावरनाम, ८५ सूक्ष्मनाम, ८६ अपर्याप्तनाम, ८७ साधारणनाम, ८८ अस्थिरनाम, ८९ अशुभनाम. ९० दौर्भाग्यनाम, ९१ दुःस्वरनाम, ९२ अनादेयनाम, ९३ अयशोकीर्त्तिनाम, तेमां १० प्रकृतिबंधननी मेळवतां १०३ प्रकृति थाय. अथवा नामकर्मनी सामान्यथी ४२ प्रकृति पण थाय छेः-१४ पिंडप्रकृति, ८ प्रत्येक प्र०, [1]त्रसदशक अने स्थावर दशक एवं ४२. नामकर्मनी [2]स्थिति ज० ८ मुहूर्तनी, उ० २० कोडाकोडी सागरनी. अबाधाकाल ज० अंतर्मु० ने उ० २ हजार वर्षनो० गोत्रकर्मना बे भेद-१ उंच गोत्र, २ नीच गोत्र उंच गोत्र आठ प्रकारे बंधाय-१ जातिमद न करवाथी, २ कुलमद न करवाथी, ३ बलमद न करवाथी, ४ रूपमद न करवाथी,५ तपमद न करवाथी ६ श्रुतमद न करवाथी; ७ लाभमद न करवाथी, ८ ऐश्वर्यमद न करवाथी.

---

१ ७४थी ८३ सुधी 'त्रसदशक' कहेवाय अने ८४थी ९३ सुधी 'स्थावरदशक' कहेवाय छे. २ नामकर्मनी ज० स्थिति दशमे गुणठाणे बंधाय.

तेना फल ८ प्रकारे भोगवाय–१ जाति विशिष्टता, २ कुलविशिष्टता, ३ ३ बलविशिष्टता, ४ रूपविशिष्टता, ५ तपविशिष्टता, ६ श्रुतविशिष्टता, ७ लाभविशिष्टता, ८ ऐश्वर्यविशिष्टता. नीच गोत्र पण ८ प्रकारे बंधाय–१ जातिमद वगेरे आठ मद करवाथी. तेना फल ८ प्रकारे भोगवाय–१ जातिविहीनता यावत् ८ ऐश्वर्य विहीनता. गोत्रकर्मनी स्थिति ज० ८ मुहूर्तनी, उ० २० कोडाकोडी सागरनी. अबाधाकाल ज० अंतर्मु० ने उ० २ हजार वर्षनो. अंतराय कर्म पांच प्रकरे बंधाय–१ दाननो अतराय करवाथी, २ लाभनो अंतराय करवाथी, ३ भोगनो अंतराय करवाथी, ४ उपभोगनो अंतराय करवाथी, वीर्यनो अंतराय करवाथी. तेना फल ५ प्रकारे भोगवाय–१ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय, ५ वीर्यांतराय, अंतरायकर्मनी स्थिति ज० अंतर्मु०, ने उ० ३० कोडाकोडी सागरनी. अबाधाकाल ३ हजार वर्षनो. ज्ञानावरणीयादि ८ कर्मना बांधवाना कारणो ८५ कहेलं छे अने ९३ अथवा १०८ प्रकारे भोगवे ते पूर्वे कहेल छे. बंधमां १२० प्रकृति होय–ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी २६, (समकितमोहनीय मिश्रमोहनीय ए २ नहिं) आयुष्यनी ४, नामनी ६७, (ते ९३मांथी वर्णादिना १६ भेद, ५ बंधन ने ५ संघातन ए २६ वर्जवा). गोत्रनी २, अंतरायनी ५. एवं एकसोवीश. उदयमां १२२, ते १२० पूर्वे कहेली ते अने समकितमो० ने मिश्रमो० ए वधी.

---

१ प्रथमनी छापेली प्रतोमां ८५ बांधवानी प्रकृति अने ९३ भोगव्यानी प्रकृति वगेरे कहेल छे परंतु त्यां बांधवाना कारणो ८५ छे अने तेना फल ९३ प्रकारे भोगवाय छे एम जाणवुं.

१४८ सत्तामां ते नामकर्मनी ९३ प्रकृति गणवाथी अने १०३ गणतां १५८ प्रकृति सत्तामां होय. मूल आठ कर्मनी सामान्यथी उत्तर प्रकृति ३१ पण थाय छे–ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी २ आयुष्यनी ४, नामनी २, गोत्रनी २, अंतरायनी ५, एवं एकत्रीश. हवे १४८ उत्तर प्रकृतिनी स्थिति कहे छेः—ज्ञानावरणीयनी ५ प्रकृतिनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्तनी, उ० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी. दर्शनाव० ४ प्रकृतिनी ज० अंतमु० ने उ० ३० कोडा०, निद्रापंचकनी ज० स्थिति, एक सागरना ७ भाग करीए तेवा ३ भाग ३/७ (पल्यना असंख्यातमा भागे हीन) अने उ० ३० कोडा०, सातावेदनीयनीय ज० स्थिति अकषायिक ने बे समयनी, सकषायिकने बार मुहूर्तनी. उ० १५ कोडा०, असातावेदनी ज० ने उ० स्थिति, निद्रा पंचकनी प्रमाणे जाणवी. समकितमोहनीयनी ज० स्थिति अंतमु० ने उ० ६६ सागर झाझेरी. मिथ्यात्वमोहनीयनी ज० स्थिति पल्यना असंख्यातमा भागे न्यून एक सागरोपमनी, उ० ७० कोडाकोडी मा०नी. मिश्रमो०नी ज० ने उ० अंतमु०नी. पहेला बार कषायनी ज० सातिया चार भाग ४/७ अने उ० ४० सागरनी. संज्वलनना क्रोधनी ज० २ मासनी, माननी १ मासनी, मायानी १ पक्षनी अने लोभनी अंतमु०नी, उ० ४० कोडा० सागरनी, स्त्रीवेदनी ज० स्थिति सातिया दोढ भाग ७/१½ पल्यना असंख्या० भाग न्यून अने उ०१५ कोडाकोडी सा०नी, पुरुष वेदनी ज० ८ वर्षनी,

१ अहिं १५८ उत्तर प्रकृतिओनी ज० उ० स्थिति श्रीपन्नवणासूत्रने अनुसारे लखेल छे जोके ते लंबाणथी त्यां लखायेल छे; कर्मग्रंथमां संक्षेप शैलीथी सुगम्य लखायेल छे.

उ० १० कोडाकोडी सा०नी, नपुंसकवेदनी ज० सातीया २ भाग ७ पल्यना असंख्या० भाग न्यून अने उ० २० कोडाकोडी सा०नी, हास्य-रतिनी ज० सातिया-१ भाग ७ पल्यना असंख्या० न्यून अने उ०१०कोडा०सा०नी, शोक-अरति-भय ने दुगंछा ए चारनी ज० उ० स्थि० नपुंसकवेद प्रमाणे. तिर्यंचगतिनी स्थिति पण नपुंसकवेद प्रमाणे, नरकगतिनी ज० सातिया बेहजार भाग अने उ० २० कोडा० सा०नी. मनुष्यगतिनी स्थिति स्त्रीवेद प्रमाणे. देवगतिनी स्थिति ज०सातिया एकहजार भाग-पल्यनो असंख्या०भाग न्यून अने उ०१०कोडा०सा०नी, एकेंद्रिय जातिनी ज० सातिया बे भाग अने उ० २० कोडाकोडी सागरनी, बेइंद्रियनी ज० पांत्रिसिया नव भाग अने उ० १८ कोडा० सा०नी, तेइंद्रिय अने चउरिंद्रिय माटे एमज जाणवुं, पंचेंद्रियनी स्थिति नपुंसकवेद प्रमाणे. औदारिक शरीरनी पण एमज जाणवी, वैक्रेयश०नी नरकगति प्रमाणे, आहारकश०नी ज०ने उ०अंतः कोडा० सा०नी, तेजस कार्मण श०नी नपुंसक वेद प्रमाणे, औदा०ना अंगोपांग वैक्रे०ना अंगो० अने आहा०ना अंगो०नी ज०उ० स्थिति औदारिकादिक ३ शरीरनी प्रमाणे, ५ बंधन ने ५ संघातननी पण पोतपोताना शरीर प्रमाणे, वज्रऋषभनाराच सं०नी ज० सातिया १ भाग अने उ०१०कोडा०सा०नी. ऋषभनाराच सं० ज० पांत्रिसिया ६ भाग अने उ० १२ कोडा० सा०नी, नाराच सं० ज० पांत्रिसिया ७ भाग अने उ० १४ कोडा० सा०

---

१ देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति, नरकानुपूर्वी, वैक्रेय शरीर अने वैक्रेयनो उपांग ए छ प्रकृति। एकेंद्रिय अने विकलेंद्रिय न बांधे पण असंज्ञी पंचेंद्रिय बांधे तेनो बंध हजार गुणो होय माटे छे सातिया ह० भाग सागरो० बांधे

नी, अर्द्धनाराच सं० ज० पांत्रिसिया ८ भाग अने उ० १६ कोडाकोडी सा० नी, किलिका सं० ज० पांत्रिसिया ९ भाग अने उ० १८ कोडाकोडी सा० नी, छेवट्ठु सं० ज० सातिया २ भाग अने उ० २० कोडाडी सा० नी; संघयणनी जेम संठाणनी ज० उ० स्थिति जाणवी. सुंहालो, हलको, स्निग्ध ने उष्ण ए ४ स्पर्श, सुरभिगंध, श्वेत वर्ण अने मधुररस ए ७नी ज० सातिया १ भाग अने उ० १० कोडा० सा० नी, पीळो वर्ण ने खाटो रसनी ज० अठ्याविशिया ५ भाग अने उ० १२॥ कोडा० सा० नी, रातो वर्ण ने कषायेल रसनी ज० अठ्याविशिया ६ भाग अने उ० १५ कोडा० सा० नी, नील वर्ण ने कडवा रस ने दुरभिगंधनी ज० अठ्याविशिया ७ भाग अने उ० १७॥ कोडा० सा० नी, कालोवर्ण ने तिखा रसनी ज० सातिया २ भाग अने उ० २० कोडा० सा०नी, गुरु, कर्कश, रूक्ष ने शीत ए ४ स्पर्शनी स्थिति कालावर्ण प्रमाणे. अगुरुलघु नाम, उपघात नाम, पराघात नाम ए ३नी पण एमज जाणवी. नरकानुपूर्वीनी स्थिति नरकगतिनी जेम जाणवी. तिर्यंचानुपूर्वीनी तिर्यंचगति प्रमाणे. मनुष्यानुपूर्वीनी मनुष्यगतिनी जेम. देवानुपूर्वीनी देवगति प्रमाणे. उच्छ्वास नाम आतप नामनी तिर्यंचगतिनी जेम. उद्योतनाम ते शुभ विहायोगति नामनी ज० सातिया १ भाग अने उ० १० कोडा० सा०नी, अशुभ विहायोगति नामनी तिर्यंचगति प्रमाणे. त्रसनाम ने स्थावरनामनी पण एमज. सूक्ष्मनामनी ज० पांत्रिसिया ९ भाग अने उ० १८ कोडा० सा०नी, बादर नाम ने पर्याप्त नामनी तिर्यंचगतिनी जेम. अपर्याप्त नाम ने साधारण नामनी सूक्ष्म नामनी जेम. प्रत्येक शरीर नामनी तिर्यंचगतिनी जेम. स्थिर नाम, शुभ नाम, सौभाग्य

नाम, सुस्वर नाम अने आदेय नाम ए ५ नी ज० सातिया १ भाग अने उ० १० कोडा० सा०नी, स्थिरनाम, अशुभ नाम, दौर्भाग्य नाम, दुःस्वर नाम अने अनादेय नाम ए ५नी ज० सातिया २ भाग अने उ०२०कोडा० सा०नी, यशोकीर्तिनी ज०८ मुहूर्त अने उ०१० कोडा०सा०नी, अयशोकीर्तिनी नें निर्माण नामनी तिर्यंचगतिनी जेम, तीर्थंकर नामनी ज० ने उ० अंतः कोडा० सा०नी उच्च गोत्रनी ज० ८ मुहूर्त अने उ० १० कोडा० सा०नी, नीच गोत्रनी तिर्यंचगति प्रमाणे. ४ आयुष्यनी स्थिति प्रथम कहेल छे. ५ अंतरायनी ज० अंतर्मु० अने उ० ३० कोडा० सा०नी. जिन नामनो उ० बंध चोथे गुणठाणे देवायुः अने आहारक द्विकनो उ० बंध सातमे गु०, शेष प्रकृतिनो उ० बंध पहेले गु० होय. पुरुषवेद अने संज्व०नी चोकडीनो ज० बंध नवमे गु०, तीर्थंकर नाम अने आहारक द्विकनो ज० बंध आठमे गु०, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतरायनी ५, उच्चगोत्र यशोकीर्ति, सातावेदनीय ए १७नो ज० बंध दशमे गुण० होय. देवगति, देवानुपूर्वी, नरकगति, नरकानुपूर्वी वैक्रेयद्विक ए ६ प्रकृतिना ज० बंधक असंज्ञी पंचेंद्रिय होय. शेष प्रकृतिना ज० बंधक बादर एकेंद्रिय पर्याप्त होय. सम्यक्त्व-मोहनीय ने मिश्रमोहनीय ए बंधमां न होय पण उदयमां होय माटे जे बन्नेनी स्थिति कहेल छे ते उदयनी अपेक्षाए. कर्मप्रकृति समाप्त.

अथ धर्मध्यान विचार—से किं तं धम्मे झाणे? धम्मे झाणे चउविहे चउप्पडोयारे पन्नते तं जहा १ आणाविजए, २ अवायविजए, ३ विवाग विजए, ४ संठाणविजए. धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता.

तंजहा १ आणारुइ, २ निसग्गरुइ, ३ सुत्तरुइ, ४ उवएसरुइ. धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता तं जहा १ वायणा, २ पुच्छणा, ३ परियट्टणा, ४ अणुप्पेहा. धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहापन्नत्ता तं जहा १ एगच्चाणुप्पेहा, २ अणिच्चाणुप्पेहा, ३ असरणाणुप्पेहा, ४ संसाराणुप्पेहा. ए सूत्र पाठनो अर्थ कहे छेः– अंतर्मुहूर्तकालमात्र एक वस्तुमां चित्तनी स्थिरता ते ध्यान. धर्मध्याननाचार भेद. १ आज्ञाविजय (विचय) कहेतां वीतरागदेवनी आज्ञानो[1] विचार करवो ते आज्ञाविचय. समकितपूर्वक श्रावकना १२ व्रत ११ पडिमा, पांच महाव्रत, १२ भिक्षुनी पडिमा, शुभध्यान, शुभयोग, ज्ञानदर्शनचारित्र अने छ कायनी रक्षा वगेरेमां वीतरागदेवनी आज्ञा आराधवा माटे समय मात्र पण प्रमाद न करवो अने चतुर्विध तीर्थना गुण कीर्तन करवा. २ अवायविजए कहेतां जीवने दुःख जेनाथी उत्पन्न थाय छे तेनो विचार करवो ते अपाय विचय. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अशुभयोग, अढार पापस्थानक अने छ कायनी हिंसा वगेरे. अपाय (दुःख)ना कारणो जाणीने तेनो त्याग करवानो विचार करवो. ३ विवागविजए कहेतां शुभाशुभ कर्मना उदयथी जीव, जे सुख–दुःखनो अनुभव करे छे, तेनो विचार करवो ते विपाक विचय. ज्ञानावरणादि कर्मनुं स्वरुप चिंतववुं कर्मना स्वरूपने समजीने समभाव धारण करवुं कोइ उपर रागद्वेष न करवो. ४ संठाणविजए कहेतां लोकनुं स्वरूप चिंतववुं ते संस्थान विचय. आ लोक चौद राज्य प्रमाण अने सुप्रतिष्ठकने आकारे छे; तेमां छ द्रव्यो छे.

१ कर्तव्यार्थोपदेश आज्ञा–करवा योग्य अर्थ (प्रयोजन वा तत्त्व)नो उपदेश ते आज्ञा

अधोलोकमां नारको तथा भुवनपतिओ छे. तिरछालोकमां वानमंतरो, मनुष्यो, तिर्यचो, ज्योतिष्क देवो छे अने असंख्याता द्वीप समुद्रो छे. संख्याता (८४ लाख) नरकावासो अने भवनपतिना (७ क्रोड ७२ लाख) भवनो छे असंख्याताव्यंतरना नगरो अने ज्योतिष्कना विमानो छे. अढीद्वीपमां तीर्थंकरो ज० २० ने उ० १७० होय, केवल ज्ञानिओ पृथक्त्व क्रोड अने साधुओ पृथक्त्व सहस्र क्रोड होय. तेमने वंदन नमन करुं तथा स्तुति गुणग्राम करुं. वळी असंख्याता श्रावक श्राविका तिरछा लोकमां छे तेना गुणग्राम करुं. तिरछालोकथी असंख्यात कोडाकोडी योजन उपरे उर्ध्व लोक छे. तेमां १२ देवलोक,९ ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तर विमान छे. तेमां चोर्यासीलाख सताणुहजार त्रेवीश विमानो छे. सर्वार्थसिद्ध महाविमानथी १२ योजन उपर ४५ लाखयोजन प्रमाण सिद्धशिला छे, त्यां सिद्ध परमात्माओ बिराजे छे; तेमने वंदन करुं यावत् पर्युपासना करुं. अधोलोक किंचित् न्यून सात राज प्रमाण छे, अढारसो योजन प्रमाण तिरछो लोक छे अने उर्ध्वलोक किंचित् अधिक सात राज प्रमाण छे ए त्रणे लोकमां सर्व स्थानके आजीव अनंतवार उत्पन्न थयो. एक वालाग्र मात्र पण भूमि स्पर्श्या विना मूकी नथी. एम समजीने श्रुत धर्म अने चारित्रधर्मनीआराधना करीए तो अजर-अमर-पद पामीए. हवे धर्मध्यानना चार लक्षणो कहे छेः-१ आणारुइ कहेतां वीतरागनी आज्ञा प्रत्ये अतिशय शुभ राग भक्ति अने श्रद्धा, न उपजे ते आज्ञा रुचि. २ २ निसग्गरुइ कहेतां सहज स्वभावे (जातिस्मरणादिवडे) उपदेश सिवाय श्रुत-चारित्र धर्मनुं यथार्थ श्रद्धान थवुं, ते निसर्ग रुचि. ३ सुत्तरुइ कहेतां सूत्र (निर्ग्रंथ प्रवचन)

नी अभिलाषा ते सूत्र रुचि. सूत्रना बे भेद १ अंग प्रविष्ट अने अंग बाह्य. तेमां अंगप्रविष्ट ते १२ अंग-(१ आचारांग यावत् १२ दृष्टिवाद.) अंगबाह्यना बे भेद १ आवश्यक अने २ आवश्यक व्यतिरिक्त. आवश्यकते सामायिकादि छ अध्ययनरुप उत्कालिक. आवश्यक व्यतिरिक्त ते उत्तराध्ययन प्रमुखकालिक अने दशवैकालिक वगेरे उत्कालिक सूत्र-सांभलवा-भणवानी रुचि ते सूत्र रुचि. ४ उवएसरुइ कहेतां गीतार्थ मुनि प्रमुखना उपदेश-श्रवणथी जे श्रद्धान, थाय ते उपदेश रुचि. १ अज्ञानथी बांधेल कर्म, ज्ञानथी क्षय थाय. २ मिथ्यात्त्वथी बांधेल कर्म, समकितथी क्षय थाय.३ अविरतिथी बांधेल कर्म, विरतिथी क्षय थाय.४ प्रमादथी बांधेल कर्म, अप्रमादथी क्षय थाय. ५ कषायथी बांधेल कर्म, अकषायथी क्षय क्षाय. ६ अशुभ योगथी संचित करेल कर्म, शुभ योगथी क्षय थाय. ७ पांच इंद्रिय वगेरे आश्रवथी संचित कर्म, संवरथी क्षय थाय. इत्यादिक उपदेश श्रवणनी जे इच्छा ते उपदेश रुचि अथवा अवगाढरुचि-(विस्ताररुचि)-पण कहीए. हवे धर्मध्यानना ४ आलंबन कहे छेः—१ वायणा कहेतां गीतार्थगुरु प्रमुख पासे सूत्र अने अर्थनी वाचना लेवी ते वाचना २ पुच्छणा कहेतां अपूर्व अर्थ-मेळववा माटे, सूत्र ने अर्थनो संदेह निवारवा वास्ते, जिनशासनने शोभाववाने अर्थे, अथवा परनी परीक्षा करवा माटे, यथा योग्य विनय सहित गुर्वादिकने पूछवुं ते पृच्छना. ३ परियट्टणा कहेतां पूर्वे जे सूत्रनें अर्थ भणेला छे तेने अस्खलित (भूली न जवाय तेम) करवा माटे शुद्ध उपयोग सहित वारंवार सूत्र ने अर्थनो स्वाध्याय करवो ते परिवर्तना. ४ अणुप्पेहा कहेतां जीवादिक तत्त्वनुं रहस्य समजवा

माटे सूत्रने अर्थनुं चिंतन (अनुभव) करवुं ते अनुप्रेक्षा. ते चार प्रकारे छे—१ एगत्ताणुप्पेहा कहेतां एकत्वानुप्रेक्षा. निश्चयनये असंख्यात प्रदेशी, अमूर्त, सदा उपयोगी, चैतन्य लक्षण एवो मारो आत्मा छे, तेम सर्व आत्माओ निश्चयनये तेवाज छे. ज्ञान-दर्शन मारुं स्वरूप छे, ते सिवाय पुद्गलिक भावो ते बाह्य-उपाधिरूप छे; ए माराथी. हवे व्यवहारनये आ आत्मा अनादिकालनो जड (अचेतन) वर्णादिवाळा पुद्गलनो संयोगी थयो थको स्थावर-त्रसना विविधरूप पामीने जीव नाटकियानी परे चोरासीलाख जीवायोनिमां विविध वेष धारण करेल छे. त्रसपणे रहेतो ज० अंतमु० अने उ० बे हजार सागर झाझेरा काल सुधी रहे अने स्थावरपणे रहे तो ज०अंतमु०ने उ० अनंत उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी लगे रहे. क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग मात्र आकाश-प्रदेश राशि प्रमाण असंख्याता पुद्गल परावर्तन काललगे रह्यो. वळी स्त्रीवेद पुरुषवेद अने नपुंसक वेदपणे जीव, पुद्गलना संयोगथी नाच्यो. तेमां पण स्त्रीवेदे-देवीपणे, भवनपतिथी ईशान देवलोक सुधी इंद्रनी इंद्राणीपणे तथा स्वरूपवती अप्सरापणे ज० १० हजार वर्ष अने उ० ५५ पल्यनी स्थिति ए अनंतवार आ जीव उपनो. पुरुषवेदे-देवपणे भवनपतिथी यावत् नव ग्रैवेयक सुधी महर्द्धिक देवपणे अनंतवार उपनो. महाशक्तिवंत इंद्र, लोकपाल प्रमुखपद पामी ज० १० ह० वर्ष अने उ० ३१ सागर पर्यंत मनोवांछित सुख भोगव्या. शक्रेंद्रे एक भवमां सात पल्यनी आयुष्यवाळी २२ क्रोडो क्रोड, ८५ लाख क्रोड, ७१ हजार क्रोड, ४२८ क्रोड, एटली देवीओ भोगवी तो पण ते तृप्त न थयो. स्त्रीवेद-पुरुषवेदे-मनुष्यपणे देवकुरु ने उत्तरकुरुमां युगलिया

पणे उपनो, त्यां मनोवंच्छित १० प्रकारना कल्पवृक्ष संबंधी सुखो त्रण पल्य सुधी भोगव्या; ज्यां स्त्री-पुरुषनो
क्षणमात्र वियोग पण पडे नहिं एम युगलिकपणे अनंतवार उपनो. वली कर्मभूमि मध्ये मनुष्यभवमां पुरुष-
वेदे चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, अने मंडलिक राजा थयो अने स्त्रीवेदे स्त्रीरत्न आदि नारीपणे उत्पन्न थयो,
क्रोडपूर्वादिकना आयुष्यपर्यंत सुखविलस्या तो पण तृप्ति न थइ, एमज उत्तम धनिक शेठ-साहुकारने घरे
अनंतवार उपनो. वली दुर्भागी अने दरिद्र कुलमां अतिशय दुःख भोगव्या. जलचरादि तिर्यंच संज्ञि पंचेंद्रिय
मध्ये अनेकवार उपनो. गर्भज मनुष्य अने तिर्यंचमां त्रण वेद होय. सात नरक पांच एकेंद्रिय, त्रण विकलें-
द्रिय अने असंज्ञी पंचेंद्रियमां एक नपुंसकवेद होय. देवमां बे (स्त्रीपुरुष) वेद होय हवे ३ वेदनी स्थिति कहे छे
१ स्त्रीवेदनी ज० स्थिति अंतर्मु० ने उ० पृथक्त्व क्रोड पूर्व अधिक ११० पल्योपमनी. पुरुपवेदनी ज० अंतमु० ने
उ० पृथक्त्व सो सागरनी. नपुंसकवेदनी ज० अंतर्मु० ने उ० अनंतकाल चक्रनी. पुद्गल (परभाव)ना संयोगथी
एम विचित्र अवस्था धारण करी, ए सर्व अवस्था अशुद्ध व्यवहारनये जाणवी. शुद्ध व्यवहारनये शुद्ध देव, गुरु
अने धर्मनी यथार्थ ओलखाण करी रत्नत्रयनुं आराधन करवाथी, शुद्ध निश्चयनये जे आत्मानुं स्वरूप; शक्ति-
रूपे छे ते व्यक्तिरूपे प्रगट थाय. कारण ? पुद्गल तो 'सडण पडण विद्धंसण' स्वभाववाळो अने रूपी (मूर्त्त) छे.
हुं अविनाशी-अरूपी अमूर्त्त छुं. कोइपण द्रव्य कोइ द्रव्यमां निश्चयनये भळे नहिं, माटे 'एगोहं' हुं एकज छुं;
एम एकत्व भावनुं चिंतन करवुं ते एकत्वानुप्रेक्षा. २ अणिच्चाणुप्पेहा कहेतां आत्मा द्रव्यार्थिकनये नित्य छे

अने पर्यायार्थिकनये देव मनुष्यादि पर्यायरूपे अनित्य छे; तथापि मूलस्वरूपथी आत्मा क्यारे पण पलटे नहिं. देवादिपर्यायो कर्मना संबधथी छे, माटे अनित्य छे. त्यारे पुद्गलादि जे परभाव अनित्य छे तेथी मुक्त थवानुं चिंतववुं ते अनित्यानुप्रेक्षा. ३ असरणानुप्पेहा कहेतां आ जीवने संसार चक्रमां परिभ्रमण करवामां, अन्य (कोइपण) रक्षण करवा समर्थ नथी. माता, पिता, पुत्र बंधु के स्त्री वगेरे अने मिथ्यात्वि देव, गुरु के मिथ्या धर्म पण रक्षण करवा समर्थ नथी. परंतु केवल शुद्ध समकित सहित वीतराग धर्मज. आ भव के परभवमां जीवने एक शरण छे. ४ संसाराणुप्पेहा कहेतां चार गति रूप संसारमां चोवीश दंडक चोर्यासी लाख जीवायोनिमां–अनादिकालथी जीव, राग–द्वेष ने वश थइ परिभ्रमण करे छे. संसारना मूल कारणभूत मिथ्यात्वादि पांच कारणो छे अने संसारथी मूकावनार समकित, अविरति, अप्रमाद, अकषाय अने योग निरोधनुं स्वरूप चिंतववुं ते संसारानुप्रेक्षा. एम धर्मध्याननुं स्वरूप समजीने ध्याइएं–आचरणमां मूकीएं तो परमानंदरूप मोक्षनुं सुख पामीएं. इति धर्मध्यान विचार समास.

अथ श्री पदवीविचार–७ एकेंद्रिय रत्न, ७ पंचेंद्रिय रत्न अने ९ मोटी पदवी. ए २३ पदवी. तेमां ७ एकेंद्रिय रत्नना नाम कहे छे—१ चक्ररत्न, २ छत्ररत्न, ३ चरमरत्न, ४ दंडरत्न, ५ खड्गरत्न, ६ मणिरत्न अने ७ कांगणीरत्न. हवे ७ पंचेंद्रियरत्न,ना नाम—१ सेनापतिरत्न, २ गाथापतिरत्न, ३ वार्द्धिकरत्न, ४ पुरोहितरत्न, ५ स्त्रीरत्न,६ अश्वरत्न, ने ७ गजरत्न. हवे नव मोटी पदवीना नाम—१ अरिहंतनी पदवी, २ चक्रवर्तीनी०,३ बल-

देवनी०, ४ वासुदेवनी०, ५ केवलीनी०, ६ साधुनी०, ७ श्रावकनी०, ८ समकितदृष्टिनी अने ९ मंडलिकराजानी. एवं त्रेवीश पदवी कही. हवे १४ रत्नो जे काम करे ते कहे छे–१ चक्ररत्न छ खंड साधतां मार्ग बतावे. २ छत्र रत्न ४८ कोश सुधी छाया करे. ३ चर्मरत्न नदी प्रमुखथी पार उतारे. ४ दंडरत्न गुफाना बारणा उघाडे. ५ असि (खड्ग) रत्न शत्रने हणे. ६ मणिरत्न उद्योत करे. ७ कांगणी रत्न ४९ मांडला आलेखे अने तोला–माप वधारें. ८ सेनापति देश–साधे. ९ गाथापति धान्य तथा रसवती नीपजावे. १० वार्द्धिक आवास (घर) नीपजावे. ११ पुरोहित घा साजा करे, शांति कर्म करे अने विघ्न टाले. १२ स्त्रीरत्न भोग साधन माटे काम आवे. १३ १४ अश्वरत्न–गजरत्न ए बन्ने चडवाने काम आवे. हवे १४ रत्नना उत्पत्ति स्थानो कहे छे–चक्र, छत्र, असि अने दंडरत्न ए ४ आयुधशालामां उपजे. चर्म, मणि ने कांगणीरत्न ए त्रण लक्ष्मीना भंडारमां उपजे, सेनापति, गाथापति, पुरोहित ने वार्द्धिक ए ४ पोताना नगरमां उपजे. स्त्रीरत्न विद्याधरनी श्रेणिमां उपजे, अश्व ने गज, वैताढ्यना मूलमां उपजे. हवे १४ रत्नलुं मान कहे छे—चक्र, छत्र ने दंडरत्न ए ३ एक वामना (चार हाथना) छे. चर्मरत्न बे हाथनुं छे. असिरत्न ५० अंगुलनुं लांबुं, १६ अंगुलनुं पहोळुं अने अर्द्ध अंगुलनुं जाडुं छे. मणिरत्न ४ अंगुलनुं लांबुं ने २ अंगुलनुं पहोळुं छे. कांगणीरत्न ४ अंगुलनुं छे. सेनापति, गाथापति, पुरोहित अने वार्द्धिकरत्न ए ४नी अवगाहना चक्रवर्ती प्रमाणे होय छे. स्त्रीरत्न, चक्रवर्तीथी ४ अंगुल नीची

१ कांगणीरत्न अने खड्गरत्ननुं माप, प्रथमनी छापेली प्रतमां फरक छे अहिं 'संग्रहणी'ने अनुसारे लखेलु छे.

होय. अश्वरत्न १०८ अंगुलनुं लांबु, ८० अंगुलनुं उंचुं अने ९९ अंगुल मध्य परिधिवाळुं छे. गजरत्न, चक्रवर्तीथी बमणुं उंचुं होय. हवे नरक वगेरेमांथी चवीने जीव केटली पदवी पामे ते कहे छे–पहेली नरकनो नीकल्यो (जीव) १६ पदवी पामे ते २३मांथी ७ एकेंद्रियरत्ननी वर्जवी. बीजी नरकमांथी नी० १५ पदवी पामे ते १६मांथी १ चक्रवर्तीनी वर्जवी. त्रीजी नरकमांथी नी० १३ प० पामे ते १५मांथी बलदेव ने वासुदेवनी वर्जवी. चोथी नरकमांथी नी० १२ प० पामे ते १३मांथी १ तीर्थंकरनी वर्जवी. पांचमी नरकथी नी० ११ प० पामे ते १२मांथी १ केवलीनी वर्जवी. छट्ठी नरकथी नी० १० प० पामे ते ११मांथी १ साधुनी वर्जवी. सातमी नरकथी नी० ३ पदवी पामे अश्व, गज अने समकितदृष्टिनी. भवनपति, व्यंतर अने ज्योतिष्कथी नी० २१ प० पामे ते २३मांथी अरिहंतने वासुदेवनी २ वर्जवी. पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, गर्भजमनुष्य अने तिर्यंच (संख्यातवर्षायुष्य वाला), एटलामांथी नी० १९ प० पामे ते २३मांथी तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेवने वासुदेव, ए ४ वर्जवी. बे इंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, समुर्छिम मनुष्य ने तिर्यंच, एमांथी नी० १८ प० पामे ते १९मांथी १ केवलीनी वर्जवी. तेउ, वायुनो नी० ९, प० पामे, ते ७ एकेंद्रिय रत्न, अश्व ने गजरत्ननी. १५ परमाधामीने १ किल्विषिकनो नी० १८ प० पामे, ते २३मांथी ४ उत्तम पुरुष अने केवलीनी ए ५ वर्जवी. २ किल्विषिकनानी. ११ प० पामे ते १८मांथी ७ एकेंद्रियरत्ननी वर्जवी. पहेला–बीजा देवलोकनो नी० २३ प० पामे. त्रीजाथी आठमा देव०ना नी० १६ प० पामे, ७ एकेंद्रियरत्ननी वर्जवी. नवमा देव०थी नव ग्रैवेयक सुधीनो नी० १४ प० पामे, ते १६मांथी

अश्व ने गजरत्नने वर्जवी. ९ लोकांतिक ने ५ अनुत्तरविमाननो नी० ८, प० पामे ते २३मांथी १४ रत्नने १ वासुदेवनी वर्जवी. संज्ञीमां १५, प० लाभे ते २३मांथी ७ एकेंद्रियरत्नने १ केवलीनी वर्जवी. असंज्ञीमां ८, प० लाभे ते ७ एकेंद्रियरत्न ने १ समकितनी. तीर्थंकर ने चक्रवर्तीमां ६ प० लाभे ते १ तीर्थंकरनी, २ केवलीनी, ३ चक्रवर्तीनी, ४ साधुनी, ५ समकीतनी, ६ मंडलीकराजानी. वासुदेवमां ३ प० लाभे १ वासुदेवनी, २ मंडलिकराजानी, ३ समकितनी. बलदेवमां ५ प० लाभे १ मंडलिकनी, २ बलदेवनी, ३ केवलीनी, ४ साधुनी ५ समकितनी. मनुष्यमां १३ प० लाभे ते २३मांथी ७ एकेंद्रियरत्नना अश्वने गजरत्नने अने १ स्त्रीरत्ननी ए १० वर्जवी. मनुष्यणीमां ५ प० लाभे १ केवलीनी, २ साधवीनी, ३ श्राविकानी, ४ समकितनी, ५ स्त्रीरत्ननी. इति पदवी विचार समाप्त.

अथ श्री सिद्धणाद्वार—

१ पहेली नरकना नीकल्या(जीवो)एकसमये १०सीझे
२ बीजी नरकना नी० एकस० १० सीझे
३ त्रीजानरकनानी० एक० १० सीझे
४ चोथी नरकनानी०एक० ४ सीझे
५ भवनपतिनानी० एक० १० सीझे
६ भवनपतिनी देवीनानी० एक ५ सीझे

ांत-
ाय
॥

७ ८ पृथवी-पाणीनानी० एक० ४ सीझे
९ वनस्पतिनानी० एक० ६ सीझे
१० गर्भजपंचेंद्रिय तिर्यंचनानी० एक० १०
११ तिर्यंचणीनानी० एक० १० सीझे
१२ गर्भजमनुष्यनानी० एक० १० सीझे
१३ मनुष्यणीनानी० एक० २० सीझे
१४ व्यंतरनानी० एक० १०
१५ व्यंतरीनानी० एक० ५
१६ ज्योतिष्कनानी० एक० १०
१७ ज्योतिष्कनी देवीनानी० एक० २०
१८ वैमानिक देवनानी० एक० १०८
१९ वैमानिकनी देवीनानी० एक० २०
२० स्वलिंगे एक स० १०८
२१ अन्यलिंगे एक० स० १०

२२ गृहस्थलिंगे एक० ४
२३ स्त्रीलिंगे एक० २०
२४ पुरुषलिंगे एक० १०८
२५ नपुंसकलिंगे एक० १०
२६ उर्ध्वलोके एक० ४
२७ अधोलोके एक० २०
२८ तिरछालोके एक० १०८
२९ उत्कृष्ट अवगाहनावाला एक० २
३० मध्यम अवगाहनावाला एक० १०८
३१ जघन्य अवगाहनावाला एक० ४
३२ समुद्रमां एक० २
३३ नदी वगेरे शेष जलमां एक० ३
३४ तीर्थमां एक० १०८
३५ अतीर्थमां एक० १०

३६ तीर्थंकर एक० २०
३७ अतीर्थंकर एक० १०८
३८ स्वयंबुद्ध एक०.४
३९ प्रत्येकबुद्ध एक० १०
४० बुद्धबोधित एक० १०८
४१ एकसिद्ध एक० १
४२ अनेकसिद्ध एक० १०८
४३ प्रत्येक विजये एक० २०
४४–४५–४६ भद्रशाल, नंदनने सोमनसवनमां ए०४
४७ पंडकवनमां एक० २
४८ अकर्मभूमिमां एक० १०८
४९ कर्मभूमिमां एक० १०

५०–५१–५२ पहेले, बीजे अने छट्ठे आरे १०
५३ पांचमेआरे २०
५४–५५ त्रीजे चोथे आरे १०८
५६–५७ अवसर्पिणी ने उत्सर्पिणीमां १०८
५८ नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीमां १०८
५९ एकथी मांडी ३२ सुधी सीझे तो ८ समय सुधी, पछी अवश्य अंतर पडे.
६०–३३थी मांडी ४८ सुधी, ७ समय लागट सीझे
६१–४९थी मांडी ६० सुधी, ६ समयलगे सीझे
६२–६१थी मांडी ७२ सुधी, ५ समय लगी सीझे
६३–७३थी मांडी ८४ सुधी, ४ समयलगी सीझे
६४–८५थी मांडी ९६ सुधी, ३ समयलगी सीझे

१ संहरण आश्रयी समजवु. २ अवसर्पिणीकालना पांचमा आरा आश्रयी जाणवुं,

९५-९७थी १०२ सुधी, २ समयलगी सीझे
९६-१०३थी १०८ सुधी, १ समय सुधी सीझे;

पछी अवश्य विरह पडे.

इति सीझणा द्वार समाप्त.

अथ विरहविचार—समुच्चय नरकगतिनो विरहकाल ज० १ समयनो अने उ० १२ मुहूर्त्तनो पहेली नरकथी यावत् ७मी नरकमां ज० १ समयनो अने उ० अनुक्रमे २४ मुहूर्तनो ७ दिवसनो, १५ दिवसनो, १ मासनो, २ मासनो, ४ मासनो, ६ मासनो उपजवानो तेमज चववानो विरह जाणवो. दश भवनपतिनो ज० १ समयनो, उ० २४ मुहूर्तनो, पांच एकेंद्रियनो (उपजवा के चववानो) विरह नथी. त्रण विकलेंद्रियमां (प्रत्येकनो) ज० १ समयनो, उ० अंतर्मुहूर्तनो समुच्छिम पंचेंद्रियनो ज० एक समयनो उ० २४ मुहूर्तनो. गर्भजमनुष्यनो ज० १ समयनो, उ० १२ मुहूर्तनो. व्यंतर, ज्योतिष्क अने पहेला—बीजा देवलोकनो ज० १ समयनो, उ० २४ मुहूर्तनो. त्रीजे देवलोके ज० १ समयनो. उ० ९ दिवस (अहोरात्र) अने २० मुहूर्तनो. चोथे देव० ज० १ समयनो, उ० १२ दिवस अने १० मुहूर्तनो. पांचमे देव० ज० १ समयनो, उ० २२॥ दिवसनो. छठ्ठे देव० ज० १ समयनो, उ० ४५ दिवसनो. सातमे देव० ज० १ समयनो, उ० ८० दिवसनो. आठमे देव० ज० १ स० नो, उ० १०० दि०नो, नवमे दशमे देव० ज० १ स०नो, उ० संख्याता मासनो. इग्यारमे—बारमे देव० ज० १ स०नो,

१ सीझणाना सर्व द्वारो पन्नवणादि सूत्रमां जणाता नथी. लोकप्रकाशमां चोथा आरामां १०८ बाकीना आरामां १० सीझे अवसर्पिणमां उत्स० कालमा त्रीजा आरामां १०८ अने शेष आरामां १० सीझे आ चोवीशमां त्रीजा आरामां १०८ सिद्ध थया ते आश्चर्य [अछेरो] छे.

उ० संख्याता वर्षनो. ९ ग्रैवेयकमां हेठली त्रिके ज० १ स०नो, उ० संख्याता सैंकडो वर्षनो मध्यम त्रिके ज० १ स०नो, उ० संख्याता हजार वर्षनो. उपरली त्रिके ज० १ स०नो, उ० संख्याता लाख वर्षनो. चार अनुत्तरमां ज० १ स०नो, उ० पल्यना असंख्यातमा भागनो. सर्वार्थसिद्धमां ज० १ स०नो, उ० पल्यना संख्यातमा भागनो. ए विरहकाल उपपात अने चवननो जाणवो. सिद्धमां ज० १ स०नो, उ० ६ मासनो. ए उपपातनो विरह छे. चार गतिमां पंचेंद्रिय आश्रयी विरहज. १ स०नो, उ० १२ मुहूर्तनो. सर्व इंद्रस्थानके ज० १ स०नो, उ० ६ मासनो. इति विरह विचार समाप्त.

अथ चतुर्विंशति जिन अंतर [आंतरा] कहे छे–१८ कोडाकोडी सागरोपमने अंतरे पहेला श्री ऋषभदेव (तीर्थंकर) विनितानगरीने विषे थया. नाभिराजा पिता अनें मारुदेवीमाताना पुत्र. हेमवर्ण अने वृषभनुं लंछन छे. ५०० धनुष्यनुं देहमान अने ८४ लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं तेमां २० लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने ६३ लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १ हजार वर्षे प्रभुने केवलज्ञान उपन्नुं. त्यारपछी साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारुप चतुर्विध संघ (तीर्थ) स्थापी अने द्वादशांगी–गणि पेटी आपी ने महीमंडलमां विचरतां त्रीजा आराना ३ वर्ष अने साडाआठ मास बाकी रह्या त्यारे महावदि तेरस ने दिने १० हजार साधुओ संघाते अष्टापद पर्वत उपरे प्रभुमोक्षे पधार्या. पहेला श्रीआदिनाथ तीर्थंकर निर्वाण

पाम्या, पछी ५० लाख कोडी सागरोपमने अंतरे बीजा अजीतनाथ भगवान् अयोध्यानगरीने विषे थया. जीतशत्रु राजा अने विजयादेवीमाताना पुत्र. हेमवर्ण अने हस्तिनुं लंछन छे. साडाचारसे धनुष्यनुं देहमान अने ७२ लाख पूर्वनुं आयुष्य. भोगव्युं. तेमां १८ लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने ५३ लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाख पूर्वनी प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १२ वर्षे केवलज्ञान उपनुं. साधु० द्वादशांगी० (पूर्ववत्) महीमंडलमां विचरतां छेवटे १ हजार साधु संघाते सम्मेतशिखर पर्वत उपरे प्रभुनिर्वाण पाम्यां. अजीतनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी ३० लाख कोडी सागरने अंतरे, सावत्थीनगरीने विषे त्रीजा संभवनाथ तीर्थंकर थया, जीतारिपिता अने सेनादेवीमाताना पुत्र, हेमवर्ण अने अश्वनुं लंछन छे. चारसे धनुष्यनुं देहमान अने ६० लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां १५ लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने ४४ लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाखपूर्व प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १४ वर्षे केवलज्ञान उपनुं साधु० द्वादशांगी० (पूर्ववत्) १ हजार साधु संघाते प्रभु सम्मेतशिखर उपरे निर्वाण पाम्या. त्रीजा संभवनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी १० लाख कोडी सागरने अंतरे

---

१ 'थया' ते जन्म्या एम संभवतु नथी, जो एम मानीए तो ऋषभदेव अने महावीरस्वामीनु अंतरनुं मेळ थतुं नथी; माटे 'थया' एटले सिद्ध थया. एम प्रवचनसारोद्धार अने कल्पसूत्रमां कहेलुं छे. 'समुपन्ने' शब्दनो अर्थ सिद्ध थया एम कहेल छे. २ ५३ लाख ने १ पूर्वांग अधिक राज्य पालवानुं आवश्यक मूल भाष्यमां कहेलुं छे. तेमज त्रीजा, चोथा, पांचमा, छठ्ठा, सातमा, आठमा ने नवमा तीर्थंकरोए ४–८–१२–१६–२०–२४ ने २८ पूर्वांग. अधिक राज्य पाल्यु छे. 'पूर्वांग' ते ८४ लाख वर्ष प्रमाण जाणवु,

चोथा अभिनंदन तीर्थकर विनिता नगरीने विषे थया. संवरपिता अने सिद्धार्था देवी माताना पुत्र, हेमवर्ण अने वानरनुं लंछन छे. साडात्रणसें धनुष्यनुं देहमान अने ५० लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां साडाबार-लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने साडाछत्रीशलाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १८ वर्षे केवलज्ञान उपनुं. साधु० द्वादशांगी (पूर्ववत्) १ हजार साधु संम्मेतशि० (पूर्वत्) चोथा अभिनंदन तीर्थकर मोक्ष गया पछी ९ लाख कोडी सा० ने अंतरे पांचमा सुमतिनाथ तीर्थकर कुशलपुरी नगरीने विषे थया. मेघरथ पिता अने सुमंगलादेवी माताना पुत्र. हेमवर्ण अने क्रौंच (पक्षी)नुं लंछन छे. ३५० धनुष्यनुं देहमान अने ४० लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां १० लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने २९ लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी २० वर्षे केवलज्ञान उपनुं. सा० द्वाद० (पूर्ववत्) १ हजार साधु सं० सम्मेतशि० निर्वाण पाम्या. पांचमा सुमतिनाथ तीर्थकर मोक्ष गया पछी ९० हजार कोडी सा० ने अंतरे छट्ठा पद्मप्रभ तीर्थकर कौशांबी न० ने विषे थया. श्री धरपिता अने सुसीमादेवीना पुत्र. राते वर्णे अने पद्मकमलनुं लंछन छे. २५० धनुष्यनुं देहमान अने ३० लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां साडासात लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने साडाएकवीश लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी ६ मासे के० ज्ञान उपनुं. सा० द्वाद० (पूर्ववत्) ३०८ साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) छट्ठा पद्मप्रभ-

१ प्रवचनसारोद्धारमां 'तिन्निअट्सया' आ पाठ छे, अर्थमां ३०८ लखेल छे कोइक आचार्यो ८०३ पण कहे छे बन्ने मतनुं टिपण आव-

तीर्थंकर मोक्ष गया पछी सातमा सुपार्श्व तीर्थंकर वाणारसी नगरीने विषे थया. प्रतिष्ठपिता अने पृथ्वी देवी-मातान पुत्र. हेमवर्ण अने साथियानुं लंछन छे. २०० धनुष्यनुं देहमान अने २० लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां ५ लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने १४ लाख पूर्व राज्य पाल्युं. अने १ लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी ९ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) ५०० साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) सातमा सुपार्श्व तीर्थंकर मोक्षे गया पछी नवसें कोडी सा० ने अंतरे श्री चंद्रप्रभ तीर्थंकर, चंद्रपुरी नगरीने विषे थया. महासेन पिता अने लक्ष्मणादेवी माताना पुत्र. उज्वल वर्ण अने चंद्रमानुं लंछन छे. १५० धनुष्यनुं देहमान अने १० लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं, तेमां अढीलाख पूर्व कुंवरपणे रहीने साडा छ लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाख पूर्व प्रव्रज्या पाळी. प्रव्रज्या लीधा पछी ३ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) १ हजार साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्). चद्रप्रभ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी ९० कोडी सा० ने अंतरे नवमा सुविधि नाथ तीर्थंकर काकंदी नगरी नें विषे थया. उज्वलवर्ण अने मगरनुं लंछन छे. १०० धनुष्यनुं देहमान अने २ लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां अर्द्ध लाख पूर्व कुंवरपणे रहीने अर्द्ध लाख पूर्व राज्य पाल्युं अने १ लाख पूर्व प्रव्रज्या पाळी. प्रव्रज्या लीधा पछी ४ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) १ हजार साधुसं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) श्री सुविधिनाथ तीर्थंकर मोक्षे गया पछी दशमा शीतलनाथ तीर्थंकर भद्दिलपुर नगरने विषे दृढरथ

श्यक टिपणमा छे. थोकडानी छापेली प्रतमां ७३ कहेल छे. १ आवश्यक भाष्यमां ३ मास कहेल छे.

पिता अने नंदा देवीना पुत्र. हेमवर्ण अने श्री वत्सनुं लंछन छे. ९० धनुष्यनुं देहमान अने १ लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां पालाख पूर्व कुंवरपणे रहीने अर्द्धलाख पूर्व राज्य पाल्युं अने पा लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली प्रव्रज्या लीधा पछी ३मासे के०ज्ञान उपनुं. साधु द्राद०(पूर्ववत्) १हजार साधु सं०सम्मेतशिखर पर्वत०(पूर्ववत्) शीतल नाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी एकसो सागर अने ६६ लाख २६ हजार वर्ष न्यून १ कोडी सा० ने अंतरे इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, सिंहपुर नगरमां थया. विष्णु पिता अने विष्णु देवीमाताना पुत्र. हेमवर्ण अने गेंडानुं लंछन छे. ८० धनुष्यनुं देहमान अने ८४ लाख वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां २१ लाख वर्ष कुंवरपणे रहीने ४२ लाख वर्ष राज्य पाल्युं अने २१ लाख वर्ष प्रव्रज्या पाली, प्रव्रज्या लीधा पछी २ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्राद० (पूर्ववत्) १हजार साधुसं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) श्रेयांस नाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी ५४ सागरने अतरे बारमा वासुपूज्य तीर्थंकर, चंपापुरी नगरीमां थया. वसुपिता अने जयादेवी माताना पुत्र. रातेवर्णे अने महिषनुं लंछन छे, ७० धनुष्यनुं देहमान अने ७२ लाख वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां १८ लाख वर्ष कुंवरपणे रहीने ५४ लाख वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १ मासे के० ज्ञान उपनुं, साधु० द्राद० (पूर्ववत् ? छसो साधुसं० चंपापुरीमां (पूर्ववत्) वासुपूज्य तीर्थंकर मोक्ष गया पछी ३० सा० ने अंतरे तेरमा श्री विमलनाथ तीर्थंकर, कंपिलपुर नगरमां थया. कृतवर्म पिता अने श्यामादेवी माताना पुत्र, हेमवर्ण अने वराह (सुवर)नुं लछन छे. ६० धनुष्यनुं देहमान अने ६० लाख वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां १५ लाख वर्ष

कुंवरपणे रहीने ३० लाख वर्ष राज्य पाल्युं अने १५ लाख वर्ष प्रव्रज्या पाळी. प्रव्रज्या लीधा पछी, २ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत) छ हजार साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) विमलनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी, ९ सा०ने अंतरे चौदमा अनंतनाथ तीर्थंकर अयोध्या नगरीमां थया. सिंहसेन पिता अने सुयशा देवी माताना पुत्र हेमवर्ण अने सिंचाणानुं लंछन छे. ५० धनुष्यनुं देहमान अने ३० लाख वर्षनु आयुष्य भोगव्युं. तेमां ७॥ लाख वर्ष कुंवरपणे रहीने १५ लाख वर्ष राज्य पाल्युं अने साडासात लाख वर्ष प्रव्रज्या पाळी. प्रव्रज्या लीधा पछी ३ वर्षे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) ७ हजार साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) अनंतनाथ मोक्ष गया पछी ४ सा०ने अंतरे पन्नरमा धर्मनाथ तीर्थंकर, रत्नपुरी नगरीमां थया. भानुपिता अने सुव्रता देवी माताना पुत्र. हेमवर्ण अने वज्रनुं लंछन छे. ४५ धनुष्यनुं देहमान अने १० लाख वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां अढीलाख वर्ष कुंवरपणे रहीने ५ लाख वर्ष राज्य पाल्युं अने अढीलाख वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी २ वर्षे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) १०८ साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) धर्मनाथ तीर्थंकर मोक्षे गया पछी पोणा पल्य उणा ३ सा०ने अंतरे सोळमा श्री शांतिनाथ तीर्थंकर, हस्तिनापुर नगरमां थया. विश्वसेन पिता अने अचिरामाताना पुत्र, हेमवर्ण अने मृगनुं लंछन छे. ४० धनुष्यनुं देहमान अने १ लाख वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं, तेमां २५ हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या. २५ ह०वर्ष मंडलिकराजापणे रही २५ ह० वर्ष चक्रवर्तीनी पदवी भोगवी अने २५ ह० वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १ वर्षे के०

संo सम्मेतशि० (पूर्ववत्) शांतिनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी
ज्ञान उपनु. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) ९०० साधु संo सम्मेतशि० (पूर्ववत्) शांतिनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी
अर्द्ध पल्यने अंतरे सत्तरमा कुंथुनाथ तीर्थंकर, गजपुर नगरमां थया. सूरपिता अने श्री देवीमाताना पुत्र. हेम-
वर्ण अने बकरा (अज)नुं लंछन छे. ३५ धनुष्यनुं देहमान अने ९५ हजार वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां पोणा
चोवीश हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या, पोणा चोवीशह० मंडलिक पणे रहीने पोणा चोवीशह० चक्रवर्तीनी पदवी
भोगवी अने पोणाचोवीश ह० प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १६ वर्षे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद०
(पूर्ववत्) १ हजार साधु० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) कुंथुनाथ तीर्थंकर मोक्षे गया पछी १ हजार क्रोड वर्ष उणा पा
पल्यनें अंतरे, अढारमा अरनाथ तीर्थंकर, नागपुरी नगरीमां थया. सुदर्शन पिता अने देवी राणी माताना पुत्र.
हेमवर्ण अने नंदावर्त्त माथियानुं लंछन छे. ३० धनुष्यनुं देहमान अने ८४ हजारवर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां
२१ हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या, २१ ह० वर्ष मंडलिकराजापणे रहीने २१ ह० वर्ष चक्रवर्तीनी पदवी भोगवी अने
२१ ह० वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी ३ वर्षे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) १ हजार साधु
सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) श्री अरनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी १ हजार क्रोडवर्षने अंतरे उगणीशमा मल्लि-
नाथ तीर्थंकर, मिथिला नगरीमां थया. कुंभपिता अने प्रभावती देवीना पुत्र. नीलवर्णे अने कुंभनुं लंछन छे.
२५ धनुष्यनुं देहमान अने ५५ हजार वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां १०० वर्ष कुंवरपणे रहीने ५४ हजार ९ सो
वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी १ अहोरात्र के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) ५०० साधु सं०

सम्मेतशि० (पूर्ववत्) मल्लिनाथ तीर्थंकर मोक्षे गया पछी ५४ लाख वर्षने अंतरे वीशमा मुनिसुव्रत तीर्थंकर, राजगृही नगरीमां थया, सुमित्र पिता अने पद्मावती देवीना पुत्र श्यामवर्ण अने काचबानुं लंछन छे. २० धनुष्यनुं देहमान अने ३० हजार वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां ७॥ हजार वर्ष कुंवरपणे रहीने १५ ह० वर्ष राज्य पाल्युं अने ७॥ ह० वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी ११ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) १ हजार साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) मुनिसुव्रत तीर्थंकर मोक्ष गया पछी ६ लाख वर्षने अंतरे एकवीशमा श्रीनमिनाथ तीर्थंकर मिथिला नगरीमां थया. विजय पिता वप्रादेवी माताना पुत्र. हेमवर्ण अने नीलोत्पल (कमल)नुं लंछन छे. १५ धनुष्यनुं देहमान अने १० हजार वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां अढीहजार वर्ष कुंवर पणे रहीने ५ ह० वर्ष राज्य पाल्युं अने अढी ह० वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी ९ मासे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) १ हजार साधु सं० सम्मेतशि० (पूर्ववत्) श्री नमिनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया पछी ५ लाख वर्षने अंतरे बावीशमा नेमीनाथ तीर्थंकर सौरिपुर नगरमां थया. समुद्रविजय पिता अने शिवा-देवी माताना पुत्र. श्यामवर्ण अने शंखनुं लंछन छे. १० धनुष्यनुं देहमान अने १ हजार वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं तेमां ३०० वर्ष कुंवरपणे रहीने ७०० वर्ष प्रव्रज्या पाली. प्रव्रज्या लीधा पछी ५४ दिवसे के० ज्ञान उपनुं साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) ५३ साधु सं० श्री गिरनार उपर निर्वाण पाम्या. श्री नेमिनाथ तीर्थंकर मोक्ष गयापछी पोणा चोर्यासी हजार वर्षने अंतरे त्रेवीशमा श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर, वाणारसी नगरीमां थया. अश्वसेना पिता

अने वामादेवीमाताना पुत्र. नीलवर्ण अने सर्पनुं लंछन छे. ९ हाथनुं देहमान अने १०० वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं, तेमां ३० वर्ष कुंवरपणे रहीने ७० वर्ष प्रव्रज्या पाली, प्रव्रज्या लीधा पछी ८४ दिवसे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) ३३ साधु सं० प्रभु सम्मेतशिखर पर्वत उपर निर्वाण पाम्या, श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर मोक्ष गया. पछी अढीसो वर्षने अंतरे चोवीशमा श्री वर्द्धमानस्वामी तीर्थंकर क्षत्रियकुंड ग्राम नगरमां थया. सिद्धार्थपिता अने त्रिशलादेवी माताना पुत्र. हेमवर्ण अने सिंहनुं लंछन छे. ७ हाथनुं देहमान अने ७२ वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं. तेमां ३० वर्ष कुंवरपणे रहीने ४२ वर्ष प्रव्रज्या पाली, प्रव्रज्या लीधा पछी १२॥ वर्ष ने १५ दिवसे के० ज्ञान उपनुं. साधु० द्वाद० (पूर्ववत्) कार्तिक वदि अमावास्यानी रात्रिए चोथा आराना त्रण वर्ष ने साडाआठ मास बाकी रह्या त्यारे बे दिवसनुं अनशन करी एकाकी पणे पावापुरी नगरीमां प्रभु निर्वाण पाम्या. पहेला श्री ऋषभदेव स्वामी अने चोवीशमा श्री वर्द्धमान स्वामी वच्चे ४२ हजार वर्ष उणा १ कोडा कोडी सागरोपमनुं अंतर जाणवुं. इति चोवीश जिनांतर समाप्त.

श्रीपांच देवनो विचार—१ नामद्वार, २ गुणद्वार, ३ उपपातद्वार, ४ स्थितिद्वार, ५ ऋद्धितथा विकुर्वणाद्वार, ६ च्यवनद्वार, ७ संचिठणाद्वार, ८ अंतरद्वार, अने ९ अल्पबहुत्वद्वार. ए ९ द्वार पांच देव उपर उतारे छे. १ नामद्वार—१ भव्य द्रव्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव अने ५ भावदेव. २ गुणद्वार—मनुष्य अने तिर्यंच पंचें-

द्रिय, जे देवगतिमां उपजवानी योग्यतावाळा छे; तेने भव्य द्रव्यदेव कहीए. जेने १४ रत्न, ९ निधान होय अने षट्खंडनो अधिपति चक्रवर्ती होय तेने नरदेव कहीए. जे साधुना २७ गुण सहित होय तेने धर्मदेव कहीए. जे १८ दोष रहित अने १२ गुण सहित होय तेने देवाधिदेव कहीए. १८ दोषना नाम कहे छे—१ अज्ञान, २ क्रोध, ३ मद, ४ मान, ५ माया, ६ लोभ, ७ रति, ८ अरति, ९ निद्रा, १० शोक, १ असत्य, १२ चोरी, १३ मात्सर्य, १४ भय, १५ प्राणिवध, १६ प्रेम, १७ क्रीडा प्रसंग अने १८ हास्य, ए १८ दोष रहित होय. हवे १२ गुण कहे छे. १ भगवान् ज्यां ज्यां उभे वेसे अने समवसरे त्यां त्यां (मूल स्कंध, शाखा वगेरे) बोल सहित, प्रभुथी १२ गुणो उंचो अशोक वृक्ष छाया करे. २ भगवान् ज्यां ज्यां समवसरे त्यां त्यां ढींचण प्रमाण पंच वर्ण फूलोनी वृष्टि थाय. ३ दिव्यध्वनि (योजन प्रमाण विस्तारवाळी वाणी) सर्वना मननां संदेहने हरवावाली होय. ४ चोवीश जोड चामरो विंझाय. ५ स्फटिक रत्नमय, पादपीठ सहित सिंहासन उपर प्रभु विराजे. ६ भामंडल, अंबोडाने ठेकाणे तेजोमय होय. ७ आकाशमां दुंदुभि प्रमुख अनेक वाजां वाजे. ८ भगवान्‌नी उपर त्रण छत्र उपरा उपरे होय. ९ अनंतज्ञानातिशय, १० अनंत पूजातिशय, (परमपूज्यपणु), ११ अनंत वचनातिशय अने १२ अनंत अपायापगम अतिशय (निर्दोषपणुं). ए १२ गुण सहित होय, अने ३४ अतिशय तथा ३५ वचनातिशय

१ 'जेणे देवायु. बाधेल छे तेमज भव्य द्रव्य' देव कहेवाय ए योग्य नथी, तेम मानवाथी भव्य द्रव्य देवनी उ० स्थिति ३ पल्योपमनी कही छे; ते घटी शकशे नहिं. २ १८ दोष प्रकारांतरथी पण शास्त्रोमां कहेल छे.

आदि अनंत गुणसहित जे होय ते देवाधिदेव कहेवाय. भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक ए चार
जातिना देवो, जे देवगति नामकर्मने वेदे छे तेने भावदेव कहीए. २ उपपात कहे छे—१ भव्य द्रव्य देवमां
असंख्यात वर्षनां आयुष्यवाला युगलिया (मनुष्य अने तिर्यंचो), अने सर्वार्थसिद्धना देवो शिवाय, शेष
सर्वस्थानना जीवो उपजे. २ नरदेवमां चारजातिना देवो अने पहेली नरक, ए पांच स्थानना उपजे. ३ धर्मदे-
वमां छठ्ठीने सातमी नरकना जीवो, तेउका० ने वायुका० अने युगलिया-[मनुष्य-तिर्यंच]-सिवाय, शेष सर्व-
स्थानना जीवो उपजे. ४ देवाधिदेवमां पहेली, बीजी अने त्रीजी नरकसुधीना [नारक] अने किल्विषिक देव
सिवाय वैमानिक देवो उपजे. ५ भावदेवमां तिर्यंच पंचेंद्रिय अने संज्ञि मनुष्य, ए बे स्थानना उपजे. ४
स्थितिद्वार—१ भव्य द्रव्य देवनी स्थिति ज० अंतर्मुहुर्त्त अने उ० ३ पल्यनी. २ नरदेवनी ज० ७०० वर्षनी
अने उ० ८४ लाख पूर्वनी. ३ धर्मदेवनी ज० अंत० अने उ० देशेउणी [८ वर्षन्यून] क्रोड पूर्वनी. देवाधिदेवनी
ज० ७२ वर्ष अने उ० ८४ लाख पूर्वनी. ५ भावदेवनी ज० १० हजार वर्ष अने उ० ३३ सागरोपमनी. ५ ऋद्धि
तथा विकुर्वणा कहे छेः—१ भव्य द्रव्यदेव [जेने वैक्रेयलब्धि होय ते] एक यावत् अनेक रूप पण विकुर्वे. २
नरदेवने वैक्रेय लब्धि अवश्य होय ते पण एक यावत् अनेक रूप करे. ३ धर्मदेव [जेने वैक्रेय लब्धि होय ते]
एक यावत् अनेक रूप करे. ४ देवाधिदेवनी शक्ति अनंत छे पण उत्सुकताना अभावथी विकुर्वणा करे नहिं. ५
भावदेवने वै० लब्धि अवश्य होय ते ज० १-२-३ नेउ० संख्याता रूप विकुर्वे, शक्ति तो असंख्यात रुप कर·

चानी छे पण करे नहि. ६ चवण द्वार कहे छेः–१ भव्यद्रव्य देव, चवीने देव थाय. २ नरदेव× (चक्रवर्तिपदमां) चवीने नरके जाय. ३ धर्मदेव, चवीने वैमानिक देव थाय के मोक्ष जाय.४ देवाधिदेव, मोक्षमां जाय. ५ भावदेव, बादर पृथवीकायिक, अप्का०, वनस्पतिका०, गर्भज मनुष्य अने पंचेन्द्रिय तिर्यच ए पांचमां जाय. ७ संचिठणाद्वार कहे छेः—संचिठणा, स्थितिद्वार प्रमाणे छे, पण फरक एटलोज के धर्मदेवनी संचिठणा, ज०* १ समय अने उ० देशेउणी पूर्वक्रोडनी छे. ८ अंतरद्वार+ कहे छेः–१ भव्यद्रव्यदेवनुं अंतर,–ज० १० हजारवर्षने अंतर्मुहूर्त अधिक अने उ० अनंतकाललुं. २ नरदेवनुं अंतर, ज० १ सागर झाझेरुं अने उ० देशेउणा, अर्द्धपुद्गल परावर्तनुं.

× नरदेव [चक्रवर्ती], धर्मदेव थाय [दीक्षा लेतो] स्वर्गमा पण जाय भगवती–टीका. * ज० १ समय अशुभ परिणामने प्राप्त थइने पुनः एक समय शुभभावे रही मरण पामे, ते आश्रयी स्थिति अने सचिठणामा फेर एटलोज के स्थिति ते तेटला काल सामान्यथी रहेवु, ए काल आश्रयी अने संचिठणा ते भाव आश्रयी अर्थात् तेटला कालसुधी ते भावमा रहेवु एम संमचे छे. + कोइ १० ह० वर्षना आयुष्यवालो देव, चवीने शुभ पृथव्यादिकमा अतर्मुहूर्त आयुष्य भोगवी भव्य द्रव्यदेवमा उपजे ते आश्रयी अंतर्मुहूर्त अधिक कहेल छे. उ० अंतर, वनस्पतिमा उत्पन्न थवा आश्रयी. कोइक चक्री [विषयवासनावाळो] मरीने १ सागरने आयुष्ये नरकमा उत्पन्न थइने त्याथी पुन. नरदेव थाय, ते ज्यासुधी चक्ररत्न उत्पन्न न थाय त्यासुधीनो अधिककाल चाणवो.. समकीती सिवाय चक्रवर्तिपणानी प्राप्ति न थाय माटे उ० अर्द्ध पुद्० परावर्तथी अधिक अतर न होय. धर्मदेव [साधुं], सौधर्मकल्पमां पृथक्त्व पल्योपमना आयुष्ये उत्पन्न थइ, पुनः नरभव पामी आठ वर्षे चारित्र स्वीकारे ते आश्रयी जाणवु, आठ वर्षनो समावेश पृथक्त्व पल्यमां थाय छे. उ० अतर माटे पूर्वनी परे जाणवु. कोइक देव [भावदेव] चवीने अतर्मुहूर्तना आयुष्यवाला तिर्यंचपणे उत्पन्न थइने पुनः देवमां उपजे ते आश्रयी ज० अंतर कह्यु अने उ० अतर पूर्ववत्.

३ धर्मदेवनुं अंतर, ज० पृथक्त्व पल्यनुं अने उ० अर्द्धपुद्गल परावर्तनुं. ४ देवाधिदेवनुं अंतर नथी. ५ भावदेवनुं अंतर, ज० अंतर्मु० अने उ० अनंत०कालनुं. ९ अल्पाबहुत्व द्वार कहे छेः—१ सर्वथी थोडा नरदेव. २ तेथी देवाधिदेव संख्यातगुणा. ३ तेथी धर्मदेव संख्यातगुणा.४ तेथी भव्य द्रव्य देव असंख्यातगुणा.५ तेथी भावदेव असंख्यातगुणा. इति पांच देवविचार समाप्त.

अथ दिसाणुवाय [दिगानुपात] विचार—

१ समुच्चय जीवो, सर्वथी थोडा पश्चिम दिशामां छे, कारण ? त्यां गौतमद्वीप अने चंद्र-सूर्यना द्वीपो होवाथी पाणी थोडुं छे; तेथी नीलफुल पण थोडी छे माटे जीवो थोडा छे. २ तेथी पूर्व दिशामां विशेषाधिक छे, कारण ? त्यां गौतमद्वीप नथी. ३ तेथी दक्षिण दिशामां विशेषाधिक छे, कारण ? त्यां चंद्र-सूर्यना द्वीपो नथी. ४ तेथी उत्तर दिशामां विशेषाधिक छे, कारण ? त्यां असंख्यातमे द्वीपे संख्यात कोटी योजन प्रमाण, मानसरोवर छे, त्यां पाणी घणुं होवाथी नीलफुल पण घणी छे. ५ पृथवीकायिक जीवो, सर्वथी थोडा दक्षिण दिशामां छे. कारण ? भवनपतिना भवनो ४ क्रोडने ६ लाख, दक्षिण दिशामां छे अने नरकावासा पण घणा होवाथी घणा भागमां पोलाण छे, माटे पृथवी थोडी छे. तेथी उत्तर दिशामां विशेषा० छे, कारण ? त्यां ३ क्रोडने ६६ लाख भवनपतिना भवनो छे अने नरकावासा पण थोडा छे, तेथी पूर्व दिशामां विशेषा० छे, कारण ? त्यां चंद्र-सूर्यना द्वीपो होवाथी पृथवी घणी छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषा० छे कारण ? त्यां

गौतम द्वीप होवाथी पृथवी घणी छे. ६ अप्का०, वनस्पतिका०, त्रसका०, बेइन्द्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय अने तिर्यंच पंचेंद्रिय, ए सात प्रकारना जीवो, समुच्चयजीवोनी माफक जाणवा. ७ तेउकायिक, मनुष्य अने सिद्धना जीवो, सर्वथी थोडा दक्षिणने उत्तर दिशामां छे अने परस्पर तुल्य छे. कारण ? क्षेत्रो× नाना छे. तेथी पूर्व दिशामां संख्यातगुणा छे, क्षेत्रो मोटा होवाथी. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषा० छे, त्यां अधोगाम विजय होवाथी. ८ वायुकायिक, सर्वथी थोडा पूर्व दिशामां छे. कारण ? भूमि घणी घन [नक्कर] छे. तेथी पश्चिम दिशामां विशेषा० छे, कारण ? त्यां अधोगामविजय होवाथी पोलाण छे. तेथी उत्तर दिशामां विशेषा० छे, कारण ? त्यां भवनो अने नरकावासो छे. तेथी दक्षिण दिशामां विशेषा० छे, त्यां उत्तर दिशा करतां विशेष भवनो अने नरकावासो छे. ९ समुच्चय नरकना जीवो,सर्वथी थोडा पूर्व,पश्चिम अने उत्तर दिशामां छे,कारण? त्यां पुष्पावकीर्ण नरकावासो छे अने प्रायः ते संख्याता योजनना विस्तारवाला छे. तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यात गुणा छे, कारण? त्यां कृष्णपाक्षिक* जीवो घणा उत्पन्न थाय छे. हवे प्रत्येक नरकना जीवो माटे कहे छे– सातमी नरकना दक्षिण दिशाना जीवोथी छठ्ठी नरकना पूर्व, पश्चिम, अने उत्तर दिशाना जीवो असंख्यात-

× भरत अने ऐरावत आश्रयी जाणवुं, वली समश्रेणिए सिद्ध थोडा थाय छे ते पण अमुक काले थाय छे अने १८ कोडाकोडी सागर सुधी सिद्ध गति पण बंध रहे छे, अर्थात् तेटला कालमां कोइ सिद्ध भरत–ऐरावतमां थता नथी. * अर्द्ध पुद्गल परावर्तथी वधारे काल संसार बाकी होय ते कृष्ण पाक्षिक कहेवाय अने तेथी न्युनकाल होय ते शुक्लपाक्षिक.

दिशाना जीवो असंख्याता छे. एवी रीने क्रमशः पहेली नरक सुधी जाणवुं.
गुणा छे, तेथी छठी नरकना दक्षिण दिशांं थोडा छे, कारण त्यां थोडां भवनो छे, तेथी उत्तर दिशामां असं-
१० भवननपति देवो, पूर्व ने पश्चिम दिशां थोडा छे, कारण त्यां थोडां भवनो छे, तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यात गुणा छे, त्यां पण
ख्यातगुणा छे, त्यां घणा भवनो छे अने पोतानुं स्थान छे, तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यात गुणा छे, त्यां पण
भवनो विशेष छे. ११ व्यंतरदेवो, सर्वथी थोडा पूर्व दिशामां छे, त्यां भूमि घणी कठण होवाथी. तेथी पश्चिम-
दिशामां विशेषाधिक छे, त्यां अधो लौकिक ग्रामोमां पोलाणनो भाग होवाथी व्यन्तरो त्यां जाय छे. तेथी उत्तर
दिशामां विशेषा०छे, कारण? त्यां पोतानुं स्थान छे अने त्यां तेना नगरो पण छे. तेथी दक्षिण दिशामां विशेषा०छे
त्यां नगरो वधारे छे.१२ ज्योतिष्क देवो सर्वथी थोडा पूर्व-पश्चिम दिशामां छे, कारण? त्यां चंद्र-सूर्यना उद्यान
जेवा द्वीपोमां थोडाज ज्योतिष्को होय छे. तेथी दक्षिण दिशामां विशेषा० छे, त्यां तेना विमानो घणा छे अने
कृष्णपाक्षिक ज्यो० देवो घणा छे, तेथी उत्तरदिशामां विशेषा० छे, कारण ? त्यां मानससरोवर छे त्यां क्रीडा
करवानी प्रवृत्तिवाला ज्यो० देवो घणा रहे छे. वली ते सरोवरमां मच्छादि जलचरो छे, ते नजीकमां रहेला
ज्यो०ना विमानोने देखवाथी तेओने जातिस्मरण थाय छे. तेथी तेओ कंइक व्रतने स्वीकारी अनशनने ग्रहण
करीने नियाणुं करवाथी ज्योतिष्कमां उपजे छे; माटे उत्तर दिशामां घणा छे. १३ पहेला देवलोकथी चोथादेव०
सुधीना देवो सर्वथी थोडा पूर्व-पश्चिम दिशामां छे, कारण ? आवलिकाबंध विमानो चारे दिशाए समान छे.
पण पुष्पावकीर्ण विमानो त्यां न होवाथी थोडा छे. तेथी उत्तर दिशामां असंख्यातगुणा छे, कारण ? त्यां

पुष्पावकीर्ण विमानो घणा छे अने असंख्यात योजनना विस्तारवाला होवाथी. तेथी दक्षिण दिशामां विशेषाधिक छे, कारण ? दक्षिण दिशामां कृष्णपाक्षिको घणा उपजे छे माटे. १४ पांचमांथी यावत् आठमा देव० सुधीना देवो, पूर्व-पश्चिम अने उत्तरदिशामां थोडा छे, तेथी दक्षिण दिशामां असंख्यातगुणा छे; कारण ? ते दिशामां घणा कृष्ण पाक्षिक तिर्यचो उत्पन्न थाय छे. नवमाथी यावत् सर्वार्थ सिद्ध विमान सुधीना देवो, प्रायः चारे दिशामां सरखा जाणवा, कारण ? त्यां केवल मनुष्यो उपजे छे. इति दिसाणुवाय समास.

अथ संयत विचार कहे छेः— पन्नवणा वेय रागे, कप्पचरित्त× पडिसेवणा नाणे; तित्थे लिंग सरीरे, खित्ते काल गइ संजम निग्गासे ॥ १ ॥ जोगुवओग कसाए, लेसा परिणाम बंध वेदे य; कम्मोदीरण उवसं,-पजहन्न सन्नाय आहारे ॥ २ ॥ भव आगरिसे कालं,-तरेय समुग्घाय खित्त फुसणाय; भावे परिमाणे विय, अप्पा बहुयं (यं?) संजयाणं ॥ ३ ॥ प्रथम त्रण गाथाना शब्दार्थ साथे द्वारो कहे छेः—१ प्रज्ञापनाद्वार, २ वेदद्वार, ३ रागद्वार, ४ कल्पद्वार, ५ चारित्रद्वार, ६ प्रतिसेवनाद्वार, ७ ज्ञानद्वार, ८ तीर्थद्वार, ९ लिंगद्वार, १० शरीरद्वार, ११ क्षेत्रद्वार, १२ कालद्वार १३ गतिद्वार, १४ संयमद्वार, १५ निष्कर्षद्वार, १६ योगद्वार, १७ उपयोगद्वार, १८ कषायद्वार, १९ लेश्याद्वार, २० परिणामद्वार, २१ बंधद्वार, २२ वेदनद्वार, २३ उदीरणाद्वार, २४ उपसंपदद्वार, २५ संज्ञाद्वार, २६ आहारद्वार, २७ भवद्वार, २८ आकर्षद्वार, २९ कालमानद्वार, ३० अंतरद्वार,

× 'चरित्त' शब्दने बदले नियंथ' शब्द जोइये, नियंठामां चरित्त शब्द योग्य छे आ गाथाओ भगवतीजीमां छे.

पुरुष+ नपुंसक वेदमां होय. सूक्ष्म सं० ने यथाख्यात ए बे संयत, अवेदी होय, ते उपशम अने क्षीण वेदी होय॥ त्रीजुं रागद्वार कहे छेः—पहेला चार संयत, सरागी अने यथाख्यात सं० वीतरागी, ते उपशांत रागी अथवा क्षीणरागी होय ॥ चोथुं कल्पद्वार कहे छे—१ ×स्थितकल्प, २ अस्थितकल्प, ३ जिनकल्प, ४ स्थविरकल्प अने ५ कल्पातीत. स्थितकल्पमां पांचे संयतो होय, अस्थित कल्पमां सामायिक सं० सूक्ष्मसंपराय सं० अने यथाख्यात स० होय, जिनकल्प अने स्थविरकल्पमां प्रथमना त्रण संयतो होय कल्पातीतमां सामयिक, सूक्ष्म सं० अने यथाख्यात संयत होय. पांचमुं निर्ग्रंथ द्वार कहे छेः-१ पुलाक, २ बकुश, ३ प्रतिसेवना, ४ कषाय कुशील ५ निर्ग्रंथ अने ६ स्नातक. हवे पुलाक, बकुश ने प्रतिसेवना ए त्रणमां सामा० छेदो० ए बे संयत होय. कषायकुशीलमां प्रथमना चार संयतो होय अने निर्ग्रंथ ने स्नातकमां १ यथाख्यात सं० होय॥छठ्ठुं प्रतिसेवनाद्वार कहे छे सामा०ने छेदो० ए बे संयत, =प्रतिसेवी पण होय. जो प्रतिसेवी होय तो मूलगुण अने उत्तरगुणना प्रतिसेवक

+ कृतनपुंसक ×पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना मुनिओ, दश प्रकारना कल्पमां स्थित होय, तेओने ते कल्पोनु अवश्य पालन करवुं पडे छे, माटे स्थित कल्प कहेल छे. मध्यम २२ तीर्थंकरोना अने महाविदेह क्षेत्रना मुनिओने ते १० कल्पोनु पालन नीयत नथी माटे तेने अस्थित कल्प कहेल छे. =चारित्रमां अतिचार ते प्रतिसेवना, ते आद्य बे सयत, कुशील भावमां वर्तता मूल—उत्तरगुणनी विराधना करे अने बकुश भावमा वर्तता मूल उतरगुणनी विराधना करे तेमां मूल गुणनी विराधना ते अतिचाररूप जाणवी, अनाचाररूप नहिं.

होय. परि०, सूक्ष्म० ने यथाख्यात ए ३ संयतो अप्रतिसेवी होय ॥ सातमुं ज्ञानद्वार कहे छेः—आगला ४ संय-
तोमां ज्ञान, बे त्रण ने चार होय अने यथाख्यात सं०मां पांच ज्ञाननी भजना छे अज्ञान नथी. सामायिक. छेदो-
प०, सूक्ष्मसं०ने यथाख्यातसंयतो, ज० आठ प्रवचन माता अने उ०१४ पूर्व भणे, परिहार विशुद्धि संयत, ज०
नवमा पूर्वनी त्रीजी आचारवस्तु अने उ० देशेउणा १०पूर्वभणे॥ आठमुं तीर्थद्वार कहे छेः-तीर्थमां पांचे संयतो
होय अने अतीर्थमां सामा०, सूक्ष्म सं०ने यथाख्यात सं०ए ३ होय अने तीर्थंकरने प्रत्येकबुद्धमां पण ए ३ होय॥
नवमुं लिंगद्वार कहे छेः-द्रव्यलिंग आश्रयी-स्वलिंगमां पांचे संयतो होय अने अन्यलिंग ने गृहस्थमां परिहार
विशुद्धि सं०वर्जीने शेष ४ संयतो होय.भावलिंगआश्रयी-स्वलिंगमां पांचे संयतो होय अने अन्यलिंग के गृह-
स्थलिंगमां एक पण संयत न होय ॥ दशमुं शरीर द्वार कहे छेः-सामा० ने छेदोप० ए बे संयत ने त्रण, चार के
पांच शरीर होय अने पाछला ३ संयतोने ३ शरीर-औदारिक तैजसने कार्मण-होय.॥इग्यारमुं क्षेत्रद्वार कहे छेः-

---

२ परिहार विशुद्धिक, एटलु ज्ञान [देशेउणा 10 पूर्व] भण्या पछी थइ शके छेः पछी तेमने भणवानु होतु नथी अर्थात ए भण्या पछीज परिहा०चारित्रने प्राप्त करी शके. सूक्ष्म सं० अने यथाख्या० संयत माटे पण एमज जाणवु कारण? अलपकालमां श्रेणिगत थवाथी त्यां भणवानु नथी.

३ अन्यलिंग अने गृहस्थलिंगनां छेदोपस्थापनीय संयत केम होइ शके? ए माटे एम समजाय छे के कोइ लब्धिधर मुनि कोइक जैन शासनना शुभ कार्य माटे अन्य लिंग के गृहस्थ लिंग ने धारण करे. जेम श्रेणिकचरित्रमां मुनिए ओघो वगेरे बाळीने अन्य लिंग धारण करेलु. परिहारवि० सं० लब्धि फोरवता नथी

४ पाच शरीर युगवत [साथे] शक्तिरूप होय. आविर्भावे न होय.

कर्मभूमिमां जन्म अने सदूभाव (छत) आश्रयी पांचे संयतो होय अने अकर्मभूमिमां एक पण न होय. संहरण आश्रयी परिहार वि० सं० वर्जीने शेष ४ संयतो होय ॥ बारमुं कालद्वार कहे छेः—अवसर्पिणी ने उत्सर्पिणीकालमां पांचे संयतो होय. नो अवसर्पिणी—नो उत्सार्पिणी कालमां छेदोप० ने परिहा० सं० सिवाय शेष ३ संयतो होय.हवे अवसार्पिणी कालमां जन्म आश्रयी पहेला बीजा आरामां कोइ पण संयत नहोय.त्रीजा चोथा आरामां पांचे संयतो होय. पांचमां आरामां सामा० ने छेदो० बे सं० होय. छट्ठे आरे एकपण न होय, हवे सदूभावआश्रयी पहेला बीजा ने छट्ठा आरामां एके नहिं. त्रीजा चोथा ने पांचमा आरामां पांचे होय. संहरण आश्रयी परिहार०सं० सिवाय शेष ४ होय. उत्सर्पिणीकालमां जन्म आश्रयी पहेले आरे एके नहिं. बीजे त्रीजे ने चोथे आरे पांचे होय. पांचमे ने छट्ठे आरे एके नहिं. सदूभाव आश्रयी पहेला, बीजा आरामां एके नहिं. त्रीजा, चोथा आरामां पांचे होय,पांचमा, छट्ठा आरामां एके नहिं. संहरण आश्रयी परिहा०सिवाय शेष चार होय. नोउत्स० नो०अवसर्पिणीकालमां अकर्मभूमि मध्ये एके नहिं अने पांच महाविदेहमां सामा० सूक्ष्म सं०ने यथाख्यात ए ३ संयतो होय. संहरण आश्रयी ए सर्व क्षेत्रमां परिहार० सिवाय शेष ४ संयतो होय ॥ तेरमुं गतिद्वार कहे छेः— पांचे संयतो, नरक, तिर्यंच ने मनुष्य ए ३ गतिमां न जाय; देवगतिमां पण वैमानिक देवमां जाय. ते कहे छेः— सामा०, छेदोप० ए बे संयत, ज० प्रथम देवलोके अने उ० अनुत्तरविमाने जाय. परिहा० संयत, ज० पहेले देव० अने उ० आठमा देव० सुधी जाय. सूक्ष्म सं० ज०ने उ० अनुत्तरविमाने जाय. यथाख्यात सं०, ज०ने उ०

अनुत्तरवि०मां जाय अने केटलाक मोक्ष पण जाय. १ इंद्रनी पदवी, २ सामानिकनी०, ३ त्रायस्त्रिंशकनी०, ४ लोकपालनी०, अने ५ अहमिंद्रनी पदवी ए ५मांथी आराधक केटली पदवी पामे? ते कहे छे:-सामा० ने छेदोप० ए बे सं०, पांचे पदवी पामे. परिहा० सं०, अहमिंद्र सिवाय शेष चार पदवी पामे. सूक्ष्म ने यथा० संयत, एक अहमिंद्रनी पदवी पामे. विराधक आश्रयी पांचे संयतो, ज०भवनपतिमां अने उ०सौधर्म देव०मां उपजे, पदवी एके न पामे. हवे केटली स्थितिए उत्पन्न थाय ते कहे छे:-सामा० ने छेदो० संयतनी ज० बे पल्य अने उ० ३२ सागरनी स्थिति छे. परिहारवि०नी ज० बे पल्य अने उ०१८ साग०नी, सूक्ष्मसं० ने यथाख्यातनी ज०ने उ० ३३ साग०नी ॥ चौदमुं संयमस्थान द्वार कहे छे:-सामा०, छेदोप० अने परिहा० ए ३ना असंख्याता संयमस्थानो छे, सूक्ष्म सं०ना असंख्याता संयमस्थानो छे अने ते अंतर्मुहूर्तनी स्थिति जेटला छे, यथाख्यातनुं एक संयमस्थानक छे. हवे एओनुं अल्पबहुत्व कहे छे:-सर्वथी थोडा यथाख्यातना संयमस्थान छे, तेथी सूक्ष्म सं०ना असंख्यातगुणा तेथी परिहा०ना असंख्या०छे, तेथी सामायिकने छेदोप०ना असंख्यातगुणा अने परस्पर तुल्य छे॥पन्नरमुं निष्कर्ष (पर्यव) द्वार कहे छे:-प्रत्येक संयतोना अनंत चारित्र पर्यवो जाणवा. सामा० संयत, सामा०छेदोप०अने परिहा० ए ३ साथे छ स्थान पतित अने उपरला (बे सूक्ष्म०ने यथा०)थी अनंतगुण हीन छे. छेदोप०संयत, पहेला ३ साथे

१ यथाख्यात संयत [उपशम श्रेणिवालो] पडे छे ते विराधक जाणवो २ छ स्थान पतित ते १ अनंत भाग हीन, २ असंख्यात भा० हीन, ३ संख्यात भा० हीन, ४ संख्यात गुण अधिक, ५ असंख्यात गुण अ०, अने ६ अनंत गुण अधिक

द्वांत-
स्य
३०॥

छ स्थानपतित छे. अने उपरला बेथी अनंतगुण हीन छे. परिहा० सं०नुं पण एमज छे. सूक्ष्म सं० संयत, पहेला
३थी अनंतगुण अधिक छे. सूक्ष्म संप० साथे तुल्य, जो अधिक होय तो अनतगुण अधिक होय अने हीन होय
तो अनंतगुण हीन होय. यथाख्यात साथे अनंत गुण हीन छे. यथाख्यात संयत, सामायिकादि ४ संयतोथी अनं०
नगुण अधिक छे, स्वस्थानमां (यथा० साथे) तुल्य छे. एओनुं अल्पबहुत्वः—[1]सामा० ने छेदोप० ए बेना जघन्य
पर्यवो थोडा छे, तेथी परिहा०ना ज० पर्य० अनंतगुणा छे, तेथी परिहा०ना उ०पर्य० अनंतगुणा छे, तेथी सामा०
ने छेदोप०ना उ०पर्य० अनंतगुणा अने माहोमाहे तुल्य छे, तेथी सूक्ष्म सं०ना ज० पर्य० अनं०, तेथी सूक्ष्म सं०ना
उ० पर्य० अनं० छे, तेथी यथाख्यातना अजघन्य अनुत्कृष्ट पर्यवो अनंतगुणा छे ॥ सोलमुं योगद्वार कहे छेः—
पहेला ४ संयतो सयोगी छे अने यथाख्यात सं०, सयोगी अने अयोगी पण छे. सत्तरमुं उपयोगद्वार कहे छेः—
सामा०, छेदोप०, परिहा० अने यथा० ए ४ संयतो साकारोपयोगी अने अनाकारोपयोगी छे, सूक्ष्मसं० संयत,
साकारोपयोगी छे ॥ अढारमु कषायद्वार कहे छेः—पहेला ४ संयतो सकषायी अने यथा० संयत, अकषायी छे.
पहेला ३ संयतोमां संज्वलननो क्रोध, मान, माया, लोभ, ए ४ होय. सूक्ष्मसं० संयतमां संज्वलननो लोभ होय

---

१ परिहार विशुद्धक संयत, विशिष्ट [खास अमुक] तप–क्रियावडे विशुद्ध भाववालो होवाथी तेना ज० पर्यवो पण सामा० छेदो०ना
ज० पर्यवोथी अनतगुण अधिक छे अने परिहाविशुद्ध सं०ना उ० पर्यवोथी सामा०ने छेदोप० सयतोना उ० पर्यवो अनंतगुण अधिक कह्या तेनुंकारण
के परिहा०वालो छट्ठे के सातमे गुणठाणे होय अने सामा०ने छेदो० सयत, नवमागुणठाणा सुधी होय माटे अनतगुण अधिक छे.

ने यथाख्यात सं०, उपशांत कषायी अने क्षीणकषायी होय.॥ उगणीशमुं लेश्याद्वार कहे छेः-पहेला ४ संयतो लेश्यी छे, यथाख्यात सं० सलेश्यी अने अलेश्यी पण छे. सामा०ने छेदोप० संयतमां छ लेश्या होय, परि-हार वि० संयतमां पाछलनी ३ लेश्या छे अने सूक्ष्म सं०ने यथा० संयतमां १ शुक्ल लेश्या छे॥ वीशमुं परिणा-मद्वार कहे छेः-सामा०, छेदोप०ने परिहा० ए ३ संयतो, चढता परिणामवाला होय, पडता परिणामवाला अने स्थिरपरिणामवाला पण होय, सूक्ष्मसंप० संयत, चडता परिणामवालो होय, पडता परिणामवालो होय, पण स्थिर परिणामवालो न होय. यथा०संयत, चडता परिणामवालो होय, स्थिरपरिणामवालो होय, पण पडता परि-णामवालो न होय. पहेला ४ संयतोना परिणामनी वृद्धि, ज०१ समयनी अने उ० अंतर्मुहूर्तनी अने यथाख्यात सं०ना परि०नी वृद्धि, ज०ने उ०१ अंतर्मुहूर्तनी. पहेला ४ सं०ना परिणामनी हीनता, ज०१ समयनी ने उ०१ अंत-र्मु०नी. यथा०सं०नापरि०नी हीनता नथी. पहेला ३ सं०ना परिणामनी स्थिरता,ज०१ समयनी ने उ०७ समयनी. सूक्ष्म सं० संयतनापरि०नी स्थिरता, नथी. यथाख्यात सं०ना परि०नी स्थिरता, ज०१ समयनी ने उ० देशेउणा क्रोड पूर्वनी. ॥ एकवीशमुं बंधद्वार कहे छेः-पहेला ३ संयतो,७ कर्म अथवा ८ कर्म बांधे, सात बांधे तो आयुष्य सिवाय ७ बांधे. सूक्ष्म सं० संयत, मोहनीय अने आयुष्य सिवाय छ कर्म बांधे. यथा० संयत, एक सातावेदनीय

संयत विचार ॥१४१॥

१ सूक्ष्म सं० वालो श्रेणिए चडतो वर्धमान परिणामवालो होय अने श्रेणिथी पडतां हीयमान परिणामवालो अवश्य होय छे; पण अवस्थित [स्थिर] परिणामी न होय.

बांधे, अथवा अबंधक पण होय॥ बावीशमुं वेदन[2] द्वार कहे छेः–पहेला ४ संयतो, आठ कर्मना वेदक होय, यथा-ख्यात सं०मोहनीय सिवाय सात कर्मनो वेदक अथवा घनघाती कर्म सिवाय चार कर्मनो वेदक अने एक साता-नोवेदक पण होय॥ त्रेवीशमुं उदीरणा[3] द्वार कहे छेः–प्रथमना ३ संयतो, आठ, सात के छ कर्मनी उदीरणा करे, ७नी करे तो आयुष्य[4] सिवाय, ६[5]नी करे तो वेदनीय ने आयुष्य सिवाय उदीरणा करे. सूक्ष्म० संयत, छ अथवा पांचनी उदी० करे, छनी करे तो वेदनीय ने आयुष्य सिवाय अने पांचनी करे तो वे० आ० ने मोहनीय सिवाय उदी०करे.यथाख्यात सं०,पांचनी अथवा बेनी करे तो कर्मनी उदी०करे, बेतो नामने गोत्रनी अने अनुदीरक[6] पण होय॥चोवीशमुं उपसंपद्द्वार[7] कहे छेः–सामायिक सं०,चडे तो छेदोप०ने सूक्ष्म सं०पणुं पामे अने पडे तो असंयम के देशविरतिपणुं पामे. छेदोप०संयत, चडे तो सामा[8]०,परिहा० अने सूक्ष्म सं०पणुं पामे अने पडे तो असंयम के देशविरतिपणुं पामे. परिहा०संयत, चडे तो छेदोप[9]०पणुं पामे अने पडे तो असंयतपणुं पामे. सूक्ष्मसं०संयत, चडे

---

२ वेदन ते उदयागत, ३ उदयमां नहि आवेला कर्मने, जीव स्ववीर्यथी खेंचीने उदयमां लावे ते उदीरणा, उदीरणा अने बंध ए बन्ने जीवने आधीन छे अने उदय ने सत्ता ए बन्ने कर्मने आधीन छे ४ सातमां गुणठाणाथी वेदनीय अने आयुष्यकर्मनी उदीरणा न होय. ५ उदी-रणानुं विशेषस्वरूप, 'कम्मपयडी'मा छे त्यां जोवु. ६ उदीरणा करे नहिं ते. ७ भगवतीसूत्रमा 'चडवु' के 'पडवु' ए नथी पण 'त्याग' अने 'स्वी-कार' शब्द जोवामां आवे छे ते शब्द योग्य जणाय छे. ८ ऋषभजिनना तीर्थमांथी अजीतनाथना तीर्थमां प्रवेश करतां छेदो० संयत, सामायिक-पणु पामे. ९ परिहारविशुद्ध पहेला-छेल्ला जिनना वारामा होय, ते तप-क्रिया पूरण करीने पुन. गच्छमां आवे त्यारे छेदोप०पणु होय. पण सामा-

थाख्यातपणुं पामे अने पडे तो सामा०, छेदोप० के असंयमपणुं पामे. यथा० संयत, मोक्षमां जाय, अथवा सं० अने असंयमपणुं पामे. पचीशमुं संज्ञाद्वार कहे छेः—सामा०, छेदोप०, परिहा० ए ३ संयतो संज्ञा क्त छे अने नोसंज्ञा उपयुक्त पणछे.सूक्ष्म सं०अने यथाख्यात सं०,नोसंज्ञा उपयुक्त छे॥छवीशमुं आहारकद्वा- हे छेः—प्रथमना चार संयतो, आहारक छे अने यथा० संयत, आहारक ने अनाहारक पण छे. ॥ सत्यावी- भवद्वार कहे छेः—सामा० ने छेदोप० संयत, ज० १ भव करे अने उ० ८ भव करे. बाकीना ३ संयतो, ज० व करे अने उ० ३ भव करे॥ अठावीशमुं आकर्ष द्वार[2] कहे छेः—एक भव आश्रयी सामा० ज० १ वार अने पृथक्त्व शत (शो) वार आवे. छेदोप० ज० १ वार अने उ० वीश पृथक्त्ववार आवे. परिहा० ज० १ वार उ० ३ वार आवे. सूक्ष्म[3] सं० ज० १ वार अने उ० ४ वार आवे. यथाख्यात० ज० १ वार अने उ० २ वार

चा० न होय. सामा० चारित्रवालाने परिहा०पणु होतुंज नथी कारण? परिहा० चारित्रवाला छट्ठा—सातमा गुण० सुधीज होय छे. प्रथमना बे रेत्र, नवमा गुण० सुधी होय छे. परिहा०ने सूक्ष्म सं०नी प्राप्ति थती नथी. परिहारविशुद्धक, मरीने देव थाय माटे पडतां ते असयमपणु पामे. ज्ञानोपयोगवाला. २ आकर्ष=चारित्रना परिणाम अथवा पुनर्ग्रहण, एटले जेम गाय पाणी पीतां डचका भरे छे, अर्थात् पाणीने मुखथी खेंचे छे ी वली स्वल्प समय पछी खेंचे छे; तेम चारित्रना जे परिणाम होय तेने छोडी फरीथी ते परिणामनुं ग्रहण करवुं ते पण आकर्ष कहेवाय छे, म के एक भवमां शत पृथक्त्ववार आवे एम समजवुं. ३ एक भवमां उपशमश्रेणि बेवार आवे त्यारे चडतां ने पडतां सूक्ष्म सं० ४ वार आवे. ; यथाख्यातपणु, श्रेणिए चडता होय माटे बे वार आवे.

आवे. हवे अनेक भव आश्रयी कहे छेः—सामा० ज० २ वार अने उ० पृथक्त्व हजारवार आवे. छेदोप० ज० २ वार अने उ० नवसें उपर अने १ हजारनी अंदर आवे. परिहा० ज० २ वार अने उ० ७ वार आवे. सूक्ष्म सं० ज० २ वार अने उं० ९ वार आवे. यथा० ज० २ वार अने उ० ५ वार आवे आवे ॥ उगणत्रीशमुं स्थिततिद्वार कहे छेः—एक जीवआश्रयी सामा०ने छेदोप० संयतनी स्थिति, ज० १ समयनी अने उ० देशेउणी क्रोड पूर्वनी. परिहा० संयतनी स्थिति, ज० १ समयनी अने उ० २९ वर्ष न्यून क्रोड पूर्वनी. सूक्ष्म सं० संयतनी स्थिति, ज० १ समयनी अने उ० अंतर्मुहूर्तनी. यथा० संयतनी स्थिति, ज० १ समयनी अने उ० देशेउणा क्रोडपूर्वनी. हवे घणा जीव आश्रयी कहे छेः—सामा० संयतोनी स्थिति, सर्वकालनी. छेदोप० संयतोनी स्थिति, ज० २५० वर्षनी अने उ० ५० लाख क्रोडसागरोपमनी. परिहा० संयतोनी स्थिति, ज० देशे उंणी बसो वर्षनी अने उ० देशे उणी बे क्रोड पूर्वनी. सूक्ष्म सं संयतोनी स्थिति, ज० १ समयनी अने उ० अंतर्मुहूर्तनी. यथा० संयतोनी स्थिति, सर्वकालनी. ॥ त्रीशमुं अंतरद्वार कहे छेः—एक जीव आश्रयी पांचे संयतोनुं (प्रत्येकनुं) अंतर,, ज० १ अंतर्मुहूर्तनुं अने उ० देशेउणा अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तकालनुं. हवे घणा जीव आश्रयी कहे छेः—सामा० संयतोनुं अंतर नथी.

---

२ घणा भव आश्रयी उप० श्रेणि ४ वार आवे ते अपेक्षाये आठवार अने एकवार क्षपक श्रेणिए चडता सूक्ष्म स० आवे माटे नववार कह्युं. घणा भवआश्रयी यथाख्या० ने ऊप० श्रेणि चारवार आवे ते चडतां ४ वार यथाख्या०अने क्षपक श्रेणि एकवार आवे ते अपेक्षाए एकवार यथाख्यात आवे माटे उ० ५ वार कहेल छे. ३ देशेउणी, ते आठ वर्ष ओछी. ते ज० अने उ० स्थिति वन्नेमां जाणवुं [भगवती वृत्ति]

कारण ? महाविदेहमां हमेशां होय. छेदोप० संयतोनु अंतर, ६३ हजार वर्षनुं अने उ० १८ कोडाकोडी सागरनुं. परिहा० संयतोनुं अंतर, ज० ८४ ह० वर्षनुं अने उ० १८ कोडाकोडी सा०नुं. सूक्ष्म सं० संयतोनुं अंतर, ज० १ समयनुं अने उ० छ मासनुं. यथा० संयतोनु अंतर नथी ॥ एकत्रीशमुं समुद्घात द्वार कहे छेः–सामा० ने छेदोप० संयतने केवल समु० सिवाय छ समुद्घात होय. परिहा० संयतने पहेली ३ समु० होय. सूक्ष्म सं० संयतने एके समु० न होय. यथा० संयतने १ केवल समु० होय. ॥ बत्रीशमुं क्षेत्रद्वार कहे छेः–प्रथमना ४ संयतो, लोकना असंख्यातमा भागमां होय. यथा० संयत, लोकना असंख्यातमे भागे होय, घणा असंख्यात भागोमां होय अने संपूर्ण लोकमां पण होय. तेत्रीशमुं स्पर्शनाद्वार कहे छेः–ते क्षेत्रद्वारनी जेम जाणवुं॥चोत्रीशमुं भावद्वार कहे छेः–पहेला ४ संयतो, क्षयोपशभावे होय. यथा० संयत, उपशम अथवा क्षायक भावे होय. ॥ पांत्रीशमुं परिमाण-द्वार कहे छेः–प्रतिपद्यमान–(चालु वर्तमानकालमां संयतपणुं स्वीकार करनार) सामा० संयत, ते कदाच होय अने न पण होय, जो होय तो ज० १–२–३ अने उ० पृथक्त्व हजार होय. छेदोप० ने परिहा० संयत, जो होय तो ज० १–२–३ अने उ० पृथक्त्व सो. सूक्ष्म सं० संयत, जो होय तो ज०१–२–३ अने उ०१६२ (ते १०८ क्षपक अने ५४ उपशामक मलीने) होय. यथा० संयत, सूक्ष्म सं०नी जेम छे. हवे पूर्व प्रतिपन्न–(भूतकालमां स्वीकारेल) ते आश्रयी, ज०जो होय तो सामा० संयतो. पृथक्त्व हजार क्रोड अने उ०पृथक्त्व ह०क्रोड०छेदोप०संयतो, ज०

पृथक्त्व शत क्रोड अने उ० पृ० शतक्रोड. परिहा० संयतो, ज० १-२-३ अने उ०पृ० हजार सूक्ष्म सं० संयतो,
ज० १-२-३ अने उ० पृ० शत. यथा० संयतो, ज० पृ० क्रोड अने उ०पृ० क्रोड होय॥ छत्रीशमुं अल्पबहुत्वद्वार
कहे छेः-सर्वथी थोडा सूक्ष्म सं० संयतो, तेथी परिहा० संयतो, संख्यातगुणा. तेथी यथा० संयतो, संख्या० तेथी
छेदोप० संयतो, संख्या० तेथी सामा० संयतो संख्यातगुणा. इति संयत (संजया) समास.

अथ षद्द्रव्य विचार—परिणामि[1] जीव[2] मुत्ता,[3] सप[4] एसा[5] एग[6] खित्त[7] करियाय;[8] निच्चं[9] कारण[9] कत्ता,[10] सव्वगय[11]
इयर अप्पवेसे ॥ १ ॥ आ गाथानो शब्दार्थ कहे छेः—षद्द्रव्यमां परिणामी अने अपरिणामी, जीव ने अजीव
मुत्त अने अमुत्त, सप्रदेशी ने अप्रदेशी, एक अने अनेक, क्षेत्र अने क्षेत्री, सक्रिय ने अक्रिय, नित्य ने अनित्य,
कारण ने अकारण, कर्त्ता अने अकर्त्ता, सर्वगत ने असर्वगत, कया कया द्रव्यो छे? हवे विस्तार रुचि शिष्य, गुरु-
देवनें पंचाग नमन करी पूछे छे के हे भगवान्! षद्द्रव्यमां परिणामि द्रव्य वगेरे केटला द्रव्यो छे?. गुरुमहाराज

१ पूर्व प्रतिपन्न छेदोप० संयतो ज० पदे पृथक्त्व शत क्रोड, ते विचारणीय छे कारण? आ काले तो बहु अल्प होय तेमज पांचमा आराने विषे पण बहुज अल्प होय. ज० परिमाण तो पहेला तीर्थंकरने समये संभवे पांचमा आराने छेडे दश क्षेत्रना मलीने वीश होय. 'सूत्रस्य विचित्रागतिः' तत्त्व केवलि गम्य सामायिक अने यथाख्यात सयतो, ए बन्ने हमेशां होय अने शेष ३ [छेदो०, परिहा० सूक्ष्म सं०] क्यारेक होय अने न पण होय

कहे छे, हे आयुष्मन् सुशिष्य ! सांभळ. निश्चय नयथी षट्द्रव्यो, पोतपोतानामां परिणमी रह्या छे. गुण-पर्यायनी परिणति रुपे छए द्रव्य परिणामी छे अने व्यवहारनयथी. जीव द्रव्य ने पुद्गल द्रव्य ए बन्ने विभाव परिणामी छे अने शेष ४ द्रव्य (धर्मास्तिकायादि), विभाव भावनी अपेक्षाए अपरिणामी छे. छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य ते जीव छे अने पांच द्रव्यो अजीव छे. छ द्रव्यमां एक पुद्गल द्रव्य. मूर्त्त (रूपी) छे अने पांच द्रव्यो अमूर्त्त छे. छ द्रव्यमां धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्यो सप्रदेशी छे अने एक काल द्रव्य अप्रदेशी छे; कारण ? एक सामायिक काल छे. हवे धर्मास्तिकाय ने अधर्मास्तिकाय द्रव्य, असंख्यात प्रदेशी छे. आकाशास्तिकाय द्रव्य, (लोकालोक प्रमाण) अनंत प्रदेशी छे. एक जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे, तेवा अनंत जीवो छे. पुद्गल द्रव्य, एक परमाणुथी मांडी द्वि प्रदेशी त्रि प्रदेशी यावत् अनंत प्रदेशी छे. छ द्रव्यमां धर्मास्तिकायादि ३ द्रव्यो, एकेक द्रव्य छे अने जीव, पुद्गल अने काल, ए ३ द्रव्यो अनेक छे. कारण ? जीवो, पुद्गलो अने समयो अनंत छे माटे. छ द्रव्योमां एक आकाश द्रव्य, क्षेत्र (आधारभूत) छे अने शेष पांच द्रव्यो, क्षेत्री (आधेय) छे. छ ए द्रव्यो निश्चयनयथी सक्रिय छे. धर्मास्तिकाय द्र०, चलन-सहायरुप क्रिया करे छे, अधर्मास्ति० द्र०, स्थिर-

---

१ कालद्रव्य, वर्त्तमान कालीन एक समय छे, भूतकाल विनश्वर छे अने अनागतकाल अनुत्पन्न छे. एटले कालने प्रदेशो [समयो]नो संबंध नथी. भूतकालना अनंत समयोने कालद्रव्य तरीके उत्तराध्ययनसूत्रमां विवक्षा कही छे प्रदेशो समयो संबंध न होवाथी कालद्रव्य औपचारिक छे.
२ आधार क्षेत्रमां रहेनार ते आधेय कहेवाय.

सहायरुप क्रिया करे छे, आकाशास्ति० द्र०, अवगाह–दानरूपक्रिया करे छे, काल द्र० वर्तनारूप क्रिया करे छे,
पुद्गल द्र०, पूरण–गलनरूप क्रिया करे छे अने जीव०द्र, उपयोगरूप क्रिया करे छे व्यवहारनयथी जीव अने
पुद्गलद्र०, सदासक्रिय छे. निश्चयनयथी छए द्रव्यो, नित्य छे, कारण? मूल द्रव्यनी अपेक्षाए ध्रुव छे. द्रव्यो पोताना
स्वरूपने कोइकाले छोडतो नथी पण उत्पाद–व्यय वडे अनित्य छे. हवे व्यवहार नयथी जीव अने पुद्गलद्र०,
अनित्य छे अने शेष ४ द्रव्यो नित्य छे. जो केउत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणे सर्व द्रव्यो परिणमे छे; तथापि धर्मास्ति०,
अधर्मास्ति० आकाशास्ति० अने काल, ए ४ द्रव्यो सदा अवस्थित (स्थिर) होवाथी नित्य छे. छ द्रव्योमां एक जीव
द्रव्य अकारण छे अने शेप पांच द्रव्यो कारण (साधनरूप) छे. केम के ए पांचे द्रव्यो जीव द्रव्यने उपभोगमां
आवे छे–साधनरूप थाय छे. ते आ प्रमाणे—धर्मास्ति०, जीवने गति करवामां अधर्मास्ति० स्थिर रहेवामां अने
आकाशास्ति० अवकाश आपवामां सहाय करे छे. तेमज शुभवर्णादि विशिष्ट पुद्गल, जीवने उपभोगमां आवे छे
अने काल, बाल यौवनादि अवस्था आपे छे. वळी अनादि संसारी जीवनी भवस्थिति, परिपक्व थये छते अंतर्मुहूर्त
काळमां सर्व कर्मनो क्षय करी मुक्तिमां जाय त्यां सिद्धावस्थामां पण अनंतकाल पर्यंत जीव आत्मिक अव्याबाध
अनंत सुख विलसे छे माटे कालद्रव्य पण जीवने उपभोगमां आवे छे. पण एक जीवद्रव्य, कोइ अन्य द्रव्योने
उपभोगमां आवतो नथी माटे जीवद्रव्य, अकारण छे. छए द्रव्यो निश्चयनयथी कर्त्ता छे, कारण? सर्व द्रव्यो,

पोतपोताना स्वभावना कर्त्ता छे. व्यवहारनयथी एक जीवद्रव्य कर्ता छे अने शेष पांच द्रव्यो अकर्ता छे. कारण? जीवद्रव्यना असंख्यात प्रदेशोनुं चक्र, एक सामटुं फरे छे; अर्थात् बधा प्रदेशो मलीने (एक पिंडरूपे) काम करे छे. शेष पांच जडद्रव्योना प्रदेशोनी प्रवृत्ति, समुहात्मक नथी पण जूदी जूदी छे; माटे पांचे द्रव्यो अकर्ता छे. छ द्रव्योमां एक आकाशद्र०, सर्वव्यापी छे-लोकालोक व्यापक छे अने शेष पांच द्रव्यो असर्वगत (लोक मात्र व्यापी छे. जोके छए द्रव्यो एक क्षेत्रमां साथे रहे छे, तो पण कोइ द्रव्य पोताथी भिन्न द्रव्यमां भळी जतो नथी; अर्थात् पोतानुं मूल स्वरूप छोडी ने अन्य द्रव्यरूपे परिणमे नहिं. हवे लक्षणादि भेदथी षट्द्रव्योनुं वर्णन करवामां आवे छेः-१ धर्मास्ति० द्र०, कोने कहीए ? गतिमान् जीव अने पुद्गल ने मीनने नीरनी जेम सहाय करवानो जे स्वभाव ते 'धर्म' प्रदेशो ते 'अस्ति' अने तेनो समुह ते 'काय' तेने 'धर्मास्तिकाय' कहीए. एमज स्थितिमान् जीव-पुद्गलने स्थिर थवामां वृक्षनी छायानी जेम सहाय करनार ते 'अधर्मास्तिकाय. जीव-पुद्गलने अवकाश आपवामां भींतमां खीलीनी जेम सहाय करनार ते 'आकाशास्तिकाय.' दीपकनी जेम स्वपर प्रकाशक ज्ञानवान् ते 'जीवास्तिकाय.' परमाणुं अने द्विप्रदेशथी यावत् अनंत प्रदेशात्मक ते 'पुद्गलास्तिकाय' ए पांच द्रव्यो 'अस्तिकाय' कहेवाय छे अने कालना प्रदेश न होवाथी ते 'अस्तिकाय' न कहेवाय. हवे षट्द्रव्यना गुण-पर्याय कहे छेः-१ धर्मास्ति०ना ४ गुणः-१ अरूपी,२ अचेतन,३ अक्रिय ४ चलन सहाय अने पर्याय पण ४

२ परसंयोगथी विभावनो कर्त्ता छे. ३ अस्ति ने कायनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो. ४ परमाणुमां पण स्कंधनी योग्यता छे ५ दरेक द्रव्यना चार गुणमां जे छेल्लो गुण छे ते असाधारण [मुख्य] गुण छे.

द्रांत-
स्य
१०॥

१ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ अगुरुलघु. अधर्मा०ना ४ गुण–१ अरू०, २ अचे० ३ अक्रि०, अने स्थिर सहाय अने पर्याय पण ४ पूर्ववत्. आकाशास्ति०ना ४ गुण–१ अरू०, २ अचे०, ३ अक्रि०, ४ अवकाशदान. पर्याय ४ पूर्ववत् कालना ४ गुण–१ अरू०, २ अचे०, ३ अक्रि०, ४ वर्तना अने ४ पर्याय–१ अतीत, २ वर्त्तमान, ३ अनागत, ४ अगुरुलघु. पुद्गलास्ति०ना ४ गुण–१ रुपी, २ अचैतन्य, ३ सक्रिय, ४ पुरण–गलन अने पर्याय पण ४ ते १ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ अगुरुलघु. अथवा बीजा पण ४ पयायो छे–१ वर्ण, २ गंध, ३ रस, ४ स्पर्श. जीवना ४ गुण–१ अनंतज्ञान, २ अनंतदर्शन, अनंतसुख (चारित्र), ४ अनंतवीर्य (शक्ति). पर्याय पण ४ ते

---

२ कालद्रव्यना पर्यायो, औपचारिक छे, कारण ? निश्चयनयथी पंचास्तिकायनी ‘वर्तना तेजकाल अने व्यवहारनयथी समय, आवलिकादि-लक्षणकाल छे. ३ वर्णादि चार ए पुद्गलद्रव्यना गुणो छे अने एक गुण कालत्वादिक पर्यायो छे. छतां पण वर्णादिने पर्याय कहेवानु कारण के पर्यायना बे प्रकार छे, छती पर्याय अने सामर्थ्य पर्याय छती प० ते गुण० अने सामर्थ्यप० ते एक गुणकालत्वादि सिद्धांतमां द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक ए बे नय कहेल छे, पण गुणार्थिक नय क्यांय नथी माटे संक्षेप व्याख्याथी गुण–पर्याय अभेद छे अने विस्तृत व्याख्या ए कथंचित् भेद छे. तेथी सूत्रमां केवल ज्ञानादि गुणोने केवलपर्याय, चारित्रपर्याय कहेवामां आवेल छे. वली सहभावी ते गुण अने क्रमभावी ते पर्याय कहेल छे वर्णादि गुणो, सदा द्रव्यना सहभावी छे अने एक गुणकालत्वादि पर्यायो क्रमभावी छे. ४ जीवना मूल ४ भाव प्राण अनंतज्ञानादि छे पण कर्मनी उपाधिथी अनंत ज्ञानने बदले उच्छवास प्राण, दर्शनने बदले इन्द्रियप्राण, सुख [चारित्र]ने बदले आयुष्य प्राण अने वीर्यने बदले योगबल प्राण. आ चार नकली प्राण दरेक जीवने होय छे, तेना १० भेद थाय छे; तें १०मांथी मूल ४ द्रव्यप्राण, जीवनुं बाह्य लक्षण छे. जीवनु विशेष [मुख्य] लक्षण ज्ञान छे अने श्वासोच्छवास बाह्य मुख्य लक्षण छे. दर्शन, जीवनुं सामान्य ल० छे तेम इन्द्रिय जीवनु बाह्य सा० ल० छे. अनत चारित्र

१ अव्याबाध, २ अनवगाह, ३ अमूर्त्त, ४ अगुरुलघु. हवे पुद्गलनो विशेष विचार कहे छे-एक परमाणुमां १ वर्ण, १ गंध, १ रस अने २ स्पर्श² होय. बे परमाणु मले त्यारे द्विप्रदेशी स्कंध थाय, तेमां २ वर्ण, २ गंध, २ रस अने ४ स्पर्श³ होय. त्रण परमाणु मले त्यारे त्रिप्रदेशी स्कंध थाय, तेमां ३ वर्ण, २ गंध, ३ रस अने ४ स्पर्श होय. चार परमाणु मलवाथी चतुष्प्रदेशी स्कंध थाय तेमां ४ वर्ण, २ गंध, ४ रस अने ४ स्पर्श होय. पांच परमाणु मलवाथी पंच प्रदेशी थाय, तेमां ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस अने ४ स्पर्श होय. एवी रीते एकेक परमाणु वधारतां यावत् संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी अने अनंतप्रदेशी स्कंध थाय. ए अनंत प्रदेशी स्कंधनी वर्गणा, कोइपण जीवने ग्रहण योग्य न थाय. अर्थात् ते वर्गणा ने जीव, ग्रहण न करी शके. त्यारे कइ वर्गणा ग्रहण करवाने योग्य थाय? ते कहे छे—अभव्य जीवथी अनंतगुणा अने सिद्धना अनंतमे भागे परमाणुओ एकठा मळे, त्यारे औदारिक शरीरपणे ग्रहण करवा योग्य वर्गणा थाय. तेथी एकेक परमाणु अधिक अनंत वर्गणा, औदारिक शरीरपणे ग्रहण करवायोग्य छे. जघन्य ग्रहण करवा योग्य वर्गणाथी उत्कृष्ट ग्रहण योग्य वर्गणा, अनंतभाग अधिक जाणवी. पछी ग्रहण न करवा योग्य अनंत वर्गणाओ छे. औदारिक शरीरपणे ग्रहण करवा योग्य जे उत्कृष्ट वर्गणा तेथी सिद्धना अनंतमे भागे अने अभव्यथी अनंतगुणा परमाणुओ, वळी मळे त्यारे ते वर्गणा

[सुख] छे. तेम जीवने आयुष्य प्राण बाह्य सुखरूप छे, अने जीव अनंत शक्तिमान् छे तेम बाह्यतः योगवीर्यवालो छे, एम जाणवु. २ शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष ए चार स्पर्शमांथी अविरोधी बे स्पर्श होय बाकीना गुरु-लघु वगेरे न होय. ३ अहिं अनेक भांगा थाय छे.

वैक्रेय शरीरपणे ग्रहण करवा योग्य थाय. तेथी अनंतगुणा परमाणुओ मळे त्यारे ते वर्गणा, आहारकशरीरपणे ग्रहण करवा योग्य थाय. तेथी अनंतगुणा परमाणुओ मळे त्यारे ते वर्गणा, तैजस शरीरपणे ग्रहण करवा योग्य थाय, पछी भाषा वर्गणा, श्वासोच्छवास वर्गणा मनोवर्गणा अने कार्मणवर्गणा जाणवी. ए प्रत्येक वर्गणा, एकेकथी अनंतगुणी (पूर्वोक्त अभव्यथी अनंतगुण परमाणुनी) छे. तेनी वचमानी अनंत वर्गणाओ, ग्रहण करवा योग्य नथी. सर्व जघन्य ग्रहण करवा योग्य वर्गणाथी एकेक परमाणु अधिक यावत् अनंत भागाधिक अनंत-वर्गणाओ छे. ए आठे वर्गणाओ अनुक्रमे अनंतगुणी अने सूक्ष्मपरमाणुओनी बनेली होवाथी अंगुलना असंख्यातमे भागे हीन हीन अवगाहनावाळी छे. तेमां पहेली ४ वर्गणाओ, बादर गुरुलघु परिणामवाली होवाथी ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस अने ८ स्पर्श, एम २० गुणवाली होय छे अने बाकीनी चार वर्गणाओ सूक्ष्म अगुरुलघु परिणामवाली होवाथी ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस अने ४ स्पर्श, ए १६ गुणवाली होय छे. हवे षट्द्रव्यनुं स्वरूप, आठ पक्षथी कहे छे ते आठ पक्षना नाम–१ नित्य, २ अनित्य, ३ एक, ४ अनेक, ५ सत्, ६ असत्, ७ वक्तव्य अने ८ अवक्तव्य, धर्मास्ति० अने अधर्मास्ति०ना ४ गुण अने एक (लोकप्रमाण) स्कंधपर्याय नित्य छे, शेष ३ पर्याय अनित्य छे. आकाशास्ति०ना ४ गुण अने एक (लोकालोक प्रमाण) स्कंधपर्याय नित्य छे, शेष ३ पर्याय अनित्य छे. कालना ४ गुण नित्य छे अने ४ पर्याय अनित्य छे. पुद्गला०ना ४ गुण नित्य छे अने ४ पर्याय अनित्य छे.

२ वर्गणानो विचार बहुज गहन छे जिज्ञासु ए विशेषावश्यक ने पचम कर्मग्रन्थने अवलोकवु,

जीवास्ति० ना ४ गुण, ३ पर्याय नित्य छे अने एक अगुरुलघुप० अनित्य छे. ए रीते नित्य-अनित्य बे पक्ष कह्या. हवे एक-अनेक पक्ष कहे छेः-धर्मास्ति० अने अधर्मास्ति०नो (लोक प्रमाण) स्कंध एकछे अने गुण अनंत छे, पर्याय अनंत छे; प्रदेश असंख्यात छे तेथी अनेक पण छे. आकाशास्ति०नो (लोकालोक प्रमाण) स्कंध एक छे अने गुण, पर्याय अने प्रदेश अनंत छे; माटे अनेक पण छे. कालद्रव्यनो वर्तनारूप गुण एक छे अने गुण-पर्याय अनंत छे; केमके समयो अनंता छे. अतीत कालना अनंत समयो गया, अनागत कालना अनंत समयो आवशे अने वर्तमान कालनो मात्र एकज समय छे; तेथी अनेक पण छे. पुद्गला०ना परमाणुओ अनंत छे, एकेक परमाणुमां अनंत गुण-पर्यायो छे तेथी अनेक छे अने सर्व परमाणुओमां पुद्गलपणुं एकज छे माटे एक छे जीवास्ति० द्रव्य, अनंत छे, गुण-पर्यायो अनंत छे अने एकेक जीवना प्रदेशो असंख्यात छे तेथी अनेक छे अने सर्व जीवोमां जीवपणुं एकज छे माटे एक छे. हवे सत् असत् पक्ष कहे छेः-छए द्रव्यो, स्वद्रव्य स्वक्षेत्र-स्वकाल अने स्वभावपणे सत् (छता=अस्तिरुप) छे अने परद्रव्य-परक्षेत्र परकाल अने परभावपणे असत् (अछता=नास्तिरुप) छे. छए द्रव्यना स्वद्रव्यादिक कहे छे-१ धर्मास्ति०नो स्वद्रव्य, ते मूलगुण चलण-सहाय वगेरे गुणोनो समुदायरूप. स्वक्षेत्र, ते द्रव्यनुं अवगाहपणु (प्रदेशोनुंमान), ते असंख्यात प्रदेशप्रमाण छे. स्वकाल, ते वर्तना=अगुरु लघुनी षट्गुणहानि वृद्धिरुप छे. स्वभाव, ते पोताना गुण पर्यायनी परिणतिए परिणमनरूप. अधर्मास्ति०नो स्वद्रव्य,

२ 'पुत्'=पूरण थवु अने'गल'=घटवु, ए व्युत्पति अर्थ छेः अर्थात् पुद्गलमां 'वध-घट' थवारुप धर्म छे. बीजा द्रव्योमां हानि-वृद्धि नथी.

मूलगुण स्थिर सहायादिगुण-समुदायरुप. आकाशास्ति०नो स्वद्रव्य, मुलगुण अवकाशदान प्रमुखगुण-समुदायरुप. कालनो स्वद्रव्य, वर्तनादि गुण-समुदायरुप. पुद्गला०नो स्वद्रव्य, ते मुलगुण पुरण गलनादि गुंण-समुदायरूप. जीवास्ति०नो स्वद्रव्य, ते मूलगुण उपयोग प्रमुखगुण-समुदायरुप. स्वक्षेत्र, ते द्रव्यनुं अवगाहपणुं (प्रदेशमान). ते धर्मास्ति० अने अधर्मास्ति० ए बे द्रव्यनो स्वक्षेत्र, असंख्यात प्रदेश छे अने आकाशास्ति०नुं स्वक्षेत्र, अनंत प्रदेश छे. कालद्रव्यनुं स्वक्षेत्र, समय छे. पुद्गल द्रव्यनुं स्वक्षेत्र, एक परमाणु एवा अनंता परमाणुओछे. जीव द्रव्यनुं स्वक्षेत्र, असंख्यात प्रदेशछे. स्वकाल, ते पोत-पोताना द्रव्यमां अगुरुलघुनो, षट्गुणहानि-वृद्धिरुपछे. स्वभाव, ते पोतपोताना गुण-पर्यायनी परिणतिए सर्व द्रव्यो परिणमेछे. एम दरेक द्रव्यमां पोताना स्वद्रव्यादि ४ बोलछे; पण बीजा द्रव्यना ४ बोल नथी. माटे स्व-द्रव्यादिकथी सत् अनें परद्रव्यादिकथी असत्[2]छे. हवे वक्तव्य अने अवक्तव्य पक्ष कहेछे:-वक्तव्य ते वचनथी कहेवा योग्य, छए द्रव्योमां अनंतगुण-पर्यायछे अने अवक्तव्य ते वचनथी न कही शकाय, तेवा अनंतगुण-पर्यायो छे. जे वक्तव्यछे तेथी अवक्तव्य अनंतगुणा छे; ते सर्व भावो केवलीप्रभुए दीठा, तेने अनंतमें भागे प्ररूप्या अने तेना अनंतमें भागे गणधर महाराजे सूत्ररुपे गुंथ्याछे; तेना असंख्यातमें भागे वर्तमानकालमां आगमो रह्याछे. ए आठ पक्षो कह्या. हवे नित्यानित्य पक्षनी-चउभंगी कहेछे:-जेनी आदि नथी अने अंत पण

१ जेटला क्षेत्रमा द्रव्य अवगाही नै रहे ते स्वक्षेत्र २ सत्-असत् पक्षथी सप्तभंगी थाय छे.

नथी ते 'अनादिअनंत' पहेलो भांगो. जेनी आदि नथी पण अंतछे ते 'अनादिसांत' बीजो भांगो. जेनी आदिछे अने अंत पणछे ते 'सादिसांत' त्रीजो भांगो. जेनी आदि छे अने अंत नथी ते 'सादिअनंत' चोथो भांगो छे. धर्मास्ति० अधर्मास्ति० अने आकाशास्ति० ए ३ द्रव्यना चारगुण तथा स्कंध, अनादि अनंत भांगेछे अने देश, प्रदेश ने अगुरुलघु, ए ३ सादिसांत भांगे छे. सिद्धना जीवमां जे धर्मास्ति कायादिक त्रणना प्रदेशो रहेला छे; ते प्रदेशोनी अपेक्षाए सादि अनंतभांगे छे. पुद्गल द्रव्यना ४ गुणो, अनादिअनंत छे. जीव-पुद्गलनो संबंध, अभव्य-ने आश्रयी अनादिअनंत भांगे छे अने भव्य जीवने आश्रयी अनादि सांत भांगेछे. पुद्गलनो स्कंध, सादिसांत भांगेछे. कालना ४ गुण, अनादिअनंत भांगेछे. पर्यायोमां अतीतकाल, अनादिसांत भांगेछे. वर्तमानकाल, सादि सांत भांगेछे अने अनागतकाल, सादि अनंत भांगेछे. कालद्रव्यनुं स्वरुप औपचारिक जाणवुं. जीव द्रव्यना ४ गुण. अनादि अनंतछे. अभव्य जीवने कर्मनो संबंध अनादि अनंतछे. भव्य जीवने कर्मनो संबंध, अनादिसांतछे कारण ? कर्म अनादि (प्रवाहरुपथी)छे, तथापि क्यारेक पण कर्मनो अंत आवशे अर्थात् नाश थशे माटे सांत (अंतसहित)छे. नरकादिक गतिना जे भव करवा, ते सादिसांत भांगेछे अने जीवने सिद्धपणु ते अनादिअनंतछे षट्द्रव्यनुं संक्षिप्त विचार समाप्त.

---

२ पन्नवणा, उत्तराध्ययनादिसूत्रो अने तत्त्वार्थ सूत्रमा कालने उपचारिक कहेलछे. व्यवहारनयथी कालद्रव्यछे, ते समय. आवलिकादिरुप काल: समयक्षेत्र (अढीद्वीप)मां छे. निश्चयनयथी काल, पर्याय द्रव्यछे. द्रव्यनी वर्तनानेज कालद्रव्यनो उपचार करेलछे. केटलाक आचार्यो कालने मुख्यद्रव्य मानेछे अने केटलाक कालने उपचारथी माने छे.

हवे बहिरादि ३ आत्मानुं स्वरुप कहे छेः—१ बहिरात्मा, २ अंतरात्मा अने ३ परमात्मा. बहिरात्मानुं स्वरुपकहे छे जे जीव तन, धन, स्वजन, कर्म प्रमुख सर्व पुद्गलिक परवस्तुने पोतानी माने वळी शरीरादिक ते हुं अने स्वजनादिक ते मारा एवी परिणतिए वर्ते, ते बहिरात्मा कहेवाय. दोहरो-पुद्गलशुं रातो रहे, जाणे एह निधान; तस लाभे लोभ्यो रहे, बहिरातम अभिधान ॥१॥ बहिरात्मा, प्रथमगुणस्थानथी यावत त्रीजा गुणठाणा सुधी होय. अंतरात्मानुं स्वरुपः—दोहरो—पुद्गल खलसंगी परे, सेवे अवसर देख; तनु अशक्तज्युं लकडी, ज्ञान भेद पद लेख ॥१॥ जे जीव, पुद्गलना संबंधने दुर्जनना संग जेवो माने, पण न छूटके पुद्गलनो संग करे ते पण साक्षी मात्र रहे तेमां आसक्त न थाय. जेम अशक्त माणस, लाचारीथी लाकडी राखे पण मनमां शरमाय. जो हुं सशक्त थाउं तो लाकडीने छोडी दउं, एम सम्यक् ज्ञान वडे विचारीने आत्मा अने पुद्गलने सर्वथा जूदा जाणे, अंतरंग उदासीन परिणमी होय. पापकर्म करतां बहु भय राखे अने स्व आत्माने परमात्मा समान जाणी तेने प्रगट करवानी रुचिवाळो ते अंतरात्मा कहेवाय. ते चोथा गुणस्थानथी बारमा गुणठाणा सुधी होय. परमात्मानुं स्वरूपः—दोहरो—प्यारो आप स्वरूपमें, न्यारो पुद्गल खेल; सो परमात्मा जानीए, नहि जस भवको मेल ॥१॥ आत्मस्वरूपमां मग्न—ज्ञान दर्शनमां अखंड उपयोग होय—अने पुद्गलना प्रपंचथी भिन्न रही घनघाती कर्ममलने दूर करीने अघाती कर्मने दूर करनार ते परमात्मा कहेवाय. ते तेरमा—चौदमा गुणठाणे अने सिद्धमां होय. हवे जीवनुं स्वरुप, अनेक लक्षणोथी कहे छेः—दोहरो—समता रमता उर्ध्वता, ज्ञायकता सुख-

भास, वेदकता चैतन्यता, ए सब जीव-विलास ॥१॥ आत्मा, 'समता' नामना लक्षण वडे युक्त छे. वर्तमान समये असंख्यात प्रदेशात्मक जे चैतन्य स्थिति, आत्मानी छे; ते भूतकालना अनंत समयमां हती अने अनंत भविष्यकालमां पण एज स्थिति रहेवानी. जेमां वध-घट थवानुं नथी ते 'समता'-समपणुं ते जेनुं लक्षण छे-ते जीव छे. वृक्षादि, पशु, पक्षी अने मनुष्य प्रमुखने विषे जे कांइ रमणीयपणुं जणाय छे, अथवा जेना वडे ते सर्व (वृक्षादि), प्रगट स्फुर्तिवाळां-सुंदरपणा सहित देखाय-छे ते रमणीयपणुं-'रमता' छे लक्षण जेनुं ते जीव पदार्थ छे. कोइपण जाणकार, पोताना अविद्यमानपणे कोइपण वस्तुने जाणे ए बनवा योग्य नथी. प्रथम पोतानुं (आत्मानुं) विद्यमान (अस्ति) पणुं घटे छे अने कोइपण पदार्थनुं ग्रहण, के त्यागादि करवामां पोतेज कारण छे. एवो जे सर्वथी प्रथम रहेनारो जे पदार्थ ते जीव छे;-तेने गौण करी कोइपण कांइ जाणवा मागे तो ते बनवुं अशक्य छे. माटे ते'ज मुख्य होय तो सर्व कार्य शक्य छे. एवो जे प्रगट 'उर्ध्वता' धर्म, ते जेने विषे छे ते जीव छे. अथवा एक समयमां समश्रेणीए उर्ध्वगति करी मोक्ष पहोंचे एवो उर्ध्वता धर्म (स्वभाव) वाळो जीव छे. प्रत्यक्ष एवा जड पदार्थो अने चेतन, ते जे लक्षणे करी भिन्न पडे छे ते लक्षण जीवनुं 'ज्ञायकपणुं' छे. कोइपण समये ज्ञायक सिवाय 'आ जीव छे आ जड छे,' एम कोइपण अनुभवी शके नहि अने ज्ञायकपणुं जीव विना बीजा कोइपण पदार्थमां संभवी शकेज नहिं. माटे जेमां 'ज्ञायकपणुं' छे ते जीव छे. शब्दादि विषयोमां अथवा समाधि आदि जोग सबंधी स्थितिमां सुख संभवे छे-जणाय छे, तेनुं पृथक्करण (भिन्नभिन्न) करी जोतां छेवटे

ते सर्वने विषे सुखनुं कारण एकज जीव पदार्थ संभवे छे; कारण? जीवना अव्याबाध आत्मिक सुखनो 'भास'
त्यांपण थाय छे वस्तुतः शब्दादिमां सुख नथी अने सुख पनुं लक्षण पण नथी. माटे तीर्थंकर देवे 'सुखभास'
(सुखनुं स्पष्ट थवुं) ते जीवनुं लक्षण कहेल छे. आ खारुं छे, आ मधुर छे, हुं आ स्थितिमां छुं, हुं सुखी छुं, दुःखी
छुं आ वगेरे जे वेदन (ज्ञान)=अनुभवपणुं, ते जो कोइमां पण होय तो ते केवल आ जीव पदार्थने विषे छे. अर्थात्
'वेदकपणुं' ए जीवनुं लक्षण छे. अनंत अनंत कोटी तेजस्वी दीपक, मणि, चंद्र, सूर्यादिकनी कांति, जेना प्रकाश
विना प्रगटवा समर्थ नथी. अर्थात् जे पदार्थना प्रकाशकने विषे चैतन्यपणाथी ते पदार्थो जाण्या जाय छे, ते
पदार्थो प्रकाश पामे छे; स्पष्ट भासे छे ते जे कोइ छे ते जीव छे. माटे निराबाध प्रकाशमान चैतन्य ते जीवनुं
लक्षण छे. ए पूर्वोक्त लक्षणो-विलासो जीवना छे. हवे आठ प्रकारना आत्मानुं स्वरूप कहे छेः-१ द्रव्यात्मा,
ते असंख्यात प्रदेशी, जे बहिरात्मभावे परिणम्यो ते बहिरात्मा, अंतरात्म-परिणतिए परिणम्यो ते अंतरात्मा
अने परमात्मभावे परिणम्यो ते परमात्मा. २ कषायात्मा, ते निश्चय अने व्यवहार नये बहिरात्माज कहीए.
३ योगात्मा, ते निश्चय नयथी बहिरात्मा अने व्यवहार नये शुद्ध योग ते अंतरात्मा, अशुद्ध योग ते बहिरात्मा.
४ उपयोगात्मामां, पहेला चार ज्ञाननो उपयोग ते अंतरात्मा अने केवलज्ञाननो उपयोग ते परमात्मा. त्रण

२ ज्ञान-दर्शन अने उपयोगमां शुं विशेषपणुं छे? उत्तर-ज्ञानदर्शन ते लब्धि अने उपयोगरूप छे. उपयोग ते उपयुक्तकाले होय. जेम छद्मस्थनो उपयोग, अंतर्मुहूर्ते परावर्त्तन पामे छे, पण लब्धिरूपे होय छे, ज्ञान, दर्शन बन्ने एक साथे होय छे पण बन्नेनो उपयोग एक काले न होय; केवलीने पण उपयोग, समयांतर होय छे.

दर्शननो उपयोग ते अशुद्ध परिणतिए बहिरात्मा, अने शुद्ध परिणतिए अंतरात्मा. केवलदर्शननो उपयोग ते परमात्मा. त्रण अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा. ५ ज्ञानात्मा अने ६ दर्शन आत्मानुं स्वरूपः-उपयोगात्मा प्रमाणे जाणवुं. ७ चारित्रात्मामां सामायिकादि चार चारित्र अने विरतिपणुं. ए पांच क्षायोपशमिक भावे अंतरात्मा, यथाख्यात चा०, छद्मस्थ-आश्रयी अंतरात्मा अने केवली-आश्रयी परमात्मा. ८ वीर्यात्मामां बालवीर्यनी परिणतिए (मिथ्यात्वी) बहिरात्मा अने समकीती अंतरात्मा. बालपंडितवीर्य, देश विरतिनी परिणतिए अंतरात्मा. पंडितवीर्य, ते छद्मस्थ-आश्रयी अंतरात्मा अने केवली आश्रयी परमात्मा. ए ८ आत्मानुं लेश मात्र स्वरुप कह्युं. षड्द्रव्यनुं स्वरुप, विस्ताररुचि जीवोए सातनय, चारनिक्षेप, षड्उपक्रम, नव अनुगम, ओघ निष्पन्न, नाम निष्पन्न अने सूत्रालापक निष्पन्न निक्षेप नियुक्ति सहित अने स्याद्वाद शैलीए अनंत नयात्मक सिद्धांतथी जाणवा प्रयास करीए तोपण सर्वथा षड्द्रव्यना स्वरुपनुं पार न पामीए. तथापि षड्द्रव्यमां असंख्यात प्रदेशी, अनंत केवलज्ञान-केवलदर्शन-चारित्र अने वीर्यरुप अनंत चतुष्टयमय, आत्मानी शुद्ध सत्तानी श्रद्धा (प्रतीति) करीने विचारवुं के हुं योगत्रय रहित छुं, राग-द्वेष रहित छुं, सत्ताए सच्चिदानंद स्वरुप छुं, पूर्णानंदमयी छुं. हुं सिद्ध समान छुं. तेम सर्व जीवो सिद्ध समान छे. एम जे जीव माने-अनुभवे ते जीव शुद्ध सम्यक्दृष्टि जाणवो अने जे शुद्ध आत्मिक शुद्ध सत्ताने न माने तेनी सघली क्रिया, साध्यशून्य (निष्फल)

३ आत्माना ८ भेद अशुद्ध द्रव्यास्तिकनयथी छे.

जाणवी. जो जीव, सत्ताए सिद्ध समान छे तो सत्तामां केवलज्ञान पण छे. जो सत्तामां केवलज्ञान न होय तो, केवलज्ञानावरणीय प्रकृति कोनुं आवरण करशे? वळी नंदी सूत्रमां 'अक्षर'नो अनंतमो भाग (सर्व जीवनो) सदा उघाडो (निरावरण) छे, आ वस्तु केम घटी शकशे? वली जो केवलज्ञान सत्तामां न होय तो मत्यादि ४ ज्ञान पण संभवे नहिं, कारण? ते चारे ज्ञान, केवल ज्ञानना अंशो (पेटा विभागरूप) क्षायोपशमिक भावे छे. माटे मूलरूप केवलज्ञानज सत्तामां न होय तो शाखारुप मत्यादिज्ञान पण न होइ शके. "मूलंनास्तिकुतः शाखा?" अरे संसारी भव्य जीवने तो केवलज्ञान, सत्तामां छे, पण अभव्य जीवने पण सत्तामां छे, पण तेनो पलटवानो स्वभाव न होवाथी-निबड आवरण होवाथी अने शुद्ध समकितनी प्राप्ति कोइकाले न थवाथी तेने केवल प्रगटतुं नथी, भव्यो पण बधाय केवलज्ञान प्रगट करीने मोक्षे जशे नहि पण योग्यता होवाथी भव्य केह-ल छे सर्व जीवोने 'ज्ञान' सत्ताए समान छे. पण आवरणनी तरमता अने क्षयोपशमनी विचित्रताथी ओछु-वधतुं ज्ञान थाय छे. माटे शुद्ध श्रद्धा वडे ज्ञान-क्रियाना बलथी केवलज्ञान प्रगटाववा प्रयास करवो. शुद्ध श्रद्धान विना द्रव्य क्रिया ते पुण्य फलने आपनार छे, तेथी जीवनुं कार्य थाय नहिं. माटे वृत्त्यादि सह आचारंगादि सूत्रो अने तत्त्वार्थादि ग्रंथोनुं अवलोकन करी केवलज्ञानने प्रगट करवा ज्ञान पूर्वक क्रिया रुचिवाळा थवुं. अनेक जीवो सिद्ध थया, थाय छे अने थशे ते सम्यक् ज्ञान सम्यक् दर्शन अने सम्यक् चारित्रना प्रभावथी माटे जे जीवने कल्याण करवुं छे ते तो पोताना हाथमां छे. इति षद्द्रव्य विचार समाप्त.

रुपि–अरुपिना बोल–गाथा–कम्मट्ठपावट्ठाणा, मण वय जोगा य कम्मदेहाय; एसा चउ चउफासा, घणोदहि घणवाय तणुवाया ॥१॥ उरालाइ चउदेहा, पुग्गलत्थिकाये दव्य लेसाय; तह [चेव] कायजोगो, नायव्वा अट्ठफासाय ॥२॥ धम्माधम्मा गासा, जीव अद्धा पावठाण निव्वत्ती; दिट्ठिति पंचुट्ठाणा, उवओगा भावलेसाय ॥३॥ उग्गह सन्ना वुद्धी, चउ चउ चउ चेव एगसट्ठीय, एएसव्वे भाणिया, अरूविणो इत्थं नायव्वा ॥४॥ हवे आ चार गाथानो शब्दार्थ कहे छेः–८ कर्म, १८ पापस्थान, १ मनोयाग, १ वचनयोग अने १ कार्मण शरीर. ए (२९) चार स्पर्शवाळा छे. एनो भावार्थ कहे छेः–आठ स्पर्शवाला पुद्‌गलो बादर होवाथी कर्मवर्गणाने योग्य न होय माटे कर्मने चतुःस्पर्शी कह्या. आत्मा जे परिणाम वडे कर्म बांधे ते परिणाम–मिथ्यात्वादिभाव–, चतुः स्पर्शी-पुद्‌गल जन्य होवाथी पापस्थानोने चतुःस्पर्शी कहेल छे. मन, वचन अने कार्मण शरीरना पुद्‌गलो सूक्ष्म–इंद्रिय गोचर नहि-होवाथी चतुःस्पर्शी कहेल छे. घनोदधि, घनवायु, तनुवायु, उदारिकादि ४ शरीर, पुद्‌गलास्तिकाय, ६ द्रव्यलेश्या अने काययोग. ए १५ बादर परिणामि होवाथी आठस्पर्शी जाणवा. जोके कृष्णादि द्रव्यलेश्याना पुद्‌गलो आठस्पर्शी होवा छतां पण सूक्ष्म होवाथी अतिशय ज्ञानी सिवाय कोइ जोइ शके नहि. पूर्वोक्त २९ ने १५ मलीने ४४ बोल रुपी जाणवा. हवे अरूपी कहे छेः–१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय,

२ आ गाथानो अशुद्ध होवाथी यथामति सुधारेल छे. ३ लेश्यानुं विशेष वर्णन लेश्याना थोकडाथी जाणवुं.

४ जीवास्तिकाय, ५ काल, अढार पापस्थाननी निवृत्ति, दृष्टि ३:–समकितदृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने मिश्रदृष्टि. १ उत्थान, २ बल, ३ कर्म, ४ वीर्य, अने ५ पुरुषाकार. १२ उपयोग, ६ भावलेश्या, १ अवग्रह, २ इहा, ३ अवाय अने ४ धारणा, आहारादि ४ संज्ञा अने ४ बुद्धि–१ औत्पातिकी, २ वैनयिकी, ३ कार्मिकी, अने ४ पारिणामिकी. ए ६१ बोल अरुपी जाणवा.

अथ प्रमाणबोध–विचार. श्रीअनुयोगद्वारसूत्रमध्ये गणधरदेवे भव्य जीवना सुख बोधने माटे त्रण प्रकारना अंगुल अने त्रण प्रकारना पल्योपमनु स्वरूप वर्णवेलुं छे. ते कहे छे:—त्रण प्रकारना अंगुलना नाम–१ आत्मागुल, २ उत्सेधांगुल अने ३ प्रमाणांगुल. हवे आत्मांगुलनुं स्वरूप कहे छे:–भरतादि १५ क्षेत्रमां जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ते काले ते आरे ते मनुष्यना पोतपोताना १२ अंगुले तेनुं मुख थाय तेने नव गुणा करतां १०८ अंगुलनो ते पुरुष उंचो होय ते पुरुष, प्रमाणोपेन कहीएं. अथ मानोपेन पुरुष कोने कहीएं? पुरुष प्रमाणे उंडी जलथी भरेली कूंडी होय तेमां ते पुरुषने बेसाडतां ते कूंडीमांथी एक द्रोण प्रमाण जल बाहेर नीकले तो ते पुरुषने मानोपेत कहीएं. हवे द्रोणनो मान कहे छे:–बे असलीए एक पशली, बे पशलीए एक शइ, चार शइए एक कुडव,

४ पापस्थाननी निवृत्ति, जे परिणामो वडे थाय छे ते अध्यवसायो जीवना होइने ते अरुपी छे. ५ मिथ्यात्वना दलिकोनी शुद्धता अशुद्धतादि स्थितिने लइने जीवना परिणाम तेवा थाय छे माटे अरुपी छे. ६ उत्थानादि, आत्मानी शक्तिरुप छे माटे अरुपी छे. तेमज उपयोगादिक माटे बुद्धिमान पुरुषे स्वयं समजी लेवुं.

चार कुडवे एक प्रस्थ, चार प्रस्थे एक आढक, चार आढके एक द्रोण थाय. उन्मानोपेत कोने कहीएं? जे पुरुषने तोलतां अर्ध्धभारनुं वजन थाय तेने उन्मानोपेत पुरुष कहीएं. अर्द्धभारनुं मान कहे छेः—चार कर्षनुं एक पल्य, १०५ पल्ये एक तुला अने १० तुलाए अर्द्धभार थाय. ए प्रमाणे प्रमाण, मान अने उन्मानयुक्त होय. वली लक्षण, (रेखादि) व्यंजन (तलमसादि) अने गुण (क्षमादि) सहित होय ते उत्तम पुरुष जाणवो. उत्तम पुरुष १०८ अंगुलनो उंचो होय, मध्यम पुरुष १०४ अंगुलनो उंचो होय अने कनिष्ट पुरुष ९६ अंगुलनो उंचो होय. पूर्वोक्त प्रमाणोपेत पुरुषना छ आत्मांगुले एक पाद (पगना मध्य भागनो विस्तार), बे पादे एक वेंत, बे वेंते एक हाथ, बे हाथे एक कुक्षि, बे कुक्षिए एक दंड अथवा धनुष्य, बे हजार धनुष्ये एक गाउ, चार गाउए एक योजन थाय. जे काले जे आरे जे मनुष्यनु आत्मांगुल होय तेना वडे ते वखतना गाम, नगर, वन, कूवा, तलाव, वाव, गढ, पोळ, कोठा, यान (रथादिक) वगेरे ७२ बोलनो मान मपाय छे. हवे उत्सेधांगुलनुं मान कहे छेः—अनंत सूक्ष्म परमाणुओनो एक व्यवहारिक परमाणु थाय छे. ते व्यवहारिक परमाणु पण शस्त्रथी छेदाय नहि, अग्निथी बळे नहि, गंगा नदीना प्रवाहमां पण नाश पामे नहि. जेना बे विभाग थइ शके नहि. तेने तत्त्वज्ञोए माप माटे सहुथी प्रथम ग्रहण करेल छे. तेवा अनंत परमाणुओनी एक उत्श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका थाय, आठ उत्श्लक्ष्ण श्लक्ष-

२ आ माप मगधदेशमां प्रचलित हतो, वैदक शास्त्रमां एक 'कर्ष'ने एक रुपियाभार गणे छे अने ४ कर्षनु पल्य, १६ पल्यनु प्रस्थ, ४ प्रस्थनो एक आढक, ४ आढकनो एक द्रोण एम हालमां गणत्री करवामां आवेल छे. ३ निश्चय नयथी ते स्कंध कहेवाय.

णिकानी एक श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका थाय, आठ श्लक्ष्ण०नी एक उर्ध्वरेणु थाय, आठ ऊर्ध्वरेणुनो एक त्रसरेणु थाय,
आठ त्रसरेणुनो एक रथरेणु थाय, आठ रथरेणुनो देवकुरु-उत्तरकुरुना युगलियानो एक केशाग्र थाय, कुरुक्षे-
त्रना मनुष्यना आठ वाळाग्रवडे हरिवर्ष-रम्यक वर्षना मनुष्यनो एक वाळाग्र थाय, तेवा आठ केशाग्रथी हैम-
वंत-हैरण्यवत क्षेत्रनाम०नो एक केशाग्र थाय, तेवा आठ केशाग्रथी पूर्व-पश्चिम महाविदेह नाम०नो एक केशाग्र
थाय, तेवा आठ केशाग्रथी भरत-ऐरावत क्षेत्रनाम०नो एक केशाग्र थाय, तेवा आठ केशाग्रे एक लीख थाय,
आठ लीखथी एक जुं थाय, आठ जुं थी एक यवमध्य थाय, आठ यवमध्यथी एक उत्सेधांगुल थाय, चोवीश
उत्सेधांगुले एक हाथ थाय, चार हाथे एक मनुष्य थाय अने बे हजार मनुष्य वडे एक गाउ थाय, ए उत्सेधां-
गुलथी चोवीश दंडकना जीवोना शरीरनी अवगाहना (उंचाइ) मपाय छे. हवे प्रमाणांगुलनुं मान कहे छेः—श्री
भरतादिक चक्रवर्तीओनुं जे कांगणी रत्न छे तेनुं आठ सोनैयाभार वजन होय, हवे सोनैयानुं माप कहे छेः–
४ मधुरतृणफलनो एक श्वेत सरसव थाय, १६ सरसवे एक अडद थाय, बे अडदे एक गुंजा थाय, ५ गुंजाए एक
मासो थाय अने १६ मासानो एक सोनैयो थाय. एवा आठ सोनैयाभारनुं एक कांगणी रत्न होय. तेनां छ तळां,
आठ खूणा, बार हांसो अने सोनीनी एरणने आकारे छे. ते कांगणी रत्ननी एकेकी हांस, एकेक उत्सेधांगुलनी
होय छे. ए उत्सेधांगुल, ते श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामीना आत्मांगुलथी अर्धुं थाय. श्री महावीर

१ त्रस जीवना चालवाथी जे रज उडे ते. २ रथादि चालवाथी जे रज उडे ते. ३ उत्सेधांगुलथी वीरप्रभुनुं आत्मांगुल बमणुं थाय.

स्वामीना पांचसें आत्मांगुल वडे एक प्रमाणांगुल थाय. पाद, वेंत अने यावत् योजन सुधीनुं मान पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणांगुल वडे पृथवी, पर्वत, विमान, नरकावास, द्वीप, समुद्र, नरक-भूमि देवलोक, लोक, अने अलोकादिक २९ बोलनी लंबाइ, पहोळाइ, उंचाइ अने परिधि वगेरेनुं माप थाय छे. ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या. ते प्रत्येकना त्रण त्रण भेद छेः-१ श्रेणि (सुची) अंगुल, २ प्रतर अंगुल अने ३ घन अंगुल. सुची अंगुल=ते एक प्रदेश जाडी ने पहोळी अने एक आंगुलनी लांबी एवी एक एक आकाश प्रदेशनी श्रेणि, ते असंख्यात प्रदेशात्मक होवा छतां असत्कल्पनाए त्रण प्रदेश रुप आ : प्रमाणे छे प्रतरांगुल=ते सुची अंगुलने सुची अंगुलथी गुणवाथी प्रतरांगुल थाय. ते असत्कल्पनाए समान लंबाइ-पहोळाइवाला नव प्रदेशात्मक ⁝⁝⁝ आ प्रमाणे छे. घनांगुल-ते प्रतरांगुलने सुची अंगुलथी गुणतां घनांगुल थाय. ते असत्कल्पनाए २७ प्रदेशात्मक थाय, एनी लंबाइ-पहोळाइ जाडाइ समान होय छे. वस्तुतः असंख्यात कोडाकोडी योजन प्रमाण लांबी, एक आकाश प्रदेशनी पहोळी अने जाडीते श्रेणि. ते श्रेणिने श्रेणिगुणो करतां प्रतर थाय. (अहियां लंबाइ-पहोळाइ सरखी होय) प्रतरने श्रेणि गुणो करतां घन थाय. (अहिं लंबाइ वगेरे समान होय) घनीकृत लोकने संख्यात गुणो करतां संख्याता लोक थाय. ते घनीकृत लोकने असंख्यात गुणो करतां असंख्याता लोक थाय अने अनंतगुणो करतां अनंता लोक थाय. ते अनंता लोकना आकाश प्रदेश जेटला, निगोदना एक शरीरमां

१ यद्यपि श्री वीरस्वामीना आत्मांगुलथी प्रमाणांगुल बसेगणुं थाय, तथापि अढीगणी पहोळाइ वडे गुणवाथी पाचसेंगणुं थाय.

जीवो छे ए त्रण प्रकारना अंगुल² कह्या. हवे त्रण प्रकारना पल्योपमनुं स्वरुप कहे छेः-१ उद्धार पल्योपम, २ अद्धापल्योपम अने ३ क्षेत्र पल्योपम. एकेक पल्यो०ना बादर अने सूक्ष्म बे भेद छे. प्रथम बादर उद्धार पल्योपम कहे छेः-उत्सेधांगुलने मापे एक योजननो लांबो-पहोळो, उंडो अने त्रण गुणी परिधि जेनी होय तेवो पालो, देवकुरु ने उत्तर कुरुक्षेत्रना एक दिनथी यावत् सात दिन सुधीना जन्मेला युगलिया, तेना वाळाग्रे करी निबड-ठांसी ठांसीने भरीएं. जे अग्निथी बळे नहि, प्रचंड वायुथी एक रज मात्र उडे नहि, चक्रवर्तीना सैन्यथी दबाय नहि, गंगा नदीनो प्रवाह चाले तोपण भींजाय के भेदाय नहि. एवी रीते भरेल पालामांथी समये समये वालाग्र काढतां जेटले काले ते पालो खाली थाय तेटला कालने बादर उद्धार पल्योपम कहेल छे. ते संख्याता समयोनुं जाणवुं एवा दश कोडाकोडी पल्योपमनुं बादर उद्धार सागरोपम थाय. सूक्ष्म उ० नुं स्वरुप सुगमताथी समजवा माटे बादर उ० नी प्ररुपणा करेल छे पण. एनुं कांइ प्रयोजन (उपयोग थतो) नथी. हवे सूक्ष्म उद्धार पल्यो०नुं स्वरुप कहे छेः-पूर्वे कहेल एकेक वालाग्रना असंख्यात खंड कल्पवा. ते चक्षुथी न जोइ शकाय एवा सूक्ष्म पुद्गलना असंख्यातमा भाग प्रमाणे होय, निगोदना जीवना शरीरथी असंख्यात गुणा अने बादर पृथवी कायिक जीवना शरीर जेवडा खंड होय तेवा वालाग्र वडे पूर्वनी माफक पालो भरीएं, पछी समये समये एकेक वालाग्र काढतां जेटले काले ते पालो (जेटला वखतमां) खाली थाय तेटला कालने सूक्ष्म उद्धार पल्यो० कहीएं;

२ अगुलनु विशेष स्वरुप जाणवा माटे अगुल सित्तरी ग्रथ जोवु.

ए असंख्याता समयोनुं जाणवुं. एवा दश कोडाकोडी पल्योपमें सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय. आ पल्यो० ने सागरो०थी द्वीप अने समुद्रनुं मान थाय छे. अढी सागरो०ना अथवा पचीश कोडाकोडी पल्यो०ना जेटला समयो थाय तेटला द्वीप समुद्रो छे. अर्थात् असंख्याता द्वीप–समुद्रो छे. आजंबूद्वीप, एक लाख योजननो लांबो–पहोळो छे, एम अनुक्रमें बमणा करतां छेल्लो स्वयंभूरमण समुद्र, अर्द्धरज्जु (राज)नो लांबो–पहोळो छे. हवे अद्धापल्योपमनु स्वरुप कहे छेः–पूर्वनी जेम पालो, युगलियाना वाळाग्रथी भरीए अने शो शो वर्षे एकेक वालाग्र काढतां जेटले काले खाली थाय तेटला कालने बा० अद्धा पल्यो० कहीएं, ते संख्यात कोटी वर्षनुं थाय छे; एवा दश कोडाकोडी पल्योपमें बा० अद्धा सागरोपम थाय. एपण प्ररुपणा मात्र छे एनुं कांइ प्रयोजन नथी. हवे सूक्ष्म अ०नुं स्वरुप कहे छेः–पूर्ववत् वालाग्रोना एकेकना असंख्यात खंड करीने पूर्ववत् भरीएं तेमांथी सो सो वर्षे एकेक खंड काढतां जेटले काले ते खाली थाय; तेटला कालनें सूक्ष्म अद्धा पल्यो० कहे छे. एवा दश कोटी–कोटी पल्योपमें सू० अद्धा सागरो० थाय. आ सू० अद्धा पल्यो० अने सागरो०थी नारक प्रमुखना आयुष्यो, कर्मनी स्थिति अने पृथवीकायिक आदि जीवोनी कायस्थिति मपाय छे. हवे क्षेत्र पल्योपमनुं स्वरुप कहे छेः–पूर्वोक्त रीतिए भरेल पालाने स्पर्शीने रहेला आकाश प्रदेशोमांथी एकेक प्रदेशनो समये समये आकर्षण करतां जेटले काले ते पालो खाली थाय; तेटला कालने बा० क्षेत्र पल्योपम कहीएं, तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमें बा० क्षेत्र सागरोपम थाय. तेमां असंख्याता कालचक्रो जाय छे; ते पण निष्प्रयोजन छे. पूर्वनीपरे भरेल

पालोने स्पर्शी अने अस्पर्शी रहेला आकाश प्रदेशोमांथी एकेक प्रदेशने समये समये काढतां जेटले वखते, ते पालो खाली थाय तेटला कालने सूक्ष्म क्षेत्र पल्यो० कहीएं, तेवा दश कोटीकोटी पल्योपमें सू० क्षेत्र सागरोपम थाय. आ सू० क्षेत्र पल्योपम अने सागरोपमनो उपयोग, द्रव्य प्रमाण संबंधी विचारणाने प्रसंगे दृष्टिवादमां करवामां आवे छे; अर्थात् एनो दृष्टिवादमां काम पडे छे. इति प्रमाण बोध समाप्त.

श्रीसिद्धांत–मानविचार—१ आचारांग सूत्र, अध्ययन २८, मूल श्लोक संख्या २५००, निर्युक्ति–श्लोक ४५० चूर्णी–श्लोक ८३००, टीका–श्लोक १२००० ॥ २ सूयगडांगसूत्र, अध्ययन २३, मूलश्लोक २१००, निर्युक्ति–श्लोक २५०, चूर्णी–श्लोक १००००, टीका–श्लोक १२८५० ॥ ठाणांगसूत्र, अध्य० १०, मू० ३७७०, टीका १५२५० ४ समवायांगसूत्र, मू० १६६७, चूर्णी ४००, टीका ३७७६ ॥ ५ व्याख्यापन्नती (भगवती)सूत्र, शतक ४१, मू० १५७५२, चुर्णी ४०००, टीका १८६१६ ॥ ६ ज्ञाता धर्मकथांगसूत्र, अध्य० १९, मू० ५५००, टीका ४२५२ ॥ ७ उपाशकदशांगसूत्र, अध्य० १०, मू० ८१२, टीका ९०० ॥ ८ अंतगडदशांगसूत्र, अध्य० ९०, मू० ७९०, टीका ३०० ॥ ९ अनुत्तरोववाइसूत्र, अध्य० ३३, मू० २९२, टीका १०० ॥ १० प्रश्नव्याकरणसूत्र, अध्य० १०, मू०

२ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमना विचारमां वालाग्रना असंख्यात खंड करवानी जरुर जणाती नथी. कारण ? अस्पर्शेल आकाश प्रदेश ग्रहण करायेल छे, छतां जूनी छपायेल प्रतोमां खंड करवानुं लखेल छे. ३ पंच सग्रहमां जीवोना प्रमाणनी संख्या माटे क्षेत्र पलयोपम लीधुं छे. आवश्यकमां पण सामायिकना स्वरुपमां श्रुत, समकित, देश विरतिना आकर्षमां एनु प्रयोजन बनावेल छे.

१२५०, टीका० ४६०० ॥ ११ विपाकसूत्र, अध्य० २०, मू० १२१६, टीका ९०० ॥ मूलसूत्र सुधर्मास्वामीकृत छे. प्रथमना बे अंगसूत्रनी टीका शीलांकाचार्यकृत छे अने नव अंगनी टीका अभयदेवसूरिकृत छे, निर्युक्ति भद्रबाहुस्वामी कृत छे अनेचूर्णी पूर्वाचार्यकृत छे. १२ उपांगसूत्रः—१ उववाइ सूत्र, मू० १२००, टीका ३१२५, अभयदेवसूरिकृत छे. २ रायप्रसेणीसूत्र, मू० २०७८, टीका ३७००, मलयगिरिकृत छे. ३ जीवाभिगमसूत्र, मू० ४७००, टीका १४०००, मलयगिरिकृत छे. ४ पन्नवणासूत्र, मूलश्यामाचार्यकृत छे. श्लोक ७७८७, अने टीका (लघुवृत्ति) हरिभद्रसूरिकृत छे, वृहद्वृत्ति १६०००, मलयगिरिकृत छे. ५ जंबूद्वीपपन्नती सूत्र, मू० ४१४६, चूर्णी १८६०, अने टीका १२०००, मलयगिरिकृत छे पण हाल उपलब्ध थती नथी; परंतु हाल शांतिचन्द्रउपाध्याय कृत छे तथा उपा० धर्मसागरकृत अने हीरसूरिकृत पण छे. ६ चंद्रपन्नतीसूत्र, मू० २२००, टीका० ९४११, मलयगिरिकृत छे. बीजी लघुवृत्तिना १००० श्लोक छे. ७ सूर्यपन्नतीसूत्र मू० २३००, लघुवृत्ति १००० अने वृहद्वृत्तिना ९,००० श्लोक मलयगिरिकृत छे. ८–१२ निरयावलिकासूत्रना अध्ययन ५ छे १ कप्पिया, २ कप्पवडंसिया, ३ पुप्फिया, ४ पुप्फचुलिया अने ५ विन्हिदशा. ए पांचना पेटा अध्ययन ५२ छे मू० श्लो० ११०९ छे अने टीका श्री चंद्रसूरिकृत श्लो० ७०० छे. ६ छेदसूत्र कहे छेः–१ व्यवहारसूत्र, मूलअध्य० १० भद्रबाहु स्वामीकृत

१ व्यवहारसूत्रनी निर्युक्तिनी संख्या मली शकती नथी भाष्यकारे तेनी अंदर स्वीकारेल छे, भाष्यमा अंतर्गत थयेल छे तेथी जूदी संख्या जणाती नथी.

श्लोक ६०० छे, भाष्यना श्लो० ६०००, चूर्णीना १०३६१, टीका मलयगिरिकृत ३३६२५ श्लो० छे २ बृहद्कल्पसूत्र. मू० श्लो० ४७३, अध्य० २४, लघुभाष्य ८०००, बृहद्भाष्य १३०००, चूर्णी १४३२५, टीका क्षेम-कीर्तिसूरिकृत ४२००० श्लोक छे. ३ निशोथसूत्र, अध्य० २० मू० श्लो० ८१५, लघुभाष्य-७४००, बृहद्भाष्य-१२०००, चूर्णी २८०००, श्लोक छे. ४ महा निशीथसूत्र, मूल-लघुवाचना-३५००, मध्यमवाचना-४२०० अने बृहद्वाचना-४५०० श्लोक छे. ५ दशाश्रुतस्कंधसूत्र, मू० श्लो० १८३५, निर्युक्ति-१६८, चूर्णी-२२४५, ६ पंच-कल्पसूत्र. मू० श्लो० ११३३, अध्य०-१६, भाष्य ३१२५, चूर्णी-२१३० श्लोक छे. जीतकल्प. मू० श्लो० १०८, चूर्णी-१००० भाष्य-३१२४ अने टीका-१२००० श्लोक छे. चार मूलसूत्रोनुंमान-१ आवश्यकसूत्र, मू० श्लो० १२५, निर्युक्ति भद्रबाहुस्वामीकृत श्लो० ३१००, चूर्णी १८०००, बृहद्टीका हरिभद्रसूरिकृत श्लो० २२०००, लघुवृत्ति तिलकाचार्यकृत १२३२१, अंचलगच्छाचार्यकृत १२०००, भाष्य-४००० अने मल्लधारी हेमचंद्रसूरिकृत टिपण श्लो० ४६०० छे विशेपावश्यक, ए मूल आवश्यक सूत्रना विशेषभाष्यरुप छे, तेना श्लो० ५०००, लघु-वृत्ति १४०००, बृहद्वृत्ति-२८००० अने स्वोपज्ञ[4]वृत्ति पण छे. २ दशवैकालिकसूत्र, मू० श्लो० ७००, श्रीशय्यं-

---

२ बृहद्कल्पनी मलयगिरिकृत टीका हाल उपलब्ध नथी. ३ विशेपावश्यक सूत्र, अतिशय गभीर अर्थवालुं होवाथी ते महाभाष्यना नामथी ओळखाय छे, तेना रचनार श्री जिनभद्रगणी क्षमा श्रमण छे. कोटयाचार्यकृत लघुवृत्ति छे अने मलधारीकृत बृहद्वृत्ति छे. ४ मूलना रचनारे जे मूलनी टीका (वृत्ति) करेल होय ते 'स्वोपज्ञ वृत्ति' कहेवाय छे.

भवसूरिकृत छे, निर्युक्तिना ४५०, चूर्णीना ७०००, दीपिका (लघुवृत्ति)ना २६००, तिलकाचार्यकृत टीकाना
७०००, मलयगिरिकृत वृत्तिना ७७००, हरिभद्रसूरिकृतटीकाना ६८१० श्लोक छे. ३ उत्तराध्ययनसूत्र, अध्य० ३६
मू० श्लो० २०००, वादिवैताल शांतिसूरिकृत बृहद्वृत्तिना १८०००, निर्युक्तिना ७००, चूर्णीना ६००० श्लोक छे;
लक्ष्मीवल्लभकृत टीका वगेरे अनेक टीकाओ छे. ४ पिंडनिर्युक्ति, मूल–भद्रबाहुस्वामीकृत छे. श्लो० ७००, मल-
यगिरिकृत टीकाना ७०००, वीराचार्यकृत टीकाना ७५००, लघुवृत्तिना ४००० श्लोक छे. ओघनिर्युक्ति–कर्ता
भद्रबाहुस्वामि. श्लो० १४००, भाष्यना ३००० चूर्णीना ७००० अने द्रोणाचार्यकृत टीकाना ७००० श्लोक छे.
बेचूलिकासूत्र छेः–१ नंदीसूत्र, श्री देववाचककृत छे, मू० श्लो० ७००, चूर्णीना २०००, हरिभद्रसूरिकृत लघुवृतिना
२३१२, मलयगिरिकृत बृहद्वृत्तिना ७७३५. श्री चन्द्रसूरिकृत ट्टिपण ३००० श्लोक छे. २ अनुयोगद्वार, मू०
श्लो० १८९९, चूर्णीना ३००५, हरिभद्रसूरिकृत लघुवृत्तिना ३५००, मल्लधारी श्री हेमचंद्राचार्यकृत बृहद्वृत्तिना
६००० श्लोक छे. १० पयन्ना कहे छेः–१ चउशरणपइन्नो–मू० गाथा ६३, २ आउरपच्चक्खाणपइन्नो–मू० गा० ८४,
३ भत्तपच्चक्खाणपइन्नो मू० गा० १७२, ४ संथारगपइन्नो, मू० गा० १२२, ५ तंदुलवेयालियपइन्नो, मू० गा० ४००,
६ चंद्रावेधक, मू० गा० ३१०, ७ देवेंद्रस्तव, मू० गा० २००, ८ गणिविज्ञापइन्नो, मू० गा० १००, ९ महापच्चक्खा-
णपइन्नो, मू० गा० १३४, १०–मरणसमाधिपइन्नो, मू० गा०७२०छे.१नी अवचूरीना श्लो० २२५ अने२नी वृत्तिना९००
श्लोक छे. ए ४५ आगमनी गणनाप्रमाणे १० पइन्ना कहेल छे. बीजा पण पइन्नाओ छे–१ वीरस्तव पइन्नो,

गाथा ४३, २ सिद्धिप्राभृत, श्लोक १५०, टीकाना ७५० श्लोक छे, ३ द्वीप सागरपन्नती, श्लो० २५०, टीका-
२५००, श्लोक छे, ४ ज्योतिष्करंडक, मू० ५०० टीका मलयगिरिकृत-१००० श्लोक छे. ५ अंगविद्यापइन्नो,
श्लोक ८८००, ६ अजीवकल्प, मू० ४५, ७ आराधना पताकामूल-९९३, ८ ऋषिभाषितना ७५० श्लोक छे ९
गच्छाचार पइन्नो, मू० १३८ श्लोक छे. इत्यादि अनेक छे आवधां अंग सूत्रोमांथी पूर्वाचार्योए उध्धृत करेल छे
एटले अंगमां अंतर्गत छे.

हवे नंदीसूत्रमां ७३ सूत्रना नाम कहेल छे ते सूत्रो त्रण प्रकारना छे::-१ कालिक सूत्र, २ उत्कालिक सूत्र
अने ३ तदूव्यतिरिक्त. कालिकसूत्र, पहेले अने छेल्ले पहोरे (दिवस के रात्रिए) भणाय के वंचाय, शेष ४ पहो-
रमां कालिकसूत्रनी सज्झाय न थाय. ते कालिकसूत्रना नाम कहे छेः-१ आचारंगादि ११ अंग, १२ उत्तराध्य-
यन, १३ दशाश्रुतस्कंध, १४ बृहत्कल्प, १५ व्यवहार, १६ निशीथ, १७ महानिशीथ, १८ ऋषिभाषित, १९
जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति, २० द्वीपसागर प्रज्ञप्ति, २१ चंद्रप्रज्ञप्ति २२ खुड्डिया विमाण पविभत्ति (विमानोनुंवर्णन करनार
लघुशास्त्र), २३ महल्लियाविमाण पविभत्ति (विमानोनुं वर्णनकर० महोटुं शास्त्र) २४ अंग चूलिया (अंगसू
त्रोनी चूलिका), २५ वग्गचूलिया (अध्ययननो जे समुह ते वर्ग तेनी चूलिका) २६ विवाहचूलिया, २७ अरूणोप-
पात. (ते अध्ययन भणवाथी अरूणदेवनुं आववुं थाय), २८ वरूणोपपात, २९ गरूडोपपात, ३० धरणोपपात,

२ एणइन्नो, प्रश्न व्याकरण सूत्रमांथी उध्धृत थयानुं कहेवाय छे. जेसलमेरना भंडारमा छे.

३१ वैश्रमणोपपात, ३२ वेलंधरोपपात, ३३ देवेंद्रोपपात, (२७थी ३३मां वरुण वगेरेनुं आववुं जाणवुं), ३४ उत्थानसूत्र (विषमासने बेसी क्रोधयुक्त अप्रसन्न मनथी ए सूत्र भणवाथी ग्रामादिक त्रास पामे-कंपी उठे), ३५ समुत्थान सूत्र (उत्थानथी विपरीत जाणवुं), ३६ नागपरिभावणिआ (नागकुमार देवो त्यां स्थिर थइने साधुने वंदनादि करे), ३७ निरयावलिका, ३८ कप्पिया, ३९ कप्पवडंसिया, ४० पुप्फिया, ४१ पुप्फचूलिया, ४२ विन्हिदशाए ४२ सूत्रो कालिक छे. उत्कालिकसूत्रना नाम कहे छेः—१ दशवैकालिक, २ कल्पाकल्प, ३ चूलाकल्पश्रुत, ४ महाकल्पश्रुत, ५ उववाइ, ६ रायपसेणी, ७ जीवाभिगम, ८ पन्नवणा, ९ महापन्नवणा, १० पमत्तापमत्त, ११ नंदी, १२ अनुयोगद्वार, १३ देवेंदथव (देवेंद्रस्तव), १४ तंदुलवेयालिय, १५ चंदावेधक, १६ सूर्यपन्नती, १७ पोरसीमंडल, १८ मंडल प्रवेश, १९ विद्याचारण विनिश्चय, २० गणिविद्या, २१ ध्यानविभक्ति, २२ मरणविभक्ति, २३ आत्मविशुद्धि २४ वीतरागश्रुत २५ संलेखणासूत्र, २६ विहार कल्प, २७ चरणविशोधि, २८ आतुरप्रत्याख्यान, २९ महापच्चक्खाण, ३० दृष्टिवाद, ए ३० सूत्रो उत्कालिक छे, ते चार अकाल तथा ३२ असज्झायने टालीने आठ पहोर सज्झाय थाय. हवे तद्व्यतिरिक्त कहे छे–१ आवश्यकसूत्र, ते कालिक उत्का० बन्नेथी जूदुं छे. ए ७३ सूत्रना नामो कह्या, तेमांथी हाल केटलाक सूत्रो नथी पाक्षिक सूत्रमां ८४ नामो (आगमो कहेल) छे तेमानां केटलाक नामो नंदीसूत्रमां नथी पण ते ठाणांगसूत्रमां छे. परंतु हाल सर्वसिद्धांतो उपलब्ध थता नथी. ४५ आगमो तो हाल सुलभउपलब्ध छे. पूर्वकालमां ८४ आगमो हता, पण कालदोष वगेरे कारणोथी घणा आगमो-

विच्छेद गया छे; तेमज वाचनाभेद अने पाठांतरो पण थयेल छे उत्कालिक सूत्रोमांथी केटलाक लभ्य छे अने केटलाक लभ्य नथी. जेटला वर्तमानमां विद्यमान आगमो छे तेनुं रहस्य स्याद्वादशैलीए विचारी–अनुभवीने जे जीव पोताना जीवनमां (वर्तनमां) मूकशे ते जीव पोतानुं कल्याण करशे. इति सिद्धांतमान विचार समाप्त.

अथ बत्रीश असज्झाय विचार—ठाणांगसूत्रना दशमा ठाणामां १० प्रकारनी अंतरिक्ष (आकाशने आश्रयी) असज्झाय होय तेना नाम–१ उल्कापात ते तारो खरे (रेखा सहित विविध प्रकाश सहित पडे), अथवा ज्वाला रहित अग्नि आकाशमांथी पडे ते उल्कापात कहेवाय. जो थोडी उल्कापात होय तो अल्पकाल असज्झाय होय अने मोटो उल्का० होय तो १९ पहोर सुधी असज्झाय होय. रात्रिने अंते तारो खरे तो सूर्योदय लगे असज्झाय होय. २ दिसिदाह ते आकाशमां कोइपण दिशामां महान् नगरदाह समान उद्योत जणाय तो असज्झाय. ३ गर्जना–अकाले गाजे तो अस०, ४ विद्युत्–अकाले वीजळी थाय तो अस०, ५ निर्घात–अकाले कडाका–महान् ध्वनि थाय तो अस०, ६ जुयए (युपक)–शुक्लपक्षना बालचंद्रमानो उदय थइने अस्त थाय त्यांसुधी अस०, ७ जक्खालिय–आकाशमां भूतादिकना चाळा थाय त्यांसुधी अस० ८ धूमिका–दीवस उग्या पछी जेटला समय

२ असज्झाय–पांचे प्रकारनी सज्झाय न थाय ते ३ उल्कापातादि समये ते स्थाने सज्झाय करवाथी देवता छलना करे. ४ धूमस ने झाकळ पडवा वखते सूक्ष्मपणाथी अप्काय भावित सर्वत्र थवा पामे छे.

सुधी धूम्र वर्षे तेटलो समय अस०, ९ महिका-झाकळ ज्यां सुधी वर्षे त्यांसुधी अस० १० रजोद्घात-वायु
घणो गुंजे अने आकाशमां धूळी चडे दिशा धुंधली थाय ते ज्यांसुधी होय त्यांसुधी असझाय.

हवे १० औदारिक शरीर संबंधी असझाय कहे छेः—१ अस्थि (हाडका)नी अस०, २ मांसनी अस०,
३ रुधिर (लोही)नी अस०, ४ अशुचि-सामिप्य (विष्टादि नजीकमां होय तो) अस०, ५ स्मशान-सामिप्य
(मसाण नजीकमां होय तो) अस०, ६ चंद्र-ग्रहण (जे रात्रिए थाय ते रात्रि)नी अस० ७ सूर्यग्रहणमां अहो
रात्रिनी अस०, ८ पतन (ते राजा, मोटो अधिकारी अमात्यादिक)नी अहोरात्री अस० ९ राज-विग्रह (नगरनी
समीपमां ज्यां सुधी युद्ध चाले त्यांसुधी)नी अस०, १० उपाश्रयमां औदारिक पंचेंद्रियनुं कलेवर ज्यांसुधी पडेलुं
होय त्यांसुधी असझाय ते सो हाथनी अंदर होय तो. ए २० असझाय. १ आषाढ सुदि पूर्णिमानी असझाय,
२ आषाढ वदि १ नी अस०, ३ आसुं सुदि पुनमनी अस०, ४ आसु वदि १ नी अस०, ५ कार्तिक सुदि पूर्णि-

---

२ ठाणांगनी टीकामां-“ शोणित मांसं चर्मास्थि, भवंत्यपि चत्वारी, ” रुधिर, मास, चामडु अने हाडकुं. ए चारनी असझाय क्षेत्रथी ६० हाथनी अदर होय. कालथी यथा संभवकाल. एतिर्यंच संबधि कहेल छे. मनुष्य संबंधी एटलु विशेष छे के १०० हाथ क्षेत्रथी कालथी अहोरात्र काल. आर्तव [ऋतु] माटे ३ दिवस, छोकरीना जन्ममां ८ अने छोकराना जन्ममां ७ दिवस कहेल छे. २ चंद्र-सूर्यग्रहणने अंतरिक्षमां न गणतां औदारिक-असझायमां गणवानु कारण तेना विमानो पृथ्वीकाय होवाथी औदारिक अस० मा गणेल छे. ४ ठाणांगसूत्रमां ‘ इंदमहे ’ पाठ छे तेनो अर्थ, टीकामां ‘ आसु ’ मास करेल छे. प्रवचन सारोद्धारमां पण एमज कहेल छे. केटलाक ‘ भादरवो ’ कहे छे, सूत्रमां पुनमनो नाम जणातो नथी

मानी अस०, ६ का० वदि १ नी अस०, ७ चैत्र सुदि पुनमनी अस०, ८ चै० वदि १ नी अस०, ९-१२ प्रभातनी बे घडी, मध्यान्हनी बे घडी, संध्याकालनी बे घडी अने मध्यान्हरात्रिनी बे घडी असझाय. ए १२ असझाय, ठाणांगने चोथे ठाणे अने छेद सूत्रमां कहेल छे. ए ३२ असझायमां जो सिद्धांतनुं वांचवुं भणवुं (सझाय) करे तो आशातना लागे देवादिकनो उपद्रव थाय अने तीर्थकरनी आज्ञानो भंग थाय. इति ३२ असझाय समाप्त.

श्री नियंठाविचार—पन्नवणा वेय रागे, कप्प चरित्त पडिसेवणानाणे; तित्थे लिंग सरीरे, खित्ते काले गइ संजम निगासे॥१॥जोगुवओगे कसाए, लेसा परिणाम बंध वेदेय; कम्मोदीरण उवसं, पज्जण सन्नाय आहारे॥२॥ भव आगरिसे कालं,-तरेय समुग्धाय खित्त फुसणाय; भावे परिमाणेविय, अप्पा बहुयं (त्तं ?) नियंठाणं ॥३॥ ए ३६ द्वारनी गाथाओ कही. पहेलुं प्रज्ञापना द्वार—ते निर्ग्रंथना [2] छ भेद १ पुलाक, २ बकुस, ३ प्रतिसेवना कुशील, ४ कषायकुशील, ५ निर्ग्रंथ, अने ६ स्नातक. पुलाक ते सडुसा धान्य सहित पूळा जेवो. बकुस ते सडुस धान्य जेवो. प्रतिसेवणाकु० ते मशल्या धान्य जेवो. कषायकु० ते उपण्या धान्य जेवो. निर्ग्रंथ ते कणकी सहित चोखा

'पाडिवए' पाठ छे; टीकामां लखेलुं छे के जे जे देशमां पडवा सुधी महोत्सव प्रवर्ते त्यासुधी अस्वाध्याय आसुमासमां लौकिक [विजयादशमी वगेरे] पर्वोमां हिंसानी घणी प्रवृत्ति थाय छे अने क्षुद्रदेवना आगमननो पण संभव छे. माटे आश्विन मासज योग्य जणाय छे.

२ भगवतीसूत्रमां नियंठाना पांच भेद छे, कुशीलना बे भेद गणताथी छ थाय छे; ते उत्तरोत्तर [एकेकथी] विशद्ध विशद्धतर छे.

३ कणशला सहित चोखा [चावल]नो पुळो.

(धान्य) जेवो. स्नातक ते अखंड चोखा जेवो. हवे पुलाकना वे भेद तेमां १ लब्धिपुलाक ते चक्रवर्तीनी सेनाने पण चूरण करवा समर्थ होय. २ प्रतिसेवना पु० ते मूलगुण–उत्तरगुणमां अतिचार लगाडे. वली पुलाकना पांच भेद १ ज्ञानपु०, २ दर्शनपु०, ३ चारित्रपु० ४ लिंगपु० अने ५ सूक्ष्मपुलाक. ज्ञानादिकमां अतिचार सेववाथी चारित्रने पोलो (असार) करे ते माटे पुलाक कहेवाय छे. बकुसना वे भेद–तेमां १ शरीरबकुश ते शरीरनी शुश्रूषा–शोभा करे. २ उपकरणबकुश ते उपकरण (पात्रादि) झळहळता राखे, अधिक संग्रह करे प्रक्षालनादि करे. हवे बकुशना पांच भेद तेमां १ आभोग बकुश ते जाणी जोइने दोष लगाडे. २ अनाभोग बकुश ते अजाणतां दोप लगाडे. ३ संवृत्त ब० ते लोक न जाणे तेम (छानो) दोष लगाडे. ४ असंवृत्त ब० ते प्रगट दोष लगाडे. ५ यथासूक्ष्म ब० ते किंचित् (अल्प) दोष लगाडे. कुशीलना वे भेद–१ प्रतिसेवना कु० अने २ कपाय कुशील. प्रत्येकना पांच भेद–१ ज्ञानप्रतिसे० कुशील, २ दर्शन प्र०, ३ चारित्र प्र०, लिंग प्र०, अने ५ यथासूक्ष्म प्र० कुशील. तेमज ज्ञान कषायकुशील आदि पांच भेद कषायकु०ना जाणवा. प्रतिसेवना कु० ते विपरीत आराधना करे, कांइक मूलगुण–उत्तरगुणनी विराधना करे अने कषाय कु० ते संज्वलन कषायना उद-

---

२ तथा चोक्त "संघाइअकज्जमि, चुन्नति चक्कवट्टि सेणपि."—३ पाच महाव्रत मूल गुण अने दशविध पच्चखाण ते उत्तर गुण. ४ लब्धि पुलाक, मंत्रादिकना कार्य विना लब्धि प्रयुजनार जाणवो. आ सेवना पु० ते ज्ञानादिमां अतिचार लगाडनार जे होय ते पुलाकनेज ए लब्धि होय छेः बीजाने न होय अर्थात् लब्धिपुलाक ते ज्ञानपुलाक. [पच निर्गंथ टीका] ५ पन निर्गंथी शास्त्रमा लिंगकु० ने तपकुशील पण कहे छे.

यथी जे कुत्सित (दोषसहित) चारित्रवालो होय अथवा ज्ञानादिक वडे आजीविका करनार होय. निर्ग्रंथ (मोहनीय कर्मनी गांठथी छूटेलो) तेना बे भेद–१ उपशांत मोह अने २ क्षीण मोह. तेना वली पांच प्रकार–१ प्रथम समय निर्ग्रंथ, २ अप्रथम समयनि०, ३ चरम समयनि०, ४ अचरम समयनि० अने ५ यथा सूक्ष्म निर्ग्रंथ. इग्यारमा के बारमा गुणठाणाना प्रथम समयमां जे वर्तती होय ते प्रथम स० नि०, पहेला समय सिवायना शेष समयमां जे वर्तती होय ते अप्रथम स० नि०, जे छेल्ला समयमां वर्तती होय ते चरम स० नि०, छेल्ला सिवाय शेष समयमां जे वर्तती होय ते अचरम स० नि० अने जे समयादिकनी विवक्षा रहित ते यथा सूक्ष्म निर्ग्रंथ.[2] स्नातक (जे घाती कर्मरुप मलने प्रक्षालवाथी स्नान करनारनी जेम शुद्ध थयेल तेना पांच भेद—

१ अशरीरी, २ अशबल (ते निरतिचार चारित्री), ३ अकर्मांश (ते घातीकर्म रहित), ४ संशुद्ध (ते अप्रतिहत ज्ञान–दर्शन धारक अरिहंत–जिनकेवली), ५ अपरिश्रावी (कर्मबंध रहित). ए पांच भेद[3], अवस्था

---

१ आ पाच भेदो, सूक्ष्म ऋजुसूत्र–स्थूल ऋजुसूत्र अने व्यवहार नय ए त्रण नयनी अपेक्षाए करेल छे. २ निर्गंथमा अने तेना उत्तर भेदमां जे तफावत छे तेनो खुलाशो–मूल निर्ग्रंथ, क्षयोपशम भावे मोहनी गांठथी नीकरेलो छे माटे निर्ग्रंथ अने तेना उत्तर भेदरुप निर्ग्रंथ ते उपशम भावे अने क्षायक भावे मोहनी गाठथी नीकरेला छे ३ तेरमा अने चौदमा गुणठाणे वर्तनार आत्मानी अवस्थाना भेदने लइने आ पांच भेद स्नातकना कहेल छे 'अशरीरी' शब्दथी 'सिद्ध' समजवा नहि. कारण ? स्नातकनी स्थिति जे देशे उणीक्रोड पूर्वनी कही छे ते तेरमा गु० आश्रयी छे. जो सिद्ध गण्या होतती सादि–अनत स्थिति कहेत. अशरीरी कहेवानो हेतु ए छे के:–चौदमा गु० ना छेल्ला समये अशरीरी छे कारण ? शरीर

भेदथी (शक्र-पुरंदरादिक शब्दनी जेम शब्दनयनी व्याख्याथी) छे. बीजुं वेदद्वार-पुलाक ते पुरुषवेदी अने पुरुष नपुंसकवेदी होय, स्त्रीवेदी न होय. बकुश ने प्रतिसेवना कु०, त्रणे वेदवाला होय. कषाय कुशील, त्रणे वेदवाला होय अथवा अवेदी पण होय तो उपशांतवेदी के क्षीणवेदी होय अने स्नातक, क्षीणवेदी होय, त्रीजुं रागद्वार-पहेला ४ निर्ग्रंथो, सरागी होय. निर्ग्रंथ उपशांतरागी के क्षीणरागी होय. स्नातक क्षीणरागी होय. चोथुं कल्पद्वार तेना ५ भेद-१ स्थितकल्प, २ अस्थितकल्प, ३ जिनकल्प, ४ स्थविरकल्प अने ५ कल्पातीत. छए निर्ग्रंथो, स्थितकल्प अने अस्थितकल्पमां होय. पुलाक, स्थविरकल्पमांज होय. बकुश अने प्रतिसेवना कु०, जिनकल्प अने स्थविरकल्पमां होय कषायकु०, जिनकल्प-स्थविरकल्प अने कल्पातीतमां होय. निर्ग्रंथ अने स्नातक, कल्पातीत कल्पमांज होय. पांचमुं चारित्रद्वार-पुलाक, बकुश अने प्रतिसेवनाकु० ए त्रण, प्रथमना बे चारित्रवाला होय. कषायकु०, यथाख्यात चा० सिवाय पहेला चार चारित्रवाला होय. निर्ग्रंथ अने स्नातक, एक

छूटवाना समये शरीर छोडयुं कहेवाय. 'क्रीयमाण कृत' नी जेम आ व्याख्या ऋजुसूत्रने मते छे. तेमज शास्त्रमां पण कहेलु छे के ' अलोग पडिहया सिद्धा, लोगतेय पइट्ठिया, इअं बोंदिंचइताणं, तत्थ गंतुण सिज्झइ. " माटे अशरीरी ते सिद्ध नहि.

१ जन्मतः नपुसक न होय पण कृत नपुसक. अर्थात् पछीथी नपुसक वेदना उदयवालो जाणवो. जन्म नपुंसकने संयमनी प्राप्ति न होय.
२ नवमा गुणठाणाना संख्यात भाग गया बाद अवेदी थाय छे अने कषाय कुशीलपणु दशमा गु० सुधी छे. माटे कषाय कु०, वेद रहित पण होय.
३ कषाय कुशीलमां कल्पातीत होवानु कारण के छद्मस्थ तीर्थंकरो कल्पातीत होय छे.

यथाख्यात चारित्रवालाज होय. छठुं प्रतिसेवनाद्वार–पुलाक अने प्रतिसेवना निर्ग्रंथो, मूलगुण अने उत्तरगुणमां दोष लगाडे. बकुश, उत्तरगुणमां दोष लगाडे. कषाय कुशील, निर्ग्रंथ अनें स्नातक ए त्रण अप्रतिसेवी होय दोष न लगाडे. सातमुं ज्ञान द्वार–पुलाक, बकुश अने प्रतिसेवना ए त्रण निर्ग्रंथो, बे ज्ञान अथवा त्रण ज्ञानवाला होय. कषायकुशील अने निर्ग्रंथ, बे ज्ञान. त्रण ज्ञान के चार ज्ञानवाला पण होय. स्नातक, केवल ज्ञानवालाज होय. पुलाक ने श्रुतज्ञान, जघन्यथी नवमा पूर्वनी त्रीजी आचार वस्तु सुधी अने उत्कृष्टथी संपूर्ण नव पूर्वनुं ज्ञान होय. बकुश अनें प्रतिसेवना कु०ने श्रुतज्ञान, ज० अष्टप्रवचन मातानुं ज्ञान अने उ० दश पूर्वनुं ज्ञान होय. कषाय कु० निर्ग्रंथने ज० अष्ट प्रवचन मातानुं ज्ञान अने उ० चौद पूर्वनुं ज्ञान होय. स्नातक, श्रुतातीत छे. आठमुं तीर्थद्वार–पहेला त्रण निर्ग्रंथो, तीर्थमांज होय. शेषत्रण निर्ग्रंथो, तीर्थमां अने अतीर्थमां पण होय. जो अतीर्थमां होय तो तीर्थंकर के प्रत्येक बुद्ध होय. नवमुं लिंगद्वार–छए निर्ग्रंथो, द्रव्यलिंग आश्रयी स्वलिंग, अन्यलिंग के

---

२ अनाभोगथी संभव मात्र दोप जाणवो, जाणी जोइ जो लगाडे तो चारित्र केम सभवे? कदाच अतिचार दोप लागे तो तेने प्रायश्चित्तादि वडे शुद्धि करे. जो मूलगुणमां अनाचार सेवे तो सर्वथा व्रत भंग थाय ३ अष्ट प्रवचन मातृकाख्य अध्ययनना ज्ञान सिवाय चारित्रनु पालन न सभवे, माटे एटलु ज्ञानजघन्यथी पण होवु जोइए. तेमां पण 'मासतुषादि' मुनिओनो अपवाद जाणवो (पच निग्रंथ टीका). ४ केवल ज्ञानमां श्रुतज्ञाननो अतरभाव होवाथी.

गृहस्थ-लिंगमां पण होय. भावलिंग आश्रयी स्वलिंगमांज होय. दशमुं शरीरद्वार-पुलाक, निर्ग्रंथ अने स्नातक ए त्रण निर्ग्रंथोने औदारिक, तैजस अने कार्मण ए त्रण शरीर होय. बकुश अने प्रतिसेवना कु० ने वैक्रेय सहित चार शरीर पण होय. कषायकुशीलने आहारक सहित पांच शरीर पण होय. इग्यारमुं क्षेत्रद्वार-पुलाक, जन्म अने सद्भाव आश्रयी कर्म भूमिमांज होय. शेष पांच निर्ग्रंथो, जन्म अने सद्भाव आश्रयी कर्म भूमिमां होय पण संहरण आश्रयी अकर्म भूमिमांय होय. पुलाकनुं संहरण देवादिकथी पण थतु नथी. बारमुं कालद्वार-पुलाक, अवसर्पिणी कालमां जन्म आश्रयी त्रीजा-चोथा आरामां होय. सद्भाव आश्रयी त्रीजा, चोथा अने पांचमा आरामां पण होय. जे चोथा आरानो जन्मेलो होय तेज पांचमा आरामां होय. उत्सर्पिणी कालमां जन्म आश्रयी बीजा, त्रीजा अने चोथा आरामां होय. सद्भाव आश्रयी त्रीजा चोथा-आरामां होय. नो अवसर्पिणी नो उत्सर्पिणी कालमां (महा विदेहमां) जन्म अने सद्भाव आश्रयी पण होय. बकुश, प्रतिसेवना अने कषाय कुशील ए त्रण, अवसर्पिणीमां जन्म अने सद्भाव आश्रयी त्रीजा-चोथा-पांचमा आरामां होय.

---

२ पुलाक सिवायना निर्ग्रंथो, भरतादिवत् गृहस्थादिलिंगमा संभवे परंतु नवपूर्वधारी जे पुलाक, ते कारणवशात् अन्यलिंग के गृहस्थलिंगमां होय छे ३ पुलाकने वैक्रेयलब्धि छतां वैक्रेय शरीर केम नहोय? उत्तर-पुलाक, संघादिना कार्य प्रसगे लब्धि प्रयुंजतां पुलाक भावने छोडीने अवश्य कपाय कुशील भावने पामे छे कारण? परिणामनी वृद्धि थवाथी. माटे वैक्रेय शरीर न होय. लब्धिवंनुं सामर्थ्य छतां जो संघादि कार्य माटे लब्धि न प्रयुजे तो संघनो द्रोही थवाथी विराधक थाय. [पंच निर्ग्रंथनी टीका]

उत्सर्पिणी कालमां तथा नोअव० नोउत्स० कालमां पुलाकनी जेम जाणवुं निर्ग्रंथ अने स्नातक, जन्म अने सद्भाव आश्रयी पुलाकनी जेम जाणवुं, नो अव० नो उत्सर्पि० मां जन्म अने सद्भाव आश्रयी सर्वे निर्ग्रंथो होय. संहरण आश्रयी पुलाक सिवाय शेष निर्ग्रंथो, सर्व कालमां होय. तेरमुंगति–स्थितिद्वार–पहेला चार निर्ग्रंथोनी गति, जघन्यथी सौधर्म देवलोकनी होय. उत्कृष्टथी पुलाकनी आठमा देवलोक सुधी होय. बकुश अने प्रतिसेवना कु० नी बारमा देवलोक सुधी अने कषाय कु० नी अनुत्तर विमान सुधी होय. निर्ग्रंथनी अजघन्य अने अनुत्कृष्ट अनुत्तर विमाननी होय. स्नातकनी सिद्धिगति होय. पहेला त्रण निर्ग्रंथो, अविराधक भावे १ इंद्रनी, २ सामानिकनी, ३ त्रायत्रिंशकनी अने ४ लोकपालनी ए चार पदवी पामे. कषाय कु०, अहमिंद्र सहित पांच पदवी पामे. निर्ग्रंथ, अहमिंद्रनीज पदवी पामे. विराधकपणे पांचे निर्ग्रंथो, ज० भुवनपतिमां अने उ० सौधर्म देवलोकमां जाय. अविराधकनी स्थिति पहेला चार निर्ग्रंथोनी ज० पृथक्त्व पल्योपमनी अने उ० पुलाकनी १८ सागरोपमनी, बकुश अने प्रतिसेवना कु० नी २२ सागरनी, कषाय कु० नी ३३ सा० नी. निर्ग्रंथनी अजघन्य–अनुत्कृष्ट ३३ सागरनी. चौदमुं संयम–(स्थान) द्वार–पहेला चार निर्ग्रंथोना अनंत पर्यवयुक्त असंख्याता

२ विराधक भावे निर्ग्रंथोनी स्थिति पण भवनपति अने सौधर्म देवलोक प्रमाणे जाणवी

३ चारित्र मोहनीयना क्षयोपशमनी विचित्रताथी होय छे. जेटला कषायना रसभेदना अध्यवसाय स्थानको तेटलाज संयमना स्थानको छे; तेनो क्षयोपशम के क्षय थवाथी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे.

संयम-स्थानो छे. निर्ग्रंथ अने स्नातकनुं एक एक संयम-स्थानक छे. ते निर्ग्रंथने उपशमभावे अथवा क्षायकभावे होय अने स्नातकने तो क्षायकभावेज होय तेओनुं अल्प बहुत्व-सर्वथी थोडा निर्ग्रंथ अने स्नातकना संयम स्थानक. तेथी पुलाकना असंख्यातगुणा सं० स्था० छे. तेथी बकुशना असंख्या० सं० स्था० छे तेथी प्रतिसेवना कु० ना असं० सं० स्था० छे. तेथी कषाय कु० ना असं० सं० स्था० छे. पंदरमुं सन्निकर्षद्वार-(ते परस्पर संयोजन-संबंध). स्वस्थानमां अने परस्थानमां पर्यवोने आश्रयीने पुलाक, पुलाक साथे समान होय, अथवा छ स्थानपतित (छठाणवडियो) होय. बकुश अने प्रतिसेवनाथी अनंत गुणहीन होय. कषाय कु० साथे छ स्थानपतित होय. निर्ग्रंथ अने स्नातकथी अनंत गुणहीन होय. बकुश, पुलाकथी अनंत गुण अधिक होय अने १ बकुश २ प्रतिसेवना अने ३ कषाय कु० साथे छ स्थान पतित अने उपरना बे निर्ग्रंथोथी अनंतगुण हीन होय. प्रतिसेवना कु०, पुलाकथी अनंतगुण अधिक होय. बकुश, प्रति से० ने कषाय कु० ए त्रण साथे छ स्थान पतित अने उपरना बे निर्ग्रंथोथी अनंत गुण हीन होय. कषाय कु० पेला चार निर्ग्रंथो साथे छ स्थान पतित अने उपरना बे निर्ग्रंथोथी अनंत गुण हीन होय. निर्ग्रंथ अने स्नातक, पहेला चार निर्ग्रंथोथी अनंत गुण अधिक अने परस्पर तुल्य होय. तेओनुं अल्प बहुत्व-पुलाक अने कषाय कु० ना जघन्य पर्यवो, सर्वथी थोडा होय.

---

२ छ स्थान पतित ते १ अनंत भाग हीन, २ असंख्यात भाग हीन, ३ संख्यात भाग हीन, ४ संख्यात गुण हीन, ५ असंख्यात गुण हीन अने ६ अनंत गुण हीन, ए षट्गुण हानी तेमज षट्गुण वृद्धि ते १ अनंत भाग वृद्धि, वगेरेजाणवी.

तेथी पुलाकना उ० पर्यवो, अनंतगुणा. तेथी बकुश अने प्रति से० ना ज० पर्यवो, अनंतगुणा अने परस्पर तुल्य. तेथी बकुशना उ० पर्यवो अनंतगुणा. तेथी प्रति से० ना उ० पर्यवो अनंतगुणा तेथी कषाय कु० ना उ० पर्यवो अनंतगुणा. तेथी निर्ग्रंथ अने स्नातकना अज०ने अनुत्कृष्ट पर्यवो अनंतगुणा अने परस्पर तुल्य छे. सोळमुं योगद्वार–पहेला पांच निर्ग्रंथो, सयोगी (त्रणे योगवाला) होय. स्नातक, संयोगी होय तो त्रणे योगवालो होय अने अयोगी पण होय. सत्तरमुं उपयोगद्वार–छए निर्ग्रंथो, साकारोपयोगी अने अनाकारोपयोगी पण होय. अढारमुं कषायद्वार–पहेला त्रण निर्ग्रंथोने संज्वलनी चोकडी होय कषाय कु० ने संज्व०नी चोकडी पण होय अथवा क्रोध सिवाय त्रण कषाय, मान सिवाय बे कषाय अने माया सिवाय एक संज्व० नो लोभ पण होय. निर्ग्रंथ उपशांत कषायी अथवा क्षीणकषायी होय. स्नातक, क्षीणकषायीज होय. उगणीशमुं लेश्याद्वार–पहेला त्रण निर्ग्रंथो, प्रशस्त त्रण लेश्यावाला होय. कषाय कुं०, छए लेश्यावाला होय. निर्ग्रंथ, शुक्ल लेश्यावालो होय.

---

२ स्नातकने भाव मन होतु नथी, परतु ज्यारे अनुत्तर विमानना देवो केवलीने प्रश्न पूछे छे त्यारे काययोग वडे मनोवर्गणाना पुद्‌गलोने ग्रहण करी द्रव्य मनपणे परिणमावीने उत्तर आपे छे, तेथी स्नातक त्रण योगवालो होय. ३ चार कषाय. ४ कषायकु० ने अप्रशस्त ३ लेश्या होय छे कारण ? लेश्याना अध्यवसाय स्थानो असख्याता छे अने लेश्या, रसबधनु कारण छे, माटे जेवी लेश्या तेवो रस होय जेम कोइ लब्धिमान् साधु, संघादिकना प्रयोजने दुष्ट नृपादिकने शिक्षा करवा ज्यारे लब्धि फोरवे त्यारे सघादि उपर प्रशस्तराग होवाथी प्रथम प्रशस्त लेश्या होय छे, पछी दुष्ट नृपादि उपर कलुष भाव आववाथी–कषायनी प्रबलताथी-अप्रशस्त–लेश्या परिणमे छे. परतु तत्काल अप्रशस्त लेश्याथी ते निवृत्त थइ शुभ लेश्यामां परिणमे छे.

स्नातक, परम शुक्ल लेश्यावालो होय अने अलेश्यी पण होय. वीशमुं परिणामद्वार–चार निर्ग्रंथोमां वर्द्धमान, हीयमान अनें अवस्थित ए त्रणे परिणाम होय. निर्ग्रंथ अने स्नातकमां हीयमान परिणाम न होय. पहेला चार नि० मां वर्द्धमान अने हीयमान परिणाम, ज० एक समय अने उ० अंतर्मुहूर्त्त होय. अवस्थित परि०, ज० एक समय अने उ० सात समय होय. निर्ग्रंथमां अवस्थित परि०, ज० १ समय अने उ० अंतर्मु० अने वर्द्धमान परि० ज०–उ० अंतर्मु० होय, स्नातकमां वर्द्धमान परि०, ज०–उ० अंतर्मु० अने अवस्थित परि०, ज० अंत० अने उ० देशे उणा (नववर्षन्यून) पूर्वकोडी सुधी होय. एकवीशमुं बंधद्वार–पुलाक, आयुष्य[2] सिवाय ७ कर्म बांधे. बकुश अने प्रति से०, सात के आठ कर्म बांधे. सात बांधे तो आयुष्य सिवाय. कषायकु०, सात आठ अथवा छ कर्म बांधे. छ बांधे तो आयुष्य ने मोहनीय सिवाय. निर्ग्रंथ, एक सातावेदनीय बांधे. स्नातक, एक सातावेदनीय बांधे अथवा अबंधक पण होय. बावीशमुं वेदनद्वार–पहेला चार निर्ग्रंथो, आठे कर्मने वेदे (भोगवे). निर्ग्रंथ, मोहनीय सिवाय सात कर्म वेदे. स्नातक, चार अघाति कर्म वेदे. त्रेवीशमुं उदीरणद्वार–पुलाक, वेदनीयने आयुष्य सिवाय छ कर्मनी उदीरणा करे. बकुश अने प्रतिसेव०, आठ सात के छ कर्मनी उदी० करे. सातनी

जो बधारे वखत अप्रशस्त लेश्या रहे तो प्रमत्त गुणस्थाननो घात करे. अप्रशस्त लेश्या पण प्रमत गु०मा होय लब्धि–प्रयुजन पण प्रमत्त भावमा होय छे. पुलाकादि सयत लब्धि प्रयुजन समये अवश्य कपाय कु० भावने पामे छे

२ पुलाकने आयुष्य–बंधना अध्यवसाय स्थानोनो अभाव होवाथी आयुष्य–बधनथी. [पंचनिग्रंथी टीका].

करे तो आयुष्य सिवाय अने छनी करे तो वेदनीय ने आयुष्य सिवायनी. कषाय कु०, आठ सात छ अने पांच कर्मनी पण उदी० करे. पांचनी करे तो वेद०, आयु० अने मोहनीय सिवायनी. निर्ग्रंथ, पांच अथवा बे कर्मनी उदी० करे. बेनीकरे तो नाम अने गोत्रनी. स्नातक, बे कर्मनी करे अथवा अनुदीरक पण होय. चोवीशमुं उपसंपदाद्वार-(पूर्व भावनो त्याग अने अन्य भावनी प्राप्ति ते उपसंपदा)-पुलाक, पुलाक भावनो त्याग करी कषाय कु० पणुं पामे अथवा असंयतपण थाय. बकुश, बकुश भावनो त्याग करी प्रतिसेवना कु०, कषाय कु०, देशविरति अने असंयतपणुं पामे. प्रतिसेवना कु०, प्रतिसे० नो त्याग करी बकुश, कषाय कु०, देशविरती अने असंयतपणुं पामे. कषाय कु०, कषाय कु० नो त्याग करी पुलाक, बकुश, प्रतिसे०, निर्ग्रंथ, देश विरति अने असंयतपणुं पामे. निर्ग्रंथ, निर्ग्रंथपणानो त्याग करी असंयतपणुं, कषाय कु० पणुं अने स्नातकपणुं पामे. स्नातक, स्नातक भावनो त्याग करी सिद्धिगति पामे. पच्चीशमुं संज्ञाद्वार-पुलाक, निर्ग्रंथ अने स्नातक ए त्रण, नो संज्ञो·

---

२ चौदमा गुणठाणे उदीरणा नथी. ३ नि०, देश विरतिपणुं न पामे कारण? उपशम श्रेणिथी भव [आयुष्य] क्षये जे मरण पामे ते अनुत्तर नि० मां जाय त्यां देवपणुं होवाथी असंयतपणुंज होय अने काल [गुणठाणाना काल] क्षये पडे तो दशमे गुण० जाय माटे कषाय कु० थाय पामे. क्षपक श्रेणिगत नि०, स्नातकपणु पामे. ४ अहिं ' नो ' शब्द देशथी निषेधक छे. कारण? औदयिक भावे आहारादि चार संज्ञा नहे उपयुक्त नथी पण क्षयोपशम भावे विशिष्टज्ञानादि उपयोगरूप संज्ञावडे उपयुक्त छे; माटे नो शब्द कहेल छे. पुलाकादि नि०, ने ज्ञाननी विशिष्टता होवाथी आहारादिनी इच्छा थती नथी. जो के पुलाकनुं चारित्र मंद होय छे परंतु ज्ञान विशिष्ट होय छे.

पयुक्त होय. शेष ३ निर्ग्रंथो, संज्ञोपयुक्त अने नो संज्ञोपयुक्त पण होय. छवीशमुं आहारकद्वार–पहेला पांच निर्ग्रंथो, आहारक होय. स्नातक, आहारक अने अनाहारक पण होय. सत्यावीशमुं भवद्वार–पहेला पांच निर्ग्रंथो, ज० थी एक भव करे, उ० पुलाक, ३ भव करे. बकुश, प्रतिसे०, कषाय कु० ए त्रण ८ भव करे. निर्ग्रंथ, ३ भव करे अने स्नातक, तेज भवमां[2] मोक्ष जाय. अठावीशमुं आकर्षद्वार–आकर्ष ते (चारित्रना परिणाम] पुलाकादि सर्व निर्ग्रंथोने ज० थी एक भवमां एकवार आवे अने उ० थी पुलाकने ३ वार. बकुश, प्रतिसे० अने कषाय कु० ए त्रणने पृथक्त्वशत (नवशो)वार. निर्ग्रंथने बे वार अने स्नातकने एकवार आवे. घणा भव आश्रयी पहेला पांच निर्ग्रंथोने ज० थी बे वार आवे अने उ० थी पुलाकने सातवार. बकुश, प्रतिसेव० अने कषाय कु०ने सहस्र पृथक्त्व[3]वार. निर्ग्रंथने पांचवार[4] आवे अने स्नातकने पुनर्भवज नथी. उगणत्रीशमुं स्थितिद्वार–पुलाकनी ज० ने उ० स्थिति, अंतर्मुहूर्तनी[5]. बकुश, प्रतिसे० अने कषाय कु० नी स्थिति ज० एकसमयनी[6] अने उ० देशे उणी

---

२ अहिं ‘भव’ ते पुलाकादि भावना जाणवा पण देवादिना भव न गणवा. ३ ‘सहस्रपृथक्त्व’ शब्दथी नव हजार नहि, पण ७२०० गणवा. कारण? एक भवमां उ० थी ९०० वार आवे छे, तेने आठ भवथी गणतां ७२०० थाय छे. ४ चार वखत उपशम श्रेणिमां अने एक वखत क्षपकश्रेणिमां एम पांच वार आवे. ५ जघन्य अंतर्मुहूर्तथी उत्कृष्ट अंतर्मु० मोटु जाणवु, पुलाक भावने पामी अंतर्मुहूर्त सुधी मृत्यु न पामे अने पुलाक भावथी पडे पण नहि. ६ एक समय चारित्रने पामी मरण पामे माटे ज० १ समयनी स्थिति कही छे.

पूर्व कोडीनी. निर्ग्रंथनी स्थिति ज० एक समयनी अने उ० अंतर्मु० नी अने स्नातकनी स्थिति ज० अंतर्मु० नी ने उ० देशे उणी पूर्व कोडीनी. ए एक वचन (एक जीव) आश्रयी स्थिति जाणवी. हवे बहु वचन (घणा जीव) आश्रयी स्थिति कहे छे–पुलाको अने निर्ग्रंथोनी ज० एक समयनी ने उ० अंतर्मु० नी. शेष चार निर्ग्रंथोनी स्थिति सर्व कालनी. त्रीशमुं अंतरद्वार–पांच निर्ग्रंथोनुं अंतर. (एक वचन आश्रयी) ज० अंतर्मु० नुं अने उ० देशे–उणु अर्द्ध पुद्गल परावर्तनुं होय. स्नातकनुं अंतर नथी. बहुवचन आश्रयी–पुलाकोनुं ज० एक समय अने उ० संख्याता वर्षनुं अंतर होय. निर्ग्रंथोनुं ज० एक समय अने उ० छ मासनु होय. शेष चार निर्ग्रंथोनुं अंतर नथी. सदा महाविदेहमां होय माटे. एकत्रीशमुं समुद्घातद्वार–पुलाकने समुद्घात त्रण. वेदनीय, कषाय अने मरणांतिक. बकुश अने प्रतिसे० ने समु०, वैक्रेय ने तैजस सहित पांच. कषाय कु० ने आहारक सहित समु० छ होय अने निर्ग्रंथने समु० नथी. स्नातकने एक केवलि समुद्घात होय. बत्रीशमुं क्षेत्रद्वार–पहेला पांच निर्ग्रंथो, लोकना असंख्यातमा भागे होय. स्नातक, लोकना असंख्यातमा भागने विषे होय, घणा असंख्याता भागने विषे

---

२ उपशम गुणठाणे एक समय रहीने मरण पामे माटे. ३ एक पुलाकनी ज० स्थिति अतर्मु० नी कही तो घणा पुलाकोनी ज० स्थिति एक समय केम घटे ? उत्तर–ज्यारे पूर्व प्रतिपन्न कोइक पुलाक, अतर्मु० ना अंत्य समयमां वर्तंतो होय, त्यारे बीजो कोइक जीव पुलाक भावने पामे छे, त्यारे ते बन्ने पुलाकोनो एक समयमा सद्भाव होय माटे घणा पुलाकोनी एक स० नी स्थिति कही छे. ४ जो के पुलाक, पुलाक भावमां मरे नहि, पण मरणातिक समुद्घात करे छे, कषाय कु० भावने प्राप्त करीने मृत्यु पामे ५ स्नातक, शरीरस्थ अथवा दड–कपाट करण काले लोकना असंख्यात भागवर्ती होय मंथान–करण काले लोकना घणा भागमा होयछे, थोडाज भागमा न होय अने ज्यारे आतरा पुरे त्यारे संपूर्ण लोक व्यापी होय.

होय अने संपूर्ण लोकमां पण होय. तेत्रीशमुं स्पर्शनाद्वार–ते क्षेत्रद्वारनी जेम जाणवुं, पण आजु–बाजुना प्रदेशोने स्पर्शे माटे कांइक अधिक स्पर्शना जाणवी. चोत्रीशमुं भावद्वार–पहेला चार निर्ग्रंथो. क्षयोपशम भावे होय. निर्ग्रंथ, उपशम अथवा क्षायक भावे होय अने स्नातक, क्षायक भावे होय. पांत्रीशमुं प्रमाणद्वार–प्रतिपद्यमान[1] आश्रयी पुलाको, ज० थी एक बे अथवा त्रण अने उ० शतपृथक्त्व होय. पूर्वप्रतिपन्न[2] आश्रयी पुलाको, ज० एक, बे के त्रण अने उ० सहस्रपृथकृत्व होय. प्रतिपद्यमान आश्रयी बकुशो अने प्रतिसे० कुशीलो ज० १–२–३ अने उ० शतपृथकृत्व होय. पूर्वप्रतिपन्न आ० कोटी शतपृथकृत्व होय. प्रतिपद्यमान आ० कषायकुशीलो, ज० १–२–३ अने उ० सहस्र पृथ० होय. पूर्वप्रतिपन्न आ० कोटीसहस्र पृथ० होय. प्रतिपद्यमान–आ० निर्ग्रथो, ज० १–२–३ अने उ० १६२ तेमां ५४ उपशम श्रेणिवाला अने १०८ क्षपकश्रेणिवाला होय. पूर्वप्रतिपन्न आ० ज० १–२–३ अने उ० शतपृथ० होय. प्रतिपद्यमान आ० स्नातको, ज० १–२–३ अने उ० १०८ होय.[3] पूर्वप्रतिपन्न आ० कोटी पृथकत्व होय. छत्रीशमुं अल्प बहुत्वद्वार–सर्वथी थोडा निर्ग्रथो, तेथी पुलाको, संख्यातगुणा, तेथी स्नातको, संख्यातगुणा, तेथी बकुशो संख्यात गुणा, तेथी प्रतिसे० कुशीलो, संख्यात गुणा, तेथी कषाय

---

१ "प्रतिपद्यमान" ते पुलाकादि भानने वर्तमानमा पामनारा. २ "पूर्वप्रतिपन्न" ते भूतकालमां ए भावने पामेला. ३ बकुश अने प्रतिसे० कुशीलो बन्ने 'शतपृथकृत्व' छे, त्यारे बकुशथी प्रतिसेवना संख्यातगुणा केम संभवे? उत्तर–बकुशनु शतपृथ०, नानु अने प्रतिसे० नु मोटुं जाणवुं. बेथी नव सुधीनी संख्याने पृथकूत्वनी संज्ञा छे

कुशीलो, संख्यातगुणा. इति निर्ग्रंथ विचार समाप्त.

श्री कायस्थिति विचार—गाथा–जीव गइ इंदिय काए, जोगे वेये कसाय लेसाय; सम्मत्त नाण दंसण, संजय उवओग आहारे ॥ १ ॥ भासग परित्त पज्जत्त, सूहुम सन्नी भवत्थि चरिमेय; एतेसिं तु पयाणं कायठिइ होइ नायव्वा. ॥ २ ॥ १ जीव, २ गति, ३ इंद्रिय, ४ काय, ५ योग, ६ वेद, ७ कषाय, ८ लेश्या, ९ सम्यक्त्व, १० ज्ञान, ११ दर्शन, १२ संयत, १३ उपयोग, १४ आहार, १५ भाषक १६ परित्त, १७ पर्याप्त, १८ सूक्ष्म, १९ संज्ञी, २० भवसिद्धिक, २१ अस्तिकाय, २२ चरम, ए २२ पदोनी कायस्थिति जाणवा योग्य छे. १ जीव, जीवस्वरुपें सर्वकाल रहे छे. २ नारक, नारकपणे ज० दश हजार वर्ष अने उ० तेत्रीश सागरोपम रहे. तिर्यंच, तिर्यंचस्वरुपे रहे तो ज० अंतर्मु० अने उ० अनंतकाल रहे, ते कालथी अनंती उत्सार्पिणी–अवसर्पिणी, क्षेत्रथी अनंता लोकना आकाश प्रदेश समान पुद्गलपरावर्त्त आश्रयी, आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण असंख्यपुद्गलपरावर्त्त रहे. तिर्यंचणी ज० अंतर्मु० अने उ० त्रण पल्यने पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक काल रहे. मनुष्य

२ भगवतीसूत्र–शतक २५ मां छठ्ठे उद्देशे आ नियठानो अधिकार छे. पचनिग्रंथी प्रकरणमां पण ए वर्णन छे. विशेप जिज्ञासुए पंच निग्रंथी टीका जोवी. ३ कायस्थिति एटले पुनःपुन. [फरी फरी] ते ते पर्याय वडे उत्पन्न थइने अवस्थित रहेवु ते. ४ नारक, मरीने फरीथी नारक थता नथी तेमज देवपण. ५ तिर्यंचपणे अनंत काल रहे ते वनस्पति आश्रयी समजवु. ६ पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक कहेवानु कारण ए छे के–सात अथवा आठ भव करे, सात भव करे ते सख्याता आयुष्यवाला अने एक युगलिक तिर्यंचणीनो भव करीने देवमा उपजे.

अने मनुष्यणीनी कायस्थिति, तिर्यचणी प्रमाणे जाणवी. देवनी नारकनी जेम जाणवी. देवीनी ज० दश हजार वर्ष अने उ० ५५ पल्यनी. सिद्धनी सादि-अनंत कालनी. नारक, अपर्याप्तपणे रहे तो ज०-उ० अंतर्मु० रहे. एम यावत् अपर्याप्त देवी सुधी पण एमज जाणवी. नारक, पर्याप्तपणे रहे तो ज० अंतर्मु० न्यून दश हजार वर्ष अने उ० अंतर्मु० न्यून ३३ सागर रहे. तिर्यच पर्याप्त, ज० अंतर्मु० अने उ० अंतर्मु० न्यून ३ पल्य रहे. तिर्यचणी, मनुष्य अने मनुष्यणी ए त्रण पर्याप्तनी स्थिति, तिर्यचपर्याप्तनी परे जाणवी. देव पर्याप्तनी नारक पर्याप्तनी माफक जाणवी अने देवी पर्याप्तनी ज० अंतर्मु० न्यून दश ह० वर्षनी अने उ० अंतर्मु० न्यून ५५ पल्यनी. २ सेंद्रियं (इंद्रिय सहित) जीव बे प्रकारना छे १ अनादि-अनंत ते अभव्य जीवनी अपेक्षाए. अने २ अनादि-सांत ते भव्य जीवनी अपेक्षाए. एकेंद्रियनी कायस्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्यपुद्गल परावर्त्तनी. त्रण विकलेंद्रियनी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्षसहस्रनी. पंचेंद्रियनी ज० अंतर्मु० अने उ० हजार सागरोपम झाझेरी. अनिंद्रियनी सादि-अनंत कालनी स्थिति. सेंद्रिय अपर्याप्तनी स्थिति, ज०-उ० अंतर्मुहूर्त्त; एम यावत् अपर्याप्त पंचेंद्रिय लगे जाणवी. सेंद्रिय पर्याप्तनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० ३शत पृथकत्व सागरोपम

---

२ अहिं लब्धिरूप भावेंद्रिय समजवी अन्यथा उक्त स्थिति संभवी शके नहि 'लब्धि' इंद्रिय, विग्रह गतिमांय होय अने इंद्रिय पर्याप्तने पण होय छे. ३ उत्कृष्ट शतपृथक्त्व (९००) सागरनी जे स्थिति कहेलुं छे ते लब्धि पर्याप्तनी अपेक्षाए जाणवी. कारण अपर्याप्त काले जो के पर्याप्ति पूरण करेल नथी पण पूरण कर्या विना मरण न पामे ते 'लब्धि पर्याप्त' कहेवाय अने पर्याप्ति पुरी कर्या वगर मरे ते 'लब्धि अपर्याप्त' कहेवाय अहिं लब्धिपर्याप्तनी विवक्षा छे.

झाझेरी. एकेंद्रियपर्याप्तनी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता हजार वर्षनी. बे इंद्रिय पर्याप्तनी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्षनी. ते इंद्रिय पर्याप्तनी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता दीवसनी. चउरिंद्रिय पर्या० नी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्षनी. पंचेंद्रिय पर्या० नी ज० अंतर्मु० अने उ० शतपृथक्त्व सागरनी. ४ सकायिकजीव बे प्रकारना छेः–१ अनादि–अनंत, २ अनादि–सांत. पृथवीकायिकनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्यातोकाल–असंख्यात उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी, कालथी. क्षेत्रथी असंख्यात लोक प्रमाण, अप्कायिक, तेजोका० अने वायुका० नी स्थिति पण एमज जाणवी. वनस्पतिकायिकनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० अनंत कालनी–अनंत कालचक्र ए कालथी, अने क्षेत्रथी अनंत लोक प्रमाण, असंख्याते[२] पुद्गलपरावर्त्तनी. त्रसकायिकनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्ष सहस्र अधिक बे हजार सागरनी सकायिक अपर्याप्तथी यावत् त्रसकायिक अपर्याप्तनी स्थिति, ज०–उ० अंतर्मुहूर्तनी. पर्याप्त पृथवीका० नीं स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्ष सहस्रनी. पर्या० अप्का०नी पण पृथ्वी प्रमाणे. पर्या० ते उका० नी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता

---

२ उक्त स्थिति जे कहेली छे ते व्यवहार राशि वालाजीवोनी अपेक्षाए छे. जे जीवो सूक्ष्मनिगोदमांथी नीकली बादर निगोदादि भावने प्राप्त करीने पुनः सूक्ष्मनिगोदमा जाय तोपण ते व्यवहार राशिवाला कहेवाय अने जे जीवो, अनतानत पुद्गल परावर्त्त थया छतां पण सूक्ष्म निगोदने छोडी बादर निगोदादि पर्यायने पामेला नथी. ते अव्यवहार राशिवाला कहेवाय. जेटला जीवो व्यवहार राशिमांथी मोक्ष जाय तेटलाज जीवो अव्यवहार राशिमांथी नीकलीने व्यवहार राशिमां आवे. विशेष जिज्ञासुए पन्नवणा सूत्रना अढारमा पदनी टीका जोवी.

दिवसनी. पर्या० वायुका० नी ज० अंतर्मु० अनें उ० संख्याता वर्ष हजारनी. पर्या० वनस्पतिका० नी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्ष हजारनी. पर्या० त्रसका० नी ज० अंतर्मु० अने उ० सागर शतपृथक्त्व झाझेरी. सूक्ष्मनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्यातो काल-कालथी असंख्याता कालचक्रनी. क्षेत्रथी असंख्यात लोकप्रमाण. सूक्ष्मपृथवीका०, अप्का०, तेउका०, वायुका०, वनस्पतिका०, अने सूक्ष्मनिगोदनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्याता कालनी, सूक्ष्म अपर्या० पृथ्वीका० थी यावत् सूक्ष्म वनस्पतिका० नी स्थिति, ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी. सूक्ष्म पर्याप्त पृथ्वी आदि पांचनी पण एमज जाणवी. बादरनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्याता कालनी-कालथी असंख्याता कालचक्रनी, क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा[२] भाग प्रमाण. बादर पृथ्वीकायिक आदि चारनी स्थिति, ज० अंतर्मु अने उ० ७० कोडाकोडी सागरनी. बादर वनस्पतिका० नी ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्याता कालनी-कालथी असंख्यात कालचक्रनी, क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणनी. प्रत्येक बा० वनस्पति का० नी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० ७० कोडाकोडी सागरनी. निगोदनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० अनंतकालनी. क्षेत्रथी अढीपुद्गल परावर्त्तकालनी. बादर निगोदनी ज० अंतर्मु० अने उ० ७० कोडाकोडी सागरनी. बादरत्रसका० नी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता हजार वर्ष अधिक बे हजार

---

२ अंगुलना असंख्यातमा भाग क्षेत्रमां जेटला आकाश प्रदेशो होय तेने प्रति समये अपहरतां ते प्रदेशो जेटले काले खाली थाय. ते काल असंख्याती उत्सार्पणी अवसार्पणी प्रमाण थाय, कारण [१] कालथी क्षेत्र सूक्ष्म होय छे,

सागरनी. बादर अपर्याप्तनी स्थिति, ज०-उ० अंतर्मुहूर्त्तनी. बादर पर्याप्तनी ज० अंतर्मु अने उ० शतपृथक्त्व सागर अधिकनी बा० पर्या० पृथवीका० अने अप्का० नी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता हजार वर्षनी. बा० पर्या० तेउका० नी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता दिवसनी. बादर वायुका०, बा० वनस्पतिका०-प्रत्येक वनस्पतिका० पर्याप्तनी ज० अंतर्मु० अने उ० संख्याता वर्ष हजारनी. निगोद पर्याप्त अने बादर निगोद पर्या०नी ज० अने उ० अंतर्मुहूर्त्तनी बा० त्रसका० पर्या०नी ज० अंतर्मु० अने उ० शतपृथक्त्व सागर अधिकनी. ५ सयोगी बे प्रकारना छेः-१ अनादि-अनंत अने २ अनादि-सांत. मनयोगी अने वचनयोगीनी स्थिति, ज० एक समय अने उ० अंतर्मु०नी. काययोगीनी ज० अंतर्मु० अने उ० वनस्पति-कालनी. अयोगीनी सादि-अनंत-स्थिति. ६ सवेदीना त्रण प्रकारः-१ अनादि-अनंत, २ अनादि-सांत अने ३ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० अर्द्धपुद्गल-परावर्तकालनी. स्त्री वेदनी स्थितिना पांच आदेशँ छे, ते कहे छेः-पहेला आदेशथी ज० एक समयनी अने उ० एकशो दश पल्य अधिक पूर्व कोटी पृथक्त्ववर्षनी. बीजा आदेशथी ज० एक समयनी अने उ० पूर्वकोटी अधिक १८ पल्यनी. त्रीजा आदेशथी ज० एकस०नी अने उ० पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक चौद पल्यनी. चोथा आदेशथी ज० एकस०नी अने उ० पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक एकशो

---

२ सादिसांत ते उपशम श्रेणिने प्राप्त करी अवेदी थाय पुनः सवेदी थइने अंतर्मुहूर्त्ते उपशम श्रेणि प्राप्त करी अवेदी थाय ए सैद्धांतिकमते अने कार्मग्रंथिक मतानुसारे अतर्मु०मां क्षपक श्रेणि प्राप्त करी अवेदी पण थाय. उ० थी तो अर्द्धपुद्गल परावर्त्तमां अवश्य मोक्ष जाय. ३ कथन अथवा मतभेद.

पल्यनी, पांचमा आदेशथी ज० एक समयनी अने उ० पूर्वकोटी पृथक्त्ववर्ष अधिक पृथक्त्व पल्योपमनी. पुरुष वेदनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० सागरोपमशत पृथक्त्व अधिकनी. नपुंसकवेदनी ज० १ समयनी अने उ० वनस्पति-कालनी. अवेदीनी स्थिति बे प्रकारनी छेः-१ सादि-अनंत अने २ सादि-सांत. सादि सांत अवेदीनी स्थिति, ज० १ समय अने उ० अंतर्मुहूर्त्तनी. ७ सकषायी त्रण प्रकारना छेः-अनादि-अनंत, २ अनादि सांत, ३ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० अर्द्ध पुद्‌गलपरावर्त्तनी. क्रोध, मान अने मायाकषायी ए त्रणनी ज० अने उ० अंतर्मुहूर्त्तनी. लोभ कषायीनी ज० एक समयनी अने उ० अंतर्मुहूर्तनी. अकषायी बे प्रकारना छेः-१ सादि-अनंत अने २ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० एक समय अने उ० अंतर्मु०नी. ८ सलेश्यी बे प्रकारना छेः-१ अनादि-अनंत अने २ अनादि-सांत. कृष्ण लेश्यीनी स्थिति,

---

२ कोइ स्त्री उपशमश्रेणि प्राप्त करी अवेदी थइने श्रेणिथी पडी एक समय स्त्री वेदने अनुभवी देव थाय माटे स्त्री वेदीनी एक समयनी स्थिति कही छे नपुसक वेदीनी पण जे एक समयनी स्थिति छे ते माटे पण स्त्री वेदीनी माफक समजवु. ज्यारे एक समय अवेदी थइ बीजे समये मरण पामे माटे त्यारे एक समयनी स्थिति होय. ३ लेश्यानी ज० स्थिति, मनुष्य अने तिर्यंच आश्रयी जाणवी. कारण ? तेना लेश्या द्रव्यो, अवस्थित रहेता नथी अतर्मुहूर्ते परावर्त्त पामे छे; तेनु कारण मात्र कषाय छे. कषाय नाश थया बाद केवलीने अवस्थित रहे छे. अप्रशस्त लेश्यानी उ० स्थिति, नारक आश्रयी अने प्रशस्त लेश्यानी स्थिति, देव आश्रयी समजवी, ते पण पूर्वभव अने परभवना बे अतर्मु० अधिक होय छे छतां बे अंतर्मु०नो एक अतर्मु०मां समावेश करेल छे. देव अने नारकना लेश्याद्रव्यो, अवस्थित होय छे. बदलाता नथी. दर्पणमां प्रतिबिंब माफक आकार मात्रने भजे छे.

ज० अंतर्मु० अने उ० तेत्रीस सागरोपम अंतर्मु० अधिकनी. नील लेश्यीनी ज० अंतर्मु० अने उ० पल्यना असंख्यातमो भाग अधिक दश सागरनी. कापोत लेश्यीनी ज० अंतर्मु० अने उ० पल्यना असंख्यातमो भाग अधिक त्रण सागरनी. तेजो लेश्यीनी ज० अंतर्मु० अने उ० पल्यना असंख्या० अधिक बे सागरनी. पद्म लेश्यीनी ज० अंतर्मु अने उ० अंतर्मु० अधिक दश सागरनी. शुक्ल लेश्यीनी ज० अंतर्मु० अने उ० अंतर्मु० अधिक तेत्रीश सागरनी. अलेश्यीनी स्थिति, सादि-अनंतकालनी. ९ सम्यग्दृष्टि बे प्रकारना छेः-१ सादि-अनंत अने २ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० ६६ सागर-झाझेरी. मिथ्यादृष्टि त्रण प्रकारना छेः-१ अनादि अनंत, २ अनादि-सांत अने ३ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० देशेउणी अर्द्धपुद्गल-परावर्त्तनी. मिश्र (सम्यग्-मिथ्या) दृष्टिनी ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी. १० ज्ञानी बे प्रकारना छेः-१ सादि-अनंत अने २ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० ६६ सागर झाझेरी, मति अने श्रुतज्ञानी नीपण स्थिति एमज जाणवी. अवधिज्ञानीनी ज० एक समय अने उ० ६६ सागर झाझेरी. मनः-पर्यव ज्ञानीनी ज० एक समयनी अने उ० देशे उणी पूर्व कोटीनी. केवलज्ञानीनी स्थिति, सादि-अनंतकालनी. अज्ञानी अने मति-श्रुतअज्ञानीना त्रण प्रकार छेः-१ अनादि-अनंत, २ अनादि-सांत अने ३ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० देशे उणी अर्द्धपुद्गल परावर्त्तनी. विभंगज्ञानीनी ज० एक समय अने उ० तेत्रीश सागर-पूर्वकोटी-देशे उणी झाझेरी. ११ चक्षुदर्शनीनी स्थिति, ज०

अंतर्मु० अने उ० हजार-सागर झाझेरी. अचक्षुदर्शनी बे प्रकारना छेः-१ अनादि-अनंत अने २ अनादि-सांत. अवधि दर्शनीनी ज० एक समय अने उ० १३२ सागर झाझेरी. केवलदर्शनीनी, सादि-अनंतकालनी स्थिति. १२ संयतनी स्थिति, ज० एक समय अने उ० देशो उणी पूर्व कोटीनी. असंयत त्रण प्रकारना छेः-१ अनादि-अनंत, २ अनादि-सांत अने ३ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० देशोउणी अर्द्ध पुद्गलपरावर्त्तनी. संयता संयतनी ज० अंतर्मु० अने उ० देशो उणी पूर्वकोटीनी. नोसंयत नोअसं० नो संयता संयतनी सादि-अनंतकालनी. १३ साकारोपयोगी अने अनाकारोपयोगीनी स्थिति, ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी. १४ आहारक बे प्रकारना छे-छद्मस्थ अने केवली. छद्मस्थ आहारकनी स्थिति, ज० बेसमयन्यून क्षुल्लकभव (२५६ आवलीका) नी अने उ० असंख्याता कालचक्रनी, क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणनी. केवली आहारकनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० देशोउणी पूर्वकोटीनी. अनाहारक बे प्रकारना छेः-छद्मस्थ अने केवली. छद्मस्थ अनाहारकनी स्थिति, ज० एक समय अने उ० बे समयनी. केवली अनाहारकना बे प्रकार छेः-१ सिद्ध केवली अने २ भवस्थ केवली. सिद्ध के० नी स्थिति, सादि-अनंत. भवस्थ के० अनाहारकना बे भेद १ सयोगी केवली अने अयोगी केवली. सयो० केवली अनाहारकनी स्थिति, अजघन्य-अनुत्कृष्ट त्रण

---

२ त्रण समयनी विग्रहगतिमां बे समय अनाहारकना होय छे, माटे बे समय न्यून कहेल छे. ४-५ समयनी पण विग्रहगति क्वचित होय छे परंतु तेनी अत्र विवक्षा करी नथी. उत्कृष्ट अनंतकाल न थाय, कारण ? असंख्याते काले अवश्य विग्रहगति करे; तेमां अनाहारकपणुं प्राप्त थाय.

सागरनी (ते केवली समुद्घात करने होय) अयोगी के० अनाहारकनी स्थिति, ज० ने उ० अंतर्मुहूर्तनी. १५ भाषकनी स्थिति, ज० एक समय अने उ० अंतर्मु०नी. अभाषक त्रण प्रकारना छेः—१ अनादि-अनंत, २ सादि-अनंत अने ३ सादि-सांत. तेमां सादि-सांतनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० वनस्पति कालनी. १६ परित्तना बे भेदः-१ कायपरित्त (प्रत्येक शरीरी) अनें २ संसारपरित्त. कायपरित्तनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० पृथ्वी० जीवना काल जेटली (असंख्यात कालचक्रनी). संसारपरित्तनी ज० अंतर्मु० अने उ० देशोउणी अर्द्ध-पुद्गल परावर्तनी. अपरित्तना बे भेद छे-१ कायअपरित्त अने २ संसार अपरित्त. कायअपरित्तनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० वनस्पति-कालनी. संसार अपरित्तना बे भेदः-१ अनादि-अनंत अने २ अनादि-सांत. नोपरित्त नोअपरित्त (सिद्ध)नी स्थिति, सादि--अनंत. १७ पर्याप्तनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० पृथक्त्वशत सागरोपम अधिकनी. अपर्याप्तनी ज० अने उ० अंतर्मु०नी. नोपर्याप्त नोअप०नी सादि-अनंत. १८ सूक्ष्मनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० पृथ्वी-काल प्रमाण, क्षेत्रथी असंख्याता लोकाकाश प्रमाण. बादरनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० असंख्यातो काल, क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण. नोसूक्ष्म नोबा० नी सादि--अनंत, १९ संज्ञीनी स्थिति, ज० अंतर्मु० अने उ० शतपृथक्त्व सागर अधिक. असंज्ञीनी ज० अंतर्मु० अने उ० वनस्पति-कालनी. नोसंज्ञी नोअसंज्ञीनी सादि-अनंत. २० भव्य सिद्धिकनी स्थिति, अनादि--सांत. अभव्यसिद्धिकनी अनादि-अनंत अने नोभवसि० नो अभवसि० नी सादि-अनंत. २१ पांचे अस्तिकायनी स्थिति, अनादि-अनंत

छे. अद्धा समय पण प्रवाहनी अपेक्षाए अनादि-अनंत छे. चरम (जेनो छेल्लो भव थवानो होय ते)नी स्थिति-
अनादि-सांत. अचरमना बे भेदः-१ अनादि-अनंत (ते अभव्य जीव आश्रयी) अने २ सादि-अनंत, (ते
सिद्ध आश्रयी). इति कायस्थिति (अष्टादशम प्रज्ञापना पद) समाप्त.

अथ चक्रवर्त्ति चतुर्दशद्वार वर्णन—१ भरतचक्री, २ वनितामां उपना, ३ ऋषभदेवजी पिता, ४ सुमंगला माता, ५ चोर्याशी लाख पूर्वनुं आयुष्य, ६ पांचसें धनुष्यनुं देहमान, ७ सत्तोतेर लाख पूर्वलगें कुंवरपणे रह्या, ८ एक हजार वर्ष लगें मंडलिकपणे रह्या, ९ साठ हजार वर्ष लगें देश साधना करी, १० एक हजार वर्ष न्युन छ लाख पूर्व लगें चक्रवर्त्ति पदवी भोगवी, ११ सुभद्राराणी स्त्री रत्न, १२ आरीसा भुवनमां केवल पाम्या पछी एक लाख पूर्व प्रव्रज्या पाली, १३ मुक्तें गया, १४ ऋषभदेवजीना वारामां थया. ॥ बीजा सगर चक्री १ अयोध्यानगरीमां उ०, २ सुमित्र राजा पिता, ३ यशोमती माता, ४ बहुंतेर लाख पूर्वनुं आयुष्य, ५ साडाचारसें धनुष्यनुं देहमान, ६ पचास हजारपूर्व सुधी कुंवरपणे रह्या, ७ पचास हजार पूर्व सुधी मंडलिक पणे रह्या, ८ त्रीश हजार वर्ष लगें देश साधना करी, ९ सिंत्तेरलाख पूर्व लगें चक्रीपद, १० भद्रा स्त्री रत्न, ११

---

२ सगर चक्रीनुं राज्यकाल विचारणीय छे कारण ? अजीतनाथ प्रभुना तेओ काकाइ भाइ थाय छे अजीतनाथ प्रभु दिक्षा लीधा बाद तेओ राज्ये बेठा छे अने प्रभु पासे दिक्षा लीधी छे माटे राज्यकाल बहु अल्प घटी शके. गृहवासमां ७१ लाख पूर्व रहेल छे एम समवायंगमां छे पण कुंवरपणे बहुकाल जणाय छे माटे विद्वानोए विचारवुं.

एक लाख पूर्व दीक्षा पाली, १२ मुक्तें गया, १३ अजीतनाथना वारामां थया १४. ॥ त्रीजा मघवाचक्री, १ साव-त्थिनगरी, २ समुद्रविजय राजा पिता, ३ भद्रामाता, ४ पांच लाख वर्ष आयुष्य, ५ ४२॥ धनुष्यनुं देहमान, ६ पचीस हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या, ७ पचीस हजार वर्ष मंडलिकपणे रह्या, ८ वीश हजार वर्ष लगें देश साधना, ९ त्रण लाख ने असी हजार वर्ष राज्य, १० सुनंदा स्त्री रत्न, ११ पचास हजार वर्ष दीक्षा पाली, १२ त्रीजे देवलोकें गया, १३ धर्मनाथना तीर्थमां थया. १४ ॥ चोथासनत्कुमार चक्री १ हस्तिनापुर नगर, २ अश्वसेन राजा पिता, ३ सहदेवी माता, ४ त्रण लाख वर्षनुं आयुष्य, ५ ४१॥ धनुष्यनुं देहमान, ६ पचास हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या, ७ पचास हजार वर्ष मंडलिक०, ८ एक हजार वर्ष देश साधना, ९ नवाणु हजार वर्ष लगें राज्य, १० जया स्त्री रत्न, ११ एक लाख वर्ष लगें दीक्षा०, १२ त्रीजे देवलोके गया, १३ धर्मनाथना तीर्थमां थया. १४ ॥ पांचमा शांति चक्री १ हस्तिनापुर नगर, २ विश्वसेन राजा पिता, ३ अचिरा माता, ४ एक लाख वर्षनुं आयुष्य, ५ चालीश धनुष्यनुं देहमान, ६ पचीश हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या, ७ पचीश हजार वर्ष मंडलिक० ८ आठसें वर्ष देश साधना, ९ चोवीश हजार बसें वर्ष राज्य, १० विजया स्त्री रत्न, ११ पचीश हजार वर्ष दीक्षा०, १२ मुक्तें गया १३ स्वयं तीर्थंकर थया. १४ ॥ छठ्ठा कुंथु चक्री १ हस्तिनापुर नगर, २ सुरसेन राजा पिता, ३ श्रीदेवी माता, ४ पंचाणु हजार वर्षनुं आयुष्य, ५ पांत्रीस धनुष्यनुं देहमान, ६ पोणी चोवीश हजार वर्ष कुंवर०, ७ पोणी चोवीश हजार वर्ष मंडलिक०, ८ छसो वर्ष देश साधना, ९ त्रेवीश हजारने दोढसो वर्ष

राज्य, १० कृष्णश्री स्त्री रत्न, ११ पोणी चोवीश हजार वर्ष दीक्षा०, १२ मुक्तें गया, १३ स्वयं तीर्थंकर थया १४ ॥ सातमा अरचक्री १ हस्तिनापुर नगर २ सुदर्शन राजा पिता ३ देवी माता ४ चोर्याशी हजार वर्षनुं आयुष्य ५ त्रीश धनुष्यनुं देहमान ६ एकवीश हजार वर्ष कुंवर० ७ एकवीश हजार वर्ष मंडलिक० ८ पांचसें वर्ष देश साधना ९ साडीवीश हजार वर्ष राज्य १० सुरश्री स्त्री रत्न ११ एकवीश हजार वर्ष दीक्षा० १२ मुक्तें गया १३ स्वयं तीर्थंकर थया १४ ॥ आठमा सुभूम चक्री १ वाणारसी नगरी २ कीर्त्तिवीर्य राजा पिता ३ तारा राणी माता ४ साठ हजार वर्षनुं आयुष्य ५ अठ्यावीश धनुष्यनुं देहमान ६ पांच हजार वर्ष कुंवर० ७ पांच हजार वर्ष मंडलीक० ८ चारसें वर्ष देश साधना ९ ओगणपचास हजार ने छसो वर्ष राज्य १० दशमश्री राणी स्त्री रत्न ११ दीक्षा न लीधी १२ सातमी नरके गया १४ अरनाथना तीर्थमां थया. १४ नवमा महापद्म चक्री १ हस्तिनापुर नगर २ पद्मरथ राजा पिता ३ ज्वाला माता ४ त्रीश हजार वर्षनुं आयुष्य ५ वीश धनुष्यनुं देहमान ६ पांच हजार वर्ष कुंवर० ७ पांच हजार वर्ष मंडलिक० ८ त्रणसें वर्ष देश साधना ९ अढार हजार सातसें वर्ष राज्य १० वसुंधरा स्त्री रत्न ११ एक हजार वर्ष दीक्षा० १२ मुक्तें गया १३ मुनीसुव्रत स्वामीना तीर्थमां थया १४ ॥ दशमा हरिषेण चक्री १ कंपीलपुर नगर. २ महाहरी राजा पिता ३ मेरादेवी माता ४ दश हजार वर्षनुं आयुष्य ५ पंदर धनुष्यनुं देहमान ६ सवात्रणसें वर्ष कुंअर० ७ सवात्रणसें वर्ष मंडलिक० ८ दोढसो वर्ष देश साधना ९ एकहजार आठसे सित्तेर वर्ष राज्य १० देवीराणी स्त्रीरत्न ११ सातहजार त्रणसे

त्रीश वर्ष दीक्षा० १२ मुक्ते गया १३ नमीनाथना तीर्थमां थया १४ इग्यारमा जयचक्री १ राजगृहि नगरी २ समुद्रविजयराजा पिता ३ विप्रामाता ४ त्रणहजार वर्षनुं आयुष्य ५ बार धनुष्यनुं देहमान ६ त्रणसो वर्ष कुंअर० ७ त्रणसो वर्ष मंडलिक० ८ एकसो वर्ष देशसाधना ९ एकहजार नवसो वर्ष राज्य १० लक्ष्मणा स्त्रीरत्न ११ चारसो वर्ष दीक्षा १२ मुक्ते गया १३ नमीनाथना तीर्थमां थया १४ बारमा ब्रह्मदत चक्री १ कंपीलपुरनगर ब्रह्मराजा पिता ३ चूलणी माता ४ सातसो वर्षनुं आयुष्य ५ सातधनुष्यनुं देहमान ६ अठ्यावीश वर्ष कुंअर०७ छपन वर्ष मंडलिक० ८ सोल वर्ष देश साधना ९ छसो वर्ष राज्य १० कुमंती स्त्रीरत्न ११ दीक्षा न लीधी १२ सातमी नरके गया १३ नेमीनाथ ने पार्श्वनाथना आंतरामां थया. १४ ॥ इती चक्रवर्ति चतुर्दश द्वारवर्णनं समाप्तं॥

अथ वासुदेव बलदेवना २२ द्वारोनुं वर्णन—पेला त्रिपृष्ट वासुदेव १ अचल बलदेव २ वासु०सातमा देव लोकथी चवीने उपना ३ बल०अनुत्तर विमानथी चवीने उपना ४ पोतनपुर नगर ५ प्रजापतिराजापिता ६ वासु० नी माता मृगावती ७ बल०नी माता भद्रा ९ वासु०नुं आयुष्य ८४ लाख वर्षनुं ९ बल०नुं आयुष्य ८५ लाख वर्षनु १० ऐंसी धनुष्यनुं देहमान ११ गौतमगोत्र १२ वासु० नीलेवर्ण १३ बल० श्वेतवर्ण १४ संभूति नामना पूर्वभवना धर्माचार्य १५ पचीश हजार वर्ष कुंअर० १६ पचीश हजार वर्ष मंडलीक० १७ एकहजार वर्ष देशसाधना १८

२ आधमांचार्य [पूर्वभवना] वासुदेवना जाणवा पूर्वभवे चारित्रपालीनीयाणु करनार वासुदेव थाय छे बलदेव अनियाण कृत होय छे जेथी वासुदेव नरके जाय छे ने बलदेवनी सद्गती थाय छे कुमारादिकाल वासुदेवनी अपेक्षाए जाणवु बन्नेनो प्रेम अत्यंत होय छे बलदेव मोटा होय छे.

एक ह० वर्ष न्युन ३॥ लाख वर्ष राज्य १९ वासु० सातमी नरकें गया २० बल० मुक्तें गया २१ श्रेयांसनाथना
तीर्थमां थया २२ ॥ बीजा द्विपृष्ठ वासु०१ विजयबल० २ वासु० दशमा देवलोकथी० ३ बल० अनुत्तरविमानथी०
४ द्वारिकानगरी ५ ब्रह्मराजा पिता ६ वासु०नी माता उमाराणी ७ बल०नी माता सुभद्रा ८ वासु०नुं आयुष्य
७२ लाख वर्षनुं ९ बल०नुं आयुष्य ७५ लाख वर्षनुं १० सित्तेर धनुष्यनुं देहमान १० गौतमगोत्र १२ वासु०
नीलेवर्णे १३ बल०श्वेतवर्ण० १४ सुभक्ति पूर्व०ना धर्माचार्य १५ पचीश हजार वर्षकुंवर० १६ पचीशहजार वर्ष
मंडलिक० १७ एकसो वर्ष देशसाधना १८ एकसो वर्ष ओछा साडाएकोतेरलाख वर्ष राज्य १९ वासु० छठ्ठी
नरकें गया २० बल० मुक्तें गया २१ वासुपूज्यस्वामीना तीर्थमां थया ॥ २२ त्रीजा स्वयंभूवासु० १ भद्रबल० २
वासु०बारमा देवलोकथी ३ बल०अनुत्तर०४ द्वारिका नगरी ५ रुद्रराजापिता ६ वासु०नीं माता पृथ्वी ७ बल०नी
माता सुप्रभा ८ वासु०नुं आयुष्य साठलाख वर्षनुं ९ बलदेवनुं आयुष्य ६५ लाख वर्षनुं १० साठ धनुष्यनुं देह-
मान ११ गौतम गोत्र १२ वासु० नीलेवर्णे १३ बल० श्वेतवर्ण १४ सुदर्शन नामना पूर्वभवना धर्माचार्य १५ बार-
हजार वर्ष कुंवर० १६ बारहजार वर्ष मंडलिक० १७ नेवु वर्ष देश साधना १८ ओगणसाठ लाख पंचोत्तेरहजार
नवसो दश वर्ष राज्य १९ वासु० छठ्ठी नरकें गया २० बलदेव मुक्तें गया २१ विमलनाथना तीर्थमां थया २२ ॥
चोथा पुरुषोत्तम वासु० सुप्रभ बल० २ वासु०ने बल० बन्ने आठमा देव०थी चवी आव्या ३-४ द्वारिका नगरी
५ सोमराजापिता ६ वासु०नी माता सीता ७ बल०नी माता सुदर्शना ८ वासु०नुं त्रीश लाख वर्षनुं आयुष्य ९

बल०नुं पंचावनलाखवर्षनुं आयुष्य १०पचास धनुष्यनुं देहमान ११ गौतम गोत्र १२ वासु० नीलेवर्णे १३ बल० श्वेतवर्णे १४ श्रेयांस पूर्व० धर्माचार्य १५ सातसो वर्ष कुंवर० १६ तेरसो वर्ष मंडलिक० १७ एंसी वर्ष देशसाधना १८ ओगणत्रीश लाख सताणुहजार नवसो ने वीश वर्ष राज्य १९ वासु० छट्ठी नरके गया २० बल० मुक्तें गया २१ अनंतनाथना तीर्थमां थया २२ ॥ पांचमा पुरुषसिंह वासु० १ सुदर्शन बल० २ वासु० इशान देवलोक० ३ बल० आठमा देव० ४ अश्वपुरी नगरी ५ शिवराजा पिता ६ वासु०नी माता उमया ७ बल०नी माता विजया ८ वासु०नुं दशलाख वर्षनुं आयुष्य ९ बल०नुं सतरलाख वर्षनु आयुष्य १० पिस्तालीश धनुष्यनुं देहमान ११ गौतमगोत्र १२ वासु० नीलेवर्णे १३ बल० श्वेतवर्णे १४ कृष्ण नामना पूर्व० धर्माचार्य १५ त्रणसो वर्ष कुंवर० १६ साडाबारसो वर्ष मंडलिक० १७ सित्तेर वर्ष देशसाधना १८ नवलाख अठाणुहजार त्रणसो एंसी वर्ष राज्य १९ वासु० छट्ठी नरके० २० बल० मुक्तें० २१ धर्मनाथना तीर्थमां थया २२ ॥ छट्ठा पुरुष पुंडरिक वासु० १ आनंद बल० २ वासु० चोथा देव० ३ बल० आठमा देव० ४ चक्रपुरनगर ५ महाशिवराजा पिता ६ वासु०नी माता लक्ष्मी ७ बल०नी माता विजयंती ८ वासु०नुं आयुष्य ६५ ह० वर्षनुं ९ बल०नुं आयुष्य ८५ ह० व० १० ओगणत्रीश धनु० देहमान ११ वासु० नीले० १२ बल० श्वे०व० १३ गौतम गोत्र १४ पूर्व० धर्माचार्य संगदत्त १५ अढीसो व० कुंवर १६ अढीसो व० मंडलिक० १७ साठ व० देशसाधना १८ चोसठ ह० चारसो चालीश व० राज्य १९ वासु० छट्ठी नरके० २० बल० मोक्ष० २१ अरनाथना तीर्थमां थया ॥ २२ सातमा

दत्त वासु० १ नंदन बल० २ वासु० सौधर्मे देव० ३ बल० पांचमा देव० ४ वाणारसी नगरी ५ अग्निसिंहराजापिता ६ वासु०नी माता शेषवती ७ बल०नी माता जयंती ८ छवीश धनुष्यनुं देहमान ९ वासु०नुं आयुष्य ५६ ह० व० १० बल०नु आयुष्य ६५ ह० व० ११ गौतमगोत्र १२ वा० नी० व० १३ व० श्वे० व० १४ पूर्व० धर्माचार्य सागर १५ नवसो व० कुंवर० १६ पचास व० मंडलिक० १७ पचास व० देशसाधना १८ ५५ ह० व० राज्य १९ वासु० पांचमी नरकें० २० बल० मुक्तें० २१ अरनाथजीना तीर्थमां थया. २२ ॥ आठमा लक्ष्मण वासु० १ पद्म (रामचन्द्र) बलदेव २ वासु० त्रीजा देव० ३ बल० पांचमा देव० ४ अयोध्यानगरी ५ दशरथ राजापिता ६ वासु०नी माता सुमित्रा ७ बल०नी माता अपराजीता (कौशल्या) ८ वासु० आयुष्य १२ ह० व० ९ बल०नुं आयुष्य १५ ह० व०नुं १० सोल धनुष्यनुं देहमान ११ गौतमगोत्र १२ वा०नी व० १३ व० श्वे० व० १४ पूर्व० धर्माचार्य समुद्रदत्त १५ एकसो व० कुंवर० १६ त्रीश व० मंडलिक० १७ अग्यारहजार आठसो सितेर व० राज्य १८ वासु० चोथी नरकें० १८ बल० मोक्षे २० मुनीसुव्रतजीना तीर्थमां थया २१ ॥ नवमा कृष्ण वासु० १ राम बल० २ वासु० सातमा देव० ३ बल० पांचमा देव० ४ मथुरानगरीमां उपना ५ वसुदेवजी

घणा ग्रंथोमां २६ धनुष्यनुं

२ दत्त वासु०नु देहमान पांत्रीश धनुष्यनु समवायगमां कहेल छे पण ते घटी शकतुं नथी आवश्यकादि कहेल छे अने ते अरनाथ तथा मलीनाथना आंतरामां थयेल होवाथी एटलुज घटी शके माटे सुत्रकारनु आशय बहुश्रुत गम्य छे. ३ मथुरानगरीमां कसने त्यां वा० जन्म्या वृद्धि गोकुल गाममां पाम्या राज्य द्वारिकामां कर्युं अने कौशांबी अटवीमां मृत्यु थयुं ए विचित्रता थइ बलदेवजीनुं जन्म तो

पिता ६ वासु०नी देवकीमाता ७ बल०नी रोहिणीमाता ८ वासु०नुं आयुष्य एकहजार व० ९ बल०नुं आयुष्य बारसो व०नुं १० धनु० दशनुं देहमान ११ गौतमगोत्र १२ वा०नी व० १३ ब० श्वे० व० १४ पूर्व० धर्माचार्य दुरंतसेन १५ सोलव० कुंवर १६ छपन व० मंडलिक० १७ नवसो अठ्यावीश व० राज्य १८ वासु० त्रीजी नरकें १९ बल० पांचमे देव० गया २० नेमनाथना समयमां थया २१ ॥

हवे नव प्रतिवासुदेवना नाम कहे छेः—१ अश्वग्रीव २ तारक ३ मेरक ४ मधु ५ निशुंभ ६ बली ७ प्रह्लाद ८ रावण ९ जरासिंधु० प्रति० प्रथम त्रण खंडना भोक्ता होय पछी वासु० तेने तेनाज चक्रवडे मारी वासु० त्रण खंडना भोक्ता थाय छे. वासुदेवना सात रत्नना नाम तथा आकार अने प्रमाण कहे छेः—१ चक्ररत्न वृत्ताकारे चार हाथ प्रमाण २ धनु० र० चक्राकारे चार हाथ प्रमाण ३ खड्गरत्न वृत्ताकारें बत्रीश अंगुल प्रमाण ४ कौस्तुभरत्न स्तंबलंबाकारे वाम प्रमाण ५ गदा रत्न वत्साकारें हस्त प्रमाण ६ वनमालारत्नलंबाकारें बत्रीश अंगुल प्रमाण ७ शंखरत्न चतुष्कोण चार अंगुल प्रमाणे होय छे. वासु०ना वस्त्र पीला बल०ना वस्त्र लीला वासु०नी ध्वजाए ताडनो चिन्ह बल०नी ध्वजाए गरुडनो चिन्ह वासुदेवने आयुध पांच १ पंचायन शंख २ सुदर्शनचक्र ३ कौमुदी गदा ४ सारंग धनु० ५ नंदन खड्ग बल० ने आयुध बे, हल अने मूशल इती वासु० बल० वर्णन समाप्त॥

सौरीपुरमां थयुं छे कारण जादवो मूल सौरीपुरना छे. २ आठमा तथा नवमा वासुदेवनी देश साधनानो काल थोडो छे ते राज्यकालमा अतर्गत जाणवो जुदो बतावेल नथी.

अथ गणधरोना १२ द्वारोनुं वर्णन—पेला गणधर गोवरगाममां उपना १ वसुभूति पिता २ पृथवीमाता ३ ज्येष्ठा नक्षत्रे जनम्या ४ इन्द्रभूति नाम ५ गौतम गोत्र ६ जीव छे के नहिं ए संशय हतो ते प्रभुए टाल्यो ७ पांचसो जणा साथे दीक्षा लीधी ८ पचास वर्ष गृहवास ९ त्रीश वर्ष छद्मस्थपणुं १० बार वर्ष केवल पर्याय ११ सर्वायुष्य ९२ वर्षनुं १२ ॥ बीजा गणधर गोवर गामे उपना १ वसुभूति पिता २ पृथ्वी माता ३ कृत्तिका नक्षत्रें जनम्या ४ अग्निभूति नाम ५ गौतमगोत्र ६ कर्म छे के नहिं ए संशय० ७ पांचसो जणा साथे दीक्षा लीधी ८ छेतालीश वर्ष गृहवास ९ बार वर्ष छद्मस्थपणुं १० सोल वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ७४ वर्ष १२ ॥ त्रीजा गणधर गोवर गामे उपना १ वसुभूति पिता २ पृथ्वी माता ३ स्वाति नक्षत्रे जनम्या ४ वायुभूति नाम ५ गौतमगोत्र ६ जीव छे तेज शरीर छे के जुदो छे ए संशय० ७ पांचसो जणा साथे दीक्षा लीधी ८ बेतालीश वर्ष गृहवास ९ दश वर्ष छद्मस्थपणुं १० १८ वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ७० वर्ष १२ ए त्रणे सगा भाइ हता ॥ चोथा गणधर कोलागसन्निवेशे उपना १ धनमित्र पिता २ वारुणी माता ३ श्रवण नक्षत्रे जनम्या ४ व्यक्त नाम ५ भारद्वाज गोत्र ६ पृथव्यादि पांच भूतो छे के नहिं ए संशय० ७ पांचसो जणा साथे दीक्षा० ८ पचास वर्ष गृहवास ९ बार वर्ष छद्मस्थपणुं १० अढार वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ऐंसी वर्ष १२ ॥ पांचमा गणधर कोलागसन्निवेशे उपना १ धम्मिल पिता २ भद्दिला माता ३ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रें जनम्या ४ सुधर्मा नाम ५ अग्निवैश्यायन गोत्र ६ मनुष्य मरीने मनुष्यज थाय के केम ए संशय० ७ पांचसो जणा साथे दीक्षा० ८

पचास वर्ष गृहवास ९ बेतालीश वर्ष छद्मस्थपणुं १० आठ वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य एकसो वर्ष १२ ॥ छठ्ठा गणधर मौर्यसन्निवेशें उपना १ धनदेव पिता २ विजय देवी माता ३ मघा नक्षत्रे जनम्या ४ मंडितै नाम ५ वाशिष्ट गोत्र ६ बंध मोक्ष छे के नहिं ए संशय० ७ साडा त्रणसो जणा साथे दीक्षा लीधी ८ त्रेपन वर्ष गृहवास ९ चौदवर्ष छद्मस्थपणुं १० सोल वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ८३ वर्ष १२॥ सातमा गणधर मौर्यसन्निवेशें उपना १ मौर्यदेव पिता २ विजयदेवी माता ३ रोहिणी नक्षत्रें जनम्या ४ मौर्यपुत्र नाम ५ काश्यप गोत्र ६ देव छे के नहिं ए संशय० ७ साडा त्रणसो जणा साथे दीक्षा० ८ पांसठ वर्ष गृहवास ९ चौद वर्ष छद्मस्थपणुं १० सोल वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ९५ वर्ष १२ ॥ आठमा गणधर मिथिलामां उपना १ देवदिन्न पिता २ जयंतीमाता ३ उत्तराषाढा नक्षत्रमां जनम्या ४ अकंपित नाम ५ गौतमगोत्र ६ नरक छे के नहिं ए संशय० ७ त्रणसो जणा साथे दीक्षा ८ अडतालीश वर्ष गृहवास ९ नव वर्ष छद्मस्थ० १० एकवीश वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ७८ वर्ष १२॥ नवमा गणधर कोशलामां उपना १ वसुदेव पिता २ नंदामाता ३ मृगशिर नक्षत्रे जनम्या ४ अचलभ्राता नाम ५ हारितगोत्र ६ पुण्य पाप छे के नहि ए संशय० ७ त्रणसो जणा साथे दीक्षा० ८ छेतालीश वर्ष गृहवास ९ बार वर्ष छद्मस्थ० १० चौद वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ७२ वर्ष० १२॥ दशमा गणधर वत्स-भूमीमां तुंगिक सन्निवेशनी अंदर उपना १ दत्तपिता २ वरूणदेवी माता ३ अश्वनी नक्षत्रें जनम्या ४ मेतार्यनाम

---

२ मंडिक पण नाम छे.

५ कौडिन्य गोत्र ६ परलोक छे के नहि ए संशय० ७ त्रणसो जणा साथे दीक्षा० ८ छत्रीश वर्ष गृहवास ९ दश वर्ष छद्मस्थ० १० सोलवर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ६२ वर्ष० १२ ॥ इग्यारमा गणधर राजगृहि नगरीमां उपना १ बलपिता २ अतिभद्रामाता ३ पुष्य नक्षत्रें जनम्या ४ प्रभासनाम ५ कौडिन्य गोत्र ६ मोक्ष छे के नहि ए संशय० ७ त्रणसो जणा साथे दीक्षा० ८ सोल वर्ष गृहवास ९ आठ वर्ष छद्मस्थ० १० सोल वर्ष केवल० ११ सर्वायुष्य ४० वर्ष० १२ ॥ सर्वे गणधरो जातिवंत ब्राह्मणो हता वली तेओ विद्वान अध्यापको हता सर्वे द्वादशांगीना धारण करनारा थया नव गणधरो वीर प्रभुनी हयातीमां राजगृही नगरीमां मोक्षें गया वीर प्रभु मोक्षें गया पछी इंद्रभूति (गौतम) तथा सुधर्मा स्वामी अनुक्रमे राजगृही नगरीमां मोक्षे गया सर्वे गणधरोए छेवटे एक मासनुं पादपोपगमन अनशन करेल छे. सर्वलब्धि युक्त प्रथम संघयण अने समचउरंस संठाणवाला सर्वे गणधरो हता इती गणधर वर्णनं समाप्तं ॥

अथ वीश विहरमान जिनना सोलद्वार कहे छे—पेला सीमंधर स्वामी १ जंबूद्विपना महाविदेह क्षेत्रमां थया २ आठमी पुष्कलावती विजय ३ पुंडरगिणि नगरीमां जनम्या ४ श्रेयांसराजा पिता ५ सत्यकी माता ६ वृषभलंछन ७ रुकमणी स्त्री ८ सुवर्ण वर्णदेह ९ पांचसें धनुष्य देहमान १० चोर्यांशी लाख पूर्वनुं सर्व आयुष्य ११ तेमां २० लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या १२ त्रेसठ लाख पूर्व राज्य भोगव्युं १३ एक लाख पूर्व

२ हाल विहरमान वीश तिर्थंकरो महाविदेहमां केवली तरिके विचरे छे पण थया ए भूतकालनु वचन जन्मने आश्रयी समजवुं.

ांत-
प
०॥

चारित्र० १४ एकसोक्रोड साधुओनो परिवार १५ दश लाख केवलीनो परिवार १६ ॥ बीजा युगमंधर स्वामी १ जंबू० महा० २ नवमीवप्र विजय ३ विजयापुरी नगरी० ४ सुद्रढराजा पिता ५ सुतारा माता ६ गजलंछन ७ प्रीयमंगला स्त्री ८ शेष आठ बोल पूर्ववत् ॥ त्रीजा बाहुस्वामी १ जंबू० महा० २ चोवीशमी वत्स विजय ३ सुसीमापुरी नगरी ४ सुग्रीव राजा पिता ५ विजया माता ६ मृगलंछन ७ मोहनी स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ चोथा सुबाहुस्वामी १ जंबू० महा० २ पचीशमी नलीनावती विजय ३ अयोध्या नगरी ४ निषधराजा पिता ५ सुनंदा माता ६ कपीलंछन ७ किंपुरीसा स्त्री ८ शेषपूर्व० ॥ पांचमा सुजातस्वामी १ पूर्वधातकी खंड० २ आठमी पुष्कलावती विजय ३ पुंडरगिणि नगरी ४ देवसेनराजा पिता ५ देवसेना माता ६ सूर्यलंछन ७ जयसेना स्त्री ८ शेषपूर्ववत् ॥ छठा स्वयंप्रभस्वामी १ पूर्वधातकी खंड० २ नवमी वप्रविजय ३ विजयापुरी नगरी ४ कीर्त्तिगजराजा पिता ५ मंगला माता ६ चंद्रलंछन ७ प्रीयसेना स्त्री ८ शेषपूर्ववत् ॥ सातमा ऋषभानन स्वामी १ पूर्वधातकी खंड २ चोवीशमी वच्छविजय ३ सुसीमापुरी नगरी ४ कीर्त्तिधरराजा पिता ५ वीरसेना माता ६ सींहलंछन ७ जयावती स्त्री ८ शेषपूर्ववत् ॥ आठमा अनंतवीर्यस्वामी १ पूर्व धातकी खंड० २ पचीशमी नलीनावती विजय ३ अयोध्या नगरी ४ मेघरथ राजा पिता ५ मंगलावती माता ६ गजलंछन ७ विजयावती स्त्री ८ शेषपूर्ववत् ॥ नवमा सूरप्रभस्वामी १ पश्चिम धातकी खंड० २ आठमी पुष्कलावती विजय ३ पुंडरगिणि नगरी ४ विजयराजा

---

२ आवती चोवीशीमां मोक्षे जशे.

पिता ५ विजया माता ६ चंद्रलंछन ७ नंदसेना स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ दशमा विशालप्रभ स्वामी १ पश्चिम धातकी० २ नवमीवप्र विजय ३ विजयापूरी नगरी ४ श्रीनागराजा पिता ५ भद्रामाता ६ सूर्यलंछन ७ विमला स्त्री ८ शेषपूर्व० इग्यारमा वज्रंधर स्वामी १ पश्चिम धातकी० २ चोवीशमीवत्स विजय ३ सुसीमापूरी नगरी ४ पदमरथ राजा पिता ५ सरस्वति माता ६ शंखलंछन ७ विजया देवी स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ९ बारमा चंद्रानन स्वामी १ पश्चिम धातकी० २ पचीशमी नलीनावती विजय ३ अयोध्या नगरी ४ वाल्मिक राजा पिता ५ पदमावती माता ६ वृषभलंछन ७ लीलावती स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ तेरमा चंद्रबाहु स्वामी १ पूर्व पुष्करार्द्ध० २ आठमी पुष्कलावती विजय ३ पुंडरगिणि नगरी ४ देवानंद राजा पिता ५ रेणुका माता ६ कमललंछन ७ सुगंधा स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ चौदमा भुजंगस्वामी १ पूर्व पुष्करार्द्ध० २ नवमी वप्रविजय ३ विजयानगरी ४ महाबल राजा पिता ५ महिमा माता ६ कमल लंछन ७ सुगंधसेना स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ पंदरमा इश्वर स्वामी १ पूर्व पुष्करार्द्ध० २ चोवीशमीवत्स विजय ३ सुसीमापुरी नगरी ४ गजसेन राजा पिता ५ यशोज्वला माता ६ चंद्रलंछन ७ भद्रावती स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ सोलमा नेमिप्रभ स्वामी १ पूर्व पुष्करार्द्ध २ पचीशमी नलीनावती विजय ३ अयोध्या नगरी ४ वीरभद्र राजा पिता ५ सेनावती माता ६ सूर्यलंछन ७ मोहनी स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ सतरमा वीरसेन स्वामी १ पश्चिम पुष्करार्द्ध० २ आठमी पुष्कलावती विजय ३ पुंडरगिणि नगरी ४ भूमीपाल राजा पिता ५ भानुमती माता ६ वृषभ लंछन ७ राजसेना स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ अढारमा महाभद्र स्वामी १ पश्चिम पुष्क-

रार्द्ध० २ नवमीवप्र विजय ३ विजयापुरी नगरी ४ देवसेन राजा पिता ५ उमा माता ६ गजलंछन ७ सुरिकंता स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ ओगणीशमा देवयशा स्वामी १ पश्चिम पुष्करार्द्ध २ चोवीशमी गल्सा विजय ३ सुसीमापुरी नगरी ४ संवरभुती राजा पिता ५ गंगावती माता ६ चंद्रलंछन ७ पद्मावती स्त्री ८ शेष पूर्ववत् ॥ वीशमा अजीतवीर्य स्वामी १ पश्चिम पुष्करार्द्ध० २ पचीशमी नलिनावती विजय ३ अयोध्या नगरी ४ राजपाल राजा पिता ५ कनकावती माता ६ शंखलंछन ७ रत्नमाला स्त्री ८ शेष पूर्ववत् इती विहरमान जिन षोडशद्वार वर्णनं समाप्तं ॥

अथ लेश्या–विचार–जेना वडे आत्मा कर्मथी लेपाय ते लेश्या. अथवा कृष्णादि द्रव्यना संयोगथी स्फटिक रत्ननो जेम अन्य नवीन परिणाम थाय छे, तेम योगांतर्गत कृष्णादि परमाणु द्रव्यनी प्रधानताथी जे आत्मानो परिणाम थाय छे ते लेश्या कहेवाय छे. ज्यांसुधी योग होय छे, त्यांसुधी लेश्या होय छे अने ज्यां योगनो अभाव होय छे त्यां लेश्या होती नथी. माटे आ अन्वय[२]–व्यतिरेक संबंधथी लेश्यानुं कारण योग छे. जेटला प्रमाणमां कषायनो सद्भाव होय तेटला प्रमाणमां कषायोने आ लेश्या द्रव्यो सहायक बनीने प्रगट करे छे. केमके योगांतर्गत अन्य द्रव्यो पण कषायने उद्दीपन (बलवान्) करवाने समर्थ थाय छे. जेमके पित्त द्रव्यमां क्रोधने उद्दीपन करवानो गुण देखाय छे; क्रोधातुर माणसनी अति पित्त प्रकृति होय छे. वळी मदिरा

२ कारणना सद्भावे कार्यनो सद्भाव ते अन्वय अने कारणना अभावे कार्यनो अभाव ते व्यतिरेक.

थाय छे अने
दहिं वगेरे बाह्य द्रव्यो, ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय कर्मोदयना हेतुभूत (निमित्त कारण) थाय छे अने
ब्राह्मी वज आदिक द्रव्यो, ज्ञाना वरणीयादि कर्मना क्षयोपशमना हेतुभूत पण थाय छे. ज्यारे आ बाह्य
द्रव्योमां आ प्रमाणे देखाय छे, त्यारे योगांतर्गत लेश्या द्रव्योमां पण सामर्थ्य होय ए योग्यज छे. अर्थात्
लेश्या द्रव्यो, कषायना कारण छतां पण लेश्या कषायनी साथे तदात्मक थती नथी; कारण ? कषायना अभा-
वमां पण लेश्या होय छे. कह्युं छे के "जोगपरिणामो लेस्सा." माटे योगना उदयथी लेश्या छे अने तेरमा
गुणठाणा सुधी ते होय छे. लेश्या छ प्रकारनी छे:-१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ४ तेजोलेश्या,
५ पद्मलेश्या, अने ६ शुक्ललेश्या, कृष्णलेश्या मेघ अंजन अने खंजन वगेरेना रंग जेवी काळी छे. नील लेश्या,
पोपट (शुक), चासपक्षी अने नील कमल वगेरेना रंग जेवी नीली छे. कापोतलेश्या खेरसार, करीरसार अने

---

२ कषाय स्वरुप थवु ते ३ लेश्या, योगजन्य कहेल छे ते पन्नवणा-वृत्तिकारना अभिप्राये छे. कर्मग्रथनी वृत्तिमां त्रण मतो बताव्या छे:-केट-
लाक आचार्यो, कर्म-परिणामने लेश्या माने छे, एटले आठ कर्मना उदयथी माने छे अन्य आचार्यो कषायना उदयथी लेश्या माने छे. वळी बीजा
आचार्यो योगना उदयथी माने छे आ त्रण मतमां 'योगजन्य लेश्या' ए मत विशेष माननीय छे. बीजा बे मत पण सापेक्षताए घटी शके छे.
सारांश ए छे के:-जे द्रव्य लेश्या ते योगजन्य छे अने भाव लेश्यानु कारण छे: भाव लेश्या कषाय जन्य छे. पण ते, द्रव्य लेश्यानी अपेक्षा राखे
छे. भाव लेश्या, द्रव्य लेश्या सिवाय होती नथी; परतु भाव लेश्या सिवाय द्रव्य लेश्या होय छे. कारण ? कषायना नाश पछी पण द्रव्य लेश्या
होय छे.

वृंताक (रींगणा)ना पुष्प वगेरेना रंग जेवी छे. तेजोलेश्या, पद्मरागमणि हींगलो अने परवाला वगेरेना रंग जेवी लाल छे. पद्मलेश्या, सुवर्ण चंपाना फूल अने कणेरना पुष्प वगेरेना रंग जेवी पीळी छे. शुक्ल लेश्या, गायना दूध–दहिं, समुद्रफीण अने शरद् ऋतुना वादळा वगेरेना रंग जेवी धोळी छे. कृष्ण लेश्यानो रस कडवी तुबडी, लींबडो अने कडु वगेरेना रस जेवो कडवो छे. नील लेश्यानो रस, पीपर, आदु अने शूंठ वगेरेना रस जेवो तीखो छे. कापोत लेश्यानो रस काचां बिजोरां, कोठ अने आमला वगेरेना रस जेवो खाटो रस छे. तेजो लेश्यानो रस पाकेलां आंबाना रस जेवो छे. पद्मलेश्यानो रस द्राक्ष, खजुर अने इक्षु (शेलडी)ना रस जेवो मधुर छे. शुक्ल लेश्यानो रस गोळ, खांड अने साकरना रस जेवो मधुर छे. पहेली त्रण लेश्यानो गंध गायना सर्पना अने हाथी वगेरेना मडदांना दुर्गंधथी अनंतगुणो दुरभिगंध छे. पाछली त्रण लेश्यानो गंध, सुगंधी पुष्पो (चंपा वगेरे)ना सुगंधथी अनंतगुणो सुरभिगंध छे प्रथमनी त्रण लेश्याओनो स्पर्श, गायनी जीभ अने करवतना स्पर्शथी पण अनंतगुणो कर्कश छे. छेल्ली त्रण लेश्याओनो स्पर्श, माखण बूर अने सरसवना फूलथी पण अनंतगुणो कोमल छे. पहेली त्रण लेश्याओ अप्रशस्त (अशुभ) छे अने पाछलनी त्रण लेश्याओ प्रशस्त (शुभ) छे. पहेली त्रण लेश्याओ संक्लिष्ट छे अने पाछली त्रण लेश्याओ असंक्लिष्ट छे. प्रथमनी त्रण लेश्याओ, शीत अने रुक्ष स्पर्शवाली छे अने पाछली त्रण लेश्याओ, उष्ण अने स्निग्ध स्पर्शवाली छे. पहेली त्रण ले० दुर्गतिनी देनारी छे अने पाछली त्रण ले० सुगतिनी देनारी छे. वळी जेम वैडुर्यमणि, भिन्न भिन्न सूत्रना संसर्गथी विविध

वर्णवाळो देखाय छे, तेम देव अने नारकनी लेश्याओ, अन्य लेश्या-द्रव्योना संसर्गथी तदाकार मात्रने भजे छे; परंतु पोताना स्वरुपने छोडती नथी. माटे देव-नारकनी द्रव्य लेश्याओ अवस्थित (यावत् जीव सुधी) रहे छे अने अध्यवसायना परावर्त्तनथी छए लेश्याओ होय छे; तेथी दुष्ट लेश्यावाला नरकना जीवोने तेजो लेश्यादिथी समकितनी प्राप्ति थाय छे. कारण १ समकितनी प्राप्ति शुभ लेश्यामां होय छे अने पूर्व प्रतिपन्न (समकित-पामेल) छए लेश्यावाला होय छे. मनुष्य अने तिर्यचोनी द्रव्य लेश्याओ, अन्य लेश्या द्रव्योना संसर्गथी स्वरुपनो त्याग करी तद्रुप पण थइ जाय छे. जेम श्वेत वस्त्रने रंगमां झबोळवाथी रंगित (तद्रुप) बनी जाय छे, तेम मनुष्य-तिर्यचोनी द्रव्य ले० अंतर्मुहूर्तें अंतर्मुहूर्तें बदली जाय छे; अर्थात् मनुष्य अने तिर्यचोनी द्रव्यने भाव लेश्यानुं परावर्तन थाय छे. लेश्याना परिणाम ३ प्रकारे, ९ प्रकारे, २७ प्रकारे, ८१ प्रकारे, २४३ प्रकारे अने बहु प्रकारे पण परिणमे छे. जे लेश्याना परिणाम होय तेना पहेला अने छेल्ला क्षणमां मरण थतुं नथी. छेल्लुं अंतर्मुहूर्त शेष (बाकी) होय त्यारे अथवा प्रथम अंतर्मुहूर्त व्यतीत थयुं होय त्यारे मृत्यु थाय छे. एमां पण देव-नारकनुं मरण, अंतर्मुहूर्त शेष लेश्या रहे त्यारे थाय अने मनुष्य अने तिर्यचनो मृत्यु, प्रथम अंतर्मुहूर्त वीत्या बाद थाय. प्रत्येक लेश्याओनी अनंत वर्गणाओ छे अने ते अनंत प्रदेशवाली होय छे, तेनी अवगाहना असंख्यात प्रदेशोनी होय छे. लेश्याना अध्यवसाय स्थानो असंख्याता होय छे, ते असंख्यात लोकाकाश जेटला

---

२ कृष्ण लेश्यावाला नारकने तेजो द्रव्यना संसर्गथी कृष्ण लेश्या-द्रव्यो अवस्थित छता तेजो लेश्या, भावथी आकार मात्र होय छे.

छे. कृष्ण लेश्यानी जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टस्थिति ३३ सागर–अंतर्मु० अधिक नील ले०नी ज० स्थिति अंतर्मु० अने उ० दश सागर अने पल्योपमना असंख्यातमे भागे अधिक. कापोत ले०नी ज० स्थिति अंतर्मु० अने उ० त्रण सागर–पल्योपमना असंख्यातमे भागे अधिक. तेजो ले०नी ज० स्थिति अंतर्मु० अने उ० बे सागर–पल्यो०ना असंख्या० अधिक० पद्म लेश्यानी ज० स्थिति अंतर्मु० अने उ० दश सागर अंतर्मु० अधिक शुक्ल–लेश्यानी ज० स्थिति अंतर्मु० अने उ० ३३ सागर–अंतर्मु० अधिकनी. ए ओघिक स्थिति कही, हवे भिन्न भिन्नगति आश्रयी स्थिति कहे छेः–नारकोनी कापोत लेश्यानी ज० स्थिति दश हजार वर्ष अने उ० त्रण सागरोपमने पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक. नील लेश्यानी ज० स्थिति त्रण सागर ने पल्योपमना असंख्यातमे भागे अधिक. अने उ० स्थिति दश सागर ने पल्यना असंख्या० अधिक. कृष्ण लेश्यानी ज० स्थिति दश सागरने पल्यना असं० अधिक, अने उ० ३३ सागरनी. देवगतिमां कृष्ण लेश्यानी ज० स्थिति दश हजार वर्ष अने उ० पल्यना असंख्यातमा भागनी. नील लेश्यानी ज० स्थिति ते कृष्ण लेश्यानी उ० स्थितिथी एक समय अधिक अने उ० पल्यना असंख्यातमा भागे अधिक. कापोत लेश्यानी ज० स्थिति ते नील लेश्यानी उ० स्थितिथी एक समय अधिक अने उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक (आ त्रण लेश्यानी स्थिति भवनपति अने व्यंतर आश्रयी जाणवी) तेजोलेश्यानी (भवनपति अने व्यंतर आश्रयी) ज० स्थिति दश हजार वर्षनी अने

---

२ पूर्वना असंख्यातमा भागथी आ पल्यनो असंख्यातमो भाग मोटो समजवो एम सर्वत्र जाणी लेवु.

उ० भवनपतिमां एक सागर झाझेरी अने व्यंतरमां एक पल्यनी. ज्योतिष्कमां ज० पल्यनो आठमो भाग अने उ० एक पल्यने एक लाख वर्षनी. पहेला देवलोकमां ज० एक पल्य अने उ० बे सागरनी. बीजा देवलोकमां ज० पल्योपम झाझेरी अने उ० बे सागर ने पल्यना असंख्यातमा भागनी. पद्मलेश्यानी (त्रीजे चोथे अने पांचमे) देवलोके ज० स्थिति, तेजो लेश्यानी उ० स्थितिथी एक समय अधिक अने उ० दश सागरनी. शुक्ल लेश्यानी (छट्ठा देवलोकथी यावत् सर्वार्थसिद्धमां) ज० स्थिति दश सागर समयाधिक अने उ० ३३ सागरनी होय. तिर्यंच आश्रयी छए लेश्यानी स्थिति, अंतर्मुहूर्तनीज होव अने मनुष्य आश्रयी शुक्ल लेश्या सिवाय पांच लेश्यानी स्थिति, अंतर्मु० नीज होय. मनुष्यमां छद्मस्थ आश्रयी शुक्ल लेश्यानी अंतर्मु० नी अने केवली आश्रयी ज० अंतर्मु० अने उ० नव वर्ष न्यून क्रोड पूर्वनी होय. इति लेश्या स्वरूपं समाप्तं.

अथ भव-संवेध विचार-वर्तमान अने भाविभवनो तेमज आयुष्यनो जे सबंध ते भवसंवेध. पूर्वभव अने परभव सबधी जे जघन्य ने उत्कृष्ट आयुष्यना भेदने लइने चार भांगा थाय छे ते कहे छेः-१ पूर्वभव अने परभवनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय ते प्रथम भंग. २ पूर्वभवनुं उ० आयुष्य अने परभवनुं ज० आयुष्य होय ते द्वितीयभंग. ३ पूर्वभवमां ज० आयुष्य अने परभवमां उ० आयुष्य होय ते तृतीय भंग. ४ पूर्वभव अने परभव (आगामिभव)मां पण ज० आयुष्य होय ते चतुर्थभंग. आ चारे भांगामां सञ्ज्ञीमनुष्य, अने तिर्यंच प्रथमथी

३ पन्नवणासूत्र-लेश्यापद, विशेष जिज्ञासुए जोवुं. ४ भगवतीजीमां नव भांगा कहेल छे, अहिं चार भांगामां संक्षेपथी समावेश करेल छे.

छठ्ठी नरकभूमिओमां पृथक् पृथक् उत्कृष्ठ आठ भव पूरे छे—करे छे, ते आ प्रमाणेः—कोइक मनुष्य के तिर्यञ्च, कोइ पण नरक पृथ्वीमां उत्पन्न थइने त्यांथी मृत्यु पामी मनुष्य के तिर्यचनी गतिमां जाय अने त्यांथी पुनः तेज नरकपृथ्वीमां उपजीने फरीने मनुष्य के तिर्यंच गतिमां जाय; एवी रीते आठ भव करे. त्यारबाद नवमे भवे अवश्य अन्य पर्यायने पामे परंतु मनुष्य के तिर्यच न थाय. आ प्रमाणे सर्वत्र भव—संवेध माटे जाणवुं. एवीज रीते मनुष्य के तिर्यच, भवनपतिमां, व्यंतरमां ज्योतिष्कमां अने सौधर्म वगेरे आठ देवलोकमां उ० थी आठ भव करे छे अने ज० थी नरक अने देव गतिमां पण बे भव करे छे. संज्ञीतिर्यच (जलचरमच्छ पर्याप्त होय ते) जघन्य आयुष्यथी सातमी नरकमां उत्पन्न थाय. ते उ० आयुष्यवालो के ज० आयुष्यवालो होय तो उ० थी सात भव करे छे. ते आ प्रमाणेः—कोटिपूर्वना आयुष्यवालो तिर्यच, सातमी नरकमां ज० आयुष्ये उत्पन्न थइ त्यांथी तिर्यंच थाय; पाछो सातमी नरकमां जाय एवीज रीते सात भव करे. पछी नरकमां ते जतो नथी अर्थात् अवश्य पर्याय (भव) बदले. उ० आयुष्यवालो अथवा ज० आयुष्यवालो तिर्यच, उ० आयुष्ये सातमी नरकमां उत्पन्न थाय तो पांच भव करे. जघन्यथी तो चारे भांगामां त्रण भव करे छे. कारण ? सातमी नरकथी नीकलीने अवश्य संज्ञीतिर्यच थाय. संज्ञीमनुष्य, चारे भांगा वडे सातमी नरकमां जाय तो बे भव करे. आनतादि चार देवलोक अने नव ग्रैवेयकमां चारे भांगे उत्पन्न थतो मनुष्य, उ० थी सात भव करे अने ज० थी त्रण भव करे, पछी

२ मनुष्य मरीने देव थाय, एटले एक भव मनुष्यनो अने बीजो देवनो पछी ते तिर्यंच थाय; बे भव विना संवेध कहेवाय नहिं.

अवश्य अन्य पर्याय पामे. उ० थी सात भव करे तेमां पण मनुष्यना चार अने देवना त्रण भव करे. ज० थी बे भव करे ते एक मनुष्यनो अने एक देवनो एम जाणवुं. विजयादि चार अनुत्तर–विमानमां उत्पन्न थतो मनुष्य, ज० थी त्रण भव अने उ० थी पांच भव चारे भांगे करे. सर्वार्थ सिद्धमां ज० ने उ० त्रण भव करे पछी अवश्य मोक्ष जाय छे. युगलिक मनुष्य अने तिर्यंचो, भवनपति व्यंतर ज्योतिष्क अने पहेला बे देवलोकमां बे भव करे. कारण ? देव मरीने युगलिक थाय नहिं. असंज्ञी पर्याप्त तिर्यंच, पहेली नरक भवनपति अने व्यंतरमां बे भव करे. कारण ? नरक के देवमांथी असंज्ञी तिर्यंचमां जाय नहिं. भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क तथा सहस्रार सुधी देवलोकना देवो अने पहेली छ नरकना नारको ए सर्व, संज्ञी तिर्यंच अने मनुष्य पर्याप्तमां आठ भव करे पछी अवश्य अन्यभव करे. ज० स्थितिवाला सातमी नरकना नारको, संज्ञी पर्याप्त तिर्यंचमां उ० थी छ भव करे. अने उ० स्थितिवाला नारको, चार भव करे अने ज० थी बे भव करे. आनत आदि चार देवलोकना देवो अने नव ग्रैवेयकना देवो, मनुष्य गतिमां उ० थी छ भव करे अने विजयादि चार अनुत्तरना देवो उ० थी चार भव करे अने ज०थी आनतादि सर्व देवो बे भव करे. सर्वार्थ सिद्धना देवो, ज० ने उ०थी बेज भव करे. भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने सौधर्म ने इशान देवलोकना देवो, पृथ्वी का० अप्का० अने वनस्पतिका० मां उपजे तो बेज भव करे. असंज्ञीपंचेंद्रिय तथा संज्ञीपंचेंद्रिय तिर्यंचो अने संज्ञी मनुष्यो, युगलिक मनुष्य अने तिर्यंचमां बेज भव करे. पृथ्वीकायिक जीव, ज० स्थितिमां अप्का०, तेउका० अने वायुका० मां

उ० थी एकांतरे असंख्यात भव करें. अपकायिकजीव पण, पृथ्वी, तेउ० अने वायुकायमां उ० थी असंख्यात भव करे. तेउकायिक जीव पण, पृथ्वी, अप अने वायुकायमां उ० थी असंख्यात भव करे. वायुकायिक जीव पण, पृथ्वी, अप अने तेउकायमां उ० थी असंख्यात भव करे. पृथ्वीआदि चार कायना जीवो, वनस्पतिकायमां उत्पन्न थतां उ० असंख्यात भव करे. वनस्पतिकायिक जीव पण, पृथ्वी आदि चार कायमां उ० असंख्यात भव करे. वनस्पतिकायिक जीव, वनस्पतिकायमां उ० अनंत भव करे. त्रण विकलेंद्रियो, पृथ्वी आदि पांचे कायमां उत्पन्न थतां उ० संख्याता भव करे अने विकलेंद्रियो, विकलेंद्रियमां पण उ० संख्याता भव करे. पूर्वोक्त आयुष्यनी चतुर्भंगीमां उत्कृष्ट आयुष्यवाला, प्रथमना त्रण भांगामां पृथ्वीकायिक आदि जीवो, आठ भव करे छे, ते आ प्रमाणेः—उ० आयुष्यवालो पृथ्वीकायिक, उ० आयुष्यवाला अपकायमां एकांतरे चारवार उपजे एटले आठ भव थाय; पछी अवश्य अन्य भव करे. उ० आयुष्यवालो पृथ्वीका०, ज० आयुष्यवाला अपकायमां उत्पन्न थइने पण आठ भव उत्कृष्टथी करे. ज० आयुष्यवालो पृथ्वीका०, उ० आयुष्यवाला अपकायमां उत्पन्न थइने उ० आठ भव करे. एवीज रीते उ० आयुष्यवाला त्रणे भांगामां अपकायिक वगेरेनो अने विकलेंद्रियनो पण आठ भव संवेध जाणवो. वळी ज० आयुष्यवालाओनो ज० आयुष्यवालानी अंदर पांचे स्थावरोनो परस्पर असंख्यात भव संवेध जाणवो. स्थावरोनो विकलेंद्रियो साथे संख्यात भव संवेध, ज० भांगे जाणवो. अर्थात् उत्कृष्टथी एटला भव चोथे भांगे करे. उ० अने ज० आयुष्यरुप चारे भांगाओनी अंदर पृथ्वीकायिक आदि

स्थावरो अने विकलेंद्रियोनो ज० थी बे भव संवेध जाणवो. युगलिक सिवायना मनुष्यो अने संज्ञी-असंज्ञी तिर्यंचो, परस्पर उ० थी चारे भांगे आठ भव करे. वली तेओ, पृथवी आदि पांच स्थावर कायमां अने त्रण विकलेंद्रियमां पण चारे भांगे उ० थी आठ भव करे अने ज० बे भव करे, संज्ञी-असंज्ञी (युगलीक सिवायना) मनुष्यो, वायुका० अने तेउका० मां उत्पन्न थइनें ज० ने उ० थी बे भव करे; कारण ? तेउ०-वायुकायथी नीकळेलाने मनुष्य-गति प्राप्त थती नथी. हवे उक्त भवसंवेधोनुं कालमान निश्चित करवा माटे नीचे प्रमाणे आम्नाय छेः—जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वक्रोडनी स्थितिवाला तिर्यंचो, सर्व नरकोमां जाय छे अने नारको पण तेटलीज स्थितिवाला तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय छे. ज० अंतर्मु० अने उ० क्रोड पूर्वनी स्थितिवाला तिर्यंचो. भवनपतिथी मांडी यावत् सहस्रार देवलोक पर्यंत जाय छे अने सहस्रार सुधीना देवो पण तेटलीज स्थितिवाला तिर्यंचोमां उपजे छे. असंख्याता (वर्ष) आयुष्यवाला तिर्यंचो, इशान दॆव० सुधी उपजे छे, ते पण पोताना समान आयुष्यवाला अगर तेथी न्युन आयुष्यवाला देवो थाय छे. पृथक्त्व मासना आयुष्यवालो मनुष्य, पहेली नरक सुधी जाय छे, पृ० वर्षना आयुष्यवालो मनुष्य, शर्करादि छ नरक सुधी जाय छे अने क्रोड पूर्व सुधीना आयुष्यवालो मनुष्य. साते नरकमां जाय छे. रत्नप्रभाना नारको, ज० थी पृथक्त्व मासना आयुष्यवाला मनुष्यो थाय छे. बीजीथी छठ्ठी नरकना नारको, ज० थी पृथ० वर्षवाला मनुष्यो थाय छे. सातमी नरकना

१ पृथक्त्व वर्षथी न्युन आयुष्यवालो जीव, शर्कराप्रभादि नरकमां जतो नथी.

नारको, मनुष्य थता नथी. छए नरकना नारको, उत्कृष्टथी क्रोड पूर्वना आयुष्यवाला मनुष्योमां उपजे छे. पृथ० मासना आयुष्यवालो मनुष्य, उत्कृष्टथी बे देवलोक सुधी जाय छे अने पृथ० वर्षना आयुष्यवालो मनुष्य, छेक सर्वार्थ सिद्ध सुधी जाय छे. क्रोड पूर्व सुधीना आयुष्यवालो मनुष्य, सर्वत्र जाय छे अने उ० थी त्रण पल्यना आयुष्यवालो मनुष्य, इशान देव० सुधी जाय छे. ज० अंतर्मु० आयुष्यवालो तिर्यंच अने पृथ० मासना आयु० मनुष्य, युगलिक मनुष्य अथवा तिर्यच थाय छे. उ० क्रोड पूर्वना आयु० मनुष्य अने तिर्यचो, युगलिक मनुष्य अने तिर्यचमां जाय छे. क्रोड पूर्वथी अधिक आयु० मनुष्य अने तिर्यचो, युगलिकमां उपजता नथी. हवे बाकी रहेला (स्थावरादिक)नी पूर्वापर बन्ने भवनी उ० अने ज० स्थिति, तेओना उ० अने ज० आयुष्यनी अपेक्षाए जाणवी. वली एवीज रीते विवक्षित वर्तमान भवनी अने प्राप्त थनारा भवनी उ० ने ज० स्थिति, तेमज उ० ने ज० भवसंख्या स्वयं जाणीने विवक्षित प्राणिओना भवसंवेधनुं काल-मान उ० ने ज० थी विचारीने कहेवुं. जेमके पहेली नरकमां उ० आयुष्य पामेला उ० आयुष्यवाला मनुष्यनो उ० भव संवेधकाल, चार सागर अधिक चारक्रोड पूर्वनो होय छे अने ते बन्ने गतिना उ० आयुष्यवालानो भवसंवेधकाल, ज० थी एक सागर अधिक एक क्रोड पूर्वनो होय. उ० आयुष्यवाला मनुष्य अने ज० आयुष्यवाला नारकनो उ० भवसंवेधकाल, चालीश हजार वर्ष अधिक चार क्रोड पूर्वनो होय छे. उ० आयुष्यवाला मनुष्य अने ज० आयुष्यवाला नार-

---

२ उत्कृष्टथी चार भव मनुष्यना अने चार भव नरकना करे. जघन्यथी एक भव मनुष्यनो अने एक भव नरकनो माटे,

कनो ज० भवसंवेधकाल, दश हजार वर्ष अधिक एक क्रोड पूर्वनो होय छे. ज० आयुष्यवाला मनुष्य अने उ०
आयुष्य० नारकनो उ० भव सं० काल, चार सागर अने चार पृथक्त्व मासनो छे अने तेनो ज० भवसंवे० का०
एक सागर अने पृ० मासनो होय. ज० आयुष्यवाला ते बन्नेनो उ० भव संवेधकाल, चालीश ह० वर्ष अने चार
पृथ० मासनो अने तेओनो ज० भवसंवे०, दश ह० वर्ष अने पृथ० मासनो छे. ज० आयुष्य वडे सातमी नरकमां
उत्पन्न थतां उ० आयुष्यवाला तिर्यंचनो उ० भवसंवेधकाल, चार क्रोड वर्ष अधिक छासठ सागरनो अने ज०
आयुष्यवाला तिर्यचनो भवसं० काल, छासठ सागर अने चार अंतर्मु०नो होय. उ० आयुष्य वडे सातमी नर-
कमां उत्पन्न थतां उ० आयुष्यवाला मनुष्यनो भव० सं० काल, तेंत्रीश सागर अने क्रोड पूर्व अधिक होय.
जघन्य अने उ० थी पण तेटलोज काल थाय कारण ? सातमी नरकथी पुनः मनुष्यभवनी प्राप्ति थती नथी.
ज० आयुष्ये सातमी नरकमां उत्पन्न थतां ज० आयुष्यवाला मनुष्यनो भवसं० काल, बावीश सागर अने
प्रथ० वर्षनो छे. ए प्रमणे सर्व भांगानें विषे सघळा प्राणिओनो उ० के ज० भवसं० काल स्वयं समजी लेवुं.
विशेष जिज्ञासुए भगवती-शतक २४ मुं जोवुं. इति भवसंवेध समाप्त.

अथ समुद्घात-स्वरुप-सम् उत् अने घात, ए त्रण शब्द मळीने समुद्घात शब्द थयेल छे तेनो समु-
दायार्थ आ प्रमाणे थाय छेः-एकी भावे (समस्त पणे) आत्म वीर्यनी प्रबलताथी वेदनादिवडे भोगवाइने
कर्मांशो (कर्म परमाणुओ)नो जे नाश ते समुद्घात कहेवाय छे. समुद्घात करनार जीव, घणा काल सुधी

भोगववा योग्य कर्मपुद्गलोने तरतमां खपावी नाखे छे. अर्थात् कालांतरे वेदवा लायक कर्मपुद्गलोने उदीरणा करण वडे खेंचीने–उदयमां लावी तेने भोगवीने खेरवी (नाश करी) नाखे छे. ते समुद्घातना सात भेद छेः– १ वेदना समुद्घात, २ कषाय स०, ३ मरणांतिक स०, ४ वैक्रेय स०, ५ तैजस स०, ६ आहारक स० अने ७ केवलिसमुद्घात. पहेला छ समुद्घातो, छद्मस्थ जीवोने होय छे अने छेल्लो समु० सयोगी केवलीने होय छे. पहेला छ समुद्घातोनी एक एक अंतमु० नी स्थिति होय छे अने छेल्ला केवली स० नी आठ समयनी स्थिती होय छे. ते आ प्रमाणेः–१ वेदनाथी दुःखी थयेल जीव, अनंत कर्म परमाणुओथी वींटायल (आच्छादित) एवा पोताना आत्मप्रदेशोने शरीरथी बाहेर काढीने खभा वगेरेना अंतरोने तथा मुख वगेरेना पोकळ भागोने पूरीने लंबाइ–पहोळाइथी शरीर–प्रमाण क्षेत्रमां व्यापीने अंतर्मुहूर्त सुधी रहे ए अंतर्मुहूर्तमां बहु अशाता वेदनीय कर्मना घणा अंशो (पुद्गलो)ने खेरवी (निर्झरी) नाखे छेः ए वेदना समुद्घात. २ कषायथी व्याकूळ प्राणी आत्मप्रदेशो वडे पूर्ववत् मुखादि पोकळ भागोने पूरीने लांबा–पहोळा शरीर प्रमाण क्षेत्रमां व्यापीने कषाय मोहनीय कर्मना घणा अंशोने खेरवे छे अने खेरवते छते स्वहेतु वडे अन्य अनेक नवीन कर्म पुद्गलोने ग्रहण करे छे. ए कषाय समुद्घात ते क्रोधादिक हेतुओ वडे चार प्रकारनो कहेल छे. ३ मरणांतथी दुःखित थयेला

---

२ क्रोध वडे क्रोध अने मान वडे मान, ए प्रमाणे कषायोथी कषाय-पुद्गलोने ग्रहण करवा पडे. जो नवीन कर्मने ग्रहण न करे तो मुक्तिनो प्रसंग आवी जाय माटे नवीन कर्मने ग्रहण करे छे.

जीवनुं ज्यारे आयुष्य अंतर्मुहूर्त बकात रह्युं होय त्यारे ते जीव, आत्मप्रदेशो वडे पूर्ववत् मुखादिकना छिद्रोने पूरीने जाडाइ-पहोळाइमां पोताना शरीर प्रमाणे अने लंबाइमां जघन्यतः अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलो अने उत्कृष्टतः एक दिशामां छेक उत्पत्तिस्थान सुधी असंख्यात योजन प्रमाण क्षेत्रमां व्यापीने अंतर्मु०नां मृत्यु पामे छे. ए जीव घणा आयुष्य कर्मना पुद्गलोने खेरवी नाखे छे; पण नवीन आयुष्यकर्म-पुद्गलोने ग्रहण करतो नथी. अहिं एटली विशेषता छे के कोइक जीव, एकज मरणांतिक समुद्घात करीने नरकादिकमां उत्पन्न थाय छे; त्यां आहार ले छे अने शरीर पण बांधे छे. वली कोइक जीव, म० समुद्घात करीने उत्पत्ति स्थाने जइने समुद्घातथी निवृत्त थइ पाछो स्वशरीरमां आवी पुनः समुद्घात करी उत्पत्ति स्थानमां उपजे छे. ४ वैक्रेय समुद्घातने प्राप्त थयेलो वैक्रेय शक्तिवालो जीव, कर्मथी वींटायला आत्मप्रदेशोने शरीरथी बाहेर काढीने जाडाइ-पहोळाइमां स्वशरीर प्रमाणे अने लंबाइमां संख्यात योजन प्रमाण दंड बनावीने पछी पूर्वोपार्जित वैक्रेय शरीर नाम कर्मना पुद्गलोने खेरवतो अने वैक्रेय शरीरने योग्य अन्य पुद्गल-स्कंधोने लइने समुद्घात करे छे ते वैक्रेय समुद्घात. ५ तैजस समुद्०ने प्राप्त थयेलो तेजोलेश्या नामनी शक्तिवालो जीव, वैक्रेय श०नी जेम कर्मोथी वींटायेला आत्म प्रदेशोने बाहेर काढीने स्वशरीर प्रमाणे जाडो-पहोळो अने संख्यात योजन प्रमाण लांबो दंड

---

२ आ हकीकत भगवती सूत्रना छठ्ठा शतकना छठ्ठा उद्देशामां कहेल छे, ते नरकादिथी माडी यावत् अनुत्तर विमान सुधी सर्व स्थानोमां पण एम समजवु.

करीने पूर्वबद्ध तैजस नाम कर्मना पुद्गलोने खेरवे छे अने अन्य तैजस योग्य पुद्गलोने लइने तेजो लेश्या मूके छे ते तैजस समुद्घात. ६ आहारक लब्धिवाला चौद पूर्वधरमुनि, तीर्थंकरनी समृद्धि जोवा माटे अने कोइ सूक्ष्म अर्थनो संदेह निवारवा वगेरे खास हेतुथी आत्मप्रदेशो वडे स्वशरीर प्रमाणे जाडो—पहोळो अने संख्यात योजननो लांबो दंड करीने पूर्वसंचित आहारक शरीर नाम कर्मना पुद्गलो विखेरी अने नवीन आहारक शरीर योग्य पुद्गलोने ग्रहण करीने जे एक हस्त प्रमाण आहारक शरीर करे छे ते आहारक समुद्घात. ७ जे सर्वज्ञ केवलीने आयुष्य कर्मथी वधारे वेदनीय नाम अने गोत्र कर्म होय ते केवलीसमुद्घात करे छे. प्रथम अंतर्मुहूर्तमां आवर्जीकरण (शुभयोगनो व्यापार) करे ते सर्व केवलिओने अवश्य करवुं पडे छे. त्यारपछी शेष अंतर्मुहूर्त आयुष्य बाकी रहे त्यारे केवली समुद्घात करे, तेनुं क्रम अने स्वरुप कहे छेः—प्रथम समयमां केवली-प्रभु, आत्म प्रदेशो वडे स्वशरीर प्रमाणे जाडो-पहोळो अने लंबाइमां उंचे अने नीचे लोकना अंतने स्पर्श करे तेवो दंड अर्थात् चौद राजलोक प्रमाण करे. बीजे समये ते दंडनो पूर्व-पश्चिम लांबो कपाट करे. त्रीजे समये एमांथी प्रदेशोने विस्तारीने उत्तर-दक्षिणमां लांबो मंथान करे अने चोथे समये एना आंतरा पूरे. आ चोथा समयमां आत्मप्रदेशो वडे सर्व लोकमां व्याप्त थाय छे. कारण ? लोकाकाशना अने एक जीवना प्रदेशो समान

---

२ परने उपघात करवा रोषयुक्त तेजोलेश्या, तैजस शरीरथी मूके छे अने परने अनुग्रह करवा (वीर प्रभुनी जेम) तैजस शरीरथी तैजसपुद्गलोने ग्रहण करीने शीतलेश्या पण मूके छे.

छे. पछी पांचमे समये आंतराने संहरे, छठ्ठे समये मंथानने संहरे, सातमे समये कपाटने संहरे अने आठमे समये दंडने संहरीने स्वशरीरमां स्थिर थाय; पछी एक अंतर्मुहूर्त बाद योगनिरोध करीने मोक्षें जाय. पहेला अने छेल्ला समयमां केवलीने उदारिक योग होय छे. बीजा, छठ्ठा अने सातमा समयमां उदा० मिश्रयोग होय छे अने त्रीजा चोथा, पांचमा समयमां कार्मण योग होय छे. समुद्घातथी निवृत थइने केवली भगवान् त्रणे प्रकारना योगने खास प्रसंगे प्रवर्तावे छे. ज्यारे अनुत्तर विमानना देवो, मनवडे कंइपण प्रश्न करे त्यारे केवली भगवान् मनोवर्गणाना पुद्गलो लइने मनपणे परिणमावीने मनोयोग वडे ते देवोने उत्तर आपे छे अने मनुष्या-दिकना पृष्ट अपृष्ट संशयो टाळवा माटे बोलवुं पडे छे आवे प्रसंगे वचनयोग प्रवर्तावे छे अने गमना गमनादि क्रियामां तेमज पट्टपीठ फलक आदि पाछा सोंपवा होय त्यारें काययोगनी प्रवृत्ति करे छे. छेवटे त्रण योगना रुंधननो क्रम आ प्रमाणे छे–पर्याप्त सञ्ज्ञी पंचेंद्रियना मनोयोगथी असंख्यात गुणहीन एवा मनोयोगनें समये समये रुंधन करतां असंख्यात समयोमां मनो योगनुं सर्वथा रुंधन करे, पछी पर्याप्त बे इंद्रियना जघन्य वचनयोगथी असंख्यात गुणहीन एवा वचन योगने समये समये रुंधन करतां असंख्याता समयोमां वचनयोगनुं

---

१ सत्य मनोयोग अने असत्यामृपा [व्यवहार] मनो०, सत्य अने असत्या मृपा वचन योग अने उ० काययोग. २ कोइ एम कहे छे के छ मास आयुष्य बाकी रहे त्यारे केवली समुद्घात करे, ते अयुक्त छे. जो तेमज होय तो पट्ट आदिकनुं पुन ग्रहण सभवे परंतु सिद्धांतमां तो पाछा सोंपवानुज कहेल छे विशेप जिज्ञासुए पन्नवणाना, छेल्ला पदनी वृत्ति जोवी.

सर्वथा रुंधन करे अने त्यारबाद सूक्ष्म पर्याप्त एकेंद्रियना ज० काययोगथी असंख्यात गुणहीन एवा काययोगनुं समये समये रुंधन करता थका असंख्यात समयोमां सर्वकाय योगनुं रुंधन करीने सिद्ध थाय छे. एम अनंत केवलीओ के० समुद्घात करीने सिद्ध थया छे अने अनंत केवलीओ के० समुद्घात कर्या वगर पण सिद्ध थया छे. हवे कया जीवोए कयो समुद्घात केटलीवार करेल छे अने करशे ते कहे छे–पहेला पांच समु० (वेदनीयथी तैजस पर्यंत) सर्व जीवोए अनंतवार करेल छे अने भविष्यकालमां तो केटलाक लघुकर्मी जीवोने ते समु० थवाना नथी ज्यारे केटलाकने तो एक बे अथवा अनेक थवाना छे केटलाकने संख्याता केटलाकने असंख्याता अने केटलाक बहुलकर्मि जीवोने अनंत समु० पण थवाना होय छे. आ प्रमाणे अनुत्तर विमानना देवो सिवाय सर्व दंडकमां समजवुं. परंतु अनादि (सूक्ष्म) निगोदना जीवो आश्रयी भूतकालमां आद्यत्रण समु० करेला होय छे अने भविष्यकाल आश्रयी तो प्रथमनी माफक जाणवुं. आहारक समुं० मनुष्य सिवायना अन्य जीवोए भूतकालमां उत्कृष्टथी त्रणंजवार अनुभवेल होय छे अने केटलाक जीवोए मुद्दल पण न अनुभवेल होय; भविष्यकाल

२ अहिं समजावानुं ए छे के छ मास आयुष्य बाकी होय त्यारे जेमने केवलज्ञान उत्पन्न थाय तेओ अवश्य समु० करे अने बाकीना केवलीओ जो आयुष्यथी शेष त्रण कर्मो वधारे होय तो के० समु० करे अने आयुष्यथी समान कर्मो होय तो न पण करे. ३ आहारक समु० मनुष्यमां चौद पूर्वधरने होय ते पण आहारक लब्धिवालानेज, पण सर्व चौद पूर्वधरने न होय, ४ मनुष्य सिवाय अन्य गतिमां आहारक समु० चार वार करेल न होय कारण? चोथी वखत आहा० समु० करनार तेज भवमां अवश्य मोक्षे जाय एम पन्नवणा सूत्रनी टीकामां कहेल छे वळी ग्रंथांतरमां कयुं छे के–चत्तारिवाराओ, चउदस पुव्वी करेइ आहारं; संसारम्मि वसंता, एगजम्मे दुणीवाराओ.

आश्रयी उ० थी चार वार संभवे. केटलाकने भूत अने भविष्य आश्रयी मुद्दल पण न होय. केवली समु० मनुष्य सिवाय अन्य जीवोए भूतकालमां करेल नथी. भविष्यकाल आश्रयी पण उ० थी कोइकने एकवार संभवे, मनुष्य आश्रयी कोइकने अतीतकाले एक थयेल होय छे अर्थात् केवलि समु० थी उत्तीर्ण थयेला आश्रयी जाणवुं. अने भविष्य आश्रयी पण एकज घटी शके. पहेलो समुद्घात, असाता वेदनीय कर्मना आश्रयवालो छे. बीजो समु०, कषाय मोहनीय कर्मना आश्रयवालो छे. त्रीजो स०, शेष अंतर्मुहूर्त आयुष्य कर्मना आश्रयवालो छे. चोथो, पांचमो अने छठ्ठो ए त्रण समुद्घात, नाम कर्मना आश्रयवाला छे अने सातमो समु०, वेदनीय नाम अने गोत्र कर्मना आश्रयवालो छे. ए सात समुद्घातो जीवोना कह्या. हवे अजीव-समुद्घात कहे छेः-अचित्त महा स्कंधरुप अजीवथी थयेल जे समुद्घात ते अजीवसमु० कहेवाय छे. ते पुद्गलना विश्रसा-परिणामथी (स्वभावथी) थाय छे अने ते सर्वलोक व्यापी थाय छे. तेनो काल केवलि समुद्घातनी जेम आठ समयनो छे अर्थात् आठ समयमां समाप्त थाय छे. इति समुद्घात स्वरुप समाप्त.

अथ पांच ज्ञाननुं स्वरुप-ज्ञान पांच प्रकारना छेः—१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान अने ५ केवलज्ञान. हवे पांचे ज्ञानना क्रमशः लक्षण कहे छेः—१ पांच इंद्रिय अने मन ए छना व्यापार वडे जे वस्तुनुं ज्ञान थाय ते मतिज्ञान. २ कंबूग्रीवादि आकारे जे वस्तु होय ते 'घट' अने जलादि धारण करे

२ पन्नवणा सूत्रना ३६ मा पदथी विशेष जाणवु.

एवुं पूर्वापर पर्याय विशिष्ट मतिपूर्वक जे ज्ञान ते श्रुतज्ञान. ए बन्ने (मति-श्रुत) ज्ञान, अक्ष (आत्मा) ते थकी पर, इंद्रिय अने मन जेना निमित्त थाय छे माटे परमार्थतः परोक्ष अने लोक व्यवहारमां ते प्रत्यक्ष ज्ञान कहेवाय छे. ३ द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ए चार मर्यादा वडे इंद्रियनी अपेक्षा विना रुपी (मूर्त्त) द्रव्यने जे विषय करनार ते अवधिज्ञान. ते १ द्रव्यथी जघन्य अनंत प्रदेशी एक स्कंध एवा अनंत स्कंधने जाणे अने उत्कृष्टथी परमाणुमात्र जाणे. २ क्षेत्रथी ज० सूक्ष्म पनकना शरीर प्रमाण क्षेत्रने जाणे, उ० सर्वलोक प्रमाण असंख्याता खंड अलोकमध्ये स्थापीअें एटलुं क्षेत्र जाणे. ३ कालथी ज० आवलिकानो असंख्यातमो भाग पूर्वापर जाणे, उ० असंख्याता कालचक्र-भूत भविष्य जाणे. ४ भावथी ज० सर्व पर्यायनो अनंतमो भाग जाणे, उ० एक द्रव्यना असंख्यात पर्याय, एम सर्व द्रव्यना पर्याय असंख्य असंख्य गणतां अनंत पर्याय जाणे. ४ मनुष्यलोकने विषे संज्ञी पंचेंद्रियना मनोगत भावनुं जाणवुं तथा मनना पर्यायने पण जे प्रत्यक्ष जाणे ते मनः पर्यवज्ञान. अवधि अने मनः पर्यवज्ञान. देशतः प्रत्यक्ष छे. ५ संपूर्णज्ञान-त्रणे कालमां समस्त लोकालोक (सर्व द्रव्य. गुण अने पर्याय) जेना वडे जणाय ते केवलज्ञान. ए सर्वतः प्रत्यक्ष छे. हवे पांच ज्ञानमां प्रथम मति ज्ञानना २८ भेद कहे छेः—१ श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेंद्रिय व्यं०, ३ रसनेंद्रिय व्यं, ४ स्पर्शनेंद्रिय व्यंजनावग्रह. ए चार इंद्रियथी व्यंजनावग्रह थाय छे. पांच इंद्रिय अने मन ए छना १ अर्थावग्रह, २ इहा,

---

२ अलोक अरुपी (अमूर्त्त) होवाथी जाणे नहि, पण रुपी पदार्थ एटला होय तो जाणी शके एटली शक्ति छे.

३ अवाय अने ४ धारणा. ए चार चार भेद करतां २४ भेद अने ४ भेद व्यंजनावग्रहना; ए सर्व मली २८ भेद थाय छे. दीपक, जेम घटादिकने प्रगट करे छे तेम जे छता पदार्थोने प्रगट करे ते व्यंजन अथवा इंद्रिय साथे शब्दादिकना पुद्गलोनुं जे संबंध थवुं ते व्यंजन. आ व्यंजनावग्रहज्ञान, अत्यंत अस्फुट छे. घ्राणेंद्रियादि चार इंद्रियोमां श्रोत्रेंद्रिय वडे शब्द, स्पर्श मात्रथीज संभळाय छे; गंध रस अने स्पर्श, ज्यारे बद्ध-स्पृष्ट थाय त्यारे ते घ्राणेंद्रियादिथी जणाय छे. चक्षु अने मन, अप्राप्यकारी होवाथी रुपादिक साथे बन्नेनो संबंध थतो नथी. अर्थात् ए बन्नेनो व्यंजनावग्रह थतो नथी. श्रोत्रादि चार इंद्रियो प्राप्यकारी छे. स्पर्शनादि इंद्रियोनो व्यंजनावग्रह थया पछी 'आ कंइक वस्तु छे' एवु जे अव्यक्त ज्ञान ते अर्थावग्रह. चक्षु अने मननो व्यंजनावग्रह थया सिवाय प्रथमथीज अर्थावग्रह थाय छे. व्यंजनावग्रहनो काल जघन्यथी आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण अने उ० थी पृथक्त्व श्वासोश्वास प्रमाण छे. अर्थावग्रहनो एक समयनो काल छे. (ते नैश्चयिक अर्थावग्रहनो जाणवो) अने व्यवहारिक अर्थावग्रहनो एक अंतर्मुहूर्त कालमान छे. जे अवग्रहित अर्थ तेना वर्ण, गंध अने रसादि धर्मनी विचारणा ते 'इहा' तेनो काल एक अंतर्मु० छे. ते पछी इहित अर्थनुं निर्णय करवुं ते 'अपाय' तेनुं पण कालमान अंतर्मु० नुं छे. त्यारपछी निर्णित अर्थने अमूक काल सुधी धारी राखे ते 'धारणा' तेनी स्थिति संख्याता तथा असंख्याताकालनी छे. जाति स्मरणज्ञान पण धारणानोज भेद छे. एवं

---

२ धारणाना वासना, संस्कार अने स्मृति ए त्रण भेद थाय छे.

मतिज्ञानना २८ भेद थया. वली एकेकना चार भेद पण कहेल छे. ते आ प्रमाणेः–१ बहु, २ अबहु, ३ बहुविध, ४ अबहुविध, ५ क्षिप्र, ६ अक्षिप्र, ७ निश्रित, ८ अनिश्रित, ९ संदिग्ध, १० असंदिग्ध, ११ ध्रुव अने १२ अध्रुव. आ बार भेदथी २८ ने गुणतां ३३६ भेद, श्रुत निश्रित मतिना थाय छे अने अश्रुत निश्रित मतिना चार भेद ते १ औत्पातिकी, २ वैनयिकी, ३ कार्मिकी अने ४ पारिणामिकी ए चार प्रकारनी बुद्धि भेळवतां सर्व ३४० भेद पण मति ज्ञानना थाय छे. हवे श्रुतज्ञानना १४ भेद कहे छेः–१ अक्षरश्रुत, २ अनक्षरश्रुत, ३ संज्ञिश्रुत, ४ असंज्ञीश्रुत, ५ सम्यक्श्रुत, ६ असम्यक (मिथ्या) श्रुत, ७ सादिश्रुत, ८ अनादिश्रुत, ९ सपर्यवसितश्रुत, १० अपर्यवसितश्रुत, ११ गमिकश्रुत, १२ अगमिकश्रुत, १३ अंगप्रविष्ट अने १४ अंगबाह्यश्रुत. हवे प्रथम अक्षर श्रुतना त्रण भेद १ संज्ञाक्षर, २ व्यंजनाक्षर अने ३ लब्ध्यक्षर. तेमां १ संज्ञाक्षर ते ब्राह्मीआदि अढार लीपीरूप अढार प्रकारनुं छे. २ व्यंजनाक्षर ते 'अ' कारथी मांडी 'ह' कार पर्यंत अक्षर–उच्चाररूप छे. ए बे प्रकारो यद्यपि ज्ञानात्मक नथी तथापि श्रुतना कारणरूप होवाथी उपचार वडे ए बेने श्रुतज्ञान कहेलुं छे. ३ लब्ध्यक्षर ते शब्द–श्रवण तथा रूप दर्शनादिथकी अर्थ–परिज्ञान गर्भित जे अक्षरनी उपलब्धि (साक्षात्कार थवुं) ते लब्ध्यक्षर जाणवुं. आ त्रण प्रकारना अक्षरो वडे वाणीगम्य पदार्थोने प्रतिपादन करनारुं जे ज्ञान ते अक्षरश्रुत. बाकीनुं ज्ञान ते–श्वास लेवा–मूकवाथी खांसी खावाथी थुंकवाथी हुंकारो (खोंखारो) करवाथी चपटी वगाडवा वगेरेथी जे ज्ञान थाय छे ते बीजुं अनक्षरश्रुत कहेवाय छे. त्रीजुं संज्ञिश्रुत, ते संज्ञाना ३ प्रकार छेः–१ दीर्घ-

कालिकी, २ हेतुवादोपदेशिकी अने ३ दृष्टिवादोपदेशिकी. तेमां जे जीवोने भूत भविष्यकालादि दीर्घकालनी जे सज्ञा होय ते दीर्घकालिकीसंज्ञा. तात्कालिक इष्ट–अनीष्ट वस्तु जाणीने प्रवृत्ति के निवृत्ति करवी ते हेतुवादोपदेशिकीसंज्ञा अने क्षायोपशमिकज्ञान वडे सम्यग्दृष्टिनें जे विशिष्टज्ञानरुप संज्ञा ते दृष्टिवादोपदेशिकीसंज्ञा. ए त्रण संज्ञामां हेतुवादोपदेशिकीसंज्ञा, विकलेंद्रिय तथा असंज्ञि पंचेंद्रियने होय छे अने संज्ञिपंचेंद्रियने दीर्घकालिकी संज्ञा होय छे. एकेंद्रियने कोइपण संज्ञा न होय. माटे सिद्धांतमां दीर्घकालिकी संज्ञा वडेज संज्ञीपणुं कहेलुं छे; ते संज्ञिनुं जे श्रुत ते संज्ञिश्रुत. चोथुं असंज्ञीश्रुत एटले–मनरहित (असंज्ञी) जीवोने केवळ इंद्रियथी उत्पन्न थयेलुं जे ज्ञान ते. जे जिनेश्वर प्रणीत आवश्यकादिश्रुत ते पांचमुं सम्यक्श्रुत अने स्वकल्पनाथी रचित जे श्रुत ते छठुं असम्यक्श्रुत. हवे ७ सादिश्रुत, ८ अनादिश्रुत, ९ सपर्यवसित (सांत) श्रुत अने १० अपर्यवसित (अनंत) श्रुत. ए चारनुं स्वरुप साथे कहे छेः–१ द्रव्यथी एक जीव आश्रयी द्वादशांगी, सादि–सांत

---

२ सम्यग्दृष्टि मनुष्यनेज होय. ३ सम्यक्दृष्टि जीवे ग्रहण करेलुं मिथ्याश्रुत पण सम्यक्श्रुत होय छे अने मिथ्यात्विए ग्रहण करेलुं आवश्यकादिसूत्र मिथ्याश्रुत थाय छे. आ संबंधे भाष्यकार कहे छे केः–सदसद् विसेसणाओ, भवहेउ जहच्छिओवलंभाओ; नाणफलाभावाओ, मिच्छादिट्ठिस्स अन्नाणं. १ सत् असत्नों तफावत न होवाथी, अमुक अपेक्षाए वस्तु, सत् अने अमुक अपेक्षाए असत् एम अनेकांत ज्ञांनना अभावथी, संसारना हेतुभुत अने यद्रच्छा [स्वेच्छा] पणे कहेल होवाथी तेमज ज्ञाननु फल जे विरति तेनो अभाव होवाथी मिथ्यादृष्टिनुं सर्वश्रुत अज्ञानज छे विपर्यासपणाथी मिथ्यादृष्टिने देशे उणा दश पूर्व सुधीनु सम्यक्श्रुत पण मिथ्याश्रुत थाय छे. दश पूर्वना ज्ञानवालो नियमा सम्यक्दृष्टि होय छे

छे अने घणा जीवो आश्रयी अनादि–अनंत छे. २ क्षेत्रथी भरत–ऐरावत आश्रयी सादि–सांत अने महाविदेह आश्रयी अनादि–अनंत छे. ३ कालथी उत्सर्पिणी–अवसर्पिणीकाल आश्रयी सादि–सांत अने महाविदेह आश्रयी सदाकाल होवाथी अनादि–अनंत छे. ४ भावथी भव्य जीव आश्रयी सादि–सांत अने अभव्य आश्रयी (मिथ्याश्रुत) अनादि–अनंत छे. ११ जे सूत्रमां जे आलापक (आलावा) सरखा होय ते गमिकश्रुत, ते प्रायः दृष्टिवाद सूत्रने विषे होय अने १२ जे सूत्रमां आलापक सरखा न होय ते अगमिकश्रुत; ते प्रायः कालिकश्रुतमां होय. १३ जे द्वादशांगीरुप ते अंग प्रविष्ट तेमां पहेलुं आचारांग १८ हजार पदनुं छे एम क्रमशः इग्गार अंग सुधी पदनुं प्रमाण बमणुं (डबल) जाणवुं. बारमुं दृष्टिवाद अंग तेना पांच भेद छे–१ परिकर्म, २ सूत्र, ३ पूर्वानुयोग, ४ पूर्वगत अने ५ चूलिका. चोथा पूर्वगत भेदमां १४ पूर्वो छे. तेना नामः–१ उत्पादपूर्व, एकक्रोड पदनुं छे. २ अग्राहणी (अग्रेणीय) पूर्व ते ९६ लाख पदनुं छे. ३ वीर्यप्रवाद पूर्व, ते ७० लाख पदनुं छे ४ अस्तिप्रवाद पूर्व. ते ६० लाख पदनुं छे. ५ ज्ञानप्रवाद पूर्व, ते एकपद न्यून क्रोड पदनुं छे. ६ सत्यप्रवाद पूर्व, ते छ पद अधिक एक क्रोड पदनुं छे. ७ आत्मप्रवाद पूर्व, २६ क्रोड पदनुं छे. ८ कर्मप्रवाद पूर्व, एक क्रोड अेंसीलाख पदनुं छे. ९ प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व, ८४ लाख पदनुं छे. १० विद्याप्रवाद पूर्व, एकक्रोड दश लाख पदनुं छे. ११ कल्याण (अवंध्य) पूर्व, २६ क्रोड पदनुं छे. १२ प्राणायुः पूर्व, एक क्रोड छपन्नलाख पदनुं छे. १३ क्रिया

विशाल पूर्व, ९ क्रोड पदनुं छे. अने १४ लोकबिंदुसार पूर्व, १२॥ क्रोड पदनु छे. ए सर्व अंगप्रविष्ट श्रुत कहेवाय छे. चौदमुं अंगबाह्यश्रुत ते आवश्यक, दशवैकालिकादिक जाणवुं. प्रकारांतरे श्रुत ज्ञानना २० भेद पण थाय छे ते कहे छेः—१ पर्यायश्रुत, २ पर्याय समासश्रुत, ३ अक्षर०, ४ अक्षर समास०, ५ पद०, ६ पदसमास०, ७ संघात०, ८ संघात समास०, ९ प्रतिपत्ति०, १० प्रतिपत्ति समास०, ११ अनुयोग०, १२ अनुयोग समास०, १३ प्राभृत प्राभृत०, १४ प्राभृत प्रा० समास०, १५ प्राभृत०, १६ प्राभृत स०, १७ वस्तु०, १८ वस्तु स०, १९ पूर्वश्रुत, अने २० पूर्व स० श्रुत. हवे तेनुं स्वरुप कहे छेः-१ पर्याय श्रुत-लब्धिअपर्याप्त सूक्ष्म निगोदना जीवोनुं जे सर्वथी जघन्यश्रुत होय छे तेनाथी अन्य जीवोमां एक अविभाज्य अंश (पर्याय)नी जे वृद्धि ते पर्यायश्रुत अने तेवा बे त्रण आदि पर्यायनी जे वृद्धि ते बीजुं पर्याय समासश्रुत. अकारादि अक्षरोमांथी एक लब्धयक्षरनुं जे ज्ञान ते त्रीजुं अक्षरश्रुत अने तेवा बे त्रण वगेरे अक्षरनुं जे ज्ञान ते चोथुं अक्षर स०श्रुत. आचारंगादिना अढार हजार वगेरे पदोनी जे संख्या कहेल छे तेमांथी एक पदनुं जे ज्ञान ते पांचमुं पदश्रुत अने बे त्रण वगेरे घणा पदोनुं जे ज्ञान ते छठुं पद स०श्रुत. गति आदिक बाशठ मार्गणामांथी एक मार्गणानुं जे ज्ञान ते सातमुं संघातश्रुत अने विशेष मार्गणानुं जे ज्ञान ते आठमुं संघात स० श्रुत. संपूर्ण गति आदिक द्वारोमांथी एक द्वारमां जे जीवादि वगेरेनी मार्गणा (विचारणा) ते नवमुं प्रतिपत्तिश्रुत अने बे त्रण द्वारोने विषे जे

२ चौद पूर्वना पदनु प्रमाण नंदी सूत्रनी टीकाना अनुसारे लखेल छे. ग्रथांतरमां मतांतर छे.

मार्गणा ते दशमुं प्रतिपत्ति स०श्रुत. जे सत्पद प्ररूपणादि द्वारोमांथी एक द्वारनुं वर्णन ते इग्यारमुं अनुयोगश्रुत अने एकथी वधारे द्वारनुं जे वर्णन ते बारमुं अनुयोग स०श्रुत. जेम सूत्रमां उद्देशा छे तेम पूर्वनां प्राभृत प्राभृतोमांथी एक प्राभृत प्रा०नुं जे ज्ञान ते तेरमुं प्राभृत प्रा० श्रुत अने अनेक प्राभृत प्रा०नुं जे ज्ञान ते चौदमु प्रा० प्रा० समास श्रुत. अध्ययनोनी जेम पूर्वमां वस्तु-अंतर्वर्तीरूप प्राभृतो (पाहुडा)मांथी एक प्राभृतनुं जे ज्ञान ते पंदरमु प्राभृतश्रुत अने अनेक प्राभृतनुं जे ज्ञान ते सोलमुं प्राभृत स०श्रुत. श्रुत स्कंधनी जेम पूर्वमां वस्तुओ (अधिकार विशेष)मांथी एक वस्तुनुं जे ज्ञान ते सत्तरमुं वस्तुश्रुत अने अनेक वस्तुनुं जे ज्ञान ते अढारमुं वस्तु स०श्रुत. उत्पादादि १४ पूर्वमांथी एक पूर्वनुं जे ज्ञान ते उगणीशमुं पूर्वश्रुत अने अनेक पूर्वनुं जे ज्ञान ते वीशमुं पूर्व स० श्रुत. हवे अवधिज्ञानना छ भेद कहे छे:-१ अनुगामी-जे नेत्रनी जेम साथे चाले ते. २ अननुगामी जे क्षेत्रे ज्ञान उत्पन्न थाय त्यांज जाणे पण साथे न चाले (एक स्थानमां स्थिर रहेल दीपकनी जेम) ते. ३ वर्धमान-जे उत्तरोत्तर वृद्धिने पामतुं ज्ञान ते. जघन्यथी उत्पन्न वेला एक अंगुलना असंख्यातमा भागे जाणे पछी वृद्धि पामतां असंख्याता लोकप्रमाण जाणे. ४ हीयमान-प्रथम शुभ अध्यवसायथी घणा प्रमाणमां जाणे पछी अशुभ अध्यवसायथी घटतुं जाय ते. ५ प्रतिपाती-जे संख्य असंख्य योजन अने संपूर्ण लोकने जाणीने पण

---

१ प्रतिपत्तिओ प्राय. अत्यारे जीवाभिगमसूत्रमा देखाय छे २ श्रुतना २० भेदनो विशेष स्वरूप कर्मग्रथादि शास्त्रथी जाणवु. ३ प्रतिपाती [पडवाइ] अवधि ते एकदम जाय अने हीयमान ते क्रमशः घटे. प्रतिपाती अवधि, प्रमादथी अथवा भवांतरथी जाय.

पडे ते. ६ अप्रतिपाती-जे संपूर्ण लोक जाणीने अलोकनो एक आकाश प्रदेशनें जाणवानुं सामर्थ्य ते. अप्रतिपाती ज्ञानवाळाने अवश्य केवलज्ञान उत्पन्न थाय. आ छ प्रकारनुं अवधिज्ञान, देव अने नारकने भवप्रत्ययिक होय छे अने मनुष्य अने तिर्यंचने गुण प्रत्ययिक होय छे. चोथुं मनः पर्यवज्ञान, तेना बे भेदः-१ ऋजुमति अने २ विपुलमति. ते अप्रमत्त अने लब्धिसंपन्न संयमीने होय छे. " अमुके घडो चिंतव्यो छे " एवुं जे सामान्यरुपे जाणवुं ते ऋजुमति अने ए घडो, द्रव्यथी सुवर्णादिकनो, क्षेत्रथी पाटली पुत्रादिनो, कालथी शीतकालादिनो अने भावथी पीतवर्णादिनो छे एवी रीते विशेष जाणे ते विपुलमति. ऋजुमति कदाच पडे पण खरो अने विपुलमति, तद्भव मोक्षगामी होय छे. पांचमुं केवलज्ञान ते एकज प्रकारनुं छे. केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी शेष क्षायोपशमिक चार ज्ञान होतां नथी. केवलज्ञान, सर्व लोकालोकनुं प्रकाशक छे. हवे अज्ञाननुं स्वरुप अने भेद कहे छे अज्ञान एटले कुत्सित (अयथार्थ) ज्ञान. जोके ते ज्ञानावरणीयना क्षयोपशम जन्य छे तोपण मिथ्यात्व मोहनीयना योगथी मलिन थयेलुं छे माटे आगममां सर्वज्ञ तीर्थकरोए तेने अज्ञान कहेलुं छे, जेम उत्तम पुरुष नीचना संगथी नीच गणाय छे तेम मति अने श्रुतज्ञान पण मिथ्यात्वना योगथी अज्ञान संज्ञाने पामेल छे. विएटले विरुद्ध अने भंग एटले विकल्प, अर्थात् विरुद्ध विकल्पो जेमां थाय एवुं जे ज्ञान ते विभंगज्ञान कहेवाय छे. हवे पांच ज्ञाननुं स्वरुप द्रव्य क्षेत्र, काल अने भावथी कहे छेः-१ मतिज्ञानी, आदेशथी (सामान्यथी)

[१] केटलाक आचार्यो कहे छे के चार ज्ञान केवलज्ञानमां अतर्भाव पामे छे.

द्रव्यतः सर्व द्रव्योने जाणे पण देखे नहि. क्षेत्रतः आदेशथी सर्वक्षेत्र–लोकालोकने जाणे पण देखे नहि. कालतः आ०थी सर्व कालने जाणे पण देखे नहि. अने भावतः आ०थी सर्व भावने जाणे पण देखे नहि. अथवा आदेश एटले श्रुत, ते श्रुत जेने प्राप्त थयेलुं होय तेने अक्षरनी परिपाटी विना पण मतिज्ञान श्रुतानुसारे प्रसरे छे. द्रव्यतः श्रुतज्ञानी (दश पूर्वी वगेरे) केवल अभिलाप्य द्रव्योने उपयोगथी जाणी शके छे अने देखे छे. ते सिवायना श्रुतज्ञानीना संबंधमां भजना जाणवी. क्षेत्र, काल अने भावथी पण एमज जाणवुं. कारण ? श्रुत केवलीने केवलज्ञानी समान, सिद्धांतमां कहेल छे. अवधिज्ञानी द्रव्यतःजघन्यथी रुपी (मूर्त्त) द्रव्योने जुवे छे.– ते तैजस अने भाषा द्रव्यना मध्यमां रहेल द्रव्योने जुवे छे अने उ०थी सूक्ष्म अने बादर सर्व रुपी–द्रव्योने विशेषाकारथी जुवे छे. क्षेत्रतः ज० अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण क्षेत्रने जुवे छे अने उ० असंख्याता लोकाकाश प्रमाण जोइ शके छे. कालतः ज० एक आवलिकानो असंख्यातमो भाग अने उ० असंख्याता कालचक्र भूत भविष्यने जुवे छे. भावतः ज० अनंत द्रव्योना अनंत पर्यायोने जाणे छे, परंतु प्रत्येक द्रव्यना एटला पर्यायो

---

२ पन्नवणा सूत्रमां श्रुत ज्ञानमां देखवापणु कहेल छे. कारण ? ग्रैवेयक अने अनुत्तरविमान आदिना चित्रो पण सूत्रज्ञानी आलेखी शके छे. ते देखवा सिवाय केम घटी शके ? माटे श्रुतज्ञानी देखे छे एम कहेलुं छे ते विशेष स्फुट जाणे छे; अर्थात् एमने तद्दन साक्षात्कार जेवुं जणाय छे एम समजाय छे. वस्तुत. ते परोक्षज्ञान छे. ३ " जावइआ तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणग जीवस्स ओगाहणा जहन्ना ओहिखित्तं जहन्नतु " इति नंदी–वृत्तौ.

जाणे नहि. उ०थी अनंत पर्यायोनें जाणे छे; ते अनंत पर्यायो, सर्व पर्यायोना अनंतमा भागे छे. हवे क्षेत्र अने कालना विषयनो परस्पर सबंध कहे छेः—१ जे कालथी आवलिकानो असंख्यातमो भाग जाणे, ते क्षेत्रथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे. २ जे कालथी आवलिकानो संख्यातमो भाग जाणे, ते क्षेत्रथी अंगुलनो संख्यातमो भाग जाणे. ३ जे आवलिकानी अंदर जाणे, ते क्षेत्रथी संपूर्ण अंगुलने जाणे. ४ जे कालथी आवलिका पर्यंत जाणे, ते क्षेत्रथी अंगुलपृथक्त्व जाणे. ५ जे कालथी एक अंतर्मुहूर्त जाणे, ते क्षेत्रथी एक हाथ जाणे. ६ जे कालथी एक दीवसनी अंदर जाणे, ते क्षेत्रथी एक गाउ जाणे. ७ जे कालथी पृथक्त्व दीवस जाणे, ते क्षेत्रथी एक योजन जाणे. ८ जे कालथी पक्षनी अंदर जाणे, ते क्षेत्रथी २५ योजन जाणे. ९ जे कालथी संपूर्ण पक्ष जाणे, ते क्षेत्रथी भरत क्षेत्र जेटलुं जाणे. १० जे कालथी एक मास अधिक जाणे, ते क्षेत्रथी जंबूद्वीप जेटलुं जाणे. ११ जे कालथी एक वर्ष जाणे, ते क्षेत्रथी अखिल मनुष्यलोक (अढीद्वीप) जाणे. १२ जे कालथी पृथ० वर्ष० जाणे, ते क्षेत्रथी रुचकद्वीप सुधी जाणे. १३ जे कालथी संख्याता वर्ष जाणे, ते क्षेत्रथी संख्याता द्वीप-समुद्र जाणे. १४ जे कालथी असंख्याता वर्ष जाणे, ते क्षेत्रथी असंख्याता द्वीप-समुद्र अथवा संख्याता[2] द्वीप-समुद्र जाणे. कालमां वृद्धि थाय त्यारे क्षेत्र, द्रव्य अने भावमां अवश्य वृद्धि थाय अने क्षेत्रमां वृद्धि थतां कालमां वृद्धि थाय अथवा न पण थाय. कारण ? कालथी क्षेत्र सूक्ष्म छे. क्षेत्र-वृद्धिथी द्रव्य-भाव

२ संख्याता द्वीप समुद्र कहेवानु कारण के मोटो समुद्र एक पण असंख्यात योजननो होवाथी योजन असंख्यातज थाय.

वधे छे. मनःपर्यवज्ञानी–ऋजुमति, द्रव्यतः मनुष्य क्षेत्रमां संज्ञीपर्याप्त जीवोए ग्रहण करेला अनंत मनोद्रव्य–स्कंधोने उपयोग आपतां जुवे छे (जाणे छे) अने मनः पर्यवज्ञानी–विपुलमति, तेज स्कंधोने द्रव्य–पर्यायनी अपेक्षाए विशेष स्पष्टपणे अने अधिक जाणे छे. क्षेत्रतः ऋजुमति, नीचे तिर्यग्लोकना मध्यभागथी रत्नप्रभा पृथवीना सहस्रयोजन पर्यंत अने उंचे ज्योतिष्कमंडलना उपरना भाग सुधी; तेमज तिरछो (अढी अंगुलन्यून) बे समुद्र अने अढीद्वीप सुधी जाणे छे विपुल० पुरुं जाणे छे कालतः ऋजुमति, ज० थी पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटलो अतीत—अनागत कालने जाणे अने उ० पण तेटलोज जाणे. विपुलमति, तेटलोज जाणे पण विशुद्ध जाणे. ऋजुमति भावतः सर्व पदार्थोना अनंतमा भागे रहेला अनंता पर्यायो जाणे अने विपुलमति, तेटलाज पर्यायोने विशुद्धपणे जाणे. केवलज्ञानी द्रव्यतः सर्व (रुपी–अरुपी) द्रव्योने, क्षेत्रतः सर्व लोकालोकने. कालतः सर्वकालने अने भावतः सर्वभावोने एक समये जाणे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान बन्ने साथे होय छे. ए बन्नेनी साथे अवधिज्ञान अथवा मनः पर्यवज्ञान होय तो त्रण ज्ञान साथे होय. श्रमणपणामां केवल सिवाय चार ज्ञान पण साथे होय छे. केवलज्ञान उत्पन्न थये संपूर्ण एकज केवलज्ञान होय छे. इतिज्ञान स्वरुप समाप्तं. ॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः उपाध्याय श्रीमद्देवचंद्रजी महाराज सुप्रसादात् ॥

---

२ एनो विशेष स्वरुप विशेषावश्यकादिथी जाणवु. ३ मनःपर्यायना अतिशय क्षयोपशमपणाथी जे घटादि वस्तु जुवे छे ते अवश्य विशेष सहित जुवे छे. सिद्धांतमां मनःपर्यवज्ञान, विशेषज्ञान कहेल छे तेथी मनःपर्यवनु दर्शन कहेल नथी.